सुसमाचार और प्रेरितों के कार्य

विषयसूची

मैथ्यू

अध्याय 1

1 अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली।
2 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, और इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 और यहूदा से तामार से फिरेस और ज़ारा उत्पन्न हुए; और फिरेस से इस्रोम उत्पन्न हुआ, और इस्रोम से अराम उत्पन्न हुआ।
4 और अराम से अमीनादाब उत्पन्न हुआ; और अमीनादाब से नास्सोन उत्पन्न हुआ; और नास्सोन से सलमोन उत्पन्न हुआ।
5 और सलमोन से राहाब उत्पन्न हुआ; और सलमोन से रूत उत्पन्न हुआ; और सलमोन से रूत उत्पन्न हुआ; और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ; और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ।
6 और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ; और दाऊद राजा से सुलैमान उत्पन्न हुआ, जो पहिले ऊरिय्याह की पत्नी थी।
7 और सुलैमान से रोबोआम उत्पन्न हुआ; और रोबाम से अबिया उत्पन्न हुआ; और अबिया से आसा उत्पन्न हुआ;
8 और आसा से यहोशापात उत्पन्न हुआ; और यहोशापात से योराम उत्पन्न हुआ; और योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ।
9 और ओजियास से योताम उत्पन्न हुआ; और योताम से अखाज़ उत्पन्न हुआ; और आखाज़ से यहेजकिय्याह उत्पन्न हुआ;
10 और यहेजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न हुआ; और मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ; और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ;
11 और योशियाह से यकुनियाह और उसके भाई उत्पन्न हुए, जब वे बाबुल को बन्दी बनाकर ले जाए गए।
12 और जब वे बाबुल में पहुंचाए गए, तो यकुनियाह से शालतिएल उत्पन्न हुआ, और शालतिएल से सोरोबाबेल उत्पन्न हुआ।
13 और जोरोबाबेल से अबीउद उत्पन्न हुआ; और अबीउद से एल्याकीम उत्पन्न हुआ; और एल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ;
14 और अजोर से सादोक उत्पन्न हुआ, और सादोक से अखीम उत्पन्न हुआ, और अखीम से इलीहूद उत्पन्न हुआ।
15 और इलीहूद से एलीआजर उत्पन्न हुआ; और एलीआजर से मत्तान उत्पन्न हुआ; और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ।
16 और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ जो मरियम का पति था, और उससे यीशु उत्पन्न हुआ, जो मसीह कहलाता है।
17 इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ियाँ हुईं; और दाऊद से लेकर बाबुल को बन्दी बनाकर ले जाए जाने तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं; और बन्दी बनाकर बाबुल को ले जाए जाने से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ियाँ हुईं।
18 अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: कि जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उन के इकट्ठे होने के पहिले से वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।
19 तब उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था, और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।
20 जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ, दाऊद की सन्तान, अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।
21 और वह एक पुत्र जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।
22 यह सब इसलिये हुआ, कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो।
23 देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा, जिसका अर्थ है, परमेश्वर हमारे साथ।
24 तब यूसुफ नींद से जाग उठा और प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया।
25 और जब तक वह अपने जेठे पुत्र को न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उस ने उसका नाम यीशु रखा।

अध्याय दो

1 हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आए।
2 कि यहूदियों का राजा जो उत्पन्न हुआ है, कहां है? क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसे प्रणाम करने आए हैं।
3 जब हेरोदेस राजा ने ये बातें सुनीं, तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया।
4 और उसने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठा करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए।
5 उन्होंने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यों लिखा है।
6 और हे यहूदा के देश के बैतलहम, तू यहूदा के हाकिमों में सबसे छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल पर प्रभुता करेगा।
7 तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा, कि तारा किस समय दिखाई दिया था।
8 तब उस ने उन्हें बैतलहम भेजकर कहा, कि जाकर उस बालक को ठीक से ढूंढ़ो; और जब वह मिल जाए, तो मुझे समाचार दो, कि मैं भी आकर उसे प्रणाम करूं।
9 जब उन्होंने राजा की बात सुनी, तो चले गए; और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे आगे चला, और जहां बालक था, उसके ऊपर आकर ठहर गया।
10 जब उन्होंने उस तारे को देखा तो वे बहुत ही आनन्दित हुए।
11 जब वे घर में पहुंचे, तो उस बालक को उस की माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना थैला खोलकर उसे सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।
12 और परमेश्वर ने स्वप्न में उन्हें यह चितौनी दी, कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, तो वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गए।
13 जब वे चले गए, तो देखो, प्रभु का दूत स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहने लगा, उठ, बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस उस बालक को ढूंढ़ने पर है, कि उसे मार डाले।
14 तब वह उठकर बालक और उसकी माता को रात ही रात लेकर मिस्र को चला गया।
15 और हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं रहा, ताकि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो, कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया है।
16 जब हेरोदेस ने देखा कि ज्योतिषियों ने उस पर ठट्ठा किया है, तो वह बहुत क्रोधित हुआ, और उसने लोगों को भेजकर बैतलहम और उसके आस-पास के सब लड़कों को, जो दो वर्ष के वा उस

से छोटे थे, मरवा डाला; यह उस समय के अनुसार हुआ जो उसने ज्योतिषियों से पूछा था।
17 तब यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता का कहा हुआ वचन पूरा हुआ,
18 रामा में एक शब्द सुनाई दिया, विलाप, और रोना, और बड़ा विलाप, राहेल अपने बच्चों के लिए रो रही थी, और उसे शांति नहीं चाहिए थी, क्योंकि वे गए नहीं थे।
19 जब हेरोदेस मर गया, तो देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा।
20 कि उठ, उस बालक और उस की माता को लेकर इस्राएल के देश में चले जाओ; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे वे मर गए हैं।
21 तब वह उठकर बालक और उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया।
22 परन्तु जब उस ने सुना, कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में राज्य कर रहा है, तो वहां जाने से डरा; तौभी स्वप्न में परमेश्वर की ओर से चितौनी पाकर गलील की ओर चला गया।
23 और वह नासरत नाम एक नगर में आकर रहने लगा; ताकि जो वचन भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा, वह पूरा हो।

अध्याय 3

1 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यहूदिया के जंगल में आकर प्रचार करने लगा।
2 और कहा, मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।
3 यह वही है, जिस की चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई, कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो।
4 और वही यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे था; और उसका भोजन टिड्डियाँ और वन मधु था।
5 तब यरूशलेम और सारे यहूदिया और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग निकलकर उसके पास आए।
6 और अपने पापों को मानकर उन्होंने यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।
7 जब उस ने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा लेने के लिये अपने पास आते देखा, तो उन से कहा; हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो?
8 इसलिये मन फिराव के योग्य फल लाओ।
9 और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।
10 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है; इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।
11 मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव के लिये बपतिस्मा देता हूं, पर जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य भी नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
12 उसका फ़रियाद उसके हाथ में है, और वह अपने खलिहान को अच्छी तरह साफ़ करेगा और अपने गेहूं को खलिहान में इकट्ठा करेगा, लेकिन भूसी को वह आग में जला देगा जो बुझने की नहीं।
13 तब यीशु गलील से यरदन नदी के किनारे यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया।
14 परन्तु यूहन्ना ने उसे यह कहकर रोका, कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?
15 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही रहने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है: तब उस ने उसे जाने दिया।
16 और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त जल में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया, और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा।
17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं।

अध्याय 4

1 तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उस की परीक्षा हो।
2 जब वह चालीस दिन, और चालीस रात, उपवास करता रहा, तब अन्त में उसे भूख लगी।
3 जब परखनेवाले ने उसके पास आकर कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं।
4 उस ने उत्तर दिया; लिखा है, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।
5 तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया।
6 और उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
7 यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।
8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर।
9 और उस से कहा, यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो ये सब वस्तुएं मैं तुझे दे दूंगा।
10 तब यीशु ने उससे कहा, हे शैतान, दूर हो जा; क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।
11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, स्वर्गदूत आकर उस की सेवा करने लगे।
12 जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना बन्दीगृह में डाल दिया गया है, तो वह गलील को चला गया।
13 और वह नासरत को छोड़कर कफरनहूम में आकर रहने लगा, जो समुद्र के किनारे, जबूलून और नप्तालीम के देश में है।
14 ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो,
15 अर्थात जबूलून और नप्तालीम का देश, झील के मार्ग से यरदन के पार, अन्यजातियों का गलील;
16 जो लोग अन्धकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी; और जो लोग मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी।

17 उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।
18 और यीशु ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे।
19 और उस ने उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, और मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।
20 और वे तुरन्त अपने जाल छोड़कर उसके पीछे चले गए।
21 वहां से आगे बढ़कर उस ने और दो भाइयों अर्थात जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया।
22 वे तुरन्त जहाज और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे चले गए।
23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
24 और उसका यश सारे सूरिया में फैल गया, और लोग सब बीमारों को जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों से ग्रस्त थे, और जो दुष्टात्माओं और पागलों और झोले के रोगियों को उसके पास लाए, और उस ने उन्हें चंगा किया।
25 और गलील, दिकापुलिस, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

अध्याय 5

1 वह भीड़ को देखकर पहाड़ पर चढ़ गया, और जब बैठा तो उसके चेले उसके पास आए।
2 फिर वह अपना मुंह खोलकर उन्हें उपदेश देने लगा,
3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएंगे।
5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
6 धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे।
7 धन्य हैं वे, जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
9 धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
10 धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था।
13 तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए, और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
14 तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा है, वह छिप नहीं सकता।
15 और लोग दीया जलाकर उसे पैमाने के नीचे नहीं, परन्तु दीवट पर रखते हैं; तब उस से घर के सभों को प्रकाश मिलता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।
17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ; लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ।
18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।
19 इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़ेगा, और वैसा ही लोगों को सिखाएगा, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।
20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं; कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।
21 तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल में कहा गया था, कि हत्या न करना; और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।
22 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर अकारण क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई से कहेगा, निकम्मा, वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहेगा, मूर्ख, वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।
23 इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तुझे स्मरण आए, कि मेरे भाई के मन में मेरे विरुद्ध कुछ है,
24 अपनी भेंट वहीं वेदी के साम्हने छोड़ दे, और जाकर पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर, तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।
25 जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग में हो, तब तक उस से झटपट मेल कर ले; कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायी को सौंप दे, और न्यायी तुझे सिपाही को सौंप दे, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए।
26 मैं तुझ से सच कहता हूं; जब तक तू पूरा पैसा न चुका दे, तब तक वहां से कभी न छूटने पाएगा।
27 तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल में कहा गया था, कि व्यभिचार न करना।
28 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।
29 यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
30 यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
31 यह कहा गया है, कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे, वह उसे त्यागपत्र दे।
32 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को छोड़ दे, वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई से विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है।

33 फिर तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, कि अपनी शपथ न छोड़ना, परन्तु यहोवा के लिये अपनी शपथ पूरी करना।
34 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना; न स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है।
35 न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है।
36 और न अपने सिर की शपथ खाना, क्योंकि तू एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं कर सकता।
37 परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है।
38 तुम सुन चुके हो कि कहा गया है, कि आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।
39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं; कि बुराई का सामना न करो; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।
40 और यदि कोई तुझ पर मुकदमा करके तेरा कुरता छीनना चाहे, तो उसे अपना बागा भी ले लेने दे।
41 और जो कोई तुझे एक मील चलने को विवश करे, उसके साथ दो मील चला जा।
42 जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़।
43 तुम सुन चुके हो कि कहा गया है, कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने शत्रु से घृणा करना।
44 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो: जो तुम्हें शाप दें, उन्हें आशीर्वाद दो: जो तुम से बैर करें, उनका भला करो: और जो तुम्हारा अपमान करें और सताएँ, उनके लिये प्रार्थना करो।
45 कि तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरो, क्योंकि वह अच्छे और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।
46 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हें क्या फल मिलेगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते?
47 और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या चुंगी लेनेवाले भी ऐसा नहीं करते?
48 इसलिये तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।

अध्याय 6

1 सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने दान न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।
2 इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी लोग सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।
3 परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायां हाथ न जानने पाए।
4 ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
5 और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं और सड़कों के कोनों में खड़े होकर प्रार्थना करना उन्हें अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।
6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
7 परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तो अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी।
8 इसलिये तुम उन जैसे न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यकता है।
9 इसलिये तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
10 तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
12 और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य, और पराक्रम, और महिमा युगानुयुग तेरे ही हैं। आमीन।
14 क्योंकि यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।
15 यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।
16 और जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान मुंह न मोड़ो, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।
17 परन्तु जब तू उपवास करे, तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो;
18 ताकि लोग न जानें कि तू उपवास करता है, परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई उसे बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध लगाकर चुरा लेते हैं।
20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
21 क्योंकि जहां तेरा धन है, वहीं तेरा मन भी रहेगा।
22 शरीर का दीया तेरी आंख है; इसलिये यदि तेरी आंख एक ही हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा।
23 परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धकारमय होगा। सो यदि वह उजियाला जो तुझ में है अन्धकारमय हो, तो वह अन्धकार कितना बड़ा होगा!
24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
25 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे या क्या पीएंगे; और न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?

26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक अच्छे नहीं हो?
27 तुम में ऐसा कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?
28 और तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते हैं, न कातते हैं।
29 तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था।
30 इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, क्या वह तुम्हें अधिक न पहनाएगा?
31 इसलिये तुम यह चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?
32 (क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं) और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।
33 इसलिये पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।
34 इसलिये कल की चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन आप ही अपनी चिन्ता कर लेगा: आज के लिये तो आज ही की बुराई बहुत है।

अध्याय 7

1 दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।
2 क्योंकि जिस प्रकार तुम न्याय करते हो, उसी प्रकार तुम पर भी न्याय किया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।
3 तू क्यों अपने भाई की आंख का तिनका देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?
4 या जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं?
5 हे कपटी, पहले अपनी आंख से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा।
6 पवित्र वस्तु कुत्तों को मत दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो, ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें, और फिर पलटकर तुम्हें भी फाड़ डालें।
7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।
9 या तुम में ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे?
10 या मछली मांगे तो क्या उसे साँप देंगे?
11 सो जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?
12 इसलिये जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।
13 सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से लोग हैं जो उस से प्रवेश करते हैं।
14 क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।
15 झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं।
16 तुम उन्हें उनके फलों से पहचान लोगे। क्या लोग कटीली झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?
17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है; और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।
18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।
19 जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा हुआ और आग में डाला जाता है।
20 इसलिये तुम उन्हें उनके फलों से पहचान लोगे।
21 जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।
22 उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए?
23 तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा, मैं ने तुम को कभी नहीं जाना; हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।
24 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह मैं उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरूंगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं; परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि वह चट्टान पर बनाया गया था।
26 जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान ठहरेगा जिस ने अपना घर रेत पर बनाया।
27 और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं; और वह गिर पड़ा; और उसका पतन बहुत बुरा हुआ।
28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो लोग उसके उपदेश से चकित हुए।
29 क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों की नाईं नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था।

अध्याय 8

1 जब वह पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
2 और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, हे प्रभु, यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।
3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा: और उसका कोढ़ तुरन्त शुद्ध हो गया।
4 यीशु ने उस से कहा, देख, किसी से न कहना; परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और जो भेंट मूसा ने ठहराई है उसे चढ़ा, कि उन के लिये गवाही हो।
5 जब यीशु कफरनहूम में आया, तो एक सूबेदार उसके पास आकर उस से बिनती करने लगा।

6 और कहा, हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा हुआ बहुत व्याकुल पड़ा है।
7 यीशु ने उस से कहा, मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए; परन्तु केवल वचन कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं; और जब किसी से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और किसी से कहता हूं, आ, तो आता है; और अपने किसी दास से कहता हूं, यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और अपने पीछे आनेवालों से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
11 और मैं तुम से कहता हूं, कि बहुत से लोग पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।
12 परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अन्धकार में डाल दिए जाएंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा।
13 यीशु ने सूबेदार से कहा, चला जा; और जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।
14 जब यीशु पतरस के घर में आया, तो उस ने उस की सास को ज्वर में पड़ी हुई देखा।
15 तब उस ने उसका हाथ छूआ, और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उनकी सेवा करने लगी।
16 जब सांझ हुई तो लोग बहुत से लोगों को जो दुष्टात्माओं के थे उसके पास लाए और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।
17 ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।
18 जब यीशु ने अपने चारों ओर बड़ी भीड़ देखी तो उस ने उस पार जाने की आज्ञा दी।
19 और एक शास्त्री ने उसके पास आकर कहा, हे गुरू, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे चलूंगा।
20 यीशु ने उस से कहा; लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।
21 उसके चेलों में से एक और ने उस से कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को दफना दूं।
22 यीशु ने उस से कहा, मेरे पीछे आओ; और मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दो।
23 जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
24 और देखो, झील में एक बड़ा तूफान उठा, यहां तक कि नाव लहरों से डूबने लगी; और वह सो रहा था।
25 तब उसके चेलों ने उसके पास आकर उसे जगाया और कहा; हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।
26 तब उस ने उन से कहा, हे अल्पविश्वासियो, तुम क्यों डरते हो? तब उस ने उठकर आँधी और पानी को डांटा, और बड़ा शान्त हो गया।
27 परन्तु लोग अचम्भा करके कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं!
28 जब वह उस पार गरेसेनियों के देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्माएं थीं, कब्रों से निकलकर उसे मिले। वे बहुत ही डरपोक थे, यहां तक कि कोई उस मार्ग से जा भी नहीं सकता था।
29 और देखो, वे चिल्लाकर कहने लगे; हे परमेश्वर के पुत्र यीशु, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दु:ख देने यहां आया है?
30 और उनसे काफी दूर पर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था।
31 तब दुष्टात्माओं ने उस से बिनती करके कहा, यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे।
32 तब उसने उनसे कहा, जाओ। और जब वे निकलकर सूअरों के झुण्ड में गए, तो क्या देखा कि सूअरों का सारा झुण्ड कड़ाड़े से नीचे झील में झपटकर मर गया।
33 तब उनके रक्षक भागकर नगर में गए, और सारा हाल और सारा हाल उन दुष्टात्माओं से कह सुनाया।
34 और देखो, सारा नगर यीशु से भेंट करने को निकल आया, और उसे देखकर उस से बिनती करने लगा, कि हमारे सिवाने से चला जा।

अध्याय 9

1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार चला गया, और अपने नगर में आया।
2 और देखो, लोग एक लकवे के रोगी को खाट पर पड़े हुए उसके पास लाए, और यीशु ने उन का विश्वास देखकर, उस लकवे के रोगी से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए।
3 और देखो, कुछ शास्त्री अपने मन में कहने लगे, यह मनुष्य परमेश्वर की निन्दा करता है।
4 यीशु ने उन के मन की बातें जानकर कहा; तुम अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?
5 क्योंकि क्या अधिक सहज है, यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ और चल फिर?
6 परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा) , उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
7 तब वह उठकर अपने घर चला गया।
8 जब लोगों ने यह देखा, तो अचम्भा किया और परमेश्वर की महिमा की जिस ने मनुष्यों को ऐसी सामर्थ दी है।
9 जब यीशु वहां से आगे बढ़ रहा था, तो उस ने मत्ती नाम एक मनुष्य को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे आ: तब वह उठकर उसके पीछे हो लिया।
10 जब यीशु घर में भोजन करने बैठा, तो देखो, बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी आकर उसके और उसके चेलों के साथ बैठने लगे।
11 यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा; तुम्हारा गुरु चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?
12 यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, वैद्य भले चंगों के लिए नहीं, परन्तु बीमारों के लिए आवश्यक है।
13 परन्तु तुम जाकर इसका अर्थ सीखो, कि मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं; क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।
14 तब यूहन्ना के चेले उसके पास आकर पूछने लगे; हम और फरीसी तो इतना उपवास क्यों करते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं करते?

15 यीशु ने उन से कहा; क्या वर पक्ष के लोग तब तक शोक कर सकते हैं, जब तक दूल्हा उनके साथ है? परन्तु वे दिन आएंगे, जब दूल्हा उन से अलग कर दिया जाएगा, तब वे उपवास करेंगे।
16 कोई भी मनुष्य पुराने वस्त्र पर नये कपड़े का टुकड़ा नहीं लगाता, क्योंकि जो कपड़ा उसमें भरा जाता है, वह वस्त्र को और अधिक फाड़ देता है।
17 और लोग नये दाखरस को पुरानी मशकों में नहीं भरते, नहीं तो मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है, और मशकें नाश हो जाती हैं; परन्तु नये दाखरस को नई मशकों में भरते हैं, और वे दोनों सुरक्षित रहती हैं।
18 वह उनसे ये बातें कह ही रहा था, कि एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, मेरी बेटी अभी मरी है; परन्तु तू चलकर उस पर हाथ रख, तो वह जीवित हो जाएगी।
19 तब यीशु उठकर उसके पीछे हो लिया, और उसके चेले भी उसके पीछे हो लिये।
20 और देखो, एक स्त्री जो बारह वर्ष से रक्तस्राव से पीड़ित थी, उसके पीछे से आई और उसके वस्त्र के छोर को छू लिया।
21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।
22 यीशु ने फिरकर उसे देखा और कहा, " बेटी, हिम्मत रख; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।" और वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
23 जब यीशु सरदार के घर में आया और उसने बाजेवालों और लोगों को शोर मचाते देखा।
24 उसने उनसे कहा, " जगह दो, क्योंकि लड़की मरी नहीं, बल्कि सो रही है।" तब उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया।
25 परन्तु जब लोग बाहर निकाल दिए गए, तब उस ने भीतर जाकर उसका हाथ पकड़ा, और वह दासी उठ खड़ी हुई।
26 और इसकी चर्चा उस सारे देश में फैल गई।
27 जब यीशु वहाँ से चला गया, तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए गए, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
28 जब वह घर में आया, तो वे अंधे उसके पास आए और यीशु ने उनसे कहा, क्या तुम विश्वास करते हो, कि मैं यह कर सकता हूं? उन्होंने उससे कहा, हां, प्रभु।
29 तब उस ने उन की आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।
30 तब उन की आंखें खुल गईं, और यीशु ने उन्हें चिताया, कि सावधान रहो, कोई इसे न जानने पाए।
31 परन्तु जब वे चले गए, तो उस की कीर्ति उस सारे देश में फैल गई।
32 जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, वे एक गूंगे मनुष्य को, जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए।
33 जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा; और लोग अचम्भा करके कहने लगे, कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।
34 परन्तु फरीसियों ने कहा, वह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।
35 यीशु सब नगरों और गाँवों में घूमता रहा और उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
36 परन्तु जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को उन पर तरस आया, क्योंकि वे मूर्च्छित होकर उन भेड़ों के समान जिनका कोई चरवाहा न हो, तितर-बितर हो गए थे।
37 तब उस ने अपने चेलों से कहा; पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।
38 इसलिये खेत के स्वामी से प्रार्थना करो, कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।

अध्याय 10

1 और उस ने अपने बारह चेलों को बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें, और सब प्रकार की बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर करें।
2 अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहला, शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास, और जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना।
3 फिलिप्पुस और बरतुलमै, थोमा और चुंगी लेनेवाला मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब और लब्बेई जो तद्दै कहलाता है।
4 शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वाया।
5 इन बारह को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा, कि अन्यजातियों के मार्ग में न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना।
6 परन्तु इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ।
7 और चलते चलते यह प्रचार कर कहो, कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
8 बीमारों को चंगा करो, कोढ़ियों को शुद्ध करो, मरे हुओं को जिलाओ, दुष्टात्माओं को निकालो; तुम्हें मुफ़्त मिला है, मुफ़्त दो।
9 अपने बटुए में न तो सोना, न चाँदी, न पीतल रखना।
10 मार्ग के लिये न तो झोला लो, न दो कुरते, न जूते, न लाठी; क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए।
11 और जिस किसी नगर या गांव में जाओ, तो पूछो कि वहां कौन योग्य है, और जब तक वहां से प्रस्थान न करो, उसी के यहां रहो।
12 और जब तुम किसी घर में प्रवेश करो तो उसे सलाम करना।
13 और यदि वह घराना योग्य हो, तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे; और यदि वह योग्य न हो, तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आए।
14 और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या नगर से निकलते समय अपने पांवों की धूल झाड़ डालो।
15 मैं तुम से सच कहता हूं, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
16 देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं; इसलिये सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो।
17 परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो, क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे, और अपनी सभाओं में तुम्हें कोड़े मारेंगे।
18 और तुम मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाही के लिये खड़े किये जाओगे।
19 परन्तु जब वे तुम्हें पकड़वाएंगे तो चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या बोलेंगे; क्योंकि जो कुछ तुम्हें बोलना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा।
20 क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है।
21 भाई अपने भाई को और पिता अपने बेटे को मृत्यु दण्ड के लिये सौंपेंगे, और बच्चे अपने माता-पिता के विरुद्ध उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।

22 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
23 परन्तु जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे नगर में भाग जाना; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक मनुष्य का पुत्र न आए, तब तक तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर सकोगे।
24 चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, न ही नौकर अपने स्वामी से बड़ा।
25 चेले का अपने स्वामी के समान, और दास का अपने स्वामी के समान होना ही बहुत है। यदि उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा, तो उसके घराने के लोगों को क्यों न कहेंगे?
26 इसलिये उन से मत डरो, क्योंकि कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।
27 जो मैं तुम से अन्धकार में कहता हूं, उसे उजाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे कोठों पर से प्रचार करो।
28 जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरो; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।
29 क्या पैसे भर की दो गौरैयां नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती।
30 परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं।
31 इसलिये डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।
32 जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा।
33 परन्तु जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा।
34 यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूँ; मैं शांति लाने नहीं, परन्तु तलवार चलवाने आया हूँ।
35 क्योंकि मैं आया हूँ कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ।
36 और मनुष्य के शत्रु उसके अपने घराने के ही लोग होंगे।
37 जो अपने पिता या माता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो अपने बेटे या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।
38 और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न आए, वह मेरे योग्य नहीं।
39 जो अपना प्राण बचाता है, वह उसे खो देगा; और जो मेरे लिये अपना प्राण खो देता है, वह उसे पा लेगा।
40 जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।
41 जो कोई भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता के नाम से ग्रहण करता है, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और जो कोई धर्मी को धर्मी के नाम से ग्रहण करता है, वह धर्मी का बदला पाएगा।
42 जो कोई इन छोटों में से किसी एक को केवल चेला जानकर एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा।

अध्याय 11

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने के लिये वहां से चला गया।
2 जब यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों की चर्चा सुनी तो अपने चेलों में से दो को भेजा।
3 और उस से पूछा; क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें?
4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि जो बातें तुम सुनते और देखते हो, वे सब जाकर यूहन्ना को बताओ।
5 अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।
6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।
7 जब वे चले गए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?
8 परन्तु तुम क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल वस्त्र पहिने हुए हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।
9 परन्तु तुम क्या देखने गए थे? किसी भविष्यद्वक्ता को? हां, मैं तुम से कहता हूं, वरन किसी भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को।
10 क्योंकि यह वही है, जिसके विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।
11 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से भी बड़ा है।
12 और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से लेकर अब तक स्वर्ग के राज्य पर बलपूर्वक आक्रमण होता रहा है, और बलवा करनेवाले उसे छीन लेते हैं।
13 क्योंकि यूहन्ना तक सब भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे।
14 और यदि तुम मानो तो जान लो कि यह एलिय्याह है, जो आनेवाला था।
15 जिसके पास सुनने के कान हों वह सुन ले।
16 परन्तु मैं इस पीढ़ी की तुलना किस से करूं? यह उन बालकों के समान है जो बाजारों में बैठे हुए अपने भाइयों से पुकारकर कहते हैं,
17 और कहा, हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया, और तुम ने विलाप न किया।
18 क्योंकि यूहन्ना न खाता आया, न पीता, और वे कहते हैं, कि उस में दुष्टात्मा है।
19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं, देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य है, वह चुंगी लेनेवालों और पापियों का मित्र है। परन्तु ज्ञान अपनी सन्तानों से सिद्ध होता है।
20 तब उसने उन नगरों को डांटना आरम्भ किया, जिनमें उसके अधिकाँश सामर्थ्य के काम किए गए थे, क्योंकि उन्होंने मन न फिराया था।
21 हे खुराजीन, हाय तुझ पर! हे बैतसैदा, हाय तुझ पर! जो सामर्थ्य के काम तुझ में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो वे कब के टाट ओढ़कर और राख में बैठकर मन फिरा लेते।
22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
23 और हे कफरनहूम, तू जो स्वर्ग तक ऊंचा किया गया है, अधोलोक में उतारा जाएगा; क्योंकि जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि वे सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।

24 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
25 उस समय यीशु ने उत्तर दिया, कि हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
26 हे पिता, ऐसा ही हो, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।
27 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र, और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।
28 हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।
30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।

अध्याय 12

1 उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी तो वे बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे।
2 यह देखकर फरीसियों ने उससे कहा, देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।
3 उस ने उन से कहा; क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए, क्या किया?
4 वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को, परन्तु केवल याजकों को उचित था?
5 क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन को अपवित्र करते हैं, परन्तु निर्दोष ठहरते हैं?
6 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि यहां वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है।
7 परन्तु यदि तुम इसका अर्थ जानते, कि मैं दया से प्रसन्न होता हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते।
8 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।
9 फिर वह वहाँ से विदा होकर उन की आराधनालय में गया।
10 और देखो, वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था। तब उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा, क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है?
11 उस ने उन से कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिस की एक भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर बाहर न निकाले?
12 तो फिर मनुष्य भेड़ से कितना अच्छा है? इसलिये सब्त के दिन भलाई करना उचित है।
13 तब उस ने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ आगे बढ़ा: और उस ने बढ़ाया, और वह दूसरे हाथ के समान अच्छा हो गया।
14 तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें।
15 यह जानकर यीशु वहां से चला गया, और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस ने सब को चंगा किया।
16 और उन्हें चिताया, कि उसे प्रगट न करो।
17 ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो,
18 देखो, मेरा दास, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है; मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा, और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा।
19 वह न झगड़ा करेगा, न चिल्लाएगा; न सड़कों में कोई उसका शब्द सुनेगा।
20 वह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा, और धूआं देती हुई सन को न बुझाएगा, जब तक न्याय को विजय के लिये आगे न बढ़ाए।
21 और अन्यजाति उसके नाम पर भरोसा रखेंगे।
22 तब लोग एक अन्धे और गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए और उस ने उसे अच्छा किया; और अन्धा और गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 तब सब लोग चकित होकर कहने लगे, क्या यह दाऊद का पुत्र नहीं है?
24 यह सुनकर फरीसियों ने कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
25 यीशु ने उनके विचार जानकर उनसे कहा; हर एक राज्य जिसमें फूट होती है, उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा।
26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?
27 और यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारी सन्तान किस की सहायता से निकालती है? इसलिये वे ही तुम्हारा न्यायी ठहरेंगे।
28 परन्तु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
29 नहीं तो कोई कैसे किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बाँध ले? तब उसका घर लूट लिया जाएगा।
30 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरुद्ध है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।
31 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी।
32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा।
33 या तो पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; या फिर पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है।
34 हे सांप के बच्चों, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है।
35 भला मनुष्य अपने मन के अच्छे भण्डार से अच्छी बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।
36 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।
37 क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों के कारण दोषी ठहराया जाएगा।
38 तब कई शास्त्रियों और फरीसियों ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, हम तुझ से कोई चिन्ह देखना चाहते हैं।

39 उस ने उनको उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं, पर यूहन्ना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।
40 क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के भीतर रहेगा।
41 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया, और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है।
42 दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।
43 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है, परन्तु उसे नहीं मिलता।
44 तब वह कहता है, मैं अपने उसी घर में जहां से निकला था, लौट जाऊंगा; और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-संवारा पाता है।
45 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है, और वे उस में पैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है। इस दुष्ट पीढ़ी की दशा भी वैसी ही होगी।
46 वह अभी लोगों से बातें कर रहा था, कि देखो, उसकी माता और भाई बाहर खड़े होकर उससे बातें करना चाहते थे।
47 तब किसी ने उस से कहा, देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।
48 उस ने अपने बतानेवाले को उत्तर दिया, कि कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?
49 और उस ने अपने चेलों की ओर हाथ बढ़ाकर कहा, देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं!
50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है।

अध्याय 13

1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा।
2 और उसके पास इतनी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, कि वह नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।
3 और वह उनसे दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहने लगा, कि देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला।
4 जब वह बो रहा था, तो कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षी आकर उन्हें चुग गए।
5 कुछ तो पथरीली भूमि पर गिरे, जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे तुरन्त उग आए।
6 और जब सूर्य निकला तो वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए।
7 और कुछ झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा लिया।
8 पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।
9 जिसके कान हों वह सुन ले।
10 तब चेलों ने उसके पास आकर कहा; तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?
11 उस ने उनको उत्तर दिया; क्योंकि तुम्हें स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उन को नहीं।
12 क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।
13 इसलिये मैं उन से दृष्टान्तों में बातें करता हूं, क्योंकि वे देखते हुए भी नहीं देखते; और सुनते हुए भी नहीं सुनते, और न समझते हैं।
14 और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है, कि तुम कानों से तो सुनोगे, परन्तु समझोगे नहीं; और आँखों से तो देखोगे, परन्तु तुम्हें न सूझेगा।
15 क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं।
16 परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आंखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं।
17 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनीं।
18 इसलिये तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो।
19 जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो बोया गया था, उसे दुष्ट आकर छीन ले जाता है। यह वह है, जो मार्ग के किनारे बोया गया।
20 परन्तु जो पथरीली भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेता है।
21 परन्तु अपने में जड़ न रखनेवाला वह थोड़े ही दिन का है; इसलिये कि जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है।
22 जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, परन्तु इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।
23 परन्तु जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर समझता है, और फल भी लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।
24 उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।
25 परन्तु जब लोग सो रहे थे, तो उसका बैरी आया और गेहूँ के बीच जंगली पौधे बोकर चला गया।
26 परन्तु जब अंकुर फूटकर फल देने लगे, तब जंगली दाने के पौधे भी दिखाई देने लगे।
27 तब गृहस्वामी के सेवकों ने उसके पास आकर कहा, हे प्रभु, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर उसमें जंगली दाने की घास कहां से आई?
28 उस ने उन से कहा, यह किसी शत्रु का काम है। सेवकों ने उस से कहा, क्या तू चाहता है, कि हम जाकर उन्हें इकट्ठा करें?
29 उसने कहा, ऐसा न हो; ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उन के साथ गेहूं भी उखाड़ दो।
30 कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो; और कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूँगा, कि पहिले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गट्ठे बाँध लो; और गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।

31 उस ने एक और दृष्टान्त उनको दिया, कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया।
32 वह सब बीजों में छोटा तो है, परन्तु जब बढ़ जाता है, तो सब साग-पात में बड़ा होता है, और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।
33 उस ने एक और दृष्टान्त उनसे कहा; स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया और होते होते सब आटा खमीर हो गया।
34 ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं; और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था।
35 ताकि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि मैं दृष्टान्त कहने के लिये अपना मुंह खोलूंगा; मैं उन बातों को प्रगट करूंगा जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं।
36 तब यीशु ने भीड़ को विदा किया, और घर में गया; और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा; हमें खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त समझा।
37 उस ने उनको उत्तर दिया, कि जो अच्छा बीज बोता है, वह मनुष्य का पुत्र है;
38 खेत संसार है; अच्छे बीज राज्य के सन्तान हैं; परन्तु जंगली दाने दुष्ट के सन्तान हैं;
39 जिस शत्रु ने उन्हें बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है; और काटने वाले स्वर्गदूत हैं।
40 अतः जैसे जंगली पौधे बटोरकर आग में जला दिए जाते हैं, वैसा ही इस जगत के अन्त में होगा।
41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर खानेवाले और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे;
42 और उन्हें आग की भट्टी में डाल देंगे; वहां रोना और दांत पीसना होगा।
43 तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे। जिसके कान हों वह सुन ले।
44 फिर स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे पाकर मनुष्य उसे छिपा देता है, और मारे आनन्द के जाकर अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लेता है।
45 फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।
46 जब उसको एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे खरीद लिया।
47 फिर स्वर्ग का राज्य उस जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियाँ समेट लीं।
48 जब वह भर गया, तो लोग किनारे पर ले आए, और बैठकर अच्छी-अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा कर लीं, और निकम्मी-निकम्मी फेंक दीं।
49 जगत के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे,
50 और उन्हें आग की भट्टी में डाल देंगे; वहां रोना और दांत पीसना होगा।
51 यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ये सब बातें समझ गए? उन्होंने उस से कहा, हां, प्रभु।
52 तब उस ने उन से कहा; इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य की शिक्षा पाता है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है।
53 जब यीशु ये दृष्टान्त कह चुका, तो वहां से चला गया।
54 और अपने देश में पहुंचकर, वह उन की सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा, कि वे चकित होकर कहने लगे; इस को यह ज्ञान और ये सामर्थ के काम कहां से मिले?
55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? क्या इस की माता का नाम मरियम नहीं? और क्या इसके भाइयों का नाम याकूब, योसेस, शमौन और यहूदा नहीं?
56 और क्या इस की सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? तो फिर इस मनुष्य को ये सब बातें कहां से मिलीं?
57 तब वे उसके कारण ठोकर खा गए: परन्तु यीशु ने उन से कहा, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता।
58 और उनके अविश्वास के कारण उस ने वहां बहुत सामर्थ के काम नहीं किए।

अध्याय 14

1 उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की कीर्ति सुनी।
2 और अपने सेवकों से कहा; यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है; वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसलिये उस से सामर्थ के काम प्रगट होते हैं।
3 क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण यूहन्ना को पकड़कर बाँधा और जेलखाने में डाल दिया था।
4 क्योंकि यूहन्ना ने उस से कहा था, कि उसको रखना तुझे उचित नहीं।
5 जब उस ने उसे मार डालना चाहा, तो लोगों से डरकर मार डाला, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता समझते थे।
6 परन्तु जब हेरोदेस का जन्मदिन मनाया गया, तो हेरोदियास की बेटी ने उनके सामने नृत्य किया, और हेरोदेस को प्रसन्न किया।
7 तब उसने शपथ खाकर उससे वादा किया कि वह जो कुछ माँगेगी, वह उसे देगा।
8 और उस ने अपनी माता की शिक्षा पाकर कहा, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल में मुझे दे दे।
9 तब राजा को दुख हुआ, तौभी शपथ के कारण, और उसके साथ भोजन करने वालों के कारण, उसने आज्ञा दी कि वह उसे दे दिया जाए।
10 और उस ने लोगों को भेजकर बन्दीगृह में यूहन्ना का सिर कटवा दिया।
11 तब लोग उसका सिर एक थाल में रखकर लड़की को दे गए, और वह उसे अपनी मां के पास ले गई।
12 तब उसके चेलों ने आकर उसकी लोथ उठाकर गाड़ दी, और जाकर यीशु को समाचार दिया।
13 जब यीशु ने यह सुना, तो वह वहाँ से नाव पर चढ़कर एक सुनसान जगह को चला गया; और लोग यह सुनकर नगर-नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए।
14 जब यीशु बाहर निकला, तो बड़ी भीड़ देखकर उस को उन पर तरस आया, और उस ने उनके बीमारों को चंगा किया।
15 जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, यह सुनसान जगह है, और समय बहुत हो गया है; लोगों को विदा कर कि वे गावों में जाकर अपने लिये भोजनवस्तु मोल लें।
16 यीशु ने उन से कहा, वे चले न जाएं; तुम ही उन्हें भोजन दो।
17 उन्होंने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं है।

18 उसने कहा, उन्हें मेरे पास ले आओ।
19 तब उस ने भीड़ को घास पर बैठने की आज्ञा दी, और उन पांच रोटियों और दो मछलियां लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और रोटियां तोड़ तोड़कर अपने चेलों को दीं, और चेलों ने भीड़ को।
20 तब सब खाकर तृप्त हो गए, और बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाईं।
21 खाने वालों की संख्या लगभग पाँच हज़ार पुरुष थी, जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी थे।
22 तब यीशु ने तुरन्त अपने चेलों को नाव पर चढ़ने के लिये विवश किया, कि वे उससे पहले उस पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।
23 तब वह भीड़ को विदा करके प्रार्थना करने को एकान्त में पहाड़ पर चला गया; और जब सांझ हुई, तो वह वहां अकेला था।
24 परन्तु अब जहाज समुद्र के बीच में था, और लहरों से डगमगा रहा था, क्योंकि हवा प्रतिकूल थी।
25 और रात के चौथे पहर यीशु झील पर चलते हुए उनके पास आया।
26 जब चेलों ने उसे झील पर चलते देखा, तो घबरा गए और कहने लगे, यह कोई आत्मा है; और डर के मारे चिल्ला उठे।
27 यीशु ने तुरन्त उन से कहा, ढाढ़स बांधो; मैं हूं; डरो मत।
28 पतरस ने उसको उत्तर दिया, कि हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे पानी पर चलकर अपने पास आने की आज्ञा दे।
29 उस ने कहा, आओ: और पतरस नाव से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा।
30 परन्तु जब उस ने प्रचण्ड हवा देखी, तो डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहने लगा, कि हे प्रभु, मुझे बचा।
31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया, और उस से कहा; हे अल्पविश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?
32 जब वे नाव पर चढ़े, तो हवा थम गई।
33 तब नाव पर सवार लोगों ने उसके पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।
34 और जब वे पार हो गए, तो गन्नेसरत देश में पहुंचे।
35 जब उस स्थान के लोगों ने उसके विषय में जाना, तो आस पास के सारे देश में दूत भेजकर सब बीमारों को उसके पास ले आए।
36 और उस से बिनती की, कि वे उसके वस्त्र के आंचल ही को छू लें; और जितनों ने छूआ, वे सब चंगे हो गए।

अध्याय 15

1 तब यरूशलेम के शास्त्री और फरीसी यीशु के पास आकर कहने लगे।
2 तेरे चेले पुरनियों की रीति क्यों टालते हैं? वे रोटी खाते समय हाथ नहीं धोते?
3 उस ने उनको उत्तर दिया; तुम भी अपनी रीतियों से क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?
4 क्योंकि परमेश्वर ने यह आज्ञा दी है, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना; और जो कोई पिता या माता को शाप दे, वह मार डाला जाए।
5 परन्तु तुम कहते हो, कि जो कोई अपने पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ हो सकता था, वह दान है;
6 और अपने पिता और अपनी माता का आदर न करे, तो वह स्वतंत्र हो जाएगा। इस प्रकार तुम ने अपनी रीति से परमेश्वर की आज्ञा को व्यर्थ कर दिया है।
7 हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक की।
8 ये लोग मुंह से तो मेरे समीप आते और होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका मन मुझ से दूर रहता है।
9 परन्तु ये लोग व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।
10 तब उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर कहा, सुनो और समझो।
11 जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
12 तब उसके चेलों ने आकर उससे कहा; क्या तू जानता है कि फरीसी ये बातें सुनकर ठोकर खा गए?
13 उस ने उत्तर दिया, कि जो पौधा मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, वह उखाड़ा जाएगा।
14 उन से दूर रहो, वे अन्धों के अन्धे अगुवे हैं; और यदि अन्धा अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों ही गड़हे में गिर पड़ेंगे।
15 तब पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हमें यह दृष्टान्त समझा दे।
16 यीशु ने कहा; क्या तुम भी अब तक नासमझ हो?
17 क्या तुम अब तक नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह से भीतर जाता है, वह पेट में पड़ता है, और संडास में निकल जाता है?
18 परन्तु जो बातें मुँह से निकलती हैं, वे मन से निकलती हैं, और वही मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।
19 क्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही, निन्दा, मन से ही निकलती हैं।
20 ये ही बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।
21 तब यीशु वहां से चला गया, और सोर और सैदा के देश में चला गया।
22 और देखो, उसी देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी, हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर; मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रही है।
23 परन्तु उस ने उसके उत्तर में एक बात भी न कही: और उसके चेले आकर उस से बिनती करने लगे, कि उसे विदा कर, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती है।
24 उसने उत्तर दिया, कि मैं इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ किसी और के पास नहीं भेजा गया हूं।
25 तब वह उसके पास आई और उसे प्रणाम करके कहने लगी, "हे प्रभु, मेरी सहायता कर।"
26 उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं।
27 उसने कहा, हे प्रभु, यह सच है; तौभी कुत्ते भी उस टुकड़े को खाते हैं जो उनके स्वामियों की मेज से गिरता है।
28 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; जैसा तू चाहती है वैसा ही तेरे लिये हो: और उसकी बेटी उसी घड़ी चंगी हो गई।
29 तब यीशु वहां से चलकर गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया।
30 और भीड़ की भीड़ उसके पास आई, और अपने साथ लंगड़ों, अंधों, गूंगों, टुण्डों और बहुत औरों को लेकर उसके पास आई,

और उन्हें यीशु के पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया।
31 जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलने लगे, टुण्डे चंगे हो गए, लंगड़े चलने लगे, और अन्धे देखने लगे, तो उन्होंने अचम्भा किया; और इस्राएल के परमेश्वर की महिमा की।
32 तब यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाकर कहा, मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा भी नहीं विदा करता, कहीं ऐसा न हो कि वे मार्ग में थक जाएं।
33 तब उसके चेलों ने उस से कहा; हमें जंगल में इतनी रोटी कहां से मिलेगी कि इतनी बड़ी भीड़ तृप्त हो?
34 यीशु ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा, सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां भी।
35 फिर उसने भीड़ को ज़मीन पर बैठने का हुक्म दिया।
36 तब उस ने उन सात रोटियों और मछलियों को लिया, और धन्यवाद करके तोड़ तोड़कर अपने चेलों को देता गया, और चेलों ने लोगों को।
37 तब सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई सात टोकरियाँ उठाईं।
38 और खाने वाले स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर चार हजार पुरुष थे।
39 तब वह भीड़ को विदा करके जहाज पर चढ़कर मगदला के देश में आया।

अध्याय 16

1 तब फरीसी और सदूकियां उसके पास आए, और उस की परीक्षा करने के लिये उस से बिनती करने लगे, कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखाए।
2 उसने उनको उत्तर दिया, कि जब सांझ होती है तो तुम कहते हो, कि मौसम अच्छा होगा; क्योंकि आकाश लाल हो गया है।
3 और भोर को वे कहते हैं, आज मौसम खराब रहेगा, क्योंकि आकाश लाल और धूमिल है। हे कपटियों, तुम आकाश का स्वरूप तो देख सकते हो, परन्तु समयों के चिन्हों को नहीं पहचान सकते?
4 इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते हैं, पर यूहन्ना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा। तब वह उन्हें छोड़कर चला गया।
5 और जब उसके चेले पार पहुंचे तो रोटी लेना भूल गए थे।
6 तब यीशु ने उन से कहा, चौकस रहो, और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहो।
7 तब वे आपस में विचार करने लगे, कि इसका कारण यह है, कि हम ने रोटी नहीं ली।
8 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा; हे अल्पविश्वासियों, तुम आपस में क्यों विचार कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है?
9 क्या तुम अब तक नहीं समझते? और न यह स्मरण करते हो कि उन पांच हजार की पांच रोटी क्या थीं, और न यह कि हमने कितनी टोकरियां उठाई थीं?
10 और न चार हजार की सात रोटियां, और न तुमने कितनी टोकरियां उठाईं?
11 तुम क्यों नहीं समझते कि मैं ने तुम से रोटी के विषय में नहीं कहा, कि फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहो?
12 तब उन को समझ में आया कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, परन्तु फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था।
13 जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आया, तो उस ने अपने चेलों से पूछा; लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
14 उन्होंने कहा, कितने तो कहते हैं, कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है; और कितने एलिय्याह; और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।
15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
17 यीशु ने उसको उत्तर दिया; हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18 और मैं तुझ से यह भी कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इसी पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।
20 तब उस ने अपने चेलों को चिताया, कि किसी से न कहना कि मैं यीशु मसीह हूं।
21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं, और मार डाला जाऊं, और तीसरे दिन जी उठूं।
22 तब पतरस उसे अलग ले जाकर डांटने लगा, कि हे प्रभु, ऐसा न हो; तुझ से ऐसा न होगा।
23 परन्तु उस ने फिरकर पतरस से कहा; हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो; तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातें पर मन लगाता है।
24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?
27 क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।
28 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।

अध्याय 17

1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ लिया, और एकान्त में एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया।

2 और उनके साम्हने उसका रूपान्तरण हुआ, और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति के समान उज्ज्वल हो गया।
3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।
4 तब पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; यदि तू चाहे तो हम यहां तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
5 वह यह कह ही रहा था, कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं; तुम उसकी सुनो।
6 जब चेलों ने यह सुना, तो मुंह के बल गिर पड़े, और बहुत डर गए।
7 तब यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ और कहा; उठो, डरो मत।
8 जब उन्होंने अपनी आँखें उठाईं तो यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।
9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा था, उसकी चर्चा किसी से न करना।
10 तब उसके चेलों ने उस से पूछा; तो फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है?
11 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि सचमुच एलिय्याह पहिले आएगा, और सब कुछ सुधारेगा।
12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह तो आ चुका, और उन्होंने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जो कुछ उन्होंने चाहा उसके साथ किया। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन से दुख उठाएगा।
13 तब चेलों को समझ में आ गया कि वह हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कह रहा है।
14 जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और उसके साम्हने घुटने टेककर कहने लगा।
15 हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर, क्योंकि वह पागल और बहुत दुखी है; वह बार बार आग में और बार बार पानी में गिरता है।
16 और मैं उसे तेरे चेलों के पास लाया, परन्तु वे उसे अच्छा न कर सके।
17 तब यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहता रहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।
18 तब यीशु ने शैतान को डांटा, और वह उसमें से चला गया: और बच्चा उसी घड़ी अच्छा हो गया।
19 तब चेले एकान्त में यीशु के पास आकर कहने लगे, हम उसे क्यों न निकाल सके?
20 यीशु ने उन से कहा; तुम्हारे अविश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे; यहां से सरक कर वहां चला जा; तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अनहोनी न होगी।
21 परन्तु यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।
22 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उनसे कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।
23 और वे उसे मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह जी उठेगा। और वे बहुत दुखी हुए।
24 जब वे कफरनहूम में आए, तो कर लेनेवाले पतरस के पास आकर कहने लगे; क्या तुम्हारा स्वामी कर नहीं देता?
25 उस ने कहा, हां। जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसे रोककर कहा, हे शमौन, तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा किस से महसूल या कर लेते हैं? अपने पुत्रों से या परदेशियों से?
26 पतरस ने उस से कहा, परदेशियों में से। यीशु ने उस से कहा, तो फिर लड़के स्वतंत्र हैं।
27 तौभी, इसलिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहले निकले उसे पकड़ ले; और उसका मुंह खोलने पर तुझे एक सिक्का मिलेगा, उसे लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना।

अध्याय 18

1 उसी समय चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?
2 तब यीशु ने एक बालक को बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया।
3 और कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।
4 जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा बनाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।
5 और जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है।
6 परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होगा कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट लटका दिया जाए, और वह समुद्र की गहराई में डुबा दिया जाए।
7 अपराधों के कारण संसार पर हाय! क्योंकि अपराध अवश्य हैं; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा अपराध होता है!
8 इसलिये यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर फेंक दे; लंगड़ा या टुंडा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए।
9 और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे; काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।
10 सावधान रहो! तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न समझना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उनके स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते रहते हैं।
11 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं का उद्धार करने आया है।
12 तुम क्या सोचते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्नानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूँढ़ेगा?
13 और यदि ऐसा हो कि उसे पा ले, तो मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं, अधिक आनन्दित होगा, जितना कि उस भेड़ के लिये करेगा।
14 ऐसा ही तुम्हारे स्वर्गीय पिता की भी यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नाश हो।
15 यदि तेरा कोई भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे उसका दोष बता; यदि वह तेरी सुन ले, तो तूने अपने भाई को पा लिया।
16 परन्तु यदि वह न सुने, तो और एक दो जनों को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए।

17 यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे; परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और चुंगी लेने वाले के समान जान।
18 मैं तुम से सच कहता हूं; जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में भी बन्धेगा; और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में भी खुलेगा।
19 फिर मैं तुम से कहता हूं; कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये एक मन होकर मांगें, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिये हो जाएगी।
20 क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं वहां मैं उनके बीच में हूं।
21 तब पतरस ने उसके पास आकर कहा; हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?
22 यीशु ने उस से कहा; मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार तक, वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।
23 इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।
24 जब वह हिसाब लगाने लगा, तो एक मनुष्य उसके पास लाया गया, जो उससे दस हजार तोड़े कर्जदार था।
25 परन्तु जब उसके पास कर देने को कुछ न था, तो उसके स्वामी ने आज्ञा दी कि उसे, और उसकी पत्नी, और बच्चों, और जो कुछ उसका है, सब बेच दिया जाए, और कर चुका दिया जाए।
26 तब उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज रख, मैं सब कुछ चुका दूंगा।
27 तब उसके स्वामी को उस दास पर तरस आया, और उसने उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज क्षमा कर दिया।
28 परन्तु जब वह दास बाहर गया, तो उसके संगी दासों में से एक उसे मिला, जो उसका सौ दीनार कर्जदार था; और उस ने उसे पकड़कर उसका गला घोंट दिया, और कहा, जो कुछ तूने उधार लिया है, भर दे।
29 तब उसका संगी दास उसके पांवों पर गिरकर बिनती करने लगा, कि धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।
30 परन्तु उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया, कि जब तक कर्जा भर न दे तब तक के लिये बन्दीगृह में डाल दे।
31 जब उसके संगी दासों ने यह जो हुआ था देखा, तो बहुत दुखी हुए, और जाकर अपने स्वामी को सारा हाल कह सुनाया।
32 तब उसके स्वामी ने उसे बुलाकर कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की थी, सो मैं ने तेरा वह सारा कर्ज क्षमा किया।
33 क्या जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?
34 तब उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह अपना सारा कर्जा भर न दे।
35 इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई के अपराध मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।

अध्याय 19

1 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया, और यहूदिया के देश में यरदन के पार आया।
2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस ने उन्हें वहां चंगा किया।
3 तब फरीसी भी उस की परीक्षा करने के लिये उसके पास आकर कहने लगे, क्या यह उचित है कि हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्याग दे?
4 उस ने उनको उत्तर दिया; क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ में नर और नारी बनाकर कहा।
5 और कहा, इस कारण मनुष्य अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे?
6 इसलिये वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।
7 उन्होंने उस से कहा; फिर मूसा ने क्यों आज्ञा दी, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दो?
8 उस ने उन से कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को त्यागने की आज्ञा दी; परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था।
9 और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है; और जो कोई छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है।
10 उसके चेलों ने उस से कहा; यदि पुरूष का पत्नी के साथ ऐसा ही सम्बन्ध हो, तो विवाह करना अच्छा नहीं।
11 उस ने उन से कहा; सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिन को यह दान दिया गया है।
12 क्योंकि कितने नपुंसक ऐसे हैं, जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कितने नपुंसक ऐसे हैं, जो मनुष्यों के नपुंसक बनाए गए: और कितने नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है: जो उसे ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।
13 तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे, पर चेलों ने उन्हें डांटा।
14 यीशु ने कहा; बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो; क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का है।
15 तब वह उन पर हाथ रखकर वहां से चला गया।
16 और देखो, एक मनुष्य ने उसके पास आकर पूछा; हे उत्तम गुरू, मैं कौन सा अच्छा काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं?
17 उस ने उस से कहा; तू मुझे क्यों अच्छा कहता है? कोई अच्छा नहीं, केवल एक, अर्थात परमेश्वर; परन्तु यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को मान।
18 उस ने उस से कहा; कौन सा? यीशु ने कहा, तू हत्या न करना, तू व्यभिचार न करना, तू चोरी न करना, तू झूठी गवाही न देना।
19 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।
20 जवान ने उस से कहा, ये सब बातें तो मैं लड़कपन से मानता आया हूं; अब मुझ में किस बात की घटी है?
21 यीशु ने उससे कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है, तो जा, जो कुछ तेरा है, बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
22 परन्तु वह जवान यह बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।
23 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।

24 और मैं तुम से फिर कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान का प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
25 यह सुनकर उसके चेले बहुत चकित हुए और कहने लगे, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?
26 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा; मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।
27 तब पतरस ने उसको उत्तर दिया, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं; तो हमें क्या मिलेगा?
28 यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं; कि तुम जो मेरे पीछे हो लिये हो, नई उत्पत्ति में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।
29 और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को मेरे नाम के कारण छोड़ दिया है, उसे सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।
30 परन्तु बहुत से जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे।

अध्याय 20

1 क्योंकि स्वर्ग का राज्य उस गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को रखे।
2 और उसने मजदूरों से एक पैसा प्रतिदिन पर समझौता किया, और उन्हें अपने दाख की बारी में भेज दिया।
3 फिर वह तीसरे पहर के लगभग बाहर निकला और उसने और लोगों को बाजार में बेकार खड़े देखा।
4 और उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक होगा, मैं तुम्हें दूंगा। तब वे चले गए।
5 फिर वह छठे और नौवें घंटे के निकट बाहर गया, और वैसा ही किया।
6 फिर एक घंटे के लगभग वह बाहर गया और औरों को बेकार खड़े पाया, और उनसे कहा; तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार खड़े रहते हो?
7 उन्होंने उस से कहा, इसलिये कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया: उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक हो, वही पाओगे।
8 जब सांझ हुई, तो दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, मजदूरों को बुलाओ, और पिछलों से लेकर पहिलों तक, उन्हें मजदूरी दो।
9 और जो लोग ग्यारहवें घण्टे के लगभग मजदूरी पर लगाए गए थे, जब आए, तो उनमें से प्रत्येक को एक पैसा मिला।
10 परन्तु जब पहिले आए, तो उन्होंने समझा कि हमें अधिक मिलना चाहिए, सो उन्हें भी एक एक पैसा मिला।
11 जब उन्हें यह पत्र मिला तो वे घर के स्वामी पर बुड़बुड़ाने लगे।
12 कि इन पिछलों ने तो एक ही घंटा काम किया है, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया है, जिन्हों ने दिन भर का बोझ और घाम उठाया है।
13 उस ने उन में से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार पर समझौता न किया था?
14 जो कुछ तेरा है, उसे ले, और चला जा; मैं इस पिछले को भी वैसा ही दूंगा जैसा तुझे दिया है।
15 क्या यह उचित नहीं कि मैं अपनी इच्छा से काम लूं? क्या मैं भला हूं, इसलिये तेरी दृष्टि बुरी है?
16 इसी प्रकार जो पिछले हैं, वे पहले होंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम होंगे; क्योंकि बुलाए तो बहुत होंगे, परन्तु चुने हुए थोड़े होंगे।
17 और यीशु यरूशलेम को जा रहा था और मार्ग में बारह चेलों को एकान्त में ले जाकर उनसे कहने लगा।
18 देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मृत्यु दण्ड देंगे।
19 और उसे अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं; और वह तीसरे दिन जी उठेगा।
20 तब जब्दी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों समेत उसके पास आई, और उसे दण्डवत् करके उससे कुछ मांगने लगी।
21 उसने उससे कहा, तू क्या चाहती है? उसने उससे कहा, मेरे ये दोनों पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठें।
22 यीशु ने उत्तर दिया, कि तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो: जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या तुम ले सकते हो? उन्होंने उस से कहा, हम ले सकते हैं।
23 उस ने उन से कहा, तुम मेरे कटोरे में से पीओगे, और जो बपतिस्मा मैं लेनेवाला हूं, उससे तुम भी बपतिस्मा लोगे; पर अपने दाहिने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं; पर जिन के लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया है, उन्हीं को दिया जाएगा।
24 जब दसों चेलों ने यह सुना, तो वे उन दोनों भाइयों पर क्रोधित हुए।
25 यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा; तुम जानते हो कि अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं।
26 परन्तु तुम में ऐसा न हो; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वही तुम्हारा सेवक बने।
27 और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।
28 जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।
29 जब वे यरीहो से चले तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
30 और देखो, दो अंधे सड़क के किनारे बैठे थे, जब उन्होंने सुना कि यीशु जा रहा है, तो चिल्लाकर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"
31 तब लोगों ने उन्हें डांटा, कि उन्हें चुप रहना चाहिए; पर वे और भी चिल्लाकर कहने लगे, कि हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
32 तब यीशु ने खड़े होकर उन्हें बुलाया, और कहा; तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं?
33 उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, यह इसलिये है कि हमारी आंखें खुल जाएं।
34 तब यीशु को उन पर तरस आया, और उसने उनकी आंखें छूईं: और तुरन्त उनकी आंखें खुल गईं, और वे उसके पीछे हो लिए।

अध्याय 21

1 जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास पहुंचे, तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा।
2 और उन से कहा, साम्हने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ एक बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर मेरे पास ले आओ।
3 यदि कोई तुम से कुछ पूछे, तो कहना, कि प्रभु को इन का प्रयोजन है; और वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।
4 यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।
5 सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है, और गदहे पर बैठा हुआ है, और गदही के बच्चे पर बैठा हुआ है।
6 तब चेलों ने जाकर यीशु की आज्ञा के अनुसार किया।
7 तब उन्होंने गदहे और बच्चे को लाकर उन पर अपने कपड़े पहिनाए, और उसे उन पर सवार कर दिया।
8 और बहुत बड़ी भीड़ ने अपने कपड़े मार्ग में बिछा दिए; औरों ने पेड़ों से डालियाँ काट काट कर मार्ग में बिछा दीं।
9 और जो भीड़ आगे आगे जाती थी और पीछे पीछे आती थी, चिल्ला चिल्लाकर कहती थी, कि दाऊद की सन्तान को होशाना! धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है! आकाश में होशाना!
10 जब वह यरूशलेम में आया, तो सारे नगर में हलचल मच गई, और लोग कहने लगे, यह कौन है?
11 तब लोगों ने कहा, यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है।
12 तब यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, बाहर निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतर बेचने वालों की चौकियाँ उलट दीं।
13 और उन से कहा; लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम ने उसे चोरों की खोह बना दिया है।
14 और अन्धे और लंगड़े मन्दिर में उसके पास आए, और उस ने उन्हें चंगा किया।
15 जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्‌भुत कामों को जो उस ने किए थे, और लड़कों को मन्दिर में यह चिल्लाते और कहते देखा, कि दाऊद की सन्तान को होशाना, तो वे बहुत क्रोधित हुए।
16 और उस से कहा, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं? यीशु ने उन से कहा, हां, क्या तुम ने कभी यह नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध की?
17 तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया, और वहीं रात बिताई।
18 भोर को जब वह नगर में लौट रहा था, तो उसे भूख लगी।
19 और जब उसने मार्ग में एक अंजीर का पेड़ देखा, तब उसके पास गया, और उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ न पाकर उससे कहा, अब से तुझ पर कभी कोई फल न उगने पाए। और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया।
20 यह देखकर चेलों ने अचम्भा करके कहा, यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया!
21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम विश्वास रखो, और सन्देह न करो, तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया, परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहो, कि उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, तो ऐसा हो जाएगा।
22 और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम्हें मिलेगा।
23 जब वह मन्दिर में उपदेश दे रहा था, तो महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस अधिकार से करता है? और यह अधिकार तुझे किसने दिया है?
24 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।
25 यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से? तब वे आपस में विचार करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हम से कहेगा; फिर तुम ने उस पर विश्वास क्यों न किया?
26 परन्तु यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से, तो हमें लोगों से डर लगता है; क्योंकि सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता जानते हैं।
27 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते: उस ने उन से कहा, मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।
28 परन्तु तुम क्या सोचते हो? किसी मनुष्य के दो बेटे थे: उस ने बड़े के पास आकर कहा; हे बेटा, आज मेरे दाख की बारी में काम कर।
29 उसने उत्तर दिया, कि मैं नहीं जाऊंगा; परन्तु बाद में पछताकर चला गया।
30 फिर उस ने दूसरे के पास जाकर भी ऐसा ही कहा। उस ने उत्तर दिया, कि मैं जाता हूं, श्रीमान्; पर वह न गया।
31 उन दोनों में से किस ने अपने पिता की इच्छा पूरी की? उन्होंने उस से कहा, पहिले ने। यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि चुंगी लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं।
32 क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उस पर विश्वास न किया; पर चुंगी लेनेवालों और वेश्याओं ने उस पर विश्वास किया; और तुम यह देखकर भी पीछे न पछताए कि उस पर विश्वास कर सको।
33 एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ था, जिस ने दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बांधा, उस में रस का कुंड खोदा, गुम्मट बनाया, और उसका ठेका किसानों को दिया; और परदेश चला गया।
34 जब फल का समय निकट आया, तो उस ने अपने दासों को किसानों के पास भेजा कि वे उसका फल लें।
35 तब किसानों ने उसके दासों को पकड़ कर, किसी को पीटा, किसी को मार डाला, और किसी को पत्थरवाह किया।
36 फिर उस ने और सेवकों को भेजा, जो पहिलों से अधिक थे, और उन्होंने भी उनके साथ वैसा ही किया।
37 अन्त में उस ने अपने पुत्र को उनके पास यह कह कर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।
38 परन्तु जब किसानों ने बेटे को देखा, तो आपस में कहा, यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, और उसकी मीरास हड़प लें।
39 तब उन्होंने उसे पकड़ लिया, और दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला।
40 सो जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?

41 उन्होंने उस से कहा, वह उन दुष्टों को बुरी रीति से नाश करेगा, और अपनी दाख की बारी का ठेका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।
42 यीशु ने उन से कहा; क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया: यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारी दृष्टि में अद्‌भुत है?
43 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल उत्पन्न करे, दिया जाएगा।
44 और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; और जिस पर वह गिरेगा, उसे पीस डालेगा।
45 जब महायाजकों और फरीसियों ने उसके दृष्टान्त सुने, तो समझ लिया कि वह हमारे विषय में कहता है।
46 परन्तु जब उन्होंने उस पर हाथ डालना चाहा, तो भीड़ से डर गए, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता समझते थे।

अध्याय 22

1 यीशु ने फिर दृष्टान्तों में उन से कहा।
2 स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का विवाह रचाया।
3 और उसने अपने सेवकों को भेजा, कि निमन्त्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाएं; परन्तु उन्होंने आना न चाहा।
4 फिर उसने और दासों को यह कह कर भेजा, कि नेवताहारियों से कहो, कि देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूँ; मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं, और सब कुछ तैयार है; इसलिये विवाह के भोज में आओ।
5 परन्तु उन्होंने इसकी परवाह न की, और चले गए; कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को।
6 और बचे हुओं ने उसके सेवकों को पकड़ लिया, और उनका बुरा भला करके उन्हें मार डाला।
7 जब राजा को यह बात पता चली, तो वह क्रोधित हुआ, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नष्ट कर दिया, और उनके नगर को फूंक दिया।
8 तब उस ने अपने दासों से कहा, ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु जो बुलाए गए थे, वे योग्य न ठहरे।
9 इसलिये तुम सड़कों पर जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें, उन्हें विवाह के भोज में बुला लाओ।
10 तब उन सेवकों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या अच्छे, जितने मिले, सब को इकट्ठा किया; और विवाह का भोज अतिथियों से भर दिया गया।
11 जब राजा अतिथियों को देखने के लिये भीतर आया, तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो विवाह का वस्त्र नहीं पहिने था।
12 उस ने उस से पूछा, हे मित्र, तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्योंआया? वह चुप रह गया।
13 तब राजा ने सेवकों से कहा, उसके हाथ पांव बान्धकर उसे ले जाकर बाहर अन्धियारे में डाल दो; वहां रोना और दांत पीसना होगा।
14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।
15 तब फरीसी जाकर विचार करने लगे कि किस प्रकार उसे बातों में उलझाएं।
16 तब उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है; और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर कुछ नहीं सोचता।
17 इसलिये हमें बता, तू क्या समझता है? क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?
18 यीशु ने उन की दुष्टता जानकर कहा; हे कपटियों, मुझे क्यों परखते हो?
19 कर का पैसा मुझे दिखाओ: वे उसके पास एक दीनार ले आए।
20 तब उस ने उन से पूछा; यह मूर्ति और नाम किस का है?
21 उन्होंने उस से कहा, कैसर का: तब उस ने उन से कहा; जो कैसर का है, वह कैसर को दो; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।
22 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए।
23 उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर पूछने लगे।
24 कि हे गुरू, मूसा ने कहा था, कि यदि कोई मनुष्य बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी से विवाह करके अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करे।
25 अब हमारे यहां सात भाई थे: पहला भाई ब्याह करके मर गया, और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड़ गया।
26 इसी प्रकार दूसरे, तीसरे, और सातवें तक उनके साथ भी ऐसा ही हुआ।
27 और सब के बाद वह स्त्री भी मर गई।
28 सो जी उठने पर वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी है।
29 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते; इसलिये भूल में पड़े हो।
30 क्योंकि जी उठने पर वे शादी-ब्याह नहीं करेंगे, बल्कि स्वर्ग में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के समान होंगे।
31 परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने वह वचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा था।
32 क्या मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं? परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।
33 जब लोगों ने यह सुना तो वे उसके उपदेश से चकित हुए।
34 जब फरीसियों ने सुना कि उस ने सदूकियों को चुप करा दिया है, तो वे इकट्ठे हुए।
35 तब उन में से एक व्यवस्थापक ने उस की परीक्षा करने के लिये पूछा।
36 हे गुरू, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?
37 यीशु ने उससे कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।
38 यह मुख्य और बड़ी आज्ञा है।
39 और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
40 ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।
41 जब फरीसी इकट्ठे हुए तो यीशु ने उनसे पूछा।

42 उन्होंने उस से कहा, मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस का पुत्र है? उन्होंने उस से कहा, दाऊद का पुत्र।
43 उस ने उन से पूछा; तो फिर दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?
44 यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न कर दूं?
45 यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?
46 और कोई भी उसके उत्तर में एक बात न कह सका, और उस दिन के बाद किसी को उस से फिर कोई प्रश्न पूछने का साहस न हुआ।

अध्याय 23

1 तब यीशु ने भीड़ और अपने चेलों से कहा।
2 कि शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।
3 इसलिये जो कुछ वे तुम से कहने को कहें, वही करो, परन्तु उनके से काम मत करो; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।
4 क्योंकि वे भारी और कष्टसाध्य बोझों को बान्धकर मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उँगली से भी नहीं हिलाते।
5 परन्तु वे अपने सब काम मनुष्यों को दिखाने के लिये करते हैं; वे अपने तावीज़ों को चौड़ा करते और अपने वस्त्रों के किनारे लम्बे करते हैं,
6 और जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें और आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन प्रिय हों।
7 और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य से रब्बी, हे रब्बी कहलाना।
8 परन्तु तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही प्रभु है, अर्थात मसीह: और तुम सब भाई हो।
9 और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।
10 और न स्वामी कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह।
11 परन्तु जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।
12 जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।
13 परन्तु हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के लिये स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो स्वयं ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो।
14 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो: इसलिये तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा।
15 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।
16 हे अन्धे अगुवों, तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं; परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की शपथ खाए तो बन्ध जाएगा।
17 हे मूर्खो और अंधों, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है?
18 और यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, उसकी जो शपथ खाए, वह दोषी ठहरेगा।
19 हे मूर्खो और अंधों, कौन बड़ा है: भेंट या वेदी जिस से भेंट पवित्र होती है?
20 इसलिये जो कोई वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी और उस पर की सब वस्तुओं की भी शपथ खाता है।
21 और जो कोई मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उसमें रहने वाले की भी शपथ खाता है।
22 और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है।
23 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातें अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और इन्हें भी न छोड़ते।
24 हे अन्धे अगुवों, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो।
25 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और उच्छृंखलता से भरे हुए हैं।
26 हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों।
27 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।
28 वैसे ही तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।
29 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते और धर्मियों की कब्रें सजाते हो।
30 और कहो, कि यदि हम अपने बापदादों के दिनों में होते, तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उन के साथ भागीदार न होते।
31 इस कारण तुम अपने गवाह हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के मार डालनेवालों की सन्तान हो।
32 तो फिर अपने पुरखाओं का घड़ा भर दो।
33 हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?
34 इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं; और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में सताओगे।
35 कि धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला, सारे धर्मियों का खून पृथ्वी पर बहाया गया है, सब का दोष तुम्हारे सिर पर पड़े।
36 मैं तुम से सच कहता हूं, कि ये सब बातें इस पीढ़ी पर आ पड़ेंगी।
37 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए हैं, उन्हें पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैं ने यह चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा करूं, पर तुम ने यह न चाहा।
38 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।

39 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।

अध्याय 24

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसके पास आए कि उसे मन्दिर की रचना दिखाएं।
2 यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ये सब बातें नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूं, कि यहां पत्थर पर पत्थर भी न बचा रहेगा, जो ढाया न जाएगा।
3 जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने उसके पास आकर अकेले में पूछा, "हमें बता कि ये बातें कब होंगी और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"
4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि सावधान रहो! कोई तुम्हें धोखा न देने पाए।
5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं, और बहुतों को भरमाएंगे।
6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे, देखो घबरा न जाना क्योंकि इन सब बातों का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे।
8 ये सब बातें दुखों का आरम्भ हैं।
9 तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे।
10 तब बहुत से लोग ठोकर खाएंगे, एक दूसरे को पकड़वाएंगे, एक दूसरे से बैर रखेंगे।
11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।
12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।
15 जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को, जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो कोई पढ़े, वह समझे)।
16 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।
17 जो कोठे पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को न उतरे।
18 और जो खेत में हो, वह अपने कपड़े लेने को न लौटे।
19 उन दिनों में जो गर्भवती होंगी और जो दूध पिलायेंगी, उनके लिये हाय!
20 परन्तु प्रार्थना करो, कि तुम्हारा भागना शीतकाल में न हो, न सब्त के दिन।
21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा।
22 और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।
23 उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां है! या वहां है! तो विश्वास न करना।
24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।
25 देखो, मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ।
26 इसलिये यदि वे तुम से कहें, कि देखो, वह जंगल में है; तो बाहर न निकल जाना; देखो, वह कोठरियों में है; तो प्रतीति न करना।
27 क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।
28 क्योंकि जहां कहीं लोथ होगी, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।
29 उन दिनों के क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
30 तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।
31 और वह अपने स्वर्गदूतों को तुरही की बड़ी ध्वनि के साथ भेजेगा, और वे आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेंगे।
32 अब अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्म काल निकट है।
33 इसी रीति से जब तुम ये सब बातें देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है।
34 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।
35 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
36 उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, न पिता, परन्तु केवल पिता।
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, उस दिन तक, जब तक नूह जहाज पर न चढ़ा, लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे।
39 और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक किसी को मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 तब दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती हुई दिखाई देंगी; एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आएगा।
43 परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता।
44 इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।
45 तो फिर वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे उसके स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया हो, कि उन्हें समय पर भोजन दे?
46 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
47 मैं तुम से सच कहता हूं; कि वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।

48 परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है,
49 और वह अपने साथी दासों को पीटना शुरू कर देगा, और शराबियों के साथ खाएगा और पीएगा;
50 उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी आएगी, जिसका उसे पता भी न हो।
51 और उसे टुकड़े टुकड़े करके उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएंगे; वहां रोना और दांत पीसना होगा।

अध्याय 25

1 तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुँवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं।
2 उनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख।
3 मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।
4 परन्तु बुद्धिमानों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।
5 जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं।
6 आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे भेंट करने के लिये चलो।
7 तब वे सब कुँवारियाँ उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं।
8 मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जा रही हैं।
9 परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया, कि ऐसा न हो कि हमारे और तुम्हारे लिये पूरा हो; परन्तु भला तो यह है कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।
10 जब वे मोल लेने जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया।
11 इसके बाद वे दूसरी कुँवारियाँ भी आकर कहने लगीं, हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिए द्वार खोल दे।
12 उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न तो वह दिन जानते हो, न वह घड़ी, जब मनुष्य का पुत्र आएगा।
14 क्योंकि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है, जिस ने परदेश जाते समय अपने दासों को बुलाकर अपनी संपत्ति उन्हें सौंप दी।
15 तब उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया; और तुरन्त यात्रा पर चला गया।
16 तब जिस को पाँच तोड़े मिले थे, उस ने जाकर उन से लेन देन किया, और पाँच तोड़े और कमा लिये।
17 और इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए।
18 परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी का धन छिपा दिया।
19 बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आया और उन से हिसाब लेने लगा।
20 और जिसे पांच तोड़े मिले थे, वह पांच और तोड़े लाकर कहने लगा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे: देख, मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं।
21 उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य है, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास! तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा; अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।
22 जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे: देख, मैं ने दो और तोड़े कमाए हैं।
23 उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य है, अच्छे और विश्वासयोग्य दास; तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा: अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।
24 तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे प्रभु, मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां नहीं बोया वहां से काटता है, और जहां नहीं बिखेरा वहां से बटोरता है।
25 तब मैं डर गया, और जाकर तेरा तोड़ा भूमि में छिपा दिया; देख, वह तेरा ही है।
26 उसके स्वामी ने उसको उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास, तू जानता था कि मैं जहां नहीं बोता वहां काटता हूं, और जहां नहीं बिखेरता वहां से बटोरता हूं।
27 इसलिये तुझे चाहिए था कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना रुपया ब्याज समेत ले लेता।
28 इसलिये वह तोड़ा उससे ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं, उसे दे दो।
29 क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा; परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, छीन लिया जाएगा।
30 और उस निकम्मे दास को बाहर के अन्धकार में डाल दो, वहां रोना और दांत पीसना होगा।
31 जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब पवित्र स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा।
32 और उसके साम्हने सब जातियां इकट्ठी की जाएंगी, और वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसा चरवाहा अपनी भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है।
33 और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को अपनी बाईं ओर खड़ी करेगा।
34 तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।
35 क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया।
36 मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, और तुम ने मेरी सुधि ली; मैं बन्दीगृह में था, और तुम मेरे पास आए।
37 तब धर्मी उस को उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पिलाया?
38 हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया, या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए?
39 और हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तेरे पास आए?
40 तब राजा उनको उत्तर देगा, कि मैं तुम से सच कहता हूं; कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।

41 तब वह बाईं ओर वालों से भी कहेगा; हे स्रापित लोगो, मेरे पास से दूर हो जाओ, उस अनन्त आग में, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।
42 क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं दिया;
43 मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में न ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े न पहिनाए; मैं बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली।
44 तब वे भी उसे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की?
45 तब वह उन्हें उत्तर देगा, कि मैं तुम से सच कहता हूं; कि तुम ने जो इन छोटे से छोटे में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।
46 और ये लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी लोग अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

अध्याय 26

1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा।
2 तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फसह का पर्व्व होगा, और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा।
3 तब प्रधान याजक, शास्त्री और प्रजा के पुरनिये कैफा नाम महायाजक के भवन में इकट्ठे हुए।
4 और वे यीशु को छल से पकड़कर मार डालने की युक्ति करने लगे।
5 परन्तु उन्होंने कहा, पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए।
6 जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था।
7 और एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसने उसके सिर पर उंडेल दिया।
8 यह देखकर उसके चेले क्रोधित होकर कहने लगे, इसका क्या नाश हुआ?
9 क्योंकि यह इत्र तो बहुत दाम में बेचकर कंगालों को बांटा जा सकता था।
10 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा; स्त्री को क्यों सताते हो? उसने मेरे लिये भलाई की है।
11 क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा।
12 क्योंकि उसने मेरी देह पर यह इत्र उंडेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिये किया है।
13 मैं तुम से सच कहता हूं; कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।
14 तब यहूदा इस्करियोती नाम बारह चेलों में से एक मनुष्य महायाजकों के पास गया।
15 और उन से कहा, यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो तुम मुझे क्या दोगे? तब उन्होंने उसके साथ तीस चांदी के सिक्के देकर वाचा बान्धी।
16 और उसी समय से वह उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा।
17 अख़मीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, कि तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?
18 उस ने कहा; नगर में अमुक मनुष्य के पास जाकर उस से कहो, कि गुरू कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे घर में फसह मनाऊंगा।
19 और चेलों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें करने को कहा था, और फसह तैयार किया।
20 जब सांझ हुई तो वह बारहों के साथ बैठा।
21 जब वे खा रहे थे तो उसने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।
22 तब वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा; हे प्रभु, क्या वह मैं हूं?
23 उसने उत्तर दिया, जो कोई मेरे साथ थाली में हाथ डालेगा, वही मुझे पकड़वाएगा।
24 मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! उसके लिये अच्छा होता, यदि वह न जन्मता।
25 तब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, क्या वह मैं हूं? उस ने उस से कहा, तू ही आप कह रहा है।
26 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और चेलों को देकर कहा; लो, खाओ; यह मेरी देह है।
27 तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा; तुम सब इसमें से पीओ;
28 क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
29 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं।
30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर चले गए।
31 तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा, और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी।
32 परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा।
33 पतरस ने उसको उत्तर दिया, कि यदि सब लोग तेरे कारण ठोकर खाएंगे, तो भी मैं कभी न ठोकर खाऊंगा।
34 यीशु ने उस से कहा; मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्ग के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से इन्कार करेगा।
35 पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तौभी मैं तुझ से कभी न इन्कार न करूंगा: ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा।
36 तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक जगह में आया और अपने चेलों से कहने लगा; यहीं बैठे रहो, जब तक मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं।
37 फिर वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और बहुत उदास और व्याकुल होने लगा।
38 तब उस ने उन से कहा, मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं; तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।
39 फिर वह थोड़ा और आगे गया, और मुंह के बल गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा

मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।
40 फिर वह चेलों के पास आया और उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?
41 जागते और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।
42 फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह कटोरा मेरे पीए बिना नहीं टल सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।
43 फिर उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं।
44 तब वह उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बातें फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की।
45 तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा, अब सोते रहो, और विश्राम करो; देखो, घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।
46 उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।
47 वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़, जो तलवारें और लाठियाँ लिए हुए थी, आई।
48 उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत दिया था, कि जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना।
49 और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी, नमस्कार; और उसे बहुत चूमा।
50 यीशु ने उस से कहा, हे मित्र, तू क्यों आया है? तब उन्होंने आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया।
51 और देखो, यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर तलवार खींच ली, और महायाजक के दास पर चलाकर उसका कान उड़ा दिया।
52 तब यीशु ने उस से कहा; अपनी तलवार काठी में रख ले, क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।
53 क्या तू यह नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से प्रार्थना कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास तुरन्त उपस्थित कर देगा?
54 तो फिर पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी?
55 उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा, क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिये निकले हो? मैं तो प्रतिदिन मन्दिर में बैठकर उपदेश करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा।
56 परन्तु यह सब इसलिये हुआ, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।
57 और यीशु को पकड़नेवाले उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिये इकट्ठे हुए थे।
58 परन्तु पतरस दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के भवन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया।
59 अब प्रधान याजक और पुरनिये और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही ढूँढ़ रहे थे।
60 परन्तु बहुत से झूठे गवाह आए, परन्तु कोई न मिला। अन्त में दो झूठे गवाह आए।
61 उस ने कहा, कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं।
62 तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?
63 परन्तु यीशु चुप रहा: और महायाजक ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे।
64 यीशु ने उस से कहा, तू ने आप ही कह दिया; तौभी मैं तुझ से कहता हूं; कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।
65 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, उस ने परमेश्वर की निन्दा की है; अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुम ने अब उसकी निन्दा सुन ली है।
66 तुम क्या समझते हो? उन्होंने उत्तर दिया, कि वह प्राण दण्ड के योग्य है।
67 तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे मारे, और औरों ने उसे थप्पड़ मारे।
68 कि हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके कह; कि किस ने तुझे मारा?
69 और पतरस बाहर आंगन में बैठा था, कि एक लौंडी उसके पास आकर कहने लगी; तू भी यीशु गलीली के साथ था।
70 परन्तु उस ने सब के साम्हने इन्कार करके कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है।
71 जब वह बाहर बरामदे में गया, तो दूसरी दासी ने उसे देखकर वहां मौजूद लोगों से कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।
72 उस ने फिर शपथ खाकर इन्कार किया, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।
73 थोड़ी देर बाद जो लोग पास खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उससे कहा, निश्चय तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली से तेरा परिचय हो जाता है।
74 तब वह धिक्कारने और शपथ खाने लगा, और कहने लगा, मैं उस मनुष्य को नहीं जानता: और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी।
75 तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई, कि मुर्ग के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।

अध्याय 27

1 जब भोर हुई तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु को मार डालने की सम्मति की।
2 और उन्होंने उसे बाँधकर ले जाकर राज्यपाल पुन्तियुस पीलातुस के हाथ में सौंप दिया।
3 तब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चाँदी के सिक्के प्रधान याजकों और पुरनियों के पास फिर ले आया।
4 और कहा, मैं ने निर्दोष को हत्या का दोषी ठहराकर पाप किया है। तब उन्होंने कहा, हमें इससे क्या? तू ही इस बात को समझ।
5 और वह चाँदी के सिक्के मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फाँसी लगा ली।
6 तब महायाजकों ने वे सिक्के लेकर कहा, इन्हें भण्डार में डालना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है।
7 तब उन्होंने सम्मति करके, परदेशियों को मिट्टी देने के लिये कुम्हार की एक भूमि मोल ले ली।

8 इसी कारण उस खेत का नाम आज के दिन तक लोहू का खेत पड़ा।
9 तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ, कि उन्होंने वे तीस चांदी के सिक्के ले लिए, अर्थात उस मनुष्य का दाम जिसे इस्राएलियों में से उन्होंने ठहराया था।
10 और मैंने उन्हें कुम्हार के खेत के लिए दे दिया, जैसा कि प्रभु ने मुझे नियुक्त किया था।
11 जब यीशु हाकिम के साम्हने खड़ा था, तब हाकिम ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस से कहा, तू ही कहता है।
12 जब महायाजकों और पुरनियों ने उस पर दोष लगाया, तो उस ने कुछ उत्तर न दिया।
13 तब पीलातुस ने उस से कहा; क्या तू नहीं सुनता कि ये लोग तेरे विरोध में कितनी बातें गवाही दे रहे हैं?
14 परन्तु उसने उसके उत्तर में एक बात भी न कही; यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ।
15 उस पर्व में हाकिम की यह रीति थी कि वह किसी बन्दी को जिसे लोग चाहते थे, छोड़ देता था।
16 उस समय उन के पास बरअब्बा नाम का एक प्रसिद्ध बन्दी था।
17 जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को या यीशु को, जो मसीह कहलाता है?
18 क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने ईर्ष्या से उसे पकड़वाया है।
19 जब वह न्याय-पीठ पर बैठा, तो उसकी पत्नी ने उसके पास यह संदेश भेजा, "उस धर्मी पुरुष से कुछ मत लेना, क्योंकि उसके कारण मैं ने आज स्वप्न में बहुत दुख उठाए हैं।"
20 परन्तु प्रधान याजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि बरअब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश कर दें।
21 हाकिम ने उन से पूछा, कि तुम चाहते हो, कि मैं इन दोनों में से तुम्हारे लिये किस को छोड़ दूं? उन्होंने कहा, बरअब्बा को।
22 पीलातुस ने उन से कहा, तो फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं? सब ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।
23 हाकिम ने पूछा, क्यों, उस ने कौन सी बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला उठे, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।
24 जब पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता, परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ होता है, तो उस ने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं: तुम ही जानो।
25 तब सब लोग बोल उठे, कि उसका खून हम पर और हमारी सन्तान पर हो।
26 तब उस ने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।
27 तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को भवन में ले जाकर सारी पलटन उसके पास इकट्ठी की।
28 और उन्होंने उसके वस्त्र उतारकर उसे लाल रंग का वस्त्र पहना दिया।
29 और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया; और उसके आगे घुटने टेककर उसका ठट्ठा करके कहने लगे, कि हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!
30 तब उन्होंने उस पर थूका, और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।
31 जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उस पर से वह बागा उतारकर उसी के कपड़े उस को पहिनाए, और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले गए।
32 जब वे बाहर निकले, तो उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला, और उन्होंने उसे बेगार में लादकर उसका क्रूस उठा लिया।
33 जब वे गुलगुता नाम की एक जगह पर पहुँचे, जो खोपड़ी का स्थान है।
34 उन्होंने पित्त मिला हुआ सिरका उसे पीने को दिया, पर जब उस ने चखा, तो पीने से इनकार किया।
35 और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिये। ताकि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये, और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियाँ डालीं।
36 और वे वहीं बैठकर उसका निरीक्षण करने लगे।
37 और उसके सिर के ऊपर उसका दोषपत्र लटका दिया, कि यह यहूदियों का राजा यीशु है।
38 और उसके साथ दो डाकू भी क्रूसों पर चढ़ाए गए, एक दाहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर।
39 और जो लोग पास से जाते थे, वे सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे।
40 और कहा, हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आप को बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।
41 इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत उसका ठट्ठा करके कहा।
42 उसने औरों को बचाया, परन्तु अपने आप को नहीं बचा सकता। यदि वह इस्राएल का राजा है, तो अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करेंगे।
43 उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है; यदि वह उसे चाहता है, तो अब उसे छुड़ा ले, क्योंकि उस ने कहा था, कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।
44 जो डाकू उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी यही बात उसके मुँह पर बोली।
45 छठे घंटे से लेकर तीसरे घंटे तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा।
46 तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?
47 जो लोग वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, यह तो एलिय्याह को पुकारता है।
48 तब उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया।
49 औरों ने कहा, ठहरो, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।
50 तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण त्याग दिए।
51 और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, और धरती डोल उठी और चट्टानें टूट गईं।
52 और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत सी लोथें जी उठीं।

53 और जी उठने के बाद कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गया, और बहुतों को दिखाई दिया।
54 जब सूबेदार और उसके साथी जो यीशु पर नजर रख रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हुआ था, देखकर बहुत डर गए और कहने लगे, सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।
55 और बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके पीछे आई थीं, दूर से यह सब देख रही थीं।
56 उन में मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जब्दी के बच्चों की माता थीं।
57 जब सांझ हुई तो अरिमतियाह का यूसुफ नाम एक धनी मनुष्य जो आप भी यीशु का चेला था, आया।
58 उस ने पीलातुस के पास जा कर यीशु की लोथ मांगी, तब पीलातुस ने आज्ञा दी, कि लोथ दे दी जाए।
59 और यूसुफ ने शव को ले जाकर उसे एक साफ सनी के कपड़े में लपेटा।
60 और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी: और कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।
61 और वहां मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र के साम्हने बैठी थीं।
62 अगले दिन, जो तैयारी के दिन के बाद था, महायाजक और फरीसी पिलातुस के पास इकट्ठे हुए।
63 कि हे प्रभु, हमें स्मरण है कि उस धोखेबाज ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा।
64 इसलिये आज्ञा दे, कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए; कहीं ऐसा न हो कि उसके चेले रात को आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है; और तब पिछला भूल पहिली से भी अधिक बुरी होगी।
65 पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरेदार हैं: जाओ, और उसकी पूरी चौकसी करो।
66 तब उन्होंने जाकर कब्र की सुरक्षा की, पत्थर पर मुहर लगाई और पहरेदार बैठा दिए।

अध्याय 28

1 सब्त के दिन के अन्त में, जब सप्ताह के पहिले दिन भोर होने लगी, तो मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र देखने आईं।
2 और देखो, एक बड़ा भूकम्प हुआ; क्योंकि प्रभु का दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर द्वार पर का पत्थर लुढ़काकर उस पर बैठ गया।
3 उसका मुख बिजली का सा चमक रहा था और उसका वस्त्र हिम के समान उज्ज्वल था।
4 और उसके भय से पहरेदार कांप उठे, और मुर्दे के समान हो गए।
5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों को उत्तर दिया, कि तुम मत डरो; क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो।
6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु जैसा उसने कहा था, वैसा ही जी उठा है। आओ, वह स्थान देखो जहाँ प्रभु लेटे थे।
7 और तुरन्त जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है; और देखो, वह तुम्हारे आगे आगे गलील को जाएगा, तुम उसे वहीं देखोगे; देखो, मैं ने तुम्हें बता दिया है।
8 और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र के पास से तुरन्त चले गए, और उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़े।
9 जब वे उसके चेलों को समाचार देने जा रहे थे, तो देखो, यीशु ने उन्हें आकर कहा, " सबको नमस्कार!" और उन्होंने पास आकर उसके पाँव पकड़ लिए और उसे प्रणाम किया।
10 तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि वे गलील को चले जाएं, वहां मुझे देखेंगे।
11 जब वे जा रहे थे, तो देखो, पहरेदारों में से कुछ लोग नगर में आए, और महायाजकों को सारा हाल बताया।
12 तब उन्होंने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत धन दिया।
13 कि तुम कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए।
14 और यदि यह बात राज्यपाल के कानों तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे, और तुम्हारी रक्षा करेंगे।
15 तब उन्होंने पैसे ले लिये, और जैसा उन्हें सिखाया गया था वैसा ही किया; और यह कहावत आज तक यहूदियों में प्रचलित है।
16 तब ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर चले गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था।
17 उन्होंने उसे देखकर प्रणाम किया, पर कितनों को सन्देह हुआ।
18 तब यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।
19 इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।
20 और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं। आमीन।

मार्क का सुसमाचार

अध्याय 1

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरंभ;
2 जैसा भविष्यद्वक्ताओं के वचन में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।
3 जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द सुनाई दे रहा है, यहोवा का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।
4 यूहन्ना जंगल में बपतिस्मा देता था और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।
5 और सारे यहूदिया देश के लोग और यरूशलेम के लोग उसके पास निकलकर आए, और अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।
6 और यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहिने रहता था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बाँधे रहता था; और वह टिड्डियाँ और वन मधु खाता था।
7 और यह प्रचार करता था, कि मेरे बाद वह आने वाला है, जो मुझ से अधिक शक्तिशाली है; मैं इस योग्य नहीं कि झुककर उसके जूतों का बन्ध खोलूं।
8 मैं ने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा दिया है, पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।
9 उन दिनों में ऐसा हुआ कि यीशु गलील के नासरत से आया और यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया।
10 और तुरन्त जल से बाहर आकर उसने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा।
11 और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं।
12 और तुरन्त आत्मा ने उसे जंगल की ओर भेज दिया।
13 और वह जंगल में चालीस दिन तक रहा; और शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह जंगली पशुओं के साथ रहा; और स्वर्गदूत उस की सेवा करते रहे।
14 जब यूहन्ना को बन्दी बना लिया गया तो यीशु परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ गलील में आया।
15 और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।
16 गलील की झील के किनारे फिरते हुए उस ने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे।
17 यीशु ने उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा।
18 और वे तुरन्त अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिये।
19 और वहां से थोड़ा आगे बढ़कर, उस ने जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा।
20 तब उसने तुरन्त उन्हें बुलाया, और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर उसके पीछे चले।
21 फिर वे कफरनहूम में गए, और सब्त के दिन वह तुरन्त आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा।
22 और वे उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उपदेश देता था।
23 और उन की आराधनालय में एक मनुष्य था जिस में अशुद्ध आत्मा थी, और वह चिल्लाकर कहने लगा,
24 कि हे यीशु नासरी, हमें छोड़ दे; हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
25 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह; और उसमें से बाहर निकल जा।
26 और जब अशुद्ध आत्मा ने उसे मरोड़ दिया, और बड़े शब्द से चिल्लाया, तब वह उसमें से निकल गई।
27 और सब लोग यहां तक चकित हुए, कि आपस में पूछ-ताछ करने लगे, यह क्या बात है? यह कौन सा नया उपदेश है? वह अधिकार से अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उस की मानती हैं।
28 और तुरन्त उसका यश गलील के आस पास के सारे देश में फैल गया।
29 और वे तुरन्त आराधनालय से निकलकर याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर में गए।
30 परन्तु शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त उसका समाचार उस से सुना।
31 तब उस ने पास आकर उसका हाथ पकड़ के उसे उठाया, और तुरन्त उसका ज्वर उतर गया, और वह उनकी सेवा टहल करने लगी।
32 और संध्या के समय जब सूर्य अस्त हो गया तो लोग सब बीमारों और दुष्टात्माओं को उसके पास लाए।
33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हुआ।
34 और उस ने बहुतों को जो नाना प्रकार की बीमारियों से बीमार थे, चंगा किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं।
35 और भोर को पौ फटने से बहुत पहिले वह उठकर बाहर निकला, और एक जंगली स्थान में गया, और वहां प्रार्थना करने लगा।
36 तब शमौन और उसके साथी उसके पीछे चले।
37 जब वह मिला तो उस से कहा, सब लोग तुझे ढूंढ़ते हैं।
38 फिर उस ने उन से कहा; आओ, हम आस पास की बस्तियों में चलें, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसलिये निकला हूं।
39 और वह सारे गलील में उन की सभाओं में प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।
40 और एक कोढ़ी ने उसके पास आकर, उस से बिनती की, और उसके साम्हने घुटने टेककर कहा; यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
41 यीशु ने तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।
42 और ज्योंही उसने यह कहा, तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा, और वह शुद्ध हो गया।
43 तब उस ने उसे कड़ी चेतावनी देकर तुरन्त विदा किया।
44 और उस से कहा, देख, किसी से कुछ मत कहना; परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया है वही चढ़ा, कि उन पर गवाही हो।
45 परन्तु वह बाहर जाकर इस बात का प्रचार करने और इस बात को फैलाने लगा, यहां तक कि यीशु फिर खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका, परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा, और लोग चारों ओर से उसके पास आते रहे।

अध्याय दो

1 कुछ दिन के बाद वह फिर कफरनहूम में आया, और लोग कहने लगे, कि वह घर में है।
2 और तुरन्त बहुत लोग इकट्ठे हुए, यहां तक कि द्वार के पास भी जगह नहीं मिली, और वह उन्हें वचन सुनाता रहा।
3 और लोग एक झोले के रोगी को लेकर उसके पास आए, जिसे चार जनों ने उठा लिया था।
4 जब भीड़ के कारण वे उसके निकट न आ सके, तो उन्होंने उस छत को जिस पर वह था, खोल दिया, और जब छत को तोड़ दिया, तो उस खाट को जिस पर लकवा का रोगी पड़ा था, नीचे उतार दिया।
5 जब यीशु ने उनका विश्वास देखा तो उस लकवे के मारे हुए से कहा, हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।
6 परन्तु कुछ शास्त्री जो वहां बैठे थे, अपने मन में विचार करने लगे।
7 यह मनुष्य क्यों ऐसी निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?
8 जब यीशु ने अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं तो तुरन्त उनसे कहा; तुम अपने मन में ये बातें क्यों विचार कर रहे हो?
9 क्या लकवे के मारे हुए से यह कहना सहज है कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना कि उठ, अपनी खाट उठा, और चल फिर?
10 परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा।)
11 मैं तुझ से कहता हूं, उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
12 तब वह तुरन्त उठा, और अपनी खाट उठाकर सब के साम्हने से निकलकर चला गया; इस पर सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हम ने ऐसा कभी नहीं देखा।
13 फिर वह फिर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने लगा।
14 और जाते हुए उस ने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे आ: तब वह उठकर उसके पीछे हो लिया।
15 जब यीशु उसके घर में भोजन करने बैठा, तो बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी भी यीशु और उसके चेलों के साथ बैठे थे; क्योंकि वे बहुत थे, और उसके पीछे हो लिए थे।
16 जब शास्त्रियों और फरीसियों ने उसे चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ भोजन करते देखा, तो उसके चेलों से पूछा; वह चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता-पीता है?
17 यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, " वैद्य भले चंगों को नहीं, परन्तु बीमारों को अवश्य है। मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ।"
18 और यूहन्ना और फरीसियों के चेले उपवास किया करते थे: और उन्होंने उसके पास आकर पूछा; यूहन्ना और फरीसियों के चेले तो उपवास करते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं करते?
19 यीशु ने उन से कहा; क्या वर पक्ष के लोग, जब तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास कर सकते हैं? जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते।
20 परन्तु वे दिन आएंगे, जब दूल्हा उन से अलग कर दिया जाएगा, तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे।
21 कोई भी मनुष्य पुराने वस्त्र पर नये कपड़े का टुकड़ा नहीं लगाता, नहीं तो नया टुकड़ा जो उसे भरता है, पुराने को घटा देता है, और वह फट जाता है।
22 और कोई भी मनुष्य नया दाखरस पुरानी बोतलों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस बोतलों को फाड़ देगा, और दाखरस बह जाएगा, और बोतलें भी खराब हो जाएंगी; परन्तु नया दाखरस नई बोतलों में भरना चाहिए।
23 और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले चलते हुए बालें तोड़ने लगे।
24 तब फरीसियों ने उस से कहा; देख, ये लोग सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं?
25 उसने उनसे कहा; क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया, जब वह और उसके साथी आवश्यकता में थे और भूखे थे?
26 वह क्यों अबियातार महायाजक के दिनों में परमेश्वर के भवन में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिनका खाना याजकों को छोड़ कर अन्य किसी को उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दीं?
27 और उस ने उन से कहा; सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।
28 इसलिये मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।

अध्याय 3

1 और वह फिर आराधनालय में गया, और वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था।
2 और वे उस पर दोष लगाने के लिये उस की ताक में थे, कि वह उसे सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं।
3 तब उस ने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, खड़ा हो।
4 तब उस ने उन से पूछा, क्या सब्त के दिन भलाई करना उचित है या बुराई करना? प्राण बचाना या मारना? परन्तु वे चुप रहे।
5 और जब उसने उनके मन की कठोरता से दुखी होकर क्रोध से उन पर चारों ओर दृष्टि की, तो उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ आगे बढ़ा । उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और उसका हाथ दूसरे हाथ के समान अच्छा हो गया।
6 तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें।
7 परन्तु यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया, और गलील और यहूदिया से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
8 और यरूशलेम, इदूमिया, यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे बड़े काम करता है, उसके पास आई।
9 फिर उस ने अपने चेलों से कहा, कि भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार खड़ी रहे, कहीं वे मुझ पर टूट न पड़ें।
10 क्योंकि उस ने बहुतों को चंगा किया था, यहां तक कि जितने लोग बीमार थे, वे उसे छूना चाहते थे।
11 और अशुद्ध आत्माएँ उसे देखकर उसके आगे गिर पड़ीं और चिल्लाकर कहने लगीं, तू परमेश्वर का पुत्र है।
12 और उस ने उन्हें चिताया, कि मुझे प्रगट न करना।
13 फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिसे चाहता था उसे बुलाया; और वे उसके पास चले आए।
14 फिर उस ने बारह पुरूषों को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ रहें, और वह उन्हें प्रचार करने को भेजे।

15 और बीमारियों को ठीक करने और दुष्टात्माओं को निकालने की शक्ति रखो।
16 और शमौन का नाम उस ने पतरस रखा।
17 और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना, और उसने उनका नाम बोअनर्गेस अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा।
18 और अन्द्रियास, और फिलिप्पुस, और बरतुलमै, और मत्ती, और थोमा, और हलफई का पुत्र याकूब, और तद्दै, और शमौन कनानी।
19 और यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वाया था, और वे एक घर में गए।
20 और भीड़ फिर इकट्ठी हो गई, यहां तक कि वे रोटी भी नहीं खा सके।
21 जब उसके मित्रों ने यह सुना, तो वे उसे पकड़ने के लिये निकले, क्योंकि वे कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।
22 और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, कहने लगे, कि उस में शैतान है, और वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।
23 तब उस ने उन्हें अपने पास बुलाकर दृष्टान्तों में उन से कहा; शैतान क्योंकर शैतान को निकाल सकता है?
24 और यदि किसी राज्य में फूट पड़ जाए, तो वह राज्य टिक नहीं सकता।
25 और यदि किसी घराने में फूट हो जाए, तो वह घराना स्थिर नहीं रह सकता।
26 और यदि शैतान अपना ही विरोधी होकर फूट डाले, तो वह खड़ा न रह सकेगा, परन्तु उसका अन्त हो जाएगा।
27 कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट नहीं सकता; जब तक कि वह पहिले उस बलवन्त को न बाँध ले, और तब उसके घर को लूट न ले।
28 मैं तुम से सच कहता हूं, कि मनुष्यों की सन्तान के सब पाप और जितनी निन्दा वे करें, वह क्षमा की जाएगी।
29 परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा, उसको कभी भी क्षमा नहीं किया जाएगा, वरन वह अनन्त दण्ड का दण्ड पाता है।
30 क्योंकि वे कहते थे, कि उस में अशुद्ध आत्मा है।
31 तब उसके भाई और उसकी माता आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुला भेजा।
32 और भीड़ उसके चारों ओर बैठी थी, और उस से कहने लगी; देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं।
33 उस ने उन को उत्तर दिया, कि मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?
34 और उस ने अपने आस पास बैठे हुओं पर दृष्टि करके कहा; देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।
35 क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है।

अध्याय 4

1 तब वह फिर झील के किनारे उपदेश करने लगा, और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वह नाव पर चढ़कर झील में बैठ गया, और सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे खड़ी रही।
2 और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाने लगा, और अपने उपदेश में उनसे कहने लगा।
3 सुनो, देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला।
4 जब वह बो रहा था तो कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और आकाश के पक्षी आकर उन्हें चुग गए।
5 और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरे, जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे तुरन्त उग आए।
6 परन्तु जब सूर्य निकला, तो वह जल गया, और जड़ न पकड़ने से सूख गया।
7 और कुछ झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा लिया, और वह फल न लाया।
8 और कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फलवन्त हुए, और बढ़कर फल लाए; कोई तीस, कोई साठ, और कोई सौ फल लाए।
9 उस ने उन से कहा; जिस के पास सुनने के कान हों, वह सुन ले।
10 जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों और बारहों ने उस से दृष्टान्त के विषय में पूछा।
11 उस ने उन से कहा; तुम को परमेश्वर के राज्य का भेद समझने की अनुमति दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये ये सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं।
12 इसलिये कि वे देखते हुए भी देखें, और न समझें; और सुनते हुए भी सुनें, और न समझें; ऐसा न हो कि वे फिरें, और उनके पाप क्षमा किए जाएं।
13 उस ने उन से कहा; क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? फिर सब दृष्टान्त कैसे समझोगे?
14 बोनेवाला वचन बोता है।
15 ये वे हैं जो मार्ग के किनारे रहते हैं, जहां वचन बोया जाता है; परन्तु जब वे सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उन में बोया गया था, उठा ले जाता है।
16 और वैसे ही जो पथरीली भूमि पर बोए गए, ये वे हैं, कि जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं।
17 और अपने अन्दर जड़ न रखने से वे थोड़े ही दिन तक टिके रहते हैं; इस के बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।
18 और जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं, जो वचन सुनते हैं।
19 और इस संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और और वस्तुओं का लोभ उन में समाकर वचन को दबा देता है, और वह निष्फल रह जाता है।
20 और ये वे हैं, जो अच्छी भूमि में बोए गए, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुना, कोई साठ गुना, और कोई सौ गुना।
21 तब उस ने उन से कहा; क्या दीया इसलिये लाया जाता है कि उसे पैमाने या खाट के नीचे रखा जाए, और इसलिये नहीं कि उसे दीवट पर रखा जाए?
22 क्योंकि कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो; न कुछ गुप्त रखा गया है, परन्तु इसलिये कि प्रगट हो जाए।
23 यदि किसी के पास सुनने के कान हों तो सुन ले।
24 फिर उस ने उन से कहा, चौकस रहो कि क्या सुनते हो; जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम जो सुनते हो, तुम्हें अधिक दिया जाएगा।
25 क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उस से वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।
26 फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि में बीज बोए।
27 और वह रात को सोता और दिन को जागता है, और बीज उगता और बढ़ता है, यह वह नहीं जानता।

28 क्योंकि पृथ्वी आप से आप फल लाती है, पहिले अंकुर, तब बालें, और तब बालों में तैयार अन्न।
29 परन्तु जब फल लग जाते हैं, तो वह तुरन्त हंसुआ लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।
30 फिर उस ने कहा; हम परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दें, और किस से उसकी उपमा दें?
31 वह राई के दाने के समान है, जो जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के सब बीजों से छोटा होता है।
32 परन्तु जब बोया जाता है, तो उगता है, और सब साग-पात से बड़ा होता है, और ऐसी बड़ी डालियां निकालता है, कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।
33 और उस ने उन्हें इस प्रकार के बहुत से दृष्टान्त देकर वचन सुनाया, जैसा उनकी समझ थी।
34 परन्तु बिना दृष्टान्त कहे वह उनसे कुछ भी नहीं कहता था, परन्तु जब वे एकान्त में होते थे, तो उन्हें सब बातें समझाकर समझाता था।
35 उसी दिन जब सांझ हुई तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें।
36 जब उन्होंने भीड़ को विदा किया, तो जैसा वह नाव पर था, उसे ले गए। और उसके साथ और भी छोटी नावें थीं।
37 और एक बड़ी आंधी आई, और लहरें जहाज पर यहां तक टकराने लगीं, कि वह पूरी तरह डूब गया।
38 और वह नाव की पिछली ओर तकिये पर सो रहा था, और उन्होंने उसे जगाकर कहा; हे गुरू, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नाश हुए जाते हैं?
39 तब उसने उठकर आँधी को डाँटा, और पानी से कहा, " शान्त हो, थम जा!" तब आँधी थम गई, और बड़ा सन्नाटा हो गया।
40 उस ने उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? तुम में विश्वास क्यों नहीं?
41 और वे बहुत डर गए, और एक दूसरे से कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?

अध्याय 5

1 और वे झील के पार गिरासेनियों के देश में आ गए।
2 जब वह नाव से उतरा तो तुरन्त एक मनुष्य जिस में अशुद्ध आत्मा थी, कब्रों में से निकलकर उसे मिला।
3 वह कब्रों के बीच में रहता था, और कोई उसे जंजीरों से भी नहीं बाँध सकता था।
4 क्योंकि वह बार बार बेडियों और जंजीरों से बाँधा गया था, और उसने जंजीरें तोड़ डाली थीं और बेडियाँ टुकड़े-टुकड़े कर दी थीं; और कोई उसे वश में न कर सका था।
5 और वह रात-दिन पहाड़ों पर और कब्रों में रोता और अपने आप को पत्थरों से घायल करता रहा।
6 परन्तु जब उसने यीशु को दूर से देखा, तो दौड़कर उसे प्रणाम किया।
7 और ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि मुझे पीड़ा न दे।
8 क्योंकि उस ने उस से कहा था, कि हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।
9 उस ने उस से पूछा, तेरा क्या नाम है? उस ने उत्तर दिया, मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।
10 और उस ने उस से बहुत बिनती की, कि हमें देश से बाहर न भेज।
11 वहां पहाड़ों के पास सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था।
12 तब सब दुष्टात्माओं ने उस से बिनती करके कहा, हमें उन सूअरों में भेज दे कि हम उनके भीतर जाएं।
13 तब यीशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया, और अशुद्ध आत्माएँ निकलकर सूअरों के भीतर चली गईं, और झुण्ड (वे लगभग दो हजार के थे) कड़ाड़े से झपटकर झील में जा गिरा, और डूब मरा।
14 तब सूअरों के चरवाहों ने भागकर नगर और गांवों में समाचार सुनाया, और वे यह देखने के लिये निकले कि क्या हुआ है।
15 और वे यीशु के पास आए और उस को जिस में दुष्टात्मा था और जिस में सेना थी, कपड़े पहिने और सचेत बैठे देखा, और डर गए।
16 और देखनेवालों ने उसका जो दुष्टात्माओं के सताए हुए था, और सूअरों का हाल भी बताया।
17 तब वे उस से बिनती करने लगे, कि हमारे सिवानों से चला जा।
18 जब वह नाव पर चढ़ा, तो वह जो पहले दुष्टात्माओं से सता था, उस से प्रार्थना करने लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे।
19 परन्तु यीशु ने उसे ऐसा करने की आज्ञा न दी, परन्तु उस से कहा; अपने घर जाकर अपने मित्रों को बता और उन्हें बता कि प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं और तुझ पर दया की है।
20 तब वह जाकर दिकपुलिस में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब लोग अचम्भा करने लगे।
21 जब यीशु फिर नाव से पार गया, तो बहुत से लोग उसके पास इकठ्ठा हो गए, और वह झील के किनारे था।
22 और देखो, आराधनालय के सरदारों में से याईर नाम एक व्यक्ति आया, और उसे देखकर उसके पांवों पर गिरा।
23 और उस से बहुत बिनती करके कहा, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह चंगी हो जाए, और जीवित रहे।
24 यीशु उसके साथ गया, और बहुत भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस पर गिर पड़ी।
25 और एक स्त्री जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव होता था।
26 और उसने बहुत से वैद्यों से बहुत दुख उठाए, और अपना सब धन व्यय करने पर भी कुछ लाभ न पाया, वरन और भी बिगड़ गया।
27 जब उसने यीशु की चर्चा सुनी, तो भीड़ में पीछे से आई और उसके वस्त्र को छू लिया।
28 क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी, तो चंगी हो जाऊंगी।
29 और तुरन्त उसका लोहू बहना बंद हो गया; और उसने अपने शरीर में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गयी हूँ।
30 यीशु ने तुरन्त जान लिया कि मुझ में से सामर्थ निकली है, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा; मेरे वस्त्र किस ने छूए?
31 तब उसके चेलों ने उस से कहा; तू देखता है कि भीड़ तेरे ऊपर गिर रही है, फिर भी तू कहता है; कि किस ने मुझे छुआ?
32 तब उस ने उस को देखने के लिये चारों ओर दृष्टि की जिस ने यह काम किया था।
33 तब वह स्त्री यह जानकर, कि मेरी क्या हुआ है, डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच-सच कह दिया।

34 उसने उस से कहा, बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है; कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।
35 वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोग आए और कहने लगे, तेरी बेटी तो मर गई, अब गुरू को क्यों सताता है?
36 ये बातें सुनते ही यीशु ने आराधनालय के सरदार से कहा, मत डर; केवल विश्वास रख।
37 और उस ने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपने साथ आने न दिया।
38 फिर वह आराधनालय के सरदार के घर में आया, और लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।
39 तब उस ने भीतर जाकर उन से कहा; तुम क्यों शोर मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
40 तब वे उसका उपहास करने लगे, परन्तु जब उस ने सब को बाहर निकाल दिया, तो लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर भीतर गया, जहां लड़की पड़ी थी।
41 तब उस ने लड़की का हाथ पकड़ कर उस से कहा, तलिथा कूमी; जिस का अर्थ यह है, कि हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
42 और वह लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और वे बहुत ही अचम्भा करने लगे।
43 तब उसने उन्हें चिताकर आज्ञा दी, कि कोई यह बात न जानने पाए; और आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।

अध्याय 6

1 फिर वह वहां से निकलकर अपने देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
2 जब सब्त का दिन आया, तो वह आराधनालय में उपदेश करने लगा, और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे; इस को ये बातें कहां से आईं? और यह कौन सी बुद्धि है जो उसे दी गई है कि उसके हाथों से ऐसे सामर्थ के काम प्रगट होते हैं?
3 क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो मरियम का पुत्र, और याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई है? और क्या उस की बहिनें यहां हमारे बीच में नहीं रहतीं? इसलिये वे उस पर ठोकर खाईं।
4 यीशु ने उन से कहा, भविष्यद्वक्ता अपने देश, अपने कुटुम्ब, और अपने घराने को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता।
5 और वह वहां कोई सामर्थ्य का काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
6 और उस ने उन के अविश्वास पर अचम्भा किया, और गांव गांव में उपदेश करता हुआ फिरा।
7 तब उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें दो दो करके भेजना आरम्भ किया, और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया।
8 और उन्हें आज्ञा दी, कि मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ न लो; न झोली, न रोटी, न बटुए में पैसा।
9 परन्तु जूतियाँ पहिने रहो, और दो कुरते न पहिनना।
10 फिर उस ने उन से कहा; जिस घर में तुम प्रवेश करो, जब तक उस स्थान से विदा न हो तब तक वहीं ठहरो।
11 और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी न सुने, वहां से जाते समय अपने पांवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो। मैं तुम से सच कहता हूं, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
12 और वे बाहर जाकर प्रचार करने लगे, कि मनुष्य मन फिराओ।
13 और उन्होंने बहुत से दुष्टात्माओं को निकाला, और बहुत बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया।
14 और राजा हेरोदेस ने उसकी चर्चा सुनी (क्योंकि उसका नाम चारों ओर फैल गया था) और कहा, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है, इसलिए उस में सामर्थ के काम प्रगट होते हैं।
15 औरों ने कहा, एलिय्याह है: औरों ने कहा, कोई भविष्यद्वक्ता, या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक है।
16 यह सुनकर हेरोदेस ने कहा, "यह वही यूहन्ना है, जिसका सिर मैंने कटवाया था: वही मरे हुओं में से जी उठा है।"
17 क्योंकि हेरोदेस ने आप अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, जो उस से ब्याही गई थी, यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया था।
18 क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, कि अपने भाई की पत्नी को रखना तुझे उचित नहीं।
19 इसलिये हेरोदियास उस से झगड़ने लगी, और उसे मार डालना चाहती थी, परन्तु ऐसा न कर सकी।
20 क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी और पवित्र मनुष्य जानकर उससे डरता था, और उसे स्मरण रखता था, और उसकी बातें सुनकर बहुत प्रसन्न रहता था।
21 जब उचित दिन आया, तो हेरोदेस ने अपने जन्मदिन पर अपने प्रधानों, सरदारों और गलील के बड़े सरदारों के लिये भोज का आयोजन किया।
22 जब उक्त हेरोदियास की बेटी भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस और उसके साथ बैठने वालों को प्रसन्न किया, तब राजा ने लड़की से कहा, जो कुछ तू चाहे मुझ से मांग, मैं तुझे दूंगा।
23 और उसने उससे शपथ खाकर कहा, तू मुझ से जो कुछ मांगेगी, वरन अपने आधे राज्य तक, मैं तुझे दूंगा।
24 तब उस ने बाहर जा कर अपनी माता से पूछा, मैं क्या मांगूं? उस ने कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।
25 वह तुरन्त राजा के पास आई और विनती की, कि मैं चाहती हूं, कि तू तुरन्त एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर मुझे ले आए।
26 राजा बहुत दुखी हुआ; तौभी अपनी शपथ के कारण, और अपने संग बैठने वालों के कारण, उसने उसे अस्वीकार न किया।
27 तब राजा ने तुरन्त एक जल्लाद को भेजकर आज्ञा दी कि उसका सिर काट लाया जाए। तब जल्लाद ने जाकर कारागार में उसका सिर काट डाला।
28 और उसका सिर एक थाल में रखकर लड़की को दिया, और लड़की ने उसे अपनी मां को दिया।
29 जब उसके चेलों ने यह सुना, तो आकर उसकी लोथ उठाई, और कब्र में रख दी।
30 तब प्रेरित यीशु के पास इकट्ठे हुए, और जो कुछ उन्होंने किया था, और जो कुछ सिखाया था, सब उसको बता दिया।
31 तब उस ने उन से कहा; तुम आप अलग किसी जंगली स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो; क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे, और उन्हें खाने का भी अवकाश नहीं था।
32 फिर वे नाव पर चढ़कर एक सुनसान जगह चले गए।
33 जब लोगों ने उन्हें जाते देखा, तो बहुतों ने उसे पहचान लिया, और सब नगरों से वहां पैदल दौड़े, और उन से आगे बढ़कर उसके पास इकट्ठे हुए।

34 जब यीशु बाहर आया तो उसने बड़ी भीड़ देखी और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई रखवाला न हो। और वह उन्हें बहुत सी बातें सिखाने लगा।
35 जब दिन बहुत ढल गया, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे; यह तो सुनसान जगह है, और समय बहुत बीत गया है।
36 उन्हें विदा कर, कि चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाकर अपने लिये रोटी मोल लें, क्योंकि उनके पास खाने को कुछ नहीं है।
37 उस ने उत्तर दिया, कि तुम ही उन्हें खाने को दो: उन्होंने उस से कहा, क्या हम जाकर दो सौ दीनार की रोटी मोल लें, और उन्हें खिलाएं?
38 उस ने उन से पूछा; जाकर देखो, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? जब उन्हों ने मालूम किया, तो कहा; पांच और दो मछलियां भी हैं।
39 तब उसने आज्ञा दी कि सब लोग हरी घास पर पांति पांति करके बैठ जाएं।
40 और वे सौ-सौ, और पचास-पचास करके पांति बान्धकर बैठ गए।
41 और जब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछलियां लीं, तो स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और रोटियां तोड़ तोड़कर अपने चेलों को देता गया, कि उनके आगे परोसें; और वे दो मछलियां भी उन सब में बांट दीं।
42 और सब खाकर तृप्त हो गए।
43 तब उन्होंने टुकड़ों और मछलियों से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाईं।
44 और जिन्हों ने रोटियां खाईं, वे लगभग पांच हजार पुरूष थे॥
45 और तुरन्त उस ने अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ने को कहा, कि वे उस से पहिले उस पार बैतसैदा चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को विदा करे।
46 और उन्हें विदा करके वह प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर चला गया।
47 जब सांझ हुई, तो जहाज झील के बीच में था, और वह अकेला भूमि पर था।
48 और उसने देखा कि वे खेते खेते थक गए हैं, क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी। सो वह रात के चौथे पहर के निकट झील पर चलते हुए उनके पास आया, और उनसे आगे निकल जाना चाहता था।
49 परन्तु जब उन्होंने उसे झील पर चलते देखा तो समझा कि कोई आत्मा है, और चिल्लाकर कहने लगे,
50 क्योंकि सब उसे देखकर घबरा गए: और उस ने तुरन्त उन से बातें कीं और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत।
51 तब वह उनके पास नाव पर चढ़ गया, और हवा थम गई, और वे बहुत ही अचम्भा करने लगे, और बहुत चकित हुए।
52 क्योंकि उन्होंने रोटियों के आश्चर्यकर्म पर ध्यान न दिया, इसलिये कि उन का मन कठोर हो गया था।
53 और जब वे पार हो गए, तो गन्नेसरत देश में पहुंचे, और किनारे पर पहुंचे।
54 जब वे नाव से बाहर आये तो तुरन्त उसे पहचान लिया।
55 और वे उस सारे देश में दौड़े, और बीमारों को खाटों पर डालकर, जहां जहां उन्होंने सुना, कि वह है, वहां वहां ले जाने लगे।
56 और जहां कहीं वह गांवों, या नगरों, या बस्तियों में जाता था, लोग बीमारों को सड़कों पर रखकर उससे बिनती करते थे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छू लेने दे; और जितनों ने उसे छू लिया, वे चंगे हो गए।

अध्याय 7

1 तब फरीसी और कई एक शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे हुए।
2 और जब उन्होंने उसके कुछ चेलों को अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा, तो उन पर दोष लगाया।
3 क्योंकि फरीसी और सब यहूदी, पुरनियों की रीतियों को मानते हुए, जब तक ठीक से हाथ न धो लें, भोजन नहीं करते।
4 और जब वे बाजार से आते हैं, तो जब तक नहा नहीं लेते, तब तक नहीं खाते। और बहुत सी और बातें हैं, जो उन्हें मानने के लिये दी गई हैं, जैसे कटोरों, और तसले, और पीतल के बरतन, और मेज़ों को धोना।
5 तब फरीसियों और शास्त्रियों ने उस से पूछा; तेरे चेले क्यों पुरनियों की रीति पर नहीं चलते, परन्तु बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?
6 उस ने उनको उत्तर दिया; कि यशायाह ने तुम कपटियों के विषय में ठीक भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है, कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है।
7 तौभी ये लोग व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।
8 क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो, जैसे बरतन और प्याले धोना, और ऐसे और बहुत से काम करते हो।
9 उस ने उन से कहा; तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा टालते हो; यह अच्छी बात है।
10 क्योंकि मूसा ने कहा था, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना; और जो कोई पिता या माता को शाप दे, वह मार डाला जाए।
11 परन्तु तुम कहते हो, कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, कि यह कुरबान अर्थात् दान है, जो कुछ तुझे मुझ से लाभ हो सकता था, तो वह स्वतंत्र है।
12 और तुम उसे अपने पिता या माता की कुछ भी सेवा करने की अनुमति नहीं देते;
13 और अपनी रीतियों से जो तुम ने ठहराई हैं, परमेश्वर का वचन टाल देते हो, वरन ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो।
14 तब उस ने सब लोगों को अपने पास बुलाकर कहा, तुम में से हर एक मेरी बात सुनो और समझो।
15 ऐसी कोई वस्तु नहीं जो बाहर से मनुष्य के भीतर समाकर उसे अशुद्ध कर सके, पर जो वस्तुएँ उसमें से निकलती हैं, वही उसे अशुद्ध करती हैं।
16 यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले।
17 जब वह भीड़ के पास से घर में गया, तो उसके चेलों ने उस दृष्टान्त के विषय में उस से पूछा।
18 उस ने उन से कहा; क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकती;
19 क्योंकि वह उसके मन में नहीं, वरन पेट में जाता है, और संडास में निकल जाता है, और सब भोजन को शुद्ध करता है?

20 फिर उसने कहा, जो मनुष्य के भीतर से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।
21 क्योंकि मनुष्य के भीतर से, अर्थात् उसके मन से, बुरे विचार, व्यभिचार, दुराचार, हत्या,
22 चोरी, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, मूर्खता।
23 ये सब बुरी बातें भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।
24 वहां से उठकर वह सोर और सैदा के देश में गया, और एक घर में गया; और चाहता था कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका।
25 क्योंकि एक स्त्री जिसकी छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, उसके विषय में सुनकर आई, और उसके पांवों पर गिर पड़ी।
26 वह स्त्री यूनानी और सूरूफिनीकी जाति की थी; और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे।
27 यीशु ने उस से कहा; पहिले बच्चों को तृप्त हो जाने दे, क्योंकि बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं।
28 उसने उत्तर दिया, कि हां, हे प्रभु; तौभी कुत्ते भी मेज के नीचे बालकों की रोटी के टुकड़े खाते हैं।
29 उसने उस से कहा, इस बात के कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है।
30 जब वह अपने घर पहुंची, तो उसने देखा कि दुष्टात्मा निकल गई है, और उसकी बेटी खाट पर लेटी है।
31 फिर वह सोर और सैदा के देशों से निकलकर दिकापुलिस के देशों के बीच से होता हुआ गलील की झील के पास आया।
32 और लोगों ने एक बहरे को जो हक्का-बक्का था, उसके पास लाकर उससे बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे।
33 तब वह उसे भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उसकी जीभ को छूआ।
34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह, अर्थात खुल जा।
35 और तुरन्त उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की डोरी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा।
36 तब उस ने उन्हें चिताया, कि किसी से न कहना; परन्तु जितना वह उन्हें चिताया, उतना ही वे और अधिक प्रचार करने लगे।
37 और बहुत ही अचम्भित होकर कहने लगे, उस ने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहरों को सुनने की, और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है।

अध्याय 8

1 उन दिनों में जब भीड़ बहुत बड़ी हो गई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर उन से कहा।
2 मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं, और उनके पास कुछ खाने को नहीं है।
3 और यदि मैं उन्हें भूखा ही घर भेज दूं, तो वे मार्ग में ही थक कर गिर पड़ेंगे, क्योंकि उनमें से बहुत से लोग दूर से आए हैं।
4 तब उसके चेलों ने उसको उत्तर दिया; कि यहां जंगल में कोई मनुष्य कहां से इन लोगों को रोटी देकर तृप्त करे?
5 उस ने उन से पूछा; तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा; सात।
6 तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी, और उन सात रोटियों को लिया, और धन्यवाद करके तोड़कर अपने चेलों को देता गया, कि उन के आगे रखें; और उन्होंने लोगों के आगे परोस दिया।
7 उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ थीं, और उसने आशीर्वाद देकर आज्ञा दी कि उन्हें भी उनके आगे रख दो।
8 तब वे खाकर तृप्त हो गए, और बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भरकर उठाईं।
9 और खानेवालों की संख्या लगभग चार हज़ार थी, तब उसने उन्हें विदा किया।
10 और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता देश में आया।
11 तब फरीसी उसके पास आकर उस से प्रश्न करने लगे, और उस की परीक्षा करने के लिये उस से कोई आकाश का चिन्ह मांगते रहे।
12 तब उस ने अपनी आत्मा में आह भरकर कहा, इस युग के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस युग के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।
13 तब वह उन्हें छोड़कर फिर नाव पर चढ़ गया, और पार चला गया।
14 और चेले रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उनके पास एक रोटी से अधिक न थी।
15 और उस ने उन्हें चिताया, कि चौकस रहो, फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो।
16 तब वे आपस में विचार करने लगे, कि हमारे पास रोटी नहीं है।
17 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा; तुम क्यों यह विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या तुम अब तक नहीं समझते और न समझते हो? क्या तुम्हारा मन अब तक कठोर हो गया है?
18 क्या तुम आंखें रखते हुए भी नहीं देखते? क्या तुम कान रखते हुए भी नहीं सुनते? क्या तुम स्मरण नहीं रखते?
19 जब मैं ने पांच हजार लोगों के लिये पांच रोटियां तोड़ी थीं, तो तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरे थे? उन्होंने उस से कहा, बारह टोकरे।
20 और जब चार हज़ार में से सात लोग थे, तो तुमने टुकड़ों से कितनी टोकरियाँ भरीं? उन्होंने कहा, सात।
21 उस ने उन से कहा; तुम क्यों नहीं समझते?
22 जब वह बैतसैदा में आया, तो लोगों ने एक अंधे को उसके पास लाकर उससे बिनती की, कि उसे छू ले।
23 तब उस ने अन्धे का हाथ पकड़ कर उसे गांव से बाहर ले गया; और उस की आंखों में थूक कर उस पर हाथ रखे, और उस से पूछा, क्या तू कुछ देखता है?
24 फिर उसने ऊपर देखकर कहा, मैं पेड़ों के समान मनुष्यों को चलते हुए देखता हूँ।
25 तब उस ने फिर उस की आंखों पर हाथ रखे, और ऊपर देखने को कहा; और वह चंगा हो गया, और सब कुछ साफ साफ देखने लगा।
26 तब उसने उसे यह कहकर घर भेज दिया, कि इस गांव में न जाना, और न किसी से कहना।
27 फिर यीशु और उसके चेले कैसरिया फिलिप्पी के गांवों में गए और मार्ग में अपने चेलों से पूछा; लोग मुझे क्या कहते हैं?
28 उन्होंने उत्तर दिया, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; परन्तु कितने तो एलिय्याह और कितने भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं।

29 उस ने उन से पूछा, परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? पतरस ने उत्तर दिया, कि तू ही मसीह है।
30 तब उस ने उन्हें चिताया, कि उसके विषय में किसी से न कहना।
31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दु:ख उठाए, और पुरनिये और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें; और वह तीन दिन के बाद जी उठे।
32 उस ने यह बात खुलकर कह दी: तब पतरस उसे अलग ले जाकर डांटने लगा।
33 परन्तु उस ने फिरकर अपने चेलों की ओर देखा, और पतरस को डांटकर कहा; हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातें मन लगाता है।
34 तब उस ने अपने चेलों समेत लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा; जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वही उसे बचाएगा।
36 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?
37 या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?
38 जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से लजाएगा।

अध्याय 9

1 उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आता हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।
2 छ:दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और उनके साम्हने उसका रूपान्तरण हुआ।
3 और उसका वस्त्र बर्फ के समान चमकने लगा, यहां तक कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी उसे नहीं चमका सकता।
4 और एलिय्याह मूसा के साथ उन्हें दिखाई दिया, और वे यीशु के साथ बातें कर रहे थे।
5 पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, कि हे गुरू, हमारा यहां रहना अच्छा है; इसलिये हम तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
6 क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिये कि वे बहुत डर गए थे।
7 और एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।
8 और एकाएक उन्होंने चारों ओर दृष्टि करके यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।
9 जब वे पहाड़ से नीचे उतरे, तो उसने उन्हें चिताया, कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है, वह किसी से न कहना।
10 और उन्होंने यह बात आपस में रखी, और एक दूसरे से पूछते रहे, कि मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?
11 और उन्होंने उस से पूछा; शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है?
12 उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो पहिले आकर सब कुछ सुधारेगा; और मनुष्य के पुत्र के विषय में लिखा है, कि वह बहुत दु:ख उठाएगा, और तुच्छ गिना जाएगा।
13 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह तो आया ही था, और जैसा उसके विषय में लिखा है, उन्होंने उसके साथ जो कुछ चाहा, वही किया।
14 जब वह अपने चेलों के पास आया, तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़ लगी है, और शास्त्री उन से प्रश्न कर रहे हैं।
15 और तुरन्त सब लोग उसे देखकर बहुत चकित हुए, और उसकी ओर दौड़कर उसे नमस्कार किया।
16 तब उस ने शास्त्रियों से पूछा; तुम उन से क्या प्रश्न करते हो?
17 भीड़ में से एक ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूंगी आत्मा है, तेरे पास लाया था।
18 और जहां कहीं वह उसे पकड़ता है, वहीं फाड़ डालता है, और वह मुंह में फेन भर लाता, और दांत पीसता, और सूखता जाता है। और मैं ने तेरे चेलों से कहा था, कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे निकाल न सके।
19 उस ने उसको उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहता रहूंगा? उसे मेरे पास ले आओ।
20 तब वे उसे उसके पास ले आए, और जब उस ने उसे देखा, तो तुरन्त आत्मा ने उसे मरोड़ा, और वह भूमि पर गिरकर मुंह में फेन भरकर लोटने लगा।
21 तब उसने अपने पिता से पूछा, यह बात मुझे कब से मालूम नहीं हुई? उसने कहा, यह तो एक बच्चे की ओर से है।
22 और वह उसे नाश करने के लिये बार बार आग और पानी में डाल चुका है; परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर दया कर और हमारा उपकार कर।
23 यीशु ने उस से कहा; यदि तू विश्वास कर सकता है, तो विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।
24 तब लड़के के पिता ने तुरन्त चिल्लाकर आंसू बहाते हुए कहा; हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं; मेरे अविश्वास का उपाय कर।
25 जब यीशु ने देखा कि लोग दौड़कर इकट्ठे हो रहे हैं, तो उसने दुष्टात्मा को डांटा और कहा, हे गूंगी और बहिरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं, उस में से निकल आ; और उस में फिर कभी प्रवेश न कर।
26 और आत्मा चिल्लाकर उसे बहुत मरोड़कर उसमें से निकल गई, और वह मरा हुआ सा हो गया, यहां तक कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर गया है।
27 परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया।
28 जब वह घर में आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उस से पूछा; हम उसे क्यों न निकाल सके?
29 उस ने उन से कहा; यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के किसी और उपाय से निकल नहीं सकती।
30 फिर वे वहां से चल दिए और गलील से होकर जाने लगे, और वह नहीं चाहता था, कि कोई यह जाने।

31 क्योंकि वह अपने चेलों को उपदेश देता और उनसे कहता था, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, और वह मरने के तीसरे दिन जी उठेगा।
32 परन्तु वे यह बात न समझे, और उस से पूछने से डरते थे।
33 फिर वह कफरनहूम में आया, और घर में पहुंचकर उन से पूछा; मार्ग में तुम आपस में क्या विवाद कर रहे थे?
34 परन्तु वे चुप रहे, क्योंकि मार्ग में उन में यह वाद-विवाद हुआ था, कि हम में से बड़ा कौन है?
35 फिर उस ने बैठकर बारहों को बुलाया, और उन से कहा; यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो वह सब से छोटा और सब का सेवक बने।
36 फिर उस ने एक बालक को लेकर उनके बीच में खड़ा किया, और उसे गोद में लेकर उन से कहा।
37 जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालकों में से किसी एक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।
38 इस पर यूहन्ना ने उसको उत्तर दिया, कि हे गुरू, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, पर वह हमारे पीछे नहीं चलता, और हम ने उसे मना भी किया, क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं चलता।
39 यीशु ने कहा, उसे मत मना करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से आश्चर्यकर्म करे, और मुझे निन्दा करे।
40 क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं है, वह हमारे पक्ष में है।
41 क्योंकि जो कोई तुम्हें एक कटोरा पानी इसलिये पिलाए कि तुम मसीह के हो, मैं तुम से सच कहता हूं, वह अपना प्रतिफल न खोएगा।
42 जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होगा कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटका दिया जाए, और वह समुद्र में डाल दिया जाए।
43 और यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल; टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो हाथ रहते हुए नरक में डाला जाए, और उस आग में जो कभी बुझने की नहीं।
44 जहां उनका कीड़ा नहीं मरता, और आग नहीं बुझती।
45 और यदि तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल; लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो पांव रहते हुए नरक में डाला जाए, और उस आग में जो कभी बुझने की नहीं।
46 जहां उनका कीड़ा नहीं मरता, और आग नहीं बुझती।
47 और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल; काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।
48 जहां उनका कीड़ा नहीं मरता, और आग नहीं बुझती।
49 क्योंकि हर एक मनुष्य आग से नमकीन किया जाएगा, और हर एक बलिदान नमक से नमकीन किया जाएगा।
50 नमक अच्छा है, परन्तु यदि नमक अपना स्वाद खो दे, तो उसे किस वस्तु से स्वादिष्ट करोगे? अपने में नमक रखो, और एक दूसरे से मेल मिलाप रखो।

अध्याय 10

1 फिर वह वहां से उठकर यरदन के पार यहूदिया के देश में आया, और लोग फिर उसके पास आए, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा।
2 तब फरीसियों ने उसके पास आकर उस की परीक्षा करने के लिये पूछा, क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी को त्याग दे?
3 उसने उनको उत्तर दिया, कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?
4 उन्होंने कहा, मूसा ने त्यागपत्र लिखकर उसे त्याग देने की आज्ञा दी है।
5 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी है।
6 परन्तु सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाकर बनाया।
7 इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा;
8 और वे दोनों एक तन होंगे: सो वे फिर दो नहीं, परन्तु एक तन हैं।
9 इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।
10 घर में उसके चेलों ने उसी बात के विषय में उस से फिर पूछा।
11 उस ने उन से कहा; जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह करे, वह उस से व्यभिचार करता है।
12 और यदि कोई स्त्री अपने पति को त्यागकर दूसरे से ब्याह करे, तो वह व्यभिचार करती है।
13 लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे: पर उसके चेलों ने उन्हें डांटा।
14 यह देखकर यीशु बहुत क्रोधित हुआ और उनसे कहा; बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।
15 मैं तुम से सच कहता हूं; जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करेगा, वह उस में प्रवेश करने न पाएगा।
16 तब उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।
17 जब वह मार्ग पर जा रहा था, तो एक मनुष्य दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा; हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूं?
18 यीशु ने उस से कहा; तू मुझे क्यों उत्तम कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर।
19 तू आज्ञाओं को तो जानता है, व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और माता का आदर करना।
20 उस ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, ये सब बातें मैं लड़कपन से मानता आया हूं।
21 तब यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा; तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर, अपना क्रूस उठा, और मेरे पीछे हो ले।
22 यह बात सुनकर वह उदास हुआ, और उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनवान था।
23 यीशु ने चारों ओर देखकर अपने चेलों से कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!

24 चेले उसकी बातों से चकित हुए। परन्तु यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया, कि हे बालको, जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!
25 ऊँट का सूई के छेद में से निकल जाना सहज है, परन्तु धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना सहज है।
26 और वे बहुत ही अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?
27 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा; मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।
28 तब पतरस उस से कहने लगा; देख, हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे चले हैं।
29 यीशु ने उत्तर दिया; मैं तुम से सच कहता हूं; ऐसा कोई नहीं जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाई या बहिन या पिता या माता या बाल-बच्चे या खेत को छोड़ दिया हो।
30 पर अब इस समय सौ गुना मिलेगा, घर, और भाई, और बहिन, और माता, और लड़के-बाले, और भूमि, पर उपद्रव के साथ; और परलोक में अनन्त जीवन।
31 पर बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे।
32 और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उनके आगे आगे चल रहा था: और वे अचम्भा करने लगे, और उसके पीछे चलते हुए डरने लगे। तब वह फिर उन बारहों को अपने साथ लेकर, उन्हें बताने लगा कि उसके साथ क्या क्या होने वाला है।
33 कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसे घात के योग्य ठहराएंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे।
34 और वे उसका ठट्ठा करेंगे, और उसे कोड़े मारेंगे, और उस पर थूकेंगे, और उसे मार डालेंगे; और वह तीसरे दिन जी उठेगा।
35 तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, हे गुरू, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम चाहें, वह तू हमारे लिये करे।
36 उस ने उन से कहा; तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं?
37 उन्होंने उस से कहा, हमें यह वरदान दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएं बैठें।
38 यीशु ने उन से कहा; तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने वाला हूं, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने वाला हूं, क्या तुम भी ले सकते हो?
39 उन्होंने उस से कहा, हां, हम पी सकते हैं: यीशु ने उन से कहा, जो कटोरा मैं पीता हूं, तुम भी पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेनेवाला हूं, उसी से तुम भी बपतिस्मा पाओगे।
40 परन्तु अपने दाहिने बाएँ दोनों तरफ बैठाना मेरा काम नहीं है; परन्तु जिन के लिये तैयार किया गया है, उन्हीं को दिया जाएगा।
41 जब चेलों ने यह सुना, तो वे याकूब और यूहन्ना पर बहुत क्रोधित हुए।
42 यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा; तुम जानते हो, कि जो अन्यजातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनके बड़े लोग उन पर अधिकार जताते हैं।
43 परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वही तुम्हारा सेवक बने।
44 और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का सेवक बने।
45 क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।
46 जब वह अपने चेलों और बड़ी भीड़ के साथ यरीहो से निकल रहा था, तो तिमाई का पुत्र अन्धा बरतिमाई सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था।
47 जब उस ने सुना कि यह यीशु नासरी है, तो वह चिल्ला चिल्लाकर कहने लगा, कि हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
48 बहुतों ने उसको डांटा, कि चुप रहे; पर वह और भी चिल्ला उठा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
49 तब यीशु ने खड़े होकर उसे बुलाने की आज्ञा दी, और उन्होंने उस अन्धे को बुलाकर कहा, कि ढाढ़स बान्ध, उठ, वह तुझे बुलाता है।
50 तब वह अपना वस्त्र फेंककर उठा, और यीशु के पास आया।
51 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? अन्धे ने उस से कहा, हे प्रभु, यह कि मैं देखने लगूं।
52 यीशु ने उस से कहा, चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है: और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया।

अध्याय 11

1 जब वे यरूशलेम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास आए, तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा।
2 और उन से कहा, साम्हने के गांव में जाओ; और उस में प्रवेश करते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई नहीं बैठा, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा; उसे खोलकर ले आओ।
3 यदि कोई तुम से पूछे, यह क्यों करते हो? तो कह दो, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है; और वह तुरन्त उसे यहां भेज देगा।
4 तब उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास दो रास्तों के मिलन स्थल पर बंधा हुआ पाया, और उसे खोल लिया।
5 और जो लोग वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने उन से कहा; तुम गदही के बच्चे को खोलकर क्या कर रहे हो?
6 उन्होंने यीशु की आज्ञा के अनुसार उनसे कहा, और उन्हें जाने दिया।
7 तब उन्होंने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाल दिए, और वह उस पर बैठ गया।
8 बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछा दिए, और औरों ने पेड़ों से डालियाँ काट काट कर मार्ग में बिछा दीं।
9 और जो आगे आगे जाते थे, और पीछे पीछे जाते थे, पुकार पुकार कर कहते थे, कि होशाना! धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।
10 हमारे पिता दाऊद का राज्य धन्य है, जो प्रभु के नाम से आता है। ऊँचे स्थान में होशाना।
11 फिर यीशु यरूशलेम में जाकर मन्दिर में गया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर, जब सांझ हो गई थी, बारहों के साथ बैतनिय्याह को गया।
12 दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से आए, तो उसे भूख लगी।

13 और वह दूर से एक अंजीर का पेड़ देख कर उसके पास गया, कि शायद उस में कुछ पाए; पर जब वह उसके पास गया तो पत्तों को छोड़ और कुछ न पाया; क्योंकि अभी अंजीर का समय न आया था।
14 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि अब से कोई तेरा फल कभी न खाएगा: और उसके चेलों ने यह सुना।
15 जब वे यरूशलेम में आए, तो यीशु मन्दिर में गया और वहां जो लोग लेन-देन कर रहे थे, उन्हें बाहर निकालने लगा; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतर बेचने वालों की चौकियां उलट दीं।
16 और किसी को मन्दिर में कोई बर्तन ले जाने की अनुमति नहीं दी।
17 और उस ने उपदेश देकर उन से कहा, क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा? परन्तु तुम ने उसे चोरों की खोह बना दिया है।
18 जब शास्त्री और महायाजक यह सुन कर उसके नाश करने का अवसर खोजने लगे, क्योंकि वे उससे डरते थे, इसलिये कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे।
19 जब शाम हुई तो वह नगर से बाहर चला गया।
20 और सुबह जब वे वहाँ से गुज़र रहे थे तो उन्होंने अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखते देखा।
21 तब पतरस ने स्मरण करके उस से कहा; हे गुरू, देख, वह अंजीर का पेड़ जिसे तू ने स्राप दिया था, सूख गया है।
22 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि परमेश्वर पर विश्वास रखो।
23 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो मैं कहता हूं, वह हो जाएगा, तो जो कुछ वह कहता है, वह उसके लिये होगा।
24 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगते हो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया है, और वह तुम्हारे लिये हो जायेगा।
25 और जब तुम खड़े होकर प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी के विरुद्ध कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो; इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।
26 परन्तु यदि तुम क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।
27 फिर वे फिर यरूशलेम में आए, और जब वह मन्दिर में टहल रहा था, तो प्रधान याजक और शास्त्री और पुरनिये उसके पास आए।
28 और उस से पूछो, तू ये काम किस अधिकार से करता है? और तुझे ये काम करने का अधिकार किसने दिया है?
29 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; मुझे उत्तर दो, तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।
30 यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से? मुझे उत्तर दो।
31 तब वे आपस में विचार करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की?
32 परन्तु यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से, तो लोग लोगों से डरते थे क्योंकि सब लोग जानते थे कि यूहन्ना सचमुच भविष्यद्वक्ता है।
33 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते: यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।

अध्याय 12

1 फिर वह उनसे दृष्टान्तों में बातें करने लगा। किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, रस निकालने के लिये स्थान खोदा, गुम्मट बनाया, और उसका ठेका किसानों को दे दिया; और दूर देश चला गया।
2 और फसल के मौसम में उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वह किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले।
3 तब उन्होंने उसे पकड़ लिया, और पीटा, और छूछे हाथ लौटा दिया।
4 फिर उस ने एक और दास को उन के पास भेजा, और उन्होंने उस पर पत्थरवाह किया, और उसका सिर फोड़ दिया, और उसका अपमान करके उसे लौटा दिया।
5 फिर उस ने एक और को भेजा, और उन्होंने उसे मार डाला; फिर और भी बहुतों को भेजा; उन्होंने कितनों को पीटा, और कितनों को मार डाला।
6 सो उसके एक ही पुत्र रह गया था, जो उसका प्रिय था; अन्त में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।
7 परन्तु उन किसानों ने आपस में कहा, यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, तब मीरास हमारी हो जाएगी।
8 तब उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला, और दाख की बारी से बाहर फेंक दिया।
9 इसलिये दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को दे देगा।
10 क्या तुम ने पवित्र शास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।
11 यह प्रभु का कार्य था, और यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है?
12 तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डरे, क्योंकि जानते थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है; इसलिये उसे छोड़कर चले गए।
13 तब उन्होंने उसे बातों में फंसाने के लिये कई एक फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा।
14 जब उन्होंने आकर उस से कहा, हे गुरू, हम जानते हैं कि तू सच्चा है, और किसी की परवाह नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बात नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। तो क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?
15 हम दें, या न दें? उस ने उनका कपट जानकर उन से कहा; मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार मेरे पास लाओ, कि मैं देखूं।
16 तब वे उसे ले आए, और उस ने उन से पूछा; यह मूरत और नाम किस का है? उन्होंने कहा, कैसर का।
17 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि जो कैसर का है, वह कैसर को दो; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो। और उन्होंने उस पर अचम्भा किया।
18 तब सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर पूछने लगे।
19 हे गुरू, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई मर जाए, और उसकी पत्नी रह जाए, और उसके कोई सन्तान न हो, तो उसका भाई उसकी पत्नी से ब्याह कर अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करे।
20 अब सात भाई थे: पहला भाई ब्याह करके बिना सन्तान मर गया।

21 दूसरे ने भी उसको ब्याह लिया, और बिना सन्तान मर गया; और तीसरे ने भी वैसा ही किया।
22 और वह सातों से उत्पन्न हुई, परन्तु कोई सन्तान न हुई; अन्त में वह स्त्री भी मर गई।
23 सो जब वे जी उठेंगे, तो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।
24 यीशु ने उनको उत्तर दिया; क्या तुम इसलिये भटक गए हो कि नहीं कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ नहीं जानते?
25 क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उनमें शादी-ब्याह न होगा, बल्कि वे स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होंगे।
26 और मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर ने झाड़ी के मध्य उससे कहा, कि मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?
27 परमेश्वर तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है; इसलिये तुम बड़ी भूल में पड़े हो।
28 तब शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें आपस में विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उस ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया है, उस से पूछा; सब आज्ञाओं में मुख्य कौन सी है?
29 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि सब आज्ञाओं में यह मुख्य है, कि हे इस्राएल, सुन; प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।
30 और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी बुद्धि, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना; यह पहली आज्ञा है।
31 और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख: इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
32 शास्त्री ने उस से कहा; हे गुरू, तू ने सच कहा; क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं।
33 और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना, और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलि और बलिदान से बढ़कर है।
34 जब यीशु ने देखा कि उस ने समझ से उत्तर दिया, तो उस से कहा, तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं: और उसके बाद किसी को उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ।
35 यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा; शास्त्री क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
36 क्योंकि दाऊद ने आप पवित्र आत्मा के द्वारा कहा है, कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं।
37 तो फिर दाऊद आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहां से ठहरा? और लोग आनन्द से उसकी सुनते थे।
38 और उस ने अपने उपदेश में उन से कहा; शास्त्रियों से चौकस रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना पसंद करते हैं, और बाजारों में नमस्कार सुनना पसंद करते हैं।
39 और आराधनालयों में मुख्य मुख्य आसन, और जेवनारों में मुख्य मुख्य स्थान;
40 वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये लोग अधिक दण्ड पाएंगे।
41 और यीशु भण्डार के साम्हने बैठकर देख रहा था, कि लोग भण्डार में किस रीति से पैसे डालते हैं, और बहुत धनवान भी बहुत डालते हैं।
42 इतने में एक कंगाल विधवा आई और उसने दो दमड़ियाँ, जो एक पैसे के बराबर होती हैं, डालीं।
43 तब उस ने अपने चेलों को बुलाकर उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि इस कंगाल विधवा ने भण्डार में डालने वालों में से सब से बढ़कर डाला है।
44 क्योंकि सब ने तो अपनी बढ़ती में से डाला था; पर इस ने अपनी घटी में से जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।

अध्याय 13

1 जब वह मन्दिर से बाहर जा रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, "हे गुरू, देख, यहाँ कैसे-कैसे पत्थर और कैसे-कैसे भवन हैं!"
2 यीशु ने उसको उत्तर दिया, क्या तू ये बड़े बड़े भवन देखता है? यहां पत्थर पर पत्थर भी न बचा रहेगा जो ढाया न जाएगा।
3 जब वह जैतून पहाड़ पर मन्दिर के साम्हने बैठा था, तो पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने एकान्त में उस से पूछा।
4 हमें बता कि ये बातें कब होंगी और जब ये सब बातें पूरी हो जाएंगी, तब क्या चिन्ह होगा?
5 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि चौकस रहो! कोई तुम्हें धोखा न दे।
6 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं, और बहुतों को भरमाएंगे।
7 जब तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।
8 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह भूकम्प होंगे, और अकाल और क्लेश होंगे; ये तो पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।
9 परन्तु सावधान रहो; क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौंपेंगे, और तुम सभाओं में पीटे जाओगे, और मेरे कारण हाकिमों और राजाओं के साम्हने खड़े किए जाओगे, कि उन पर गवाही हो।
10 और अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब जातियों में प्रचार किया जाए।
11 परन्तु जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे; परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा है।
12 अब भाई, भाई को और पिता, पुत्र को घात के लिये सौंपेंगे; और लड़के-बाले अपने माता-पिता के विरुद्ध उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।
13 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 परन्तु जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जहां उचित नहीं वहां खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले), तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।
15 और जो कोठे पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को न नीचे उतरे और न भीतर जाए।
16 और जो कोई खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।
17 उन दिनों में जो गर्भवती होंगी और जो दूध पिलायेंगी, उनके लिये हाय!
18 और प्रार्थना करो कि तुम्हारा भागना शीतकाल में न हो।

19 क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश वाले होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने सृजी है अब तक न हुए, और न फिर कभी होंगे।
20 और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिन्हें उसने चुना है, उन दिनों को घटाया है।
21 उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां है, या देखो, वहां है, तो विश्वास न करना।
22 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।
23 परन्तु तुम सावधान रहो, देखो, मैं ने तुम्हें सब बातें पहले ही से बता दी हैं।
24 परन्तु उन दिनों में, उस क्लेश के बाद, सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा,
25 और आकाश के तारे गिरने लगेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
26 और तब वे मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों पर आते देखेंगे।
27 तब वह अपने स्वर्गदूतों को भेजकर पृथ्वी की छोर से आकाश की छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।
28 अब अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्म काल निकट है।
29 इसी रीति से जब तुम ये बातें घटित होते देखो, तो जान लो कि वह निकट है, वरन् द्वार ही पर है।
30 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।
31 आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
32 उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।
33 सावधान रहो, जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।
34 क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस मनुष्य के समान है, जो दूर पर जा रहा था, और जिसने अपना घर छोड़ा, और अपने दासों को अधिकार दिया, और हर एक को उसका काम सौंपा, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दी।
35 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, सांझ को, या आधी रात को, या मुर्गे के बांग देने के समय, या भोर को।
36 कहीं ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते हुए पा ले।
37 और जो मैं तुम से कहता हूं, वही सब से कहता हूं, जागते रहो।

अध्याय 14

1 दो दिन के बाद फसह और अख़मीरी रोटी का पर्व्व होनेवाला था, और प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे छल से पकड़कर मार डालें।
2 परन्तु उन्होंने कहा, पर्व्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोग हुल्लड़ मचा दें।
3 और जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में भोजन करने बैठा था, तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य इत्र लेकर आई, और उसने इत्र तोड़कर उसके सिर पर उंडेला।
4 और कितने तो मन ही मन रिसकर कहने लगे, यह इत्र क्यों बरबाद किया गया?
5 क्योंकि वह तीन सौ दीनार से अधिक दाम में बिककर कंगालों को दिया जा सकता था। और वे उसके विरुद्ध बड़बड़ाने लगे।
6 यीशु ने कहा, उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उस ने मेरे लिये भलाई की है।
7 क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे साथ रहते हैं; और जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो; परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा।
8 जो कुछ वह कर सकती थी, वह उसने किया है; वह मेरे शव पर गाड़ने के लिये पहले से ही अभिषेक करने आई है।
9 मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।
10 तब यहूदा इस्करियोती जो बारह चेलों में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि उसे उन के हाथ पकड़वा दे।
11 यह सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए, और उसे रूपये देने का वचन दिया, और वह उसे पकड़वाने का कोई उपाय ढूंढने लगा।
12 अख़मीरी रोटी के पर्व्व के पहिले दिन, जब वे फसह का पशु बलि कर रहे थे, तो उसके चेलों ने उस से पूछा; तू कहां चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?
13 तब उस ने अपने चेलों में से दो को यह कह कर भेजा, कि नगर में जाओ, वहां एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लो।
14 और जहां कहीं वह जाए, वहां घर के स्वामी से कहना, कि गुरू कहता है; वह पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं?
15 और वह तुम्हें एक बड़ा सजा-सजाया और तैयार किया हुआ ऊपरी कमरा दिखा देगा, वहीं हमारे लिये तैयारी करना।
16 तब उसके चेले निकलकर नगर में आए, और जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया।
17 और सांझ को वह बारह चेलों के साथ आया।
18 जब वे बैठे भोजन कर रहे थे, तो यीशु ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि तुम में से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।
19 तब वे उदास होकर एक एक करके उस से कहने लगे, क्या वह मैं हूं? तब दूसरे ने कहा, क्या वह मैं हूं?
20 उस ने उनको उत्तर दिया, कि जो मेरे साथ थाली में हाथ डालेगा, वह उन बारहों में से एक है।
21 मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि वह मनुष्य न जन्मा होता, तो उसके लिये भला होता।
22 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी, और उनको देकर कहा; लो, खाओ; यह मेरी देह है।
23 तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें दिया, और उन सब ने उसमें से पीया।
24 और उस ने उन से कहा; यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है।
25 मैं तुम से सच कहता हूं, कि उस दिन तक दाख का रस फिर कभी न पीऊंगा, जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।

26 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर चले गए।
27 यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी।
28 परन्तु अपने जी उठने के बाद मैं तुम से पहले गलील को जाऊंगा।
29 पतरस ने उस से कहा; यदि सब ठोकर खाएंगे, तो खाएंगे, परन्तु मैं नहीं।
30 यीशु ने उस से कहा; मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही इसी रात को मुर्ग के दो बार बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से इन्कार करेगा।
31 परन्तु उस ने और भी जोर देकर कहा, कि यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तौभी मैं किसी रीति से तेरा इन्कार न करूंगा। इसी प्रकार सब ने भी कहा।
32 फिर वे गतसमनी नामक एक जगह में आए, और उस ने अपने चेलों से कहा; यहीं बैठे रहो, जब तक मैं प्रार्थना करूं।
33 फिर वह पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया, और बहुत ही अधीर और व्याकुल होने लगा।
34 और उन से कहा, मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं: तुम यहीं ठहरो, और जागते रहो।
35 फिर वह थोड़ा आगे बढ़कर भूमि पर गिरा और प्रार्थना करने लगा, कि यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ पर से टल जाए।
36 उस ने कहा; हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मुझ से हटा ले; तौभी जो मैं चाहता हूं वह नहीं, परन्तु जो तू चाहता है वही हो।
37 फिर उस ने आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; हे शमौन, क्या तू सोता है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका?
38 जागते और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो: आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।
39 तब वह फिर चला गया, और प्रार्थना करते हुए वही बातें फिर कहने लगा।
40 जब वह लौटकर आया, तो उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आंखें नींद से भरी थीं, और वे यह नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें।
41 फिर उस ने तीसरी बार आकर उन से कहा, अब सोते रहो, और विश्राम करो; बस हो गया; समय आ पहुंचा है; देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है।
42 उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ पहुंचा है।
43 वह अभी यह कह ही रहा था, कि तुरन्त यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और शास्त्रियों और पुरनियों की ओर से एक बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियाँ लिए हुए आई।
44 और उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह निशानी दी थी, कि जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़कर सावधानी से ले जाओ।
45 जब वह आया, तो तुरन्त उसके पास गया, और कहा; हे गुरू, हे गुरू; और उसे बहुत चूमा।
46 तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर उसे पकड़ लिया।
47 और जो पास खड़े थे, उन में से एक ने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर चलाई, और उसका कान उड़ा दिया।
48 यीशु ने उनको उत्तर दिया; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे चोर के समान पकड़ने के लिये निकले हो?
49 मैं हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहकर उपदेश करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा; परन्तु अवश्य है कि पवित्र शास्त्र की बातें पूरी हों।
50 तब वे सब उसे छोड़कर भाग गए।
51 और एक जवान अपनी नंगी देह पर चादर डाले हुए उसके पीछे आ रहा था, और जवानों ने उसे पकड़ लिया।
52 तब वह चादर छोड़कर नंगा ही उनके सामने से भाग गया।
53 तब वे यीशु को महायाजक के पास ले गए, और सब प्रधान याजक और पुरनिये और शास्त्री उसके यहां इकट्ठे हुए।
54 और पतरस दूर से उसके पीछे-पीछे महायाजक के आंगन के भीतर गया, और प्यादों के साथ बैठकर आग तापने लगा।
55 तब महायाजकों और सारी महासभा ने यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही ढूँढ़ी, परन्तु न मिली।
56 क्योंकि बहुतों ने उसके विरोध में झूठी गवाही दी, परन्तु उनकी गवाही एक सी न थी।
57 तब कुछ लोगों ने उठकर उसके विरुद्ध झूठी गवाही दी, और कहा।
58 हमने उसे यह कहते सुना है, कि मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर को ढा दूँगा, और तीन दिन के अन्दर दूसरा बनाऊँगा, जो हाथ से न बना हो।
59 परन्तु उन की गवाही एक सी न थी।
60 तब महायाजक ने बीच में खड़ा होकर यीशु से पूछा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?
61 परन्तु वह चुप रहा, और कुछ उत्तर न दिया। तब महायाजक ने उस से फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?
62 यीशु ने कहा, मैं हूं; और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।
63 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन है?
64 तुम ने परमेश्वर की निन्दा सुनी है: तुम क्या सोचते हो? और सब ने उसे प्राणदण्ड के योग्य ठहराया।
65 तब कोई तो उस पर थूकने, और कोई तो उसका मुंह ढांपने, और कोई तो उसे घूंसे मारने, और कोई तो उस से कहने लगे, कि भविष्यद्वाणी कर: और कोई तो उसके सेवकों ने उसे थप्पड़ मारे।
66 जब पतरस नीचे आंगन में था, तो महायाजक की दासियों में से एक वहां आई।
67 जब उस ने पतरस को आग तापते देखा, तो उस की ओर देखकर कहा; तू भी यीशु नासरी के साथ था।
68 परन्तु उस ने इन्कार करके कहा, कि मैं नहीं जानता, और न मेरी समझ में आता है कि तू क्या कह रही है: तब वह बाहर बरामदे में गया, और मुर्ग ने बांग दी।
69 फिर एक दासी उसे देखकर, पास खड़े लोगों से कहने लगी, यह उन में से एक है।
70 उस ने फिर इन्कार किया: थोड़ी देर बाद जो लोग पास खड़े थे, उन्होंने फिर पतरस से कहा, निश्चय तू भी उन में से एक है; क्योंकि तू गलीली है, और तेरी बातें भी उससे मेल खाती हैं।
71 तब वह धिक्कारने और शपथ खाने लगा, और कहने लगा, कि जिस मनुष्य की तुम चर्चा करते हो, मैं उसे नहीं जानता।
72 जब मुर्ग़ ने दूसरी बार बाँग दी, तब पतरस को वह बात याद आई जो यीशु ने उससे कही थी, " मुर्ग़ के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।" यह सोचकर वह रो पड़ा।

अध्याय 15

1 और भोर होते ही तुरन्त प्रधान याजकों ने पुरनियों और शास्त्रियों और सारी महासभा के साथ सम्मति की, और यीशु को बान्धकर ले गए, और पीलातुस के हाथ सौंप दिया।
2 तब पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उस ने उत्तर दिया, तू ही आप कहता है।
3 तब महायाजकों ने उस पर बहुत सी बातों का आरोप लगाया, परन्तु उस ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।
4 तब पीलातुस ने उस से फिर पूछा, क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता? देख ये लोग तेरे विरोध में कितनी बातें गवाही देते हैं।
5 परन्तु यीशु ने कुछ उत्तर न दिया, यहां तक कि पीलातुस को आश्चर्य हुआ।
6 और उस पर्व्व में उस ने किसी एक बन्दी को, जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया।
7 और बरअब्बा नाम एक मनुष्य था, जो बलवा करने वालों के साथ बन्धुआ हुआ था, जिन्हों ने बलवा करते समय हत्या की थी।
8 तब भीड़ ऊंचे स्वर से चिल्लाकर उस से बिनती करने लगी, कि जैसा तू ने उनके साथ किया है वैसा ही वह भी करे।
9 पीलातुस ने उन को उत्तर दिया, क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं?
10 क्योंकि वह जानता था कि महायाजकों ने उसे ईर्ष्या से पकड़वाया है।
11 परन्तु महायाजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा को हमारे लिये छोड़ दे।
12 पीलातुस ने फिर उन से पूछा; तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उस से तुम क्या चाहते हो कि मैं करूं?
13 तब वे फिर चिल्ला उठे, कि उसे क्रूस पर चढ़ाओ।
14 तब पीलातुस ने उन से कहा, क्यों? उस ने कौन सी बुराई की है? तब वे और भी चिल्ला उठे, कि उसे क्रूस पर चढ़ा दे।
15 तब पीलातुस ने लोगों को प्रसन्न करने की इच्छा से बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।
16 तब सिपाही उसे भवन में ले गए, जो प्रीटोरियम कहलाता है; और सारी पलटन को बुला लिया।
17 और उन्होंने उसे बैंगनी वस्त्र पहिनाया, और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा।
18 और उसे नमस्कार करके कहने लगे, कि हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!
19 और उन्होंने उसके सिर पर सरकण्डे मारे, और उस पर थूका, और घुटने टेककर उसे प्रणाम किया।
20 जब वे उसका उपहास कर चुके, तो उस पर से बैंजनी वस्त्र उतारकर उसके अपने कपड़े पहिनाए, और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए।
21 और शमौन नाम एक कुरेनी को, जो सिकन्दर और रूफुस का पिता था, जो गांव से आ रहा था, उन्होंने बेगार में लिया, कि उसका क्रूस उठाए हुए चले।
22 और वे उसे गुलगुता नाम स्थान पर ले गए, जिसका अर्थ खोपड़ी का स्थान है।
23 तब उन्होंने उसे गन्धरस मिला हुआ दाखरस पिलाया, परन्तु उस ने न लिया।
24 जब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, तो उसके कपड़े बाँट लिये और उन पर चिट्ठियाँ डालकर पूछा कि किसे क्या मिलेगा।
25 जब तीसरा पहर आया तो उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया।
26 और उसके ऊपर यह अभियोग लिखा हुआ था, कि यहूदियों का राजा।
27 और उन्होंने उसके साथ दो चोरों को भी क्रूस पर चढ़ाया; एक को उसके दाहिने और दूसरे को उसके बाएं।
28 और पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, कि वह अपराधियों के संग गिना गया।
29 और जो लोग रास्ते से जाते थे, वे सिर हिला-हिलाकर उस पर निन्दा करते और कहते थे, हाय! तू मन्दिर को ढानेवाला और तीन दिन में बनानेवाला है।
30 अपने आप को बचाओ, और क्रूस से नीचे उतर आओ।
31 इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों के साथ आपस में ठट्ठा करके कहते थे, कि इस ने औरों को बचाया, परन्तु अपने आप को नहीं बचा सकता।
32 अब इस्राएल का राजा मसीह क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें: और जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी निन्दा करते थे।
33 जब छठा घण्टा हुआ, तो सारे देश में तीसरे घण्टे तक अन्धकार छा गया।
34 तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, " एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी?" जिसका अर्थ यह है, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"
35 जो लोग पास खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, देखो, वह एलिय्याह को पुकारता है।
36 तब एक ने दौड़कर सिरके में भिगोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया, और कहा; देखूं, एलिय्याह उसे उतार लाने आता है कि नहीं।
37 तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण त्याग दिए।
38 और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।
39 जब सूबेदार ने, जो उसके साम्हने खड़ा था, यह देखा कि वह इस प्रकार चिल्लाकर प्राण त्याग देता है, तो कहा; सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।
40 और स्त्रियां भी दूर से देख रही थीं, जिन में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलोमी थीं।
41 जब वह गलील में था, तो ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा करती थीं। और बहुत सी और स्त्रियाँ भी थीं जो उसके साथ यरूशलेम में आई थीं।
42 जब संध्या हुई, क्योंकि तैयारी का दिन था, अर्थात सब्त के एक दिन पहले का दिन।
43 तब अरिमतियाह का यूसुफ नाम एक प्रतिष्ठित मन्त्री और परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था, आया, और निर्भय होकर पीलातुस के पास गया, और यीशु की लोथ मांगी।
44 तब पीलातुस ने अचम्भा किया, कि क्या वह मर गया? और सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि क्या वह मर गया है?
45 जब उसने सूबेदार से यह बात जान ली, तो उस ने लोथ यूसुफ को दे दी।
46 तब उसने उत्तम मलमल का कपड़ा मोल लिया, और उसे उतारकर उस मलमल में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो चट्टान में खोदी गई थी, और कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया।
47 और मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही थीं, कि वह कहां रखा गया है।

अध्याय 16

1 जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उस पर मलें।
2 सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को, सूर्योदय के समय, वे कब्र पर आईं।
3 तब वे आपस में कहने लगे, हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?
4 जब उन्होंने दृष्टि डाली तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है; क्योंकि वह बहुत बड़ा था।
5 जब वे कब्र के भीतर गए, तो उन्होंने एक जवान को लम्बा सफेद वस्त्र पहिने हुए दाहिनी ओर बैठे देखा, और वे डर गए।
6 उस ने उन से कहा, डरो मत, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ते हो; वह जी उठा है; यहां नहीं है; देखो, वह स्थान है जहां उन्होंने उसे रखा था।
7 परन्तु तुम जाकर उसके चेलों और पतरस से कहो कि वह तुम्हारे आगे गलील को जाता है; जैसा उस ने तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।
8 और वे तुरन्त निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि वे थरथराती और अचम्भित होती थीं; और डर के मारे किसी से कुछ न बोलीं।
9 सप्ताह के पहिले दिन भोर को जब यीशु जी उठा, तो सब से पहिले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया, जिस में से उसने सात दुष्टात्माओं को निकाला था।
10 तब उसने जाकर उसके साथियों को समाचार दिया, कि वे रो रहे हैं और विलाप कर रहे हैं।
11 जब उन्होंने सुना कि वह जीवित है और उसे देखा गया है, तो उन्होंने विश्वास न किया।
12 इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें से दो को दिखाई दिया, जब वे गांव की ओर जा रहे थे।
13 तब उन्होंने जाकर बचे हुओं को समाचार सुनाया, परन्तु उन्होंने उन की भी विश्वास नहीं किया।
14 इसके बाद वह उन ग्यारहों को, जब वे भोजन करने बैठे थे, दिखाई दिया, और उनके अविश्वास और मन की कठोरता पर उन्हें डांटा, क्योंकि जिन्हों ने उसे जी उठने के बाद देखा था, उन्होंने उनकी प्रतीति नहीं की थी।
15 और उस ने उन से कहा; तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।
16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।
17 और जो विश्वास करेंगे उनमें ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे; नई नई भाषा बोलेंगे;
18 वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उन की कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।
19 तब प्रभु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया।
20 और वे निकलकर हर जगह प्रचार करने लगे, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और चिन्हों के द्वारा वचन को पुष्ट करता रहा। आमीन।

ल्यूक

अध्याय 1

1 इसलिये कि बहुतों ने उन बातों का विवरण देने का बीड़ा उठाया है, जिन पर हम विश्वास करते हैं।
2 जैसा उन्होंने जो आरम्भ से इसके देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हमें बताया।
3 हे परमप्रधान थियुफिलुस, मुझे भी यह उचित लगा कि मैं आरम्भ से सब बातों को भली भांति जानता हूं, और तेरे लिये क्रमानुसार लिखूं।
4 जिस से तू उन बातों की निश्चयता जान ले, जिनकी शिक्षा तुझे दी गई है।
5 यहूदिया के राजा हेरोदेस के दिनों में अबिय्याह के दल में जकरयाह नाम का एक याजक था; और उसकी पत्नी हारून की पुत्री थी, और उसका नाम इलीशिबा था।
6 और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोषता से चलते थे।
7 और उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि इलीशिबा बांझ थी, और वे दोनों बहुत बूढ़े हो गए थे।
8 और ऐसा हुआ कि जब वह अपने दल के अनुसार परमेश्वर के साम्हने याजक का काम करता था।
9 याजक के रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी डाली गई कि वह यहोवा के मन्दिर में जाकर धूप जलाए।
10 और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी।
11 और प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा हुआ उसे दिखाई दिया।
12 जब जकरयाह ने उसे देखा, तो वह घबरा गया, और उस पर बहुत भय छा गया।
13 परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकरयाह, मत डर; क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।
14 और तुझे आनन्द और हर्ष होगा, और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे।
15 क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा, और दाखरस वा और किसी और चीज़ में मदिरा न पिएगा; और अपनी माँ के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।
16 और इस्राएलियों में से बहुत से लोगों को वह उनके परमेश्वर यहोवा की ओर फेर लाएगा।
17 और वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में होकर उसके आगे आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़के-बालों की ओर फेर दे, और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की बुद्धि की ओर फेर दे, और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे।
18 जकरयाह ने स्वर्गदूत से पूछा, यह मैं कैसे जानूं? मैं तो बूढ़ा हूं, और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।
19 स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, कि मैं जिब्राईल हूं, जो परमेश्वर के साम्हने खड़ा रहता हूं; और तुझ से बातें करने, और तुझे ये सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूं।
20 और देख, जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें, उस दिन तक तू गूंगा रहेगा, और बोल न सकेगा, क्योंकि तू मेरी बातों पर विश्वास नहीं करता, जो अपने समय पर पूरी होंगी।
21 और लोग जकरयाह की प्रतीक्षा करते हुए अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में इतनी देर क्यों लग गई।
22 जब वह बाहर आया, तो उनसे बोल न सका, और उन्होंने जान लिया कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है; इसलिये कि वह उनको संकेत करके चुप रह गया।
23 जब उसकी सेवा के दिन पूरे हुए तो वह अपने घर चला गया।
24 उन दिनों के बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई और उसने अपने आप को पांच महीने तक छिपाए रखा, और कहा,
25 इस प्रकार यहोवा ने इन दिनों में मुझ से व्यवहार किया है, जब उसने मनुष्यों में मेरा अपमान दूर करने के लिये मुझ पर दृष्टि की।
26 छठे महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में भेजा गया।
27 एक कुंवारी जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी, और उस कुंवारी का नाम मरियम था।
28 तब स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, हे परम अनुग्रह पानेवाली हे प्रभु, धन्य हो, तू स्त्रियों में धन्य है।
29 वह उसे देखकर घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है?
30 स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम, मत डर; क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
31 और देख, तू गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी; तू उसका नाम यीशु रखना।
32 वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा, और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा।
33 और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।
34 तब मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं?
35 स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा तुझ पर आएगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो तुझ से उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।
36 और देख, तेरी चचेरी बहन इलीशिबा, उसके भी बुढ़ापे में एक पुत्र होनेवाला है; और यह उसका, जो बांझ कहलाती थी, छठा महीना है।
37 क्योंकि परमेश्वर के लिये कोई बात असम्भव नहीं।
38 मरियम ने कहा, देख, मैं प्रभु की दासी हूं; मुझे तेरे वचन के अनुसार हो: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।
39 उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई।
40 और जकरयाह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया।
41 जब इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, तो बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा, और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई।
42 और उसने ऊंचे शब्द से कहा, तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे गर्भ का फल धन्य है।
43 और यह मुझे कहां से मिला, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?
44 क्योंकि देख, ज्योंही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा, त्योंही बच्चा मेरे गर्भ में आनन्द से उछल पड़ा।
45 और धन्य है वह, जो विश्वास करती है, क्योंकि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गईं, वे पूरी होंगी।
46 तब मरियम ने कहा, मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।
47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर से आनन्दित हुई।

48 क्योंकि उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है, इसलिये देख, अब से सब युग-युग मुझे धन्य कहेंगे।
49 क्योंकि उस शक्तिशाली ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किये हैं; और उसका नाम पवित्र है।
50 और उसकी दया उन पर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है।
51 उसने अपनी भुजा से सामर्थ्य दिखाया है; उसने उन घमण्डियों को तितर-बितर कर दिया है जो उनके मन में घमण्ड करते थे।
52 उसने बलवानों को उनके आसनों से गिरा दिया, और दीनों को ऊंचा किया।
53 उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया है, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया है।
54 उसने अपनी करूणा स्मरण करके अपने दास इस्राएल की सहायता की है;
55 जैसा उस ने हमारे बापदादों से, अर्थात् इब्राहीम से, और उसकी सन्तान से सदा काल तक कहा था।
56 मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई।
57 अब इलीशिबा के जनने का समय आ पहुंचा और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।
58 जब उसके पड़ोसियों और चचेरे भाइयों ने सुना कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, तो वे भी उसके साथ आनन्दित हुए।
59 और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकरयाह रखा।
60 उसकी माता ने उत्तर दिया, कि नहीं; परन्तु उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा।
61 उन्होंने उस से कहा, तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं है।
62 और उन्होंने उसके पिता से संकेतों में पूछा, कि वह उसका नाम कैसा रखना चाहता है।
63 तब उस ने लिखने की मेज मांगकर लिख दिया, कि उसका नाम यूहन्ना है: और सब लोग अचम्भा करने लगे।
64 तब उसका मुंह और जीभ तुरन्त खुल गई, और वह बोलने और परमेश्वर की स्तुति करने लगा।
65 और उनके आस पास के सब रहने वालों पर भय छा गया, और ये सब बातें यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गईं।
66 और सब सुननेवालों ने अपने अपने मन में विचार करके कहा, यह कैसा बालक होगा! और प्रभु का हाथ उसके साथ था।
67 और उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर भविष्यद्वाणी करने लगा।
68 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने अपनी प्रजा पर दृष्टि की और उसका उद्धार किया है।
69 और अपने दास दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला है।
70 जैसा उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था, जो जगत के आरम्भ से होते आये हैं।
71 कि हम अपने शत्रुओं से, और अपने सब बैरियों के हाथ से बचे रहें;
72 कि हमारे पूर्वजों से की गई दया के अनुसार काम करे, और अपनी पवित्र वाचा का स्मरण करे;
73 जो शपथ उसने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी,
74 कि वह हमें यह वरदान दे, कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर निडर होकर उसकी सेवा करें।
75 उसके सम्मुख पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर चलते रहें।
76 और हे बालक, तू परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे-आगे चलेगा;
77 अपने लोगों को पापों की क्षमा से होने वाले उद्धार का ज्ञान दे।
78 हमारे परमेश्वर की कोमल करुणा से; जिसके द्वारा ऊपर से भोर का उदय हम पर हुआ है,
79 कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठने वालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को शांति के मार्ग पर सीधे चलाए।
80 और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।

अध्याय दो

1 उन दिनों में औगूस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों से कर लिया जाए।
2 (और यह कर पहली बार तब लगाया गया जब सीरिया का गवर्नर कुरेनियुस था।)
3 तब सब लोग कर देने के लिये अपने अपने नगर को चले गए।
4 और यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया।
5 कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती थी, कर लिया जाए।
6 जब वे वहां थे, तो उसके जनने के दिन पूरे हो गए।
7 और उसने अपने जेठे पुत्र को जन्म दिया, और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में लिटा दिया; क्योंकि सराय में उनके लिये जगह न थी।
8 और उसी देश में कुछ चरवाहे थे जो रात में खेत में रहकर अपने झुण्ड पर निगरानी रखते थे।
9 और देखो, प्रभु का दूत उनके ऊपर आया, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमक उठा, और वे बहुत डर गए।
10 तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।
11 क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।
12 और इसका तुम्हारे लिये यह पता होगा, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ, और चरनी में पड़ा पाओगे।
13 और एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों की सेना परमेश्वर की स्तुति करती हुई और कहती हुई दिखाई दी।
14 आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर मनुष्यों में उत्तम शांति हो।
15 जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, आओ, हम बैतलहम चलें और यह बात जो घटी है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।
16 और उन्होंने तुरन्त आकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा हुआ पाया।
17 जब उन्होंने यह देखा, तो जो बात इस बालक के विषय में उनसे कही गई थी, उसे उन्होंने प्रगट किया।
18 और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो गड़ेरियों ने उनसे कहीं थीं, आश्चर्य किया।

19 परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर उन पर विचार करती रही।
20 और चरवाहे जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।
21 जब आठ दिन पूरे हुए, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो स्वर्गदूत ने उसके गर्भ में आने से पहिले रखा था।
22 जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उसके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यहोवा के सामने प्रस्तुत करने के लिये यरूशलेम में ले आए।
23 (जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है, कि हर एक पहिलौठा पुरुष प्रभु के लिये पवित्र कहलाएगा।)
24 और जैसा प्रभु की व्यवस्था में कहा गया है, उसके अनुसार बलिदान चढ़ाना, अर्थात एक जोड़ा पंडुकी, या कबूतर के दो बच्चे।
25 और देखो, यरूशलेम में शमौन नाम एक मनुष्य था; वह धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा था; और पवित्र आत्मा उस पर था।
26 और पवित्र आत्मा के द्वारा उस पर प्रगट किया गया, कि जब तक तू प्रभु के मसीह को देख न लेगा, तब तक मृत्यु को न देखेगा।
27 और वह आत्मा के द्वारा मन्दिर में आया, और जब माता-पिता बालक यीशु को व्यवस्था की रीति के अनुसार करने को भीतर लाए।
28 तब उस ने उसे गोद में लिया, और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा,
29 हे प्रभु, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है।
30 क्योंकि मेरी आंखों ने तेरा उद्धार देखा है,
31 जिसे तूने सब लोगों के साम्हने तैयार किया है;
32 क्योंकि वह अन्यजातियों के लिये ज्योति और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा है।
33 और यूसुफ और उसकी माता ने उन बातों से जो उसके विषय में कही जाती थीं, अचम्भा किया।
34 तब शमौन ने उन्हें आशीर्वाद देकर उस की माता मरियम से कहा; देख, यह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने, और उठने के लिये और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया है, जिस के विरोध में बातें की जाएंगी।
35 (वरन तेरी आत्मा भी तलवार से छिद जाएगी) ताकि बहुत हृदयों के विचार प्रगट हो जाएं।
36 और हन्नाह नाम एक भविष्यद्वक्तिन थी, जो आशेर के गोत्र के फनूएल की बेटी थी; वह बहुत बूढ़ी थी, और कुंवारी होने के बाद सात वर्ष तक अपने पति के साथ रह सकी थी।
37 वह लगभग चौरासी वर्ष से विधवा थी: और मन्दिर से नहीं जाती थी, परन्तु उपवास और प्रार्थना कर के रात-दिन परमेश्वर की सेवा करती रहती थी।
38 और उस ने उसी क्षण आकर प्रभु का धन्यवाद किया, और उन सब से जो यरूशलेम में छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें कीं।
39 और जब उन्होंने प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ पूरा किया, तो वे गलील में अपने नगर नासरत को लौट गए।
40 और बालक बढ़ता और बलवन्त होता और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।
41 उसके माता-पिता हर साल फसह के पर्व पर यरूशलेम जाते थे।
42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए।
43 जब वे दिन पूरे करके लौटने लगे, तो वह बालक यीशु यरूशलेम में रह गया; और यूसुफ और उस की माता इस बात को न जानते थे।
44 परन्तु वे यह समझकर कि वह और लोगों के साथ होगा, एक दिन का मार्ग निकल गए, और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचानवालों में ढूंढ़ने लगे।
45 परन्तु जब वह न मिला, तो वे उसे ढूंढ़ते हुए यरूशलेम की ओर फिर गए।
46 और ऐसा हुआ कि तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए पाया।
47 और सब सुननेवाले उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित हुए।
48 जब उन्होंने उसे देखा तो अचम्भा किया, और उसकी माता ने उस से कहा, हे बेटे, तू ने हम से ऐसा व्यवहार क्यों किया? देख, तेरा पिता और मैं तुझे दु:खी होकर ढूंढ़ते थे।
49 उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते हो? क्या तुम नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के काम में लगना अवश्य है?
50 परन्तु जो बात उस ने उन से कही थी, उसे उन्होंने न समझा।
51 तब वह उन के साथ गया, और नासरत में आकर उन के वश में रहा; पर उस की माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं।
52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ता गया, और परमेश्वर और मनुष्यों का अनुग्रह उस पर बढ़ता गया।

अध्याय 3

1 तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में, जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था, और हेरोदेस गलील में चौथाई का इतूरैया और त्रखोनीतिस में उसका भाई फिलिप्पुस और अबिलेने में चौथाई का राजा लिसानियास था।
2 जब हन्ना और कैफा महायाजक थे, तब परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा।
3 और वह यरदन के आस-पास के सारे देश में जाकर पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा।
4 जैसा कि यशायाह भविष्यद्वक्ता के वचनों की पुस्तक में लिखा है, कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द सुनाई दे रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उस की सड़कें सीधी करो।
5 हर एक घाटी भर दी जाएगी और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाएगी; जो टेढ़े हैं वे सीधे कर दिए जाएंगे और जो ऊंचे ऊंचे हैं वे समतल कर दिए जाएंगे;
6 और सब प्राणी परमेश्वर का उद्धार देखेंगे।
7 तब उस भीड़ से जो उस से बपतिस्मा लेने को निकलती थी, उसने कहा; हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो?
8 इसलिये मन फिराव के योग्य फल लाओ, और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।

9 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है; इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।
10 तब लोगों ने उस से पूछा, तो फिर हम क्या करें?
11 उस ने उनको उत्तर दिया, कि जिस के पास दो कुरते हों वह उसके साथ जिसके पास नहीं हैं बांट दे; और जिस के पास भोजन हो वह भी ऐसा ही करे।
12 तब चुंगी लेने वाले भी बपतिस्मा लेने के लिये आये और उस से पूछने लगे, कि हे गुरू, हम क्या करें?
13 उस ने उन से कहा, जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उस से अधिक न लेना।
14 तब सिपाहियों ने भी उस से पूछा, हम क्या करें? उस ने उन से कहा, किसी पर उपद्रव न करना, और न किसी पर झूठा दोष लगाना, और अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना।
15 जब लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपने अपने मन में यूहन्ना के विषय में सोच रहे थे, कि क्या वह मसीह तो नहीं है।
16 यूहन्ना ने उन सब को उत्तर दिया, कि मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह आनेवाला है, जो मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसके जूतों का बन्ध खोलने के योग्य भी नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
17 उसका बर्तन उसके हाथ में है, और वह अपने खलिहान को अच्छी तरह साफ करेगा, और गेहूं को तो अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।
18 और उस ने लोगों को उपदेश देते हुए और भी बहुत सी बातें कहीं।
19 परन्तु उस ने चौथाई देश के राजा हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के विषय में, और सब बुरे कामों के विषय में जो उस ने किए थे, उलाहना दिया।
20 और सब से बढ़कर यह बात कही, कि उस ने यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया।
21 जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया, तो ऐसा हुआ कि यीशु भी बपतिस्मा लेकर प्रार्थना कर रहा था, और आकाश खुल गया।
22 और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर की नाईं उस पर उतरा, और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।
23 और यीशु आप लगभग तीस वर्ष की आयु का था, और जैसा समझा जाता था, यूसुफ का पुत्र था, जो एली का पुत्र था।
24 और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का, और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का।
25 और वह मत्तिय्याह का, और वह आमोस का, और वह नहूम का, और वह असल्य का, और वह नग्गे का।
26 और वह मात का, और वह मत्तिय्याह का, और वह शिमी का, और वह यूसुफ का, और वह यहूदा का।
27 और वह योअन्ना का, और वह रेसा का, और वह सोरोबाबेल का, और वह शालतिएल का, और वह नेरी का।
28 और वह मलकी का, और वह अद्दी का, और वह कोसाम का, और वह एलमोदाम का, और वह एर का।
29 और वह योसेफ़ का, और वह एलीएज़र का, और वह योरीम का, और वह मत्तात का, और वह लेवी का,
30 और वह शिमोन का, और वह यहूदा का, और वह यूसुफ का, और वह योनान का, और वह एल्याकीम का,
31 और वह मलेआ का, और वह मिनान का, और वह मत्तता का, और वह नातान का, और वह दाऊद का,
32 और वह यिशै का, और वह ओबेद का, और वह बोअज़ का, और वह सलमोन का, और वह नहशोन का।
33 और वह अमीनादाब का, और वह अराम का, और वह इस्रोम का, और वह पेरेस का, और वह यहूदा का,
34 और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह इब्राहीम का, और वह तिराह का, और वह नाहोर का,
35 और वह सरूक का, और वह रागाऊ का, और वह फलेक का, और वह हेबेर का, और वह शाल का,
36 और वह केनान का पुत्र था, और वह अर्पक्षद का, और वह शेम का, और वह नूह का, और वह लेमेक का,
37 और वह मथुसाल का, और वह हनोक का, और वह येरेद का, और वह माललेल का, और वह केनान का,
38 और वह इनोश का, और वह शेत का, और वह आदम का, और वह परमेश्वर का पुत्र था।

अध्याय 4

1 और यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा, और आत्मा उसे जंगल में ले गया।
2 और शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा की, और उन दिनों में उसने कुछ न खाया; और जब वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख लगी।
3 तब शैतान ने उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह दे कि रोटी बन जाए।
4 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि लिखा है, कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं, परन्तु परमेश्वर के हर एक वचन से जीवित रहेगा।
5 तब शैतान उसे एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया और पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए।
6 तब शैतान ने उससे कहा, यह सारी शक्ति और इनका वैभव मैं तुझे दूंगा; क्योंकि यह मुझे सौंपा गया है, और जिसे चाहूं, उसे दे देता हूं।
7 इसलिये यदि तू मेरी उपासना करेगा, तो सब कुछ तेरा हो जाएगा।
8 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो जा; क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।
9 फिर उस ने उसे यरूशलेम में ले जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया, और उस से कहा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे गिरा दे।
10 क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें।
11 और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
12 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि यह भी कहा गया है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।
13 जब शैतान सारी परीक्षा कर चुका, तो कुछ देर के लिये उसके पास से चला गया।
14 और यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उस की चर्चा आस पास के सारे देश में फैल गई।
15 और वह उन की सभाओं में उपदेश करता रहा, और सब उस की बड़ाई करते थे।

16 फिर वह नासरत में आया, जहां वह पला-बढ़ा था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।
17 और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसके हाथ में दी गई। और जब उस ने पुस्तक खोली, तो वह स्थान पाया जहां लिखा था।
18 प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है; और मुझे इसलिये भेजा है कि टूटे मनवालों को चंगा करूं; कि बन्दियों को छुटकारे का सुसमाचार प्रचार करूं, और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं, और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।
19 प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करो।
20 तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक को फिर दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय में सब की आंखें उस पर लगी थीं।
21 तब वह उनसे कहने लगा; आज ही यह वचन तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।
22 तब सब ने उसको गवाही दी, और उसके मुंह से निकलने वाली अनुग्रह भरी बातों से आश्चर्य किया। और कहने लगे, क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?
23 उस ने उन से कहा; तुम मुझ से यह कहावत जरूर कहोगे, कि हे वैद्य, अपने आप को चंगा कर; जो कुछ हम ने सुना है कि कफरनहूम में किया गया है, वही यहां अपने देश में भी कर।
24 फिर उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में स्वीकार नहीं किया जाता।
25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, और सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा, तब इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं।
26 परन्तु एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारपत नगर में एक विधवा के पास भेजा गया।
27 एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, परन्तु नामान सीरियाई को छोड़, उन में से कोई शुद्ध न किया गया।
28 जब आराधनालय में सब लोगों ने ये बातें सुनीं, तो वे क्रोध से भर गये।
29 और उठकर उसे नगर से बाहर धकेल दिया, और उस पहाड़ी की चोटी पर ले गए जिस पर उनका नगर बसा हुआ था, कि उसे नीचे गिरा दें।
30 परन्तु वह उनके बीच में से होकर चला गया।
31 और गलील के कफरनहूम नगर में आकर सब्त के दिन उन्हें उपदेश देने लगा।
32 और वे उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि उसका वचन सामर्थ्य सहित था।
33 और आराधनालय में एक मनुष्य था, जिस में अशुद्ध दुष्टात्मा थी, और वह ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कह रहा था।
34 कि हे यीशु नासरी, हमें छोड़ दे; हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूं, तू कौन है? तू परमेश्वर का पवित्र जन है।
35 यीशु ने उसे डांटकर कहा, चुप रह; और उस में से निकल जा: तब शैतान उसे बीच में पटककर बिना कुछ हानि पहुंचाए उस में से निकल गया।
36 और सब लोग चकित होकर आपस में बातें करने लगे, कि यह कैसी बात है! वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।
37 और उसकी कीर्ति आस पास के हर जगह फैल गई।
38 तब वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया, और शमौन की सास को ज्वर चढ़ा था, और उन्होंने उसके लिये उस से बिनती की।
39 तब उस ने उसके पास खड़े होकर ज्वर को डांटा, और वह उस पर से उतर गया; और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा करने लगी।
40 जब सूर्य अस्त होने लगा तो जिन जिन के यहां नाना प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त लोग थे वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उस ने उन में से हर एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
41 और दुष्टात्माएँ चिल्लाती और यह कहती हुई बहुतों में से निकल गईं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है। और उस ने उन्हें डांटा, और बोलने न दिया, क्योंकि वे जानते थे, कि यह मसीह है।
42 जब दिन हुआ, तो वह चला गया, और एक जंगली जगह में गया; और लोग उसे ढूंढ़ते हुए उसके पास आए, और उसे रोका, कि हमारे पास से न जा।
43 उस ने उन से कहा; मुझे और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का प्रचार करना अवश्य है, क्योंकि मैं इसलिये भेजा गया हूं।
44 और वह गलील के आराधनालयों में प्रचार करता रहा।

अध्याय 5

1 जब भीड़ परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उस पर गिरी पड़ती थी, तो वह गन्नेसरत झील के किनारे खड़ा था।
2 और झील के किनारे दो नाव खड़ी देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर अपने जाल धो रहे थे।
3 तब वह उन नावों में से एक पर, जो शमौन की थी, चढ़कर उस से बिनती करने लगा, कि किनारे से थोड़ा हटकर चला जा। तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।
4 जब वह बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में जाकर मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।
5 शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे गुरू, हम ने सारी रात मेहनत की, परन्तु कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से मैं जाल डालूंगा।
6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत सी मछलियाँ घेर लीं, और उनके जाल फट गए।
7 तब उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत करके कहा, कि आकर हमारी सहायता करो। और वे आए, और दोनों जहाज यहां तक भर गए कि वे डूबने लगे।
8 यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पांवों पर गिरकर कहने लगा, हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं।
9 क्योंकि वह और उसके सब साथी इतनी मछलियाँ पकड़ कर चकित हुए।
10 और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने भी जो शमौन के साथी थे, ऐसा ही किया। तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर; अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा।
11 जब वे अपने जहाज किनारे पर ले आए, तो सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
12 जब वह किसी नगर में था, तो देखो, कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य वहां था: वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा, और उस से बिनती करके कहने लगा, कि हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
13 तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा: और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा।

14 तब उसने उसको चिताया, कि किसी से न कह, परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में मूसा की आज्ञा के अनुसार भेंट चढ़ा, कि उन पर गवाही हो।
15 परन्तु उस की चर्चा और भी बढ़ती गई, और भीड़ की भीड़ उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई।
16 तब वह जंगल में चला गया, और प्रार्थना करने लगा।
17 एक दिन जब वह उपदेश दे रहा था, तो फरीसी और व्यवस्थापक वहां बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया और यरूशलेम के हर एक गांव से आए थे; और उन्हें चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य वहां थी।
18 और देखो, कुछ लोग एक मनुष्य को जो झोले का मारा हुआ था, खाट के भीतर लाए, और वे उसे भीतर ले जाकर उसके साम्हने लिटाने का उपाय ढूंढ़ रहे थे।
19 जब भीड़ के कारण वे उसे भीतर न ले जा सके, तो छत पर चढ़ गए, और उसे खाट समेत खपरैल तोड़कर बीच में यीशु के साम्हने उतार दिया।
20 जब उस ने उन का विश्वास देखा, तो उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
21 तब शास्त्री और फरीसी विवाद करने लगे, कि यह कौन है, जो परमेश्वर की निन्दा करता है? परमेश्वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?
22 यीशु ने उन के विचार जानकर उन से पूछा; तुम अपने मन में क्या विचार कर रहे हो?
23 क्या यह कहना सहज है, कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ और चल?
24 परन्तु इसलिये कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का भी अधिकार है, (उस ने उस झोले के मारे हुए से कहा), मैं तुझ से कहता हूं, उठ, अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा।
25 तब वह तुरन्त उनके साम्हने उठा, और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर, परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने घर चला गया।
26 और सब लोग चकित हुए, और परमेश्वर की महिमा करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने अनोखी बातें देखी हैं।
27 इसके बाद वह बाहर गया और लेवी नामक एक चुंगी लेने वाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और उससे कहा; मेरे पीछे आओ।
28 तब वह सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।
29 तब लेवी ने अपने घर में उसके लिये बड़ी जेवनार की, और चुंगी लेनेवालों की और और लोगों की भी एक बड़ी भीड़ उसके साथ बैठी।
30 परन्तु उनके शास्त्री और फरीसी उसके चेलों पर यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?
31 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि वैद्य भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये आवश्यक है।
32 मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूँ।
33 उन्होंने उस से कहा; यूहन्ना के चेले तो बार बार उपवास रखते और प्रार्थना करते हैं; और वैसे ही फरीसियों के चेले भी; परन्तु तेरे चेले तो खाते-पीते हैं?
34 तब उसने उनसे कहा, क्या तुम वर-वधू के बच्चों से, जब तक दूल्हा उनके साथ रहे, उपवास करवा सकते हो?
35 परन्तु वे दिन आएंगे, जब दूल्हा उन से अलग कर दिया जाएगा, और उस समय वे उपवास करेंगे।
36 फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त भी कहा; कि कोई नये वस्त्र का पैबन्द पुराने पर नहीं लगाता; नहीं तो नया वस्त्र फट जाता है, और नये में से निकाला हुआ पैबन्द पुराने के साथ मेल नहीं खाता।
37 और कोई भी मनुष्य नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता; ऐसा न हो कि नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाए, और मशकें नाश हो जाएं।
38 परन्तु नया दाखरस नई कुप्पियों में भरना आवश्यक है, और दोनों सुरक्षित रहते हैं।
39 कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर तुरन्त नया नहीं चाहता, क्योंकि कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।

अध्याय 6

1 फिर ऐसा हुआ कि दूसरे सब्त के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले बालें तोड़-तोड़कर, और हाथों से मसल-मसलकर खाते जा रहे थे।
2 तब कई फरीसियों ने उन से कहा; तुम वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?
3 यीशु ने उन को उत्तर दिया; क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए, क्या किया?
4 वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां लेकर खाईं, और अपने साथियों को भी दीं, जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं?
5 और उस ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।
6 फिर ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन वह आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा, और वहां एक मनुष्य था, जिस का दाहिना हाथ सूखा था।
7 और शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उस की घात में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन लोगों को अच्छा करता है कि नहीं।
8 परन्तु उस ने उनके मन की बातें जानकर, सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, उठकर बीच में खड़ा हो। तब वह उठकर खड़ा हो गया।
9 तब यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से एक बात पूछता हूं; क्या सब्त के दिन भलाई करना उचित है या बुराई? प्राण को बचाना या नाश करना?
10 और उसने चारों ओर उन सभों को देखकर उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा। उसने वैसा ही किया, और उसका हाथ फिर ठीक हो गया।
11 और वे बहुत ही पागल हो गए, और आपस में यह विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?
12 उन दिनों में वह प्रार्थना करने को पहाड़ पर गया, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।
13 जब दिन हुआ, तो उस ने अपने चेलों को बुलाकर उन में से बारह को चुना, और उन्हें प्रेरित कहा।
14 और ये हैं शमौन, जिस का नाम उस ने पतरस भी रखा, और उसका भाई अन्द्रियास, और याकूब, और यूहन्ना, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै।

15 और मत्ती और थोमा और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है।
16 और याकूब का भाई यहूदा, और यहूदा इस्करियोती, जो पकड़वाने वाला भी था।
17 तब वह उनके साथ उतरकर मैदान में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की टोली, और सारे यहूदिया और यरूशलेम और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बड़ी भीड़, जो उस से सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये आई थी, उसके पास आई थी।
18 और जो अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए थे, वे भी अच्छे किए गए।
19 और सारी भीड़ उसे छूना चाहती थी, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलती थी और सब को चंगा करती थी।
20 और उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।
21 धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो, क्योंकि तृप्त होगे। धन्य हो तुम, जो अब रोते हो, क्योंकि हंसोगे।
22 धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर करेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे, और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे।
23 उस दिन आनन्दित होकर उछलना; क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है; वैसे ही उन के पूर्वज भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी किया करते थे।
24 परन्तु हाय तुम पर, जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।
25 हाय तुम पर जो तृप्त हो! क्योंकि भूखे रहोगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हो! क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।
26 हाय तुम पर, जब सब लोग तुम्हें भला कहेंगे! क्योंकि उनके पूर्वज झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विषय में भी ऐसा ही करते थे।
27 परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो।
28 जो लोग तुम्हें शाप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो; जो लोग तुम्हारा अपमान करते हैं, उनके लिये प्रार्थना करो।
29 जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे; और जो तेरी बगिया छीन ले, उस को कुरता भी लेने से न रोक।
30 जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तेरी वस्तु छीन ले, उस से न मांग।
31 और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।
32 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं।
33 और यदि तुम अपने भलाई करनेवालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं।
34 और यदि तुम उन्हें उधार दो, जिन से फिर पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही पाएं।
35 परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारा फल बड़ा होगा, और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी दयालु है।
36 इसलिये जैसा तुम्हारा पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।
37 दोष मत लगाओ, तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा; दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे; क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा।
38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।
39 फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, क्या अन्धा अन्धे को मार्ग दिखा सकता है? क्या दोनों गड़हे में न गिरेंगे?
40 चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध है, वह अपने गुरू के समान होगा।
41 तू क्यों अपने भाई की आंख का तिनका देखता है, परन्तु अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?
42 फिर तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, कि हे भाई, रुक मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं, जब कि तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता? हे कपटी, पहिले अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आंख का है, भली भांति देखकर निकाल सकेगा।
43 क्योंकि अच्छा पेड़ निकम्मा फल नहीं लाता, और न कोई निकम्मा पेड़ अच्छा फल लाता है।
44 क्योंकि हर एक पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है। क्योंकि लोग कांटों से अंजीर नहीं तोड़ते, और न झड़बेरी से अंगूर।
45 भला मनुष्य अपने मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है; क्योंकि जो मन में भरा है, वही उसके मुंह पर आता है।
46 और तुम क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो, और जो मैं कहता हूं, वह नहीं करते?
47 जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वह किसके समान है।
48 वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने घर बनाते समय गहरी खुदाई करके चट्टान पर नेव डाली; और जब बाढ़ आई, तो धारा उस घर पर जोर से लगी, परन्तु उसे हिला न सकी, क्योंकि वह चट्टान पर नेव डाली गई थी।
49 परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नींव का घर बनाया; और जब जल की धारा उस पर लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह घर सत्यानाश हो गया।

अध्याय 7

1 जब वह लोगों से अपनी सारी बातें कह चुका, तो कफरनहूम में आया।
2 और एक सूबेदार का दास जो उसका प्रिय था, बीमार होकर मरने पर था।
3 जब उसने यीशु के बारे में सुना, तो उसने यहूदियों के कई पुरनियों को उसके पास यह विनती करने के लिये भेजा, कि आकर मेरे सेवक को चंगा कर दे।
4 जब वे यीशु के पास आए, तो उस से बिनती करके कहने लगे, कि वह इस योग्य है, कि उसके लिये यह काम करे।

5 क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे लिये आराधनालय बनाया है।
6 तब यीशु उन के साथ साथ चला, और जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला भेजा, कि हे प्रभु दुख न उठा, क्योंकि मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए।
7 इसलिये मैं ने अपने आप को इस योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊं; पर वचन कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
8 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और मेरे हाथ में सिपाही हैं; और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे से कहता हूं, आ, तो आता है; और अपने दास से कहता हूं, यह कर, तो वह करता है।
9 जब यीशु ने ये बातें सुनीं, तो उस ने अचम्भा किया, और मुंह फेरकर उन लोगों से जो उसके पीछे आ रहे थे कहा; मैं तुम से कहता हूं; कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
10 और भेजे हुए लोगों ने घर लौटकर उस बीमार सेवक को चंगा पाया।
11 दूसरे दिन वह नाईन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेलों में से बहुत से, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
12 जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था; और वह विधवा थी; और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे।
13 जब प्रभु ने उसे देखा, तो उस पर तरस खाया, और उस से कहा, मत रो।
14 तब उस ने पास आकर अर्थी को छुआ, और उसे उठाने वाले ठहर गए: तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।
15 तब वह मरा हुआ उठ बैठा, और बोलने लगा, और उस ने उसे उसकी मां को सौंप दिया।
16 तब सब पर भय छा गया, और वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है।
17 और उसके विषय में यह बात सारे यहूदिया और आस पास के सारे देश में फैल गई।
18 तब यूहन्ना के चेलों ने उसे ये सब बातें बताईं।
19 तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर यीशु के पास यह पूछने को भेजा, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें?
20 जब वे उसके पास आए, तो कहने लगे; यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें?
21 और उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों, और दुखों, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया, और बहुत से अंधों को आँखें दीं।
22 तब यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।
23 और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।
24 जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग चले गए, तो वह यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा, तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?
25 परन्तु तुम क्या देखने गए थे? क्या तुम कोमल वस्त्र पहने हुए मनुष्य को देखने गए थे? देखो, जो सुन्दर वस्त्र पहिने हुए और सुख चैन से रहते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं।
26 परन्तु तुम क्या देखने गए थे? किसी भविष्यद्वक्ता को? हां, मैं तुम से कहता हूं, वरन किसी भविष्यद्वक्ता से भी बढ़कर को।
27 यह वही है, जिसके विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।
28 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं; पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से भी बड़ा है।
29 और सब साधारण लोगों ने और चुंगी लेनेवालों ने भी, यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को सच्चा माना।
30 परन्तु फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उसका बपतिस्मा न लेकर, अपने विषय में परमेश्वर की मनसा को टाल दिया।
31 तब प्रभु ने कहा, तो फिर मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किस से करूं, और वे किसके समान हैं?
32 वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं, हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने तुम्हारे लिये विलाप किया, और तुम न रोए।
33 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, कि उस में दुष्टात्मा है।
34 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है, और तुम कहते हो, देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों और पापियों का मित्र!
35 परन्तु बुद्धि अपनी सब सन्तानों से सिद्ध होती है।
36 फिर एक फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर: सो वह फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।
37 और देखो, उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि यीशु फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।
38 और उसके पांवों के पास पीछे खड़ी होकर रोती हुई उसके पांवों को आँसुओं से धोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांवों को चूमकर उन पर इत्र मला।
39 यह देखकर, उस फरीसी ने, जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचा; यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है, क्योंकि वह तो पापिनी है।
40 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है: उस ने कहा, हे गुरू, कह।
41 एक महाजन के दो देनदार थे; एक पर पाँच सौ दीनार और दूसरे पर पचास दीनार शेष थे।
42 जब उन के पास चुकाने को कुछ न रहा, तो उस ने उन दोनों को क्षमा कर दिया। सो मुझे बताओ, उन में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा?
43 शमौन ने उत्तर दिया, कि मैं समझता हूं, कि वह, जिस का उस ने अधिक क्षमा किया है: उस ने उस से कहा, तू ने ठीक निर्णय किया है।
44 तब उस ने स्त्री की ओर फिरकर शमौन से कहा, क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया, परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया; पर इस ने मेरे पांव आँसुओं से धोए, और अपने सिर के बालों से पोंछे।
45 तू ने मुझे चूमा नहीं दिया, परन्तु इस ने जब से मैं आया हूं तब से मेरे पांव चूमना नहीं छोड़ा।
46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, परन्तु इस स्त्री ने मेरे पांवों पर इत्र मला है।

47 इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि उसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि उस ने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।
48 तब उस ने उस से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए।
49 तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे आपस में सोचने लगे; यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?
50 तब उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है; कुशल से जा।

अध्याय 8

1 इसके बाद वह नगर नगर और गांव गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने लगा; और वे बारह उसके साथ थे।
2 और कितनी स्त्रियां जो दुष्टात्माओं और बीमारियों से छुड़ाई गई थीं, और जिन में से मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिस में से सात दुष्टात्माएं निकली थीं।
3 और हेरोदेस के भण्डारी खोजा की पत्नी योअन्ना और सुसन्नाह और बहुत सी और स्त्रियां थीं, जो अपनी संपत्ति से उस की सेवा करती थीं।
4 जब बहुत से लोग इकट्ठे हुए और नगर नगर से उसके पास आए, तो उस ने दृष्टान्त में कहा।
5 एक बोनेवाला बीज बोने निकला, और बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे, और रौंदे गए, और आकाश के पक्षियों ने उन्हें चुग लिया।
6 और कुछ चट्टान पर गिरे, और ज्योंही उगे, त्योंही सूख गए, क्योंकि उन्हें नमी न मिली।
7 और कुछ झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने उसके साथ बढ़कर उसे दबा लिया।
8 और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा, और उगकर सौ गुना फल लाया। ये बातें कहकर उस ने ऊंचे शब्द से पुकारा, कि जिस के कान हों वह सुन ले।
9 तब उसके चेलों ने उस से पूछा, यह दृष्टान्त क्या है?
10 उस ने कहा; तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर औरों को दृष्टान्तों में; इसलिये कि वे देखते हुए भी न देखें, और सुनते हुए भी न समझें।
11 अब दृष्टान्त यह है: बीज परमेश्वर का वचन है।
12 मार्ग के किनारे के वे लोग हैं, जो सुनते हैं, तब शैतान आकर उन के मन में से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार पाएं।
13 चट्टान पर बैठे हुए वे लोग हैं, जो सुनकर आनन्द से वचन ग्रहण तो करते हैं, पर जड़ न पकड़ने से वे थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय बहक जाते हैं।
14 और जो झाड़ियों में गिरा, ये वे हैं जो सुनते ही आगे बढ़ते हैं और चिन्ता और धन और इस जीवन के सुख विलास में फंस जाते हैं, और पूरा फल नहीं लाते।
15 पर अच्छी भूमि पर वे हैं, जो भले और उत्तम मन में वचन सुनकर उसे सम्भालते हैं, और धीरज से फल लाते हैं।
16 कोई भी मनुष्य दीया जलाकर उसे बर्तन से नहीं ढकता, और न खाट के नीचे रखता है, परन्तु उसे दीवट पर रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पा सकें।
17 क्योंकि कुछ छिपा न रहेगा, जो प्रगट न हो; न कुछ गुप्त रहेगा, जो जाना न जाए और प्रगट न हो।
18 इसलिये चौकस रहो, कि किस रीति से सुनते हो; क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं है, उस से वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है।
19 तब उसकी माता और भाई उसके पास आए, परन्तु भीड़ के कारण उसके पास न जा सके।
20 तब कितनोंने उसको बताया, कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से मिलना चाहते हैं।
21 उस ने उनको उत्तर दिया, कि मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।
22 एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने चेलों के साथ नाव पर चढ़ा और उनसे कहा, " आओ, हम झील के पार चलें।" तब वे नाव पर चढ़ गए।
23 परन्तु जब वे नाव चला रहे थे, तो वह सो गया, और झील पर आँधी आई, और वे जल से भर गए, और खतरे में पड़ गए।
24 तब उन्होंने उसके पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे गुरू, हे गुरू, हम नाश हुए जाते हैं। तब उस ने उठकर आँधी को और पानी की लहरों को डांटा, और वे थम गए, और शान्त हो गया।
25 उस ने उन से कहा, तुम्हारा विश्वास कहां गया? और वे डर गए, और अचम्भा करके एक दूसरे से कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है कि वह आँधी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं।
26 और वे गिरासेनियों के देश में पहुंचे, जो गलील के साम्हने है।
27 जब वह किनारे पर जा रहा था, तो नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जो बहुत समय से दुष्टात्माओं से पीड़ित था और न कपड़े पहनता था, और न किसी घर में रहता था वरन कब्रों में रहता था।
28 जब उस ने यीशु को देखा, तो चिल्लाकर उसके पांवों पर गिरकर ऊंचे शब्द से कहा, हे परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र यीशु, मुझे तुझ से क्या काम? मैं बिनती करता हूं, मुझे पीड़ा न दे।
29 (क्योंकि उस ने अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दी थी, इसलिये कि वह बार बार उस पर हावी होती थी, और लोग उसे सांकलों और बेडियों से बांधते थे; और वह बेड़ियाँ तोड़ डालता था, और शैतान उसे जंगल में भगा देता था।)
30 यीशु ने उस से पूछा, तेरा क्या नाम है? उस ने कहा, सेना; क्योंकि बहुत से दुष्टात्मा उस में समा गए थे।
31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें गहरे जल में जाने की आज्ञा न दे।
32 और वहां पहाड़ पर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था: सो उन्होंने उस से बिनती की, कि हमें अपने भीतर जाने दे: और उस ने उन्हें जाने दिया।
33 तब दुष्टात्माएँ उस मनुष्य में से निकलकर सूअरों के भीतर चली गईं और झुण्ड तेजी से दौड़कर एक कड़ाड़े से नीचे झील में जा गिरा और दम घुटने लगा।
34 जब उनके चरवाहों ने यह देखा, तो वे भाग गए, और नगर और गांव में जाकर समाचार सुनाया।
35 तब वे यह जो हुआ था देखने को निकले, और यीशु के पास आकर, जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं, उसे कपड़े पहिने और सचेत यीशु के पाँवों के पास बैठे हुए पाकर डर गए।
36 और उन्होंने यह भी देखा कि वह जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त था, कैसे अच्छा हुआ।
37 तब गिरासेनियों के आस पास के सब लोगों ने उस से बिनती की, कि हमारे पास से चला जा; क्योंकि वे बड़े डर गए थे; तब वह नाव पर चढ़ गया, और फिर लौट आया।

38 जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह उससे बिनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे; परन्तु यीशु ने यह कहकर उसे विदा किया।
39 अपने घर लौट जा और लोगों को बता कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। तब वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं।
40 जब यीशु लौटा तो लोग आनन्द से उस से मिले, क्योंकि वे सब उस की बाट जोह रहे थे।
41 और देखो, याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया और यीशु के पांवों पर गिरकर उस से बिनती करने लगा, कि मेरे घर चल।
42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की एक ही बेटी थी, और वह मरने पर थी: और जब वह जा रहा था, तब लोग उसके पीछे हो लिये।
43 और एक स्त्री थी, जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव हो रहा था, और वह अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी, परन्तु किसी से भी चंगी न हो सकी थी।
44 और पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया, और तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया।
45 यीशु ने पूछा, मुझे किस ने छूआ? जब सब इन्कार करने लगे, तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, हे गुरू, लोग तुझ पर दबाव डाल रहे हैं, और तू कहता है, मुझे किस ने छूआ?
46 यीशु ने कहा, किसी ने मुझे छू लिया है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में से सामर्थ्य निकल गई है।
47 जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर सब लोगों के साम्हने बताया, कि मैं ने किस कारण से तुझे छूआ, और कैसे तुरन्त चंगी हो गई।
48 उसने उस से कहा; बेटी, ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है; कुशल से चली जा।
49 वह यह कह ही रहा था, कि किसी ने आराधनालय के सरदार के घर से आकर उस से कहा, तेरी बेटी मर गई: हे गुरू को दु:ख न दे।
50 यीशु ने यह सुनकर उसको उत्तर दिया, कि मत डर; केवल विश्वास रख, तो वह चंगी हो जाएगी।
51 जब वह घर में आया, तो उस ने पतरस और याकूब और यूहन्ना और लड़की के माता-पिता को छोड़, और किसी को भीतर आने न दिया।
52 तब सब रोए और उसके लिये विलाप करने लगे; पर उसने कहा, मत रोओ; वह मरी नहीं, परन्तु सो रही है।
53 तब उन्होंने यह जानकर कि वह मर गई है, उसका उपहास किया।
54 तब उस ने सब को बाहर निकाल दिया, और उसका हाथ पकड़ कर पुकार कर कहा, हे कन्या, उठ!
55 तब उसके प्राण फिर आए, और वह तुरन्त उठ खड़ी हुई; तब उस ने उसे भोजन देने की आज्ञा दी।
56 तब उसके माता-पिता अचम्भा करने लगे; परन्तु उस ने उन्हें चिताया, कि जो कुछ हुआ है, वह किसी से न कहना।

अध्याय 9

1 तब उस ने अपने बारह चेलों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं पर अधिकार और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ दी।
2 और उस ने उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बीमारों को चंगा करने के लिये भेजा।
3 उस ने उन से कहा; मार्ग के लिये कुछ मत लेना, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रूपये; और न दो दो कुरते।
4 और जिस किसी घर में तुम जाओ, वहीं रहो, और वहीं से विदा हो जाओ।
5 और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, उस नगर से निकलते समय अपने पांवों की धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही हो।
6 और वे वहां से चले गए, और गांव गांव सुसमाचार प्रचार करते, और हर जगह चंगा करते फिरे।
7 जब चौथाई देश का राजा हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया, क्योंकि कितनों ने कहा था, कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है।
8 और कितने यह कि एलिय्याह दिखाई दिया है; और कितने यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।
9 तब हेरोदेस ने कहा, यूहन्ना का तो सिर मैंने कटवाया है: परन्तु यह कौन है, जिस के विषय में ऐसी बातें सुनता हूं? और उस ने उस से भेंट करने की लालसा की।
10 जब प्रेरितों ने लौटकर अपना पूरा हाल उससे कह सुनाया, तब वह उन्हें साथ लेकर बैतसैदा नाम एक नगर के पास एकांत में गया।
11 यह जानकर लोग उसके पीछे चले गए, और वह उनसे भेंट करके उन से परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा, और जो चंगे होना चाहते थे, उन्हें चंगा किया।
12 जब दिन ढलने लगा, तो बारहों ने उसके पास आकर कहा, भीड़ को विदा कर, कि वे आस पास के गांवों और बस्तियों में जाकर टिकें और भोजन का प्रबंध करें; क्योंकि हम यहां जंगली स्थान में हैं।
13 उस ने उन से कहा, तुम ही उन्हें खाने को दो: उन्होंने कहा, हमारे पास पांच रोटी और दो मछली को छोड़ और कुछ नहीं है; हां, हम जाकर इन सब लोगों के लिये भोजन मोल लें।
14 क्योंकि वे लगभग पाँच हज़ार पुरुष थे: तब उस ने अपने चेलों से कहा, उन्हें पचास-पचास करके पाँति में बैठा दो।
15 और उन्होंने वैसा ही किया, और सब को बैठा दिया।
16 तब उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियां लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया, और तोड़ तोड़कर चेलों को देता गया, कि लोगों को परोसें।
17 और सब खाकर तृप्त हो गए, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाईं।
18 जब वह अकेले प्रार्थना कर रहा था, और उसके चेले उसके साथ थे, तो उस ने उन से पूछा; लोग मुझे क्या कहते हैं?
19 उन्होंने उत्तर दिया, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; परन्तु कितने तो एलिय्याह कहते हैं; और कितने कहते हैं, कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।
20 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? पतरस ने उत्तर दिया, कि परमेश्वर का मसीह।
21 तब उस ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी, कि यह बात किसी से न कहना।
22 कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दु:ख उठाए, और पुरनिये और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ ठहराएँ, और मार डाला जाए; और वह तीसरे दिन जी उठे।
23 और उस ने सब से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।
24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वही उसे बचाएगा।

25 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने आप को खो दे, या त्याग दिया जाए, तो उसे क्या लाभ होगा?
26 क्योंकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा सहित आएगा, तब उस से लजाएगा।
27 परन्तु मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।
28 इन बातों के कोई आठ दिन बाद वह पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने को पहाड़ पर गया।
29 जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसके चेहरे का रंग बदल गया, और उसका वस्त्र सफेद और चमकीला हो गया।
30 और देखो, मूसा और एलिय्याह नाम दो मनुष्य उससे बातें कर रहे थे।
31 वह महिमा सहित दिखाई दिया, और उसकी उस मृत्यु के विषय में बातें करने लगा, जो यरूशलेम में होनेवाली थी।
32 परन्तु पतरस और उसके साथी नींद से भरे हुए थे, और जब जागे, तो उस की महिमा और उन दो पुरूषों को जो उसके साथ खड़े थे, देखा।
33 जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु से कहा; हे गुरू, हमारा यहां रहना अच्छा है; इसलिये हम तीन मण्डप बनाएं; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये; वह यह न जानता था, कि वह क्या कह रहा है।
34 वह यह कह ही रहा था कि एक बादल ने आकर उन्हें छा लिया, और जब वे बादल में प्रवेश कर रहे थे, तो वे डर गए।
35 और बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।
36 जब वह शब्द बीत गया, तो यीशु अकेला पाया गया। और उन्होंने उस बात को छिपाया, और जो कुछ उन्होंने देखा था, उसकी कोई बात उन दिनों में किसी से न कही।
37 दूसरे दिन जब वे पहाड़ से नीचे उतरे तो बड़ी भीड़ उससे मिलने आई।
38 और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य चिल्लाकर कहने लगा, कि हे गुरू, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मेरे पुत्र पर कृपा दृष्टि कर, क्योंकि वह मेरा एकलौता पुत्र है।
39 और देखो, एक दुष्टात्मा उसे पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और उसे ऐसा मरोड़ता है कि उसका मुंह फिर फेन से भर आता है, और वह उसे कुचलने से कठिनता से दूर होता है।
40 और मैं ने तेरे चेलों से बिनती की, कि उसे निकाल दें; परन्तु वे न निकाल सके।
41 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, और तुम्हारी सहूंगा? अपने पुत्र को यहां ले आओ।
42 वह अभी आ ही रहा था, कि शैतान ने उसे पटककर मरोड़ा: और यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा, और बालक को चंगा करके उसके पिता को सौंप दिया।
43 और सब लोग परमेश्वर की बड़ी सामर्थ से चकित हुए। परन्तु जब सब लोग उन सब कामों से जो यीशु ने किए थे, आश्चर्य करते थे, तो उसने अपने चेलों से कहा।
44 ये बातें अपने कानों में गहराई से गाड़ दो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।
45 परन्तु वे यह बात न समझते थे, और यह बात उनसे छिपी रही, और वे उस बात के विषय में उस से पूछने से डरते थे।
46 तब उन में यह विवाद होने लगा, कि हम में बड़ा कौन है?
47 यीशु ने उनके मन का विचार जानकर एक बालक को लेकर अपने पास खड़ा किया।
48 और उन से कहा, जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है; क्योंकि जो तुम में छोटे से छोटा है, वही बड़ा होगा।
49 यूहन्ना ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, हम ने एक मनुष्य को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और हम ने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ नहीं चलता।
50 यीशु ने उस से कहा, उसे मत मना; क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।
51 जब उसके ऊपर उठाए जाने का समय आया, तो उसने यरूशलेम जाने का विचार दृढ़ता से तैयार किया।
52 तब उस ने अपने आगे दूत भेजे, और वे जाकर सामरियों के एक गांव में उसके लिये तैयारी करने को पहुंचे।
53 परन्तु उन्होंने उसे स्वीकार न किया, क्योंकि उसका मुख ऐसा था मानो वह यरूशलेम जा रहा हो।
54 यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा; हे प्रभु, क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे, जैसा एलिय्याह ने किया था?
55 तब उस ने फिरकर उन्हें डांटा, और कहा; तुम नहीं जानते कि हम कैसी आत्मा के हैं।
56 क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के प्राणों को नाश करने नहीं, परन्तु बचाने आया है। तब वे दूसरे गांव में चले गए।
57 जब वे मार्ग में जा रहे थे, तो एक मनुष्य ने उससे कहा, हे प्रभु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे चलूंगा।
58 यीशु ने उस से कहा; लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।
59 फिर उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे आओ: उस ने कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।
60 यीशु ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, परन्तु तू जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार कर।
61 एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे चलता हूं; परन्तु पहिले मुझे उन को जो मेरे घर में हैं, विदा कर लेने दे।
62 यीशु ने उस से कहा; जो मनुष्य हल पर हाथ रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।

अध्याय 10

1 इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए, और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाना चाहता था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।
2 इसलिये उसने उनसे कहा, " पक्के खेत तो बहुत हैं, परन्तु मजदूर थोड़े हैं; इसलिये खेत के स्वामी से प्रार्थना करो, कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।"
3 अपने मार्ग पर जाओ; देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच में भेड़ों के समान भेजता हूँ।
4 न तो बटुआ, न झोला, न जूते लो, और न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।

5 और जिस किसी घर में जाओ, पहिले कहो, कि इस घर को शांति मिले।
6 और यदि वहां शान्ति का पुत्र हो, तो तुम्हारी शान्ति उस पर ठहरेगी; नहीं तो वह तुम्हारे पास लौट आएगी।
7 और उसी घर में रहो, और जो कुछ दिया जाए, वही खाओ-पीओ; क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी मिलनी चाहिए: घर-घर न फिरो।
8 और जिस किसी नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें उतार लें, तो जो कुछ तुम्हारे साम्हने रखा जाए वही खाओ।
9 और वहां के बीमारों को चंगा करो और उनसे कहो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।
10 परन्तु जिस नगर में जाओ, और वहां के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसके बाजारों में जाकर कहो।
11 तुम्हारे नगर की धूल भी जो हम पर चिपकती है, हम तुम्हारे साम्हने झाड़ देते हैं; तौभी यह निश्चय रखो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।
12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि उस दिन उस नगर की दशा से सदोम की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
13 हे खुराजीन, हाय तुझ पर! हे बैतसैदा, हाय तुझ पर! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए गए होते, तो वे बहुत पहले ही टाट ओढ़कर और राख में बैठकर मन फिरा लेते।
14 परन्तु न्याय के दिन सोर और सैदा की दशा तुम्हारी दशा से अधिक सहने योग्य होगी।
15 और हे कफरनहूम, तू जो स्वर्ग तक ऊंचा किया गया है, अधोलोक में उतारा जाएगा।
16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है; जो तुम्हें तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है।
17 तब वे सत्तर आनन्दित होकर फिर कहने लगे, कि हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।
18 फिर उस ने उन से कहा; मैं ने शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा।
19 देखो, मैं तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार देता हूं; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।
20 तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं; पर इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।
21 उसी घड़ी यीशु आत्मा में आनन्दित होकर कहने लगा; हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है। हे पिता, ऐसा ही हो, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।
22 मेरे पिता ने मुझे सब वस्तुएं सौंपी हैं, और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, केवल पिता; और पिता कौन है, यह भी कोई नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे।
23 फिर उस ने चेलों की ओर फिरकर एकान्त में कहा; धन्य हैं वे आंखे, जो ये बातें जो तुम देखते हो देखती हैं।
24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनीं।
25 और देखो, एक व्यवस्थापक ने खड़े होकर उस की परीक्षा करने को कहा; हे गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूं?
26 उस ने उस से पूछा; व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?
27 उसने उत्तर दिया, कि तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, और सारे प्राण, और सारी शक्ति, और सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
28 उसने उससे कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है; यही कर, तो जीवित रहेगा।
29 परन्तु उस ने अपनी धार्मिकता सिद्ध करने की इच्छा से यीशु से पूछा; तो फिर मेरा पड़ोसी कौन है?
30 यीशु ने उत्तर दिया; एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिये, और उसे घायल करके अधमूआ छोड़कर चले गए।
31 और संयोग से एक याजक उसी रास्ते से आ रहा था, और उसे देखकर कतरना छोड़ दिया।
32 इसी रीति से एक लेवी भी उस जगह पर था, और उसको देखकर कतराकर चला गया।
33 परन्तु एक सामरी यात्री वहां आया, और उसे देखकर उस पर तरस खाया।
34 और उसके पास जाकर उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियाँ बाँधी, और उसे अपनी सवारी पर बैठाकर सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की।
35 दूसरे दिन जब वह विदा हुआ, तो उस ने दो दीनार निकालकर भण्डारी को दिए, और उस से कहा, इस की सेवा टहल करना; और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं फिर आने पर तुझे भर दूंगा।
36 अब तू क्या सोचता है, कि इन तीनों में से जो चोरों में घिरा था, उसका पड़ोसी कौन ठहरा?
37 उस ने कहा, वही जिस ने उस पर तरस खाया: तब यीशु ने उस से कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर।
38 जब वे जा रहे थे, तो वह एक गांव में गया और मार्था नाम एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा।
39 और उस की मरियम नाम एक बहिन थी; वह भी यीशु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी।
40 परन्तु मारथा बहुत सेवा करते करते घबरा गई, और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिन्ता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? इसलिये उस से कह, कि मेरी सहायता करे।
41 यीशु ने उसको उत्तर दिया; हे मार्था, हे मार्था, तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है।
42 परन्तु एक बात आवश्यक है, और वह उत्तम भाग मरियम ने चुन लिया है: जो उससे छीना न जाएगा।

अध्याय 11

1 जब वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा; हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखा दे, जैसा यूहन्ना ने अपने चेलों को सिखाया।
2 और उस ने उन से कहा, जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो, कि हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी हो।
3 हमारी दिन भर की रोटी हमें प्रतिदिन दिया कर।

4 और हमारे पापों को क्षमा कर; क्योंकि हम भी अपने हर एक अपराधी को क्षमा करते हैं। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा।
5 उस ने उन से कहा; तुम में से कौन है कि उसका एक मित्र हो, और वह आधी रात को उसके पास जाकर उस से कहे, कि हे मित्र, मुझे तीन रोटियां दे।
6 क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा करते हुए मेरे पास आया है, और मेरे पास उसके आगे रखने को कुछ नहीं है?
7 तब वह भीतर से उत्तर दे, कि मुझे दुख न दो; अब तो द्वार बन्द है, और मेरे बच्चे मेरे पास बिछौने पर हैं; इसलिये मैं उठकर तुझे नहीं दे सकता।
8 मैं तुम से कहता हूं; कि यदि उसका मित्र होने के कारण भी वह उसे उठकर न दे, तौभी उसके लज्जा के कारण उसे जितनी आवश्यकता होगी उतनी उठकर देगा।
9 और मैं तुम से कहता हूं, कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
10 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।
11 तुम में ऐसा कौन पिता है जो अपने पुत्र से रोटी मांगे, तो क्या वह उसे पत्थर देगा? या मछली मांगे, तो क्या वह मछली के बदले उसे सांप देगा?
12 या यदि वह अण्डा मांगे तो क्या उसे बिच्छू देगा?
13 सो जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?
14 फिर उस ने एक गूंगी दुष्टात्मा को निकाला: और जब दुष्टात्मा निकल गई, तो गूंगा बोलने लगा, और लोगों को अचम्भा हुआ।
15 परन्तु उन में से कितनों ने कहा, वह तो दुष्टात्माओं के प्रधान शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।
16 औरों ने उस की परीक्षा करने के लिये उस से आकाश का कोई चिन्ह मांगा।
17 परन्तु उस ने उनके मन की बातें जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़ जाता है; और जिस घर में फूट होती है, वह नाश हो जाता है।
18 यदि शैतान अपना ही विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा? तुम तो कहते हो, कि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं।
19 और यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे पुत्र किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्यायी ठहरेंगे।
20 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की उंगली से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
21 जब बलवान मनुष्य शस्त्रधारी होकर अपने घर की रक्षा करता है, तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है।
22 परन्तु जब कोई उससे अधिक बलवान उस पर चढ़ाई करके उसे जीत लेता है, तो वह उसके वे सब हथियार जिन पर उसका भरोसा था छीन लेता है, और उसकी सम्पत्ति लूटकर बांट लेता है।
23 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरुद्ध है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।
24 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है; और जब नहीं पाती तो कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी।
25 और जब वह आता है, तो उसे झाड़ा-बुहारा और सजा-संवारा हुआ पाता है।
26 तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आता है; और वे उस में पैठकर वहां वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है।
27 जब वह ये बातें कह ही रहा था, तो भीड़ में से एक स्त्री ने ऊंचे शब्द से कहा, धन्य है वह गर्भ जिस में तू रहा, और वे स्तन, जो तू ने चूसे।
28 परन्तु उस ने कहा; हां, धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।
29 जब बहुत भीड़ इकट्ठी हुई, तो वह कहने लगा; इस युग के लोग बुरे हैं; वे चिन्ह ढूंढ़ते हैं; पर यूहन्ना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।
30 क्योंकि जैसा यूहन्ना नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी इस युग के लोगों के लिये ठहरेगा।
31 दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।
32 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना का प्रचार सुनकर मन फिराया, और देखो, यहां वह है जो योना से भी बड़ा है।
33 कोई भी मनुष्य दीया जलाकर उसे गुप्त स्थान में या पैमाने के नीचे नहीं रखता, परन्तु दीवट पर रखता है, कि भीतर आनेवाले प्रकाश पा सकें।
34 शरीर का दीया तेरी आंख है; इसलिये जब तेरी आंख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब तेरी आंख बुरी है, तो तेरा शरीर भी अन्धकार से भरा है।
35 इसलिये सावधान रहो, कि जो उजियाला तुझ में है, वह अन्धकार न हो जाए।
36 इसलिये यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, और उसका कोई भाग अन्धकारमय न रहे, तो सब कुछ उजियाला होगा, जैसा तब होता है जब दीपक की चमक तुझे उजियाला देती है।
37 जब वह यह कह रहा था, तो एक फरीसी ने उस से बिनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; सो वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ गया।
38 यह देखकर फरीसी को अचम्भा हुआ कि उसने भोजन से पहले स्नान क्यों नहीं किया।
39 प्रभु ने उस से कहा; हे फरीसियों, तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर से तो मांजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतरी भाग लालच और दुष्टता से भरा है।
40 हे मूर्खो, जिस ने बाहर का बनाया, क्या उस ने भीतर का भी नहीं बनाया?
41 परन्तु जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी में से दान कर दो; तो देखो, सब वस्तुएं तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएंगी।
42 परन्तु हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और इन्हें भी न छोड़ते।
43 हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम सभाओं में मुख्य मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो।

44 हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम उन कब्रों के समान हो जो दिखाई नहीं देतीं, और जो लोग उन पर चलते हैं, वे उन्हें नहीं जानते।
45 इस पर व्यवस्थापकों में से एक ने उस को उत्तर दिया, कि हे गुरू, ऐसी बातें कहकर तू हमारी भी निन्दा करता है।
46 फिर उस ने कहा; हे व्यवस्थापको, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ लादते हो जिन्हें उठाना कठिन है, परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छूते।
47 हाय तुम पर! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, और तुम्हारे पूर्वजों ने उन्हें मार डाला।
48 तुम सचमुच गवाही देते हो कि तुम अपने पूर्वजों के कामों को मानते हो; क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला, और तुम उनकी कब्रें बनाते हो।
49 इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगी, और वे उनमें से कितनों को मार डालेंगे और सताएँगे।
50 कि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है, उसका लेखा इसी युग से लिया जाए।
51 हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक, जो वेदी और मन्दिर के बीच में घात की गई; मैं तुम से सच कहता हूं, कि इसका लेखा इसी पीढ़ी से लिया जाएगा।
52 हे व्यवस्थापको, तुम पर हाय! तुम ने ज्ञान की कुंजी ले तो ली, परन्तु स्वयं भी प्रवेश नहीं किया और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया।
53 जब वह उनसे ये बातें कह रहा था, तो शास्त्री और फरीसी उस पर दबाव डालने और बहुत सी बातें कहने का दबाव डालने लगे।
54 वे उस की घात में लगे हुए थे, और उसके मुंह से कोई बात पकड़ने की खोज में थे, कि उस पर दोष लगाएं।

अध्याय 12

1 इतने में जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, यहां तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो वह सब से पहिले अपने चेलों से कहने लगा; फरीसियों के कपटरूपी खमीर से चौकस रहना।
2 क्योंकि कुछ ढँका नहीं, जो खोला न जाए; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाए।
3 इसलिये जो कुछ तुम ने अन्धकार में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा; और जो कुछ तुम ने कोठरियों में कानों कान कहा है, वह कोठों पर प्रचार किया जाएगा।
4 और मैं तुम से कहता हूं, मेरे मित्रों; जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके बाद और कुछ नहीं कर सकते, उन से मत डरो।
5 परन्तु मैं तुम्हें पहिले से चिता देता हूं कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, उसी से डरो, जिसे मारने के बाद नरक में डालने का भी अधिकार है; हां, मैं तुम से कहता हूं, उसी से डरो।
6 क्या दो पैसे की पांच गौरैयां नहीं बिकतीं, और परमेश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता?
7 परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं, इसलिये मत डरो; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।
8 मैं तुम से यह भी कहता हूं; कि जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने मान लेगा।
9 परन्तु जो मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उसका इन्कार परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने भी किया जाएगा।
10 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे, उसका अपराध क्षमा न किया जाएगा।
11 जब लोग तुम्हें सभाओं और हाकिमों और अधिकारियों के पास ले जाएं, तो चिन्ता न करना, कि हम किस रीति से उत्तर देंगे या क्या कहेंगे।
12 क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखा देगा, कि क्या कहना चाहिए।
13 भीड़ में से एक ने उस से कहा, हे गुरू, मेरे भाई से कह, कि वह संपत्ति मुझे बांट ले।
14 उस ने उस से कहा; हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा न्यायी या बांटनेवाला नियुक्त किया है?
15 फिर उस ने उन से कहा; चौकस रहो, और लोभ से अपने आप को बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता।
16 फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बहुत उपज हुई।
17 तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं? क्योंकि मेरे यहां अपनी उपज रखने के लिये जगह नहीं है।
18 उसने कहा, मैं यह करूंगा: मैं अपनी कोठरियों को तोड़कर बड़ी बनाऊंगा; और अपनी सारी उपज और सारी सम्पत्ति वहीं रखूंगा।
19 और मैं अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, आनन्द कर।
20 परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?
21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।
22 फिर उस ने अपने चेलों से कहा; इसलिये मैं तुम से कहता हूं; अपने प्राण की चिन्ता न करो कि हम क्या खाएंगे; और न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।
23 प्राण मांस से बढ़कर है, और शरीर वस्त्र से बढ़कर है।
24 कौवों पर ध्यान करो; वे न बोते हैं, न काटते; उनके न तो भण्डार होते हैं, न खत्ता; तौभी परमेश्वर उन्हें खिलाता है; तो फिर तुम पक्षियों से कितने अधिक अच्छे हो?
25 तुम में ऐसा कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी वृद्धि कर सकता है?
26 सो यदि तुम यह छोटा सा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो?
27 सोसनों के पौधों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते हैं, न कातते हैं; तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान अपने सारे वैभव में भी उनमें से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न था।
28 इसलिये जब परमेश्वर उस घास को जो आज खेत में होती है, और कल भाड़ में झोंक दी जाती है, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, वह तुम्हें क्यों न पहनाएगा?
29 और इस बात की खोज में न रहो कि हम क्या खाएंगे, और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।
30 क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं, और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें ये वस्तुएं चाहिए।

31 परन्तु परमेश्वर के राज्य की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।
32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह अच्छा लगा है, कि तुम्हें राज्य दे।
33 जो कुछ तुम्हारे पास है, उसे बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे थैले इकट्ठा करो, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं, और जिसके निकट चोर नहीं जाता, और जिसके कीड़ा नहीं बिगाड़ता।
34 क्योंकि जहां तेरा धन है, वहीं तेरा मन भी रहेगा।
35 अपनी कमर बान्धे रहो, और अपने दीये जलाते रहो;
36 और तुम उन मनुष्यों के समान बनो, जो अपने स्वामी की बाट जोहते रहते हैं कि वह विवाह से कब लौटेगा; कि जब वह आकर द्वार खटखटाए, तो तुरन्त उसके लिये द्वार खोल दें।
37 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पायेगा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि वह कमर बान्धकर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और निकट आकर उनकी सेवा करेगा।
38 और यदि वह दूसरे या तीसरे पहर में आकर उन्हें ऐसा पाए, तो वे दास धन्य हैं।
39 और यह जान लो, कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता।
40 इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र, उस घड़ी आएगा, जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं।
41 तब पतरस ने उस से कहा; हे प्रभु, क्या तू यह दृष्टान्त हम ही से कहता है या सब से?
42 तब प्रभु ने कहा, वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसे उसका स्वामी अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए, कि समय पर उन्हें भोजन दे?
43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
44 मैं तुम से सच कहता हूं; कि वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार ठहराएगा।
45 परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को पीटने लगे, और खाने-पीने और पियक्कड़ होने लगे,
46 उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी जब वह न जानता हो, और उसे टुकड़े टुकड़े करेगा, और उसके लिये अविश्वासियों के साथ भाग ठहराएगा।
47 और वह दास, जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा।
48 परन्तु जो न जानकर मार खाने योग्य काम करे, वह थोड़ी मार खाएगा, क्योंकि जिसे बहुत दिया गया है, उस से बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेंगे।
49 मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ; यदि वह सुलग चुकी हो तो मैं क्या करूँ?
50 परन्तु मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है; और जब तक वह न हो ले तब तक मैं क्योंकर तंगहाली में रहूंगा?
51 क्या तुम समझते हो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, वरन बांटने आया हूं।
52 क्योंकि अब से एक घर में पाँच लोग आपस में फूट डालेंगे, तीन दो से और दो तीन से।
53 पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से; माता पुत्री से, और बेटी माता से; सास अपनी बहू से, और बहू अपनी सास से।
54 फिर उसने लोगों से कहा, जब तुम बादल को पश्चिम से उठते देखते हो तो तुरन्त कहते हो, कि वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है।
55 और जब तुम दक्खिनी हवा चलती देखते हो तो कहते हो, कि लू चलेगी; और ऐसा ही होता है।
56 हे कपटियों, तुम आकाश और पृथ्वी का स्वरूप भेद कर सकते हो; परन्तु इस समय को भेदने में तुम क्यों असमर्थ हो?
57 फिर तुम आप ही क्यों न्याय नहीं करते?
58 जब तू अपने मुद्दई के साथ हाकिम के पास जाए, तो मार्ग में रहते हुए उसके हाथ से बचने का यत्न करना; कहीं ऐसा न हो कि वह तुझे घसीटकर न्यायी के पास ले जाए, और न्यायी तुझे सिपाही को सौंप दे, और सिपाही तुझे बन्दीगृह में डाल दे।
59 मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक तुम अन्तिम कौड़ी भी न चुका दोगे तब तक वहां से न जाओगे।

अध्याय 13

1 उस समय कुछ लोग वहां मौजूद थे और उससे उन गलीलियों की चर्चा कर रहे थे जिनका खून पिलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिला दिया था।
2 यीशु ने उन को उत्तर दिया; क्या तुम समझते हो कि ये गलीली सब गलीलियों से अधिक पापी थे, कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी?
3 मैं तुम से कहता हूं; कि ऐसा न होगा; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।
4 या क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरकर दब गया, यरूशलेम के सब रहनेवालों से अधिक पापी थे?
5 मैं तुम से कहता हूं; कि ऐसा न होगा; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।
6 फिर उसने यह दृष्टान्त भी कहा, कि किसी मनुष्य की दाख की बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था; वह उस में फल ढूंढ़ने आया, परन्तु न पाया।
7 तब उसने अपनी दाख की बारी के रखवाले से कहा, देख, मैं तीन वर्ष से इस अंजीर के पेड़ पर फल ढूंढने आता हूं, परन्तु नहीं पाता; इसे काट डाल; यह भूमि पर क्यों रोके हुए है?
8 उसने उसको उत्तर दिया, कि हे प्रभु, इसे इस वर्ष तो रहने दे; मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूंगा।
9 और यदि वह फल दे तो अच्छा; यदि नहीं, तो उसके बाद उसे काट डालना।
10 वह सब्त के दिन एक आराधनालय में उपदेश कर रहा था।
11 और देखो, वहां एक स्त्री थी, जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करने वाली दुष्टात्मा थी, और उसकी मांसपेशियां कुबड़ी हो गई थीं, और वह किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी।
12 यीशु ने उसे देखकर अपने पास बुलाया और कहा; हे नारी, तू अपनी व्याधि से छूट गई है।
13 तब उस ने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की महिमा करने लगी।
14 इसलिये कि यीशु ने सब्त के दिन उसे चंगा किया था, आराधनालय का सरदार क्रोध से चिल्ला उठा, और लोगों से कहने लगा, छ: दिन हैं जिन में काम करना चाहिए, इसलिये उन्हीं दिनों में आकर चंगे होओ; परन्तु सब्त के दिन नहीं।

15 तब प्रभु ने उसको उत्तर दिया, कि हे कपटी, क्या तुम में से हर एक सब्त के दिन अपने बैल या गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?
16 और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा है, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?
17 जब उसने ये बातें कहीं, तो उसके सब विरोधी लज्जित हुए, और सब लोग उन महिमा के कामों से जो उसने किए थे, आनन्दित हुए।
18 तब उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य किस के समान है? और मैं उसकी उपमा किस से दूं?
19 वह राई के दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी में बोया; और वह बढ़कर बड़ा पेड़ हो गया; और आकाश के पक्षी उसकी डालियों पर बसेरा करने लगे।
20 फिर उस ने कहा; मैं परमेश्वर के राज्य की उपमा किस से दूं?
21 यह खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिलाया, और होते होते सब आटा खमीर हो गया।
22 और वह नगर नगर और गांव गांव होकर उपदेश करता हुआ यरूशलेम की ओर चला।
23 तब किसी ने उस से कहा, हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं? उस ने उन से कहा।
24 सकेत द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुत से लोग प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।
25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, कि हे प्रभु, हमारे लिए खोल दे, और वह उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो।
26 तब तुम कहने लगोगे, कि हमने तेरे साम्हने खाया-पीया, और तू ने हमारे बाजारों में उपदेश किया।
27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो; हे सब कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।
28 जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे, तब रोना और दांत पीसना होगा।
29 और वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से आकर परमेश्वर के राज्य में बैठेंगे।
30 और देखो, कुछ अंतिम हैं जो प्रथम होंगे, और कुछ प्रथम हैं जो अंतिम होंगे।
31 उसी दिन कई फरीसी उसके पास आकर कहने लगे, यहां से निकलकर चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है।
32 तब उस ने उन से कहा; तुम जाकर उस लोमड़ी से कह दो, कि देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और बिमारियों को चंगा करता हूं, और तीसरे दिन पूर्ण हो जाऊंगा।
33 तौभी मुझे आज, कल और परसों भी चलना अवश्य है; क्योंकि यह नहीं हो सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम के बाहर नाश हो।
34 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए हैं, उन्हें पत्थरवाह करता है; कितनी ही बार मैं ने यह चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूं, पर तुम ने यह न चाहा!
35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है; और मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक वह समय न आए, जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।

अध्याय 14

1 और ऐसा हुआ कि जब वह सब्त के दिन प्रधान फरीसियों में से किसी के घर में रोटी खाने गया, तो वे उस पर घात लगाए बैठे थे।
2 और देखो, एक मनुष्य उसके साम्हने खड़ा था, जो जलोदर का रोगी था।
3 यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से पूछा; क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है?
4 परन्तु वे चुप रहे, तब उस ने उसे उठाकर चंगा किया, और जाने दिया।
5 और उन को उत्तर दिया, कि तुम में ऐसा कौन है, जिसका गदहा या बैल गड़हे में गिर जाए और वह उसे सब्त के दिन तुरन्त बाहर न निकाल ले?
6 वे इन बातों का कोई उत्तर न दे सके।
7 जब उस ने देखा कि नेवताहारियों ने मुख्य मुख्य जगहें चुन ली हैं, तो उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा।
8 जब कोई तुझे विवाह में बुलाए, तो सबसे ऊंचे स्थान पर न बैठना, कहीं ऐसा न हो कि वह तुझ से भी अधिक प्रतिष्ठित मनुष्य को बुला ले।
9 और जिस ने तुझे और उसे दोनों को बुलाया था, वह आकर तुझ से कहे, कि इस मनुष्य को जगह दे; और तू लज्जित होकर सबसे निचली जगह में बैठने लगेगा।
10 परन्तु जब तू बुलाया जाए, तो सब से निचली जगह जा बैठ; कि जब वह, जिसने तुझे बुलाया है आए, तो तुझ से कहे, कि हे मित्र, आगे जा; तब तेरे साथ बैठनेवालों के साम्हने तेरी आराधना होगी।
11 क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।
12 तब उसने अपने निमन्त्रण देनेवाले से भी कहा, जब तू दिन का या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों, भाइयों, कुटुम्बियों, या धनवान पड़ोसियों को न बुला; कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तुझे बदला देना पड़े।
13 परन्तु जब तू भोज करे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों, अंधों को बुला।
14 और तू धन्य होगा, क्योंकि वे तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते; परन्तु तुझे धर्मियों के जी उठने पर प्रतिफल मिलेगा।
15 उसके साथ भोजन करने वालों में से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा।
16 तब उस ने उस से कहा; किसी मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुत से लोगों को बुलाया।
17 और भोजन के समय उस ने अपने दास के हाथ नेवता देनेवालों को कहला भेजा, कि आओ; क्योंकि अब सब कुछ तैयार है।
18 तब वे सब एक स्वर से बहाने बनाने लगे। पहिले ने उस से कहा, मैं ने एक टुकड़ा भूमि मोल ली है, और मुझे उसे देखने जाना अवश्य है: मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे क्षमा कर दे।

19 दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने जाता हूं: मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा कर।
20 और एक ने कहा, मैं ने ब्याह कर लिया है, इसलिये नहीं आ सकता।
21 तब उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें बताईं। तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों को यहां ले आओ।
22 सेवक ने कहा, हे स्वामी, आपने जो कहा था, वैसा ही किया गया है, और फिर भी जगह है।
23 तब स्वामी ने दास से कहा, सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले आ, कि मेरा घर भर जाए।
24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उन बुलाए हुओं में से कोई मेरा भोज न चखेगा।
25 जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तब उस ने पीछे फिरकर उन से कहा।
26 यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
28 तुम में ऐसा कौन है जो गढ़ बनाना चाहता हो, और पहिले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की बिसात मेरे पास है कि नहीं?
29 कहीं ऐसा न हो कि जब वह नींव डाल चुका हो और उसे पूरा न कर सके, तो सब देखनेवाले उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें।
30 कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका।
31 या ऐसा कौन राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करते समय पहिले बैठकर यह विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मेरे विरुद्ध आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका साम्हना कर सकता हूं?
32 या फिर जब दूसरा अभी दूर ही है, तो वह दूत भेजकर मेलमिलाप की इच्छा रखता है।
33 वैसे ही तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
34 नमक अच्छा है; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो उसे किस वस्तु से स्वादिष्ट बनाया जा सकता है?
35 वह न तो भूमि के काम आता है, और न खाद के काम आता है; उसे तो मनुष्य ही फेंक देते हैं: जिस के कान हों वह सुन ले।

अध्याय 15

1 तब सब चुंगी लेनेवाले और पापी उस की सुनने के लिये उसके पास आया करते थे।
2 और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है।
3 फिर उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा।
4 तुम में ऐसा कौन है जिसकी सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए तब तक खोजता न रहे?
5 और जब वह उसे पा लेता है, तो आनन्दित होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेता है।
6 और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।
7 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।
8 क्या ऐसी कोई स्त्री होगी जिसके पास दस चांदी के सिक्के हों और उनमें से एक खो जाए तो वह दीया जलाकर घर झाड़-बुहारकर जब तक मिल न जाए तब तक यत्न से खोजती न रहे?
9 और जब मिल जाता है, तो वह अपनी सहेलियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठे करके कहती है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।
10 मैं तुम से कहता हूं, कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है।
11 फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।
12 उन में से छुटके ने पिता से कहा, हे पिता, संपत्ति में से जो हिस्सा मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए: तब उसने अपनी संपत्ति उन्हें बांट दी।
13 और बहुत दिन न बीते थे कि छुटके बेटे ने सब कुछ इकट्ठा किया, और एक दूर देश को चला गया और वहाँ कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी।
14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।
15 और वह उस देश के एक निवासी के यहां जा कर रहने लगा, और उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा।
16 और वह उन भूसों से अपना पेट भरना चाहता था जिन्हें सूअर खाते थे; पर कोई उसे कुछ नहीं देता था।
17 जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को रोटी से अधिक मिलती है, और मैं भूखा मर रहा हूं!
18 मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा; पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।
19 अब मैं तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं रहा, इसलिये मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।
20 तब वह उठकर अपने पिता के पास चला: और अभी बहुत दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।
21 पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है, और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।
22 परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी और पांवों में जूतियां पहिनाओ।
23 और मोटा-ताजा बछड़ा लाकर मार डालो, तब हम खाएंगे और आनन्द मनाएंगे।
24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे।
25 और उसका जेठा पुत्र खेत में था: और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने-बजाने और नाचने का शब्द सुना।
26 तब उस ने एक सेवक को बुलाकर पूछा, ये बातें क्या हो रही हैं?

27 उसने उससे कहा, तेरा भाई आया है, और तेरे पिता ने मोटा बछड़ा कटवाया है, क्योंकि उसे भला चंगा पाया है।
28 तब वह क्रोधित हुआ, और भीतर जाना न चाहा; तब उसका पिता बाहर आया, और उसे मनाने लगा।
29 उसने पिता को उत्तर दिया, कि देख, मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली; तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने मोटा बछड़ा कटवाया।
31 उस ने उस से कहा; हे पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है।
32 इसलिये अच्छा हुआ कि हम आनन्द करें और मगन हों; क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था, फिर जी गया है; और खो गया था, अब मिल गया है।

अध्याय 16

1 फिर उस ने अपने चेलों से भी कहा; एक धनवान मनुष्य था जिस का एक भण्डारी था, और लोगों ने उस पर यह दोष लगाया, कि उस ने तेरी सम्पत्ति उड़ा दी है।
2 तब उस ने उसे बुलाकर कहा; मैं ने तेरे विषय में यह क्यों सुना है? अपने भण्डारीपन का लेखा दे, क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।
3 तब भण्डारी ने मन ही मन सोचा, मैं क्या करूं? क्योंकि मेरा स्वामी भण्डारी का काम मुझ से छीन लेना चाहता है; मैं खुदाई तो कर ही नहीं सकता, और भीख मांगने में मुझे लज्जा आती है।
4 मैं ने ठान लिया है कि क्या करूँ कि जब मैं भण्डारीपन से मुक्त हो जाऊँ तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।
5 तब उसने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा, कि तुझ पर मेरे स्वामी का कितना बकाया है?
6 उसने कहा, सौ कोस तेल। तब उस ने उस से कहा, अपना बिल ले, और बैठ कर तुरन्त पचास लिख दे।
7 तब उस ने दूसरे से पूछा, और तुझ पर कितना बकाया है? उस ने कहा, सौ मन गेहूँ। तब उस ने उस से कहा, अपना खाता ले कर अस्सी लिख दे।
8 और स्वामी ने अन्यायी भण्डारी को सराहा, क्योंकि उसने बुद्धिमानी से काम किया था; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों की अपेक्षा ज्योति के लोगों से अधिक बुद्धिमान हैं।
9 और मैं तुम से कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब तुम चूक जाओ, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।
10 जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।
11 सो यदि तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?
12 और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?
13 कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
14 और फरीसी भी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसका उपहास करने लगे।
15 उस ने उन से कहा; तुम तो मनुष्यों के साम्हने अपने आप को धर्मी ठहराते हो; परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है; क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में अति मूल्यवान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।
16 व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे, उस समय से परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया जा रहा है, और हर एक मनुष्य उस में प्रबल होता है।
17 आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के टल जाने से सहज है।
18 जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है: और जो कोई उस स्त्री से विवाह करता है, जो अपने पति से त्यागी गई हो, वह भी व्यभिचार करता है।
19 एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी और सुन्दर मलमल के वस्त्र पहिनता था, और प्रति दिन शान-शौकत से भोजन करता था।
20 और लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था।
21 और वह धनवान की मेज से गिरे हुए टुकड़ों से अपना पेट भरना चाहता था; और कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।
22 और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे उठाकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया; और धनवान भी मरा, और गाड़ा गया;
23 और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से इब्राहीम को और उसकी गोद में लाज़र को देखा।
24 और उसने पुकारकर कहा, हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज, कि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।
25 परन्तु इब्राहीम ने कहा, हे पुत्र स्मरण कर कि तू ने अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ली थीं, और वैसे ही लाजर ने बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।
26 और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ा गड़हा ठहराया गया है, कि जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें; और न जो यहां से आना चाहें, वे हमारे पास जा सकें।
27 तब उसने कहा, इसलिये हे पिता, मैं तुझ से प्रार्थना करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज दे।
28 क्योंकि मेरे पांच भाई हैं; वह उन के साम्हने गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं।
29 इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं; वे उन की सुनें।
30 उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम, यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे।
31 उस ने उस से कहा; जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे।

अध्याय 17

1 तब उस ने चेलों से कहा; हो नहीं सकता कि अपराध न हों; परन्तु उस पर हाय, जिस के कारण वे आते हैं!

2 उसके लिये यह भला होता कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाया जाता, और वह समुद्र में डाल दिया जाता, बजाय इसके कि वह इन छोटों में से किसी को ठोकर खिलाए।
3 सावधान रहो; यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे तो उसे डांट दे, और यदि पछताए तो उसे क्षमा कर दे।
4 यदि वह दिन भर में सात बार तेरा अपराध करे, और सातों बार फिर तेरे पास आकर कहे, कि मैं पछताता हूं, तो उसे क्षमा कर।
5 तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, हमारा विश्वास बढ़ा।
6 प्रभु ने कहा; यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो इस गूलर के पेड़ से कहते, कि जड़ से उखड़ कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता।
7 परन्तु तुम में ऐसा कौन है, जिसका दास हल चलाता या भेड़-बकरियों को चराता हो, और जब वह खेत से आए, तो उससे कहे, कि जाकर भोजन करने बैठ?
8 और उस से यह न कहो, कि मेरे खाने की तैयारी कर और जब तक मैं खाऊं-पीऊं तब तक अपनी कमर बान्धकर मेरी सेवा कर; इस के बाद तू भी खाना-पीना?
9 क्या वह उस दास का धन्यवाद करेगा, कि उस ने वही किया जो उसे आज्ञा दी गई थी? मैं नहीं मानता।
10 इसी रीति से तुम भी, जब वे सब काम कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कह दो, हम निकम्मे दास हैं; हमने वही किया जो हमें करना चाहिए था।
11 और ऐसा हुआ कि जब वह यरूशलेम को जा रहा था, तो वह सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था।
12 जब वह किसी गांव में प्रवेश कर रहा था, तो उसे दस कोढ़ी मनुष्य मिले जो दूर खड़े थे।
13 तब उन्होंने ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे प्रभु, हम पर दया कर।
14 जब उस ने उन्हें देखा, तो उन से कहा, जाकर अपने आप को याजकों को दिखाओ। और ऐसा हुआ कि जाते ही वे शुद्ध हो गए।
15 और उन में से एक ने यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूं, ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करते हुए पीछे लौटा।
16 और उसके पांवों पर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था।
17 यीशु ने उत्तर दिया, क्या दस शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहां हैं?
18 इस अजनबी को छोड़ कोई भी ऐसा नहीं जो परमेश्वर की महिमा करने को फिरा हो।
19 उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।
20 जब फरीसियों ने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा, तो उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता।
21 और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यह है, या वहां है; क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर है।
22 फिर उस ने चेलों से कहा; वे दिन आएंगे, जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने की लालसा करोगे, परन्तु नहीं देखने पाओगे।
23 तब वे तुम से कहेंगे, देखो यहां, या देखो वहां; परन्तु तुम उनके पीछे न जाना, और न उनके पीछे चले जाना।
24 क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक छोर से कौंध कर आकाश की दूसरी छोर तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा।
25 परन्तु पहले अवश्य है कि वह बहुत दु:ख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएँ।
26 और जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा।
27 जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, उनमें विवाह होते थे, और वे जल-प्रलय से नाश हो गए।
28 और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते, लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे।
29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम से बाहर निकला, उसी दिन आकाश से आग और गन्धक बरसी और सब को नाश कर दिया।
30 मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।
31 उस दिन जो कोई छत पर हो, और उसका सामान घर में हो, तो वह उसे लेने को न उतरे; और जो खेत में हो, वह भी पीछे न लौटे।
32 लूत की पत्नी को याद रखो।
33 जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खो देगा; और जो कोई अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचा लेगा।
34 मैं तुम से कहता हूं, कि उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
35 दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की पीसती रहेंगी; एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
36 दो आदमी खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
37 उन्होंने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, यह कहां होगा? उस ने उन से कहा, जहां कहीं लोथ होगी, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

अध्याय 18

1 और उस ने इस विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उन से एक दृष्टान्त कहा।
2 कि एक नगर में एक न्यायी रहता था जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था।
3 उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, कि मेरा पलटा ले, और मुझे मेरे मुद्दई से बचा ले।
4 उस ने कुछ देर तक तो न माना, परन्तु अन्त में अपने मन में सोचा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्य की कुछ परवाह करता हूं;
5 तौभी यह विधवा मुझे सताती है, इसलिये मैं उसका पलटा लूंगा, कहीं ऐसा न हो कि वह बार बार आकर मुझे परेशान करे।
6 तब प्रभु ने कहा, सुनो, यह अन्यायी न्यायी क्या कहता है।
7 और क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का पलटा न लेगा, जो रात दिन उस की दुहाई देते रहते हैं, यद्यपि वह बहुत देर तक उन की सहता है?
8 मैं तुम से कहता हूं, कि वह शीघ्र उनका पलटा लेगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?
9 फिर उस ने उन लोगों से जो अपने ऊपर भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त कहा।
10 दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए; एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला।
11 फरीसी खड़ा होकर अपने मन में यों प्रार्थना करने लगा, कि हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि मैं और मनुष्यों की नाईं

अन्धेर करनेवाला, अन्यायी या व्यभिचारी नहीं, और न इस चुंगी लेनेवाले के समान हूं।
12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का दसवाँ अंश दान करता हूँ।
13 परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर।
14 मैं तुम से कहता हूं; कि वह दूसरा नहीं, परन्तु यही मनुष्य धर्मी ठहरकर अपने घर गया; क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।
15 फिर लोग बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; परन्तु उसके चेलों ने यह देखकर उन्हें डांटा।
16 यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।
17 मैं तुम से सच कहता हूं; जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करेगा वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा।
18 और एक सरदार ने उस से पूछा, कि हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करूं?
19 यीशु ने उस से कहा; तू मुझे क्यों उत्तम कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर।
20 तू आज्ञाओं को तो जानता है, व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
21 उसने कहा, ये सब तो मैं बचपन से मानता आया हूं।
22 जब यीशु ने ये बातें सुनीं, तो उससे कहा; अब भी तुझ में एक बात की घटी है: अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले।
23 यह सुनकर वह बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बहुत धनी था।
24 जब यीशु ने देखा कि वह बहुत उदास है, तो कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है!
25 क्योंकि परमेश्वर के राज्य में धनवान का प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
26 और सुननेवालों ने कहा; फिर किस का उद्धार हो सकता है?
27 फिर उस ने कहा; जो बातें मनुष्यों से नहीं हो सकतीं, वे परमेश्वर से हो सकती हैं।
28 तब पतरस ने कहा, देख, हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे चले आये हैं।
29 उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिये घर या माता-पिता या भाइयों या पत्नी या बाल-बच्चों को छोड़ दिया हो।
30 और इस समय कई गुणा अधिक न पाए, और परलोक में अनन्त जीवन।
31 तब उस ने बारहों को अपने पास लेकर उन से कहा; देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के विषय में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं, वे सब पूरी होंगी।
32 क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसे ठट्ठों में उड़ाएंगे, और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थूकेंगे।
33 और वे उसे कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह जी उठेगा।
34 परन्तु उन्होंने इन बातों में से कोई बात न समझी, और यह बात उन में छिपी रही, और जो कहा गया था वह उन की समझ में न आया।
35 जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था।
36 जब उसने भीड़ को जाते सुना तो पूछा, इसका क्या मतलब है?
37 और उन्होंने उस से कहा, कि यीशु नासरी जा रहा है।
38 और उस ने पुकारकर कहा; हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
39 जो आगे जाते थे, वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे; परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, कि हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
40 तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी, कि उसे मेरे पास लाओ; और जब वह निकट आया, तो उस से पूछा।
41 तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं? उस ने कहा; हे प्रभु, कि मैं देखने लगूं।
42 यीशु ने उस से कहा, देखने लग जा; तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है।
43 और वह तुरन्त देखने लगा, और परमेश्वर की महिमा करता हुआ उसके पीछे हो लिया; और सब लोगों ने यह देखकर परमेश्वर की स्तुति की।

अध्याय 19

1 और यीशु यरीहो में प्रवेश करके वहां से होकर गया।
2 और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था, जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था।
3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन है; परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था, क्योंकि वह नाटा था।
4 तब वह उसको देखने के लिये दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था।
5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि करके उस से कहा; हे जक्कई, झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।
6 तब वह तुरन्त नीचे उतरा, और आनन्द से उसे अपने घर ले गया।
7 यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां अतिथि करने गया है।
8 तब जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं; और यदि किसी का कुछ झूठ बोलकर ले लिया हो तो उसे चौगुना फेर देता हूं।
9 यीशु ने उस से कहा, आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।
10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।
11 जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिये कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट हुआ चाहता है।
12 सो उस ने कहा; एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राज्य पाकर फिर आए।
13 तब उस ने अपने दस दासों को बुलाकर उन्हें दस मोहरें दीं, और उन से कहा, मेरे लौट आने तक अपना माल ले जाना।

14 परन्तु उसके नगर के लोग उससे बैर रखते थे, और उसके पीछे सन्देश भेजकर कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे।
15 जब वह राजपद पाकर लौटा, तो उस ने अपने उन दासों को जिन्हें उसने धन दिया था, अपने पास बुलाने की आज्ञा दी, कि मालूम करे कि किस किस ने लेन देन से कितना लाभ कमाया।
16 तब पहिले ने आकर कहा, हे स्वामी, तेरी मोहर से दस मोहरें कमाई हैं।
17 उसने उस से कहा; अच्छा, हे उत्तम दास; तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला, इसलिये दस नगरों का अधिकार रख।
18 दूसरे ने आकर कहा; हे स्वामी, तेरी मोहर से पांच मोहरें कमाई हैं।
19 फिर उसने उससे भी कहा, तू भी पांच नगरों का अधिकारी हो जा।
20 फिर एक और भी आकर कहने लगा; हे स्वामी, देख, तेरी मोहर यह है, जिसे मैं ने अंगोछे में बांधकर रख छोड़ा है।
21 क्योंकि मैं तुझ से डरता था, इसलिये कि तू कठोर मनुष्य है; तू जो नहीं रखता उसे उठा लेता है, और जो नहीं बोता, उसे काटता है।
22 उसने उससे कहा, हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुंह से तुझे दण्ड दूंगा। तू तो जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं, जो मैं ने नहीं रखा उसे उठा लेता हूं, और जो मैं ने नहीं बोया उसे काटता हूं।
23 तो फिर तू ने मेरे रूपये कोठी में क्यों नहीं रख दिये, कि मैं आकर अपना रुपया ब्याज समेत ले लेता?
24 तब उसने पास खड़े लोगों से कहा, वह सिक्का उससे ले लो, और जिस के पास दस सिक्के हैं, उसे दे दो।
25 उन्होंने उस से कहा, हे स्वामी, उसके पास तो दस मोहरें हैं।
26 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं; कि जिस के पास है, उसे दिया जाएगा; और जिस के पास नहीं है, उस से जो उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।
27 परन्तु मेरे उन शत्रुओं को जो नहीं चाहते कि मैं उन पर राज्य करूं, यहां लाकर मेरे सामने घात करो।
28 यह कहकर वह यरूशलेम की ओर ऊपर चला गया।
29 जब वह जैतून नाम पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के निकट पहुंचा, तो उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा।
30 कि अपने साम्हने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर अब तक कोई नहीं बैठा, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर यहां ले आओ।
31 यदि कोई तुम से पूछे, कि उसे क्यों खोलते हो? तो उसे यह कह देना, कि प्रभु को इस का प्रयोजन है।
32 तब भेजे हुए लोगों ने जाकर, जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही पाया।
33 जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके स्वामियों ने उन से पूछा; तुम गदहे के बच्चे को क्यों खोलते हो?
34 उन्होंने कहा, प्रभु को इस का प्रयोजन है।
35 तब वे उसे यीशु के पास ले आए, और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बैठाया।
36 जब वह जा रहा था, तो उन्होंने अपने कपड़े मार्ग में बिछा दिये।
37 जब वह निकट आया, तो जैतून पहाड़ की ढलान पर चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ के कामों के कारण जो उन्होंने देखे थे, आनन्दित होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी।
38 कि धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है; स्वर्ग में शान्ति और आकाश में महिमा हो।
39 तब भीड़ में से कुछ फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरू, अपने चेलों को डांट।
40 उस ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से कहता हूं; यदि ये चुप रहें, तो पत्थर तुरन्त चिल्ला उठेंगे।
41 जब वह निकट आया, तो नगर को देखकर उस पर रोया।
42 कि यदि तू इसी दिन में अपनी कुशल की बातें जानता, तो क्या ही भला होता! परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं।
43 क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे कि तेरे शत्रु तेरे चारों ओर खाई बान्धकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे रोकेंगे,
44 और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझ में हैं, मिट्टी में मिला देंगे, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तू ने अपने दण्ड का समय न पहिचाना।
45 और वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालों और खरीदनेवालों को बाहर निकालने लगा।
46 और उन से कहा; लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर है; परन्तु तुम ने उसे चोरों की खोह बना दिया है।
47 और वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश करता था। परन्तु महायाजक और शास्त्री और लोगों के सरदार उसे नाश करने की खोज में रहते थे।
48 परन्तु वे कुछ न समझ सके कि क्या करें, क्योंकि सब लोग उसकी सुनने को बड़ी कान लगाए हुए थे।

अध्याय 20

1 एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था, तो प्रधान याजक और शास्त्री, पुरनियों के साथ उसके पास आये।
2 और उस से कहा, हमें बता, तू ये काम किस अधिकार से करता है? और वह कौन है जिस ने तुझे यह अधिकार दिया है?
3 उस ने उनको उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; मुझे उत्तर दो।
4 यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से?
5 तब वे आपस में विचार करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह कहेगा; फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की?
6 परन्तु यदि हम कहें मनुष्यों की ओर से, तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था।
7 उन्होंने उत्तर दिया, कि हम नहीं बता सकते कि वह कहां से आया है।
8 यीशु ने उन से कहा; मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।
9 तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा; कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और उसका ठेका किसानों को दे दिया; और बहुत दिनों के लिये परदेश चला गया।
10 और फल के मौसम में उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे उसे दाख की बारी के फलों का कुछ भाग दें; परन्तु किसानों ने उसे पीटकर छूछे हाथ लौटा दिया।
11 फिर उस ने एक और दास को भेजा, और उन्होंने उसे भी पीटा, और उसका अपमान करके छूछे हाथ लौटा दिया।

12 फिर उस ने तीसरा भेजा, और उन्होंने उसे भी घायल करके बाहर निकाल दिया।
13 तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा, मैं क्या करूं? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा, सम्भव है कि वे उसे देखकर आदर करें।
14 जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, कि मीरास हमारी हो जाए।
15 तब उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला। अब दाख की बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा?
16 वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को दे देगा। यह सुनकर उन्होंने कहा, परमेश्वर ऐसा न करे।
17 उस ने उन की ओर देखकर कहा; फिर यह क्या लिखा है, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया?
18 जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा; और जिस पर वह गिरेगा, उसे पीस डालेगा।
19 उसी घड़ी महायाजकों और शास्त्रियों ने उसे पकड़ना चाहा, पर वे लोगों से डरे, क्योंकि समझ गए थे, कि उस ने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है।
20 और वे उस पर घात लगाए बैठे थे, और भेदिये भेजे थे, जो धर्मी बन कर उसके वचनों को पकड़ कर उसे हाकिम के हाथ और अधिकार में सौंप दें।
21 उन्होंने उस से पूछा, कि हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू ठीक कहता, और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात नहीं करता; परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है।
22 क्या हमें कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?
23 परन्तु उस ने उन की चतुराई जानकर उन से कहा; तुम मुझे क्यों परखते हो?
24 एक दीनार मुझे दिखाओ, इस पर किस की मूर्ति और नाम है? उन्होंने उत्तर दिया, कैसर का।
25 तब उस ने उन से कहा; जो कैसर का है, वह कैसर को दो; और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।
26 परन्तु वे उसके वचनों को लोगों के साम्हने पकड़ न सके, और उसके उत्तर से अचम्भा करके चुप रहे।
27 तब सदूकियों में से जो यह मानते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, कई एक उसके पास आकर पूछने लगे।
28 कि हे गुरू, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई पत्नी के होते हुए बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उस की पत्नी को ब्याह ले, और अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करे।
29 सो सात भाई थे: पहला भाई ब्याह कर बिना सन्तान मर गया।
30 दूसरे ने भी उससे विवाह कर लिया और वह भी बिना सन्तान मर गया।
31 तब तीसरे ने उसको ब्याह लिया, और इसी रीति से सातों ने भी ब्याह लिया; परन्तु वे बिना सन्तान मर गए।
32 अन्त में वह स्त्री भी मर गई।
33 सो जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।
34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि इस संसार के लोग तो विवाह करते हैं।
35 पर जो लोग उस संसार को पाने के और मरे हुओं में से जी उठने के योग्य समझे जाएंगे, उन में ब्याह शादी न होगी।
36 और वे फिर न मरेंगे, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे, और पुनरुत्थान की सन्तान होने से परमेश्वर की सन्तान भी होंगे।
37 अब यह बात कि मरे हुए जी उठते हैं, मूसा ने भी झाड़ी के पास प्रगट की है, जब उस ने प्रभु को इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर कहा है।
38 क्योंकि वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है, इसलिये कि उसके निकट सब जीवित हैं।
39 तब शास्त्रियों में से कई एक ने उत्तर दिया, कि हे गुरू, तू ने ठीक कहा।
40 इसके बाद उन्होंने उससे कोई और सवाल पूछने की हिम्मत नहीं की।
41 उस ने उन से पूछा; वे कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
42 और दाऊद स्वयं भजन संहिता की पुस्तक में कहता है, कि यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ,
43 जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न कर दूं।
44 तो फिर दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो फिर वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?
45 तब उस ने सब लोगों के सामने अपने चेलों से कहा।
46 शास्त्रियों से चौकस रहो, जो लम्बे वस्त्र पहिने हुए फिरना चाहते हैं, और बाजारों में नमस्कार, और सभाओं में मुख्य आसन और जेवनारों में मुख्य जगहें चाहते हैं।
47 जो विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, वे अधिक दण्ड पाएंगे।

अध्याय 21

1 और उसने आंख उठाकर देखा, कि धनवान लोग अपना अपना दान भण्डार में डाल रहे हैं।
2 और उस ने एक कंगाल विधवा को भी वहां दो दमड़ियां डालते देखा।
3 उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं; कि इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है।
4 क्योंकि इन सब ने अपनी बढ़ती में से परमेश्वर के लिये भेंट डाली है, परन्तु इस ने अपनी दरिद्रता में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।
5 जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे कि वह सुन्दर पत्थरों और भेंटों से सजा हुआ है, तो उसने कहा।
6 और ये बातें जो तुम देख रहे हो, वे दिन आएंगे जिन में पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।
7 उन्होंने उस से पूछा, कि हे गुरू, ये बातें कब होंगी? और जब ये बातें पूरी होंगी, तब क्या चिन्ह होगा?
8 फिर उस ने कहा; चौकस रहो! तुम धोखा न खाओ, क्योंकि बहुत से लोग मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं, और समय निकट आ गया है; इसलिये तुम उन के पीछे न जाना।
9 परन्तु जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है, परन्तु उन का तुरन्त अन्त न होगा।
10 तब उस ने उन से कहा; जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा।
11 और जगह जगह बड़े बड़े भूकम्प होंगे, और जगह जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश से भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।

12 परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और सभाओं में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और हाकिमों के साम्हने ले जाएँगे।
13 और यह तुम्हारे लिये गवाही ठहरेगा।
14 इसलिये अपने अपने मन में ठान रखो कि हम पहिले से उत्तर देने की चिंता न करेंगे।
15 क्योंकि मैं तुझे ऐसा बोल और बुद्धि दूंगा, कि तेरे सब विरोधी उसका विरोध या विरोध न कर सकेंगे।
16 और तुम्हारे माता-पिता, और भाई, और कुटुम्बी, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएंगे, यहां तक कि तुममें से कितनों को मरवा भी डालेंगे।
17 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे।
18 परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाँका न होगा।
19 अपने धीरज से अपने प्राणों को सुरक्षित रखो।
20 और जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।
21 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं; और जो यहूदिया के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं; और जो गांवों में हों वे उस में न जाएं।
22 क्योंकि ये पलटा लेने के दिन होंगे, कि जितनी बातें लिखी हैं, वे सब पूरी हो जाएंगी।
23 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय! क्योंकि देश में बड़ा क्लेश होगा, और इस जाति पर बड़ा प्रकोप होगा।
24 और वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब जातियों में बन्धुआई में पहुंचाए जाएंगे; और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।
25 और सूरज, चाँद और तारागण में चिन्ह दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर जाति जाति के लोगों को संकट और घबराहट होगी, और समुद्र और लहरों का गरजना होगा,
26 और भय के कारण और पृथ्वी पर आनेवाली घटनाओं की बाट देखते देखते लोगों के जी में जी न रहेगा, क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
27 और तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे।
28 जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।
29 फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा; कि अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो;
30 जब वे फूटने लगते हैं, तो तुम देखकर स्वयं जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है।
31 इसी रीति से जब तुम ये बातें घटित होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।
32 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।
33 आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
34 इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं, और वह दिन तुम पर अचानक आ पड़े।
35 क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर फन्दे की नाईं आ पड़ेगा।
36 इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो।
37 और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को निकलकर उस पहाड़ पर रहता था जो जैतून का पहाड़ कहलाता है।
38 और सब लोग भोर को तड़के ही मन्दिर में उसके पास आया करते थे, कि उसकी सुनें।

अध्याय 22

1 अब अख़मीरी रोटी का पर्व जो फसह कहलाता है, निकट था।
2 और महायाजक और शास्त्री उसके मार डालने का अवसर ढूँढ़ रहे थे, क्योंकि वे लोगों से डरते थे।
3 तब शैतान यहूदा में जो इस्करियोती कहलाता था, जो बारह चेलों में से था, समाया।
4 तब वह जाकर महायाजकों और प्यादों के सरदारों के साथ बातचीत करने लगा, कि उसे किस प्रकार उन के हाथ पकड़वाए।
5 और वे प्रसन्न हुए, और उसको रूपये देने का वचन दिया।
6 और उस ने प्रतिज्ञा की, और अवसर ढूंढ़ता रहा, कि भीड़ की अनुपस्थिति में उसे उन के हाथ पकड़वा दे।
7 फिर अख़मीरी रोटी का दिन आया, जिस में फ़सह का पशु बलि किया जाना था।
8 फिर उस ने पतरस और यूहन्ना को यह कह कर भेजा, कि जाकर हमारे लिये फसह तैयार करो कि हम खायें।
9 उन्होंने उस से कहा; तू कहां चाहता है कि हम तैयारी करें?
10 उसने उनसे कहा, देखो, नगर में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा; जिस घर में वह जाए, तुम उसके पीछे चले जाना।
11 और घर के स्वामी से कहो, कि गुरू तुझ से कहता है; वह पाहुनशाला कहां है, जिस में मैं अपने चेलों के साथ फसह खाऊं?
12 और वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी ऊपरी कोठरी दिखाएगा, वहीं तैयारी करना।
13 तब उन्होंने जाकर जैसा उस ने उन से कहा था वैसा ही पाया, और फसह तैयार किया।
14 जब वह घड़ी आई, तो वह और उसके बारह प्रेरित उसके साथ बैठे।
15 उस ने उन से कहा; मैं ने बड़ी लालसा से चाहा था, कि दुख भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं।
16 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उस में से कभी न खाऊंगा।
17 फिर उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा; इसे लो और आपस में बांट लो।
18 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, तब तक मैं दाख का रस कभी न पीऊंगा।
19 फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको देकर कहा; यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।
20 इसी रीति से बियारी के बाद कटोरा भी दिया, और कहा, यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।
21 परन्तु देखो, मेरे पकड़वाने वाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है।

22 और मनुष्य का पुत्र तो जैसा ठहराया गया था, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय, जिस के द्वारा वह पकड़वाया जाता है!
23 तब वे आपस में पूछ-ताछ करने लगे, कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा?
24 और उन में यह झगड़ा भी हुआ, कि हम में से कौन बड़ा समझा जाए?
25 और उस ने उन से कहा; अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार चलाते हैं, वे उपकारकर्ता कहलाते हैं।
26 परन्तु तुम ऐसा न करना; वरन जो तुम में बड़ा हो, वह छोटे के समान बने; और जो प्रधान हो, वह सेवक के समान बने।
27 क्योंकि कौन बड़ा है, वह जो भोजन पर बैठता है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठता है? परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।
28 तुम वे हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे।
29 और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये एक राज्य ठहराता हूं।
30 ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ, और सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो।
31 तब प्रभु ने कहा, हे शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूँ की नाईं फटके।
32 परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना की है, कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।
33 उस ने उस से कहा; हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, बरन मरने को भी तैयार हूं।
34 फिर उस ने कहा; हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूं; कि आज मुर्ग बांग न देगा, तब तक तू तीन बार मेरा इन्कार कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।
35 उस ने उन से कहा; जब मैं ने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी? उन्होंने कहा, किसी वस्तु की नहीं।
36 तब उस ने उन से कहा; परन्तु अब जिस के पास बटुआ हो वह उसे ले ले, और वैसे ही अपनी झोली भी; और जिस के पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले।
37 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यह जो लिखा है, कि वह अपराधियों के साथ गिना गया, उसका मुझ में पूरा होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की बातें पूरी हो गई हैं।
38 उन्होंने कहा, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।" उसने उनसे कहा, " बस है।"
39 फिर वह बाहर निकलकर अपनी रीति के अनुसार जैतून पहाड़ पर गया, और उसके चेले भी उसके पीछे हो लिए।
40 जब वह उस जगह पहुंचा, तो उसने उनसे कहा; प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो।
41 तब वह उन से अलग होकर एक पत्थर फेंकने की दूरी पर गया, और घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा।
42 कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले; तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।
43 और स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उसके पास प्रकट हुआ, जो उसे सामर्थ देता रहा।
44 और वह अत्यन्त संकट में व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना से प्रार्थना करने लगा; और उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी बड़ी बून्दों की नाईं भूमि पर गिर रहा था।
45 जब वह प्रार्थना से उठा और अपने चेलों के पास आया, तो उन्हें उदासी के मारे सोता हुआ पाया।
46 और उन से कहा; क्यों सोते हो? उठो और प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो।
47 वह यह कह ही रहा था, कि देखो, एक भीड़ आई, और यहूदा नाम एक व्यक्ति जो उन बारहों में से एक था, उनके आगे आगे जा रहा था, और यीशु के पास आया, कि उसे चूम ले।
48 यीशु ने उस से कहा; हे यहूदा, क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमकर पकड़वाता है?
49 जब उसके साथियों ने देखा कि क्या होने वाला है, तो उससे कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार से मारें?"
50 और उनमें से एक ने महायाजक के दास पर वार करके उसका दाहिना कान उड़ा दिया।
51 यीशु ने उत्तर दिया, कि अब तक धीरज रखो: तब उस ने उसका कान छूकर उसे चंगा किया।
52 तब यीशु ने महायाजकों और मन्दिर के सरदारों और पुरनियों से जो उसके पास आए थे कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर चोर के समान निकले हो?
53 जब मैं हर दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ था, तो तुम ने मुझ पर हाथ न उठाया; परन्तु यह तुम्हारी घड़ी है, और अन्धकार का अधिकार है।
54 तब वे उसे पकड़कर महायाजक के घर में ले गए, और पतरस दूर से उसके पीछे पीछे चलता था।
55 जब वे भवन के बीच में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे, तो पतरस भी उनके बीच में बैठ गया।
56 परन्तु एक दासी ने उसे आग के पास बैठे देखकर, उस पर दृष्टि करके कहा, यह भी उसके साथ था।
57 उस ने इन्कार करके कहा; हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।
58 थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, तू भी उनमें से है: पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं हूं।
59 कोई एक घंटे के बाद दूसरे ने दृढ़ता से कहा, सचमुच यह भी तो उसके साथ था, क्योंकि यह गलीली है।
60 पतरस ने कहा, हे मनुष्य, मैं नहीं जानता तू क्या कह रहा है: वह अभी बोल ही रहा था, कि तुरन्त मुर्ग ने बांग दी।
61 तब प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और पतरस को प्रभु की कही हुई बात याद आई, कि मुर्ग के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।
62 तब पतरस बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगा।
63 और जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसका ठट्ठा करने लगे और उसे मारने लगे।
64 तब उन्होंने उस की आंखों पर पट्टी बांधकर उसके मुंह पर थप्पड़ मारे, और उस से पूछा, भविष्यद्वाणी करके बता, कि तुझे किसने मारा?
65 और उन्होंने उसके विरोध में और भी बहुत सी निन्दा भरी बातें कहीं।
66 जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिये और प्रधान याजक और शास्त्री इकट्ठे हुए और उसे अपनी महासभा में ले जाकर कहा।
67 क्या तू मसीह है? हमें बता: उस ने उन से कहा; यदि मैं तुम से कहूं, तो प्रतीति न करोगे।
68 और यदि मैं तुम से पूछूं, तो तुम मुझे उत्तर नहीं दोगे और न मुझे जाने दोगे।
69 इसके बाद मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठेगा।

70 तब सब ने कहा, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है? उस ने उन से कहा, तुम कहते हो कि मैं हूं।
71 उन्होंने कहा, अब हमें गवाही का क्या प्रयोजन है? क्योंकि हम ने आप ही उसके मुंह से सुन लिया है।

अध्याय 23

1 तब सारी भीड़ उठकर उसे पीलातुस के पास ले गई।
2 और वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, कि हम ने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते और अपने आप को मसीह राजा कहते हुए सुना है।
3 तब पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उस ने उत्तर दिया, कि तू ही आप कहता है।
4 तब पीलातुस ने महायाजकों और लोगों से कहा, मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता।
5 और वे और भी क्रोधित होकर कहने लगे, कि यह गलील से लेकर यहां तक सारे यहूदिया में उपदेश दे देकर लोगों को भड़काता है।
6 जब पिलातुस ने गलील के बारे में सुना तो उसने पूछा कि क्या यह आदमी गलीली है?
7 जब उस ने जान लिया कि वह हेरोदेस की रियासत का है, तो उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, जो उस समय यरूशलेम में था।
8 जब हेरोदेस ने यीशु को देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से उसे देखने की लालसा रखता था, इसलिये कि उसके विषय में बहुत कुछ सुना था, और उसे उसका कोई आश्चर्यकर्म देखने की आशा थी।
9 तब उसने उस से बहुत सी बातें पूछीं, परन्तु उसने उसे कुछ उत्तर न दिया।
10 तब महायाजक और शास्त्री खड़े होकर उस पर बहुत दोष लगाने लगे।
11 तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों के साथ उसका अपमान किया, और उसका ठट्ठा किया, और उसे भड़कीला वस्त्र पहिनाकर फिर पीलातुस के पास भेज दिया।
12 उसी दिन पीलातुस और हेरोदेस मित्र हो गए; परन्तु पहिले वे आपस में बैर रखते थे।
13 तब पीलातुस ने महायाजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर कहा।
14 और उन से कहा, तुम उस मनुष्य को लोगों को बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे साम्हने उसकी जांच की, और जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन के विषय में मैं ने उस में कोई दोष नहीं पाया।
15 नहीं, न हेरोदेस को; क्योंकि मैं ने तुझे उसके पास भेजा है, और देख, उस से कुछ ऐसा नहीं हुआ जो प्राणदण्ड के योग्य ठहराया जाए।
16 इसलिये मैं उसे दण्ड देकर छोड़ दूंगा।
17 (क्योंकि उसे पर्व में उन के लिये एक को छोड़ना अवश्य है।)
18 तब सब लोग एक साथ चिल्ला उठे, कि इस मनुष्य का काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।
19 (वह नगर में बलवे और हत्या के अपराध में बन्दीगृह में डाला गया था।)
20 तब पीलातुस ने यीशु को छोड़ देने की इच्छा से उन से फिर बात की।
21 परन्तु वे चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर चढ़ा।
22 फिर उसने तीसरी बार उनसे कहा, क्यों? उसने कौन सी बुराई की है? मैं ने उसमें मृत्यु दण्ड के योग्य कोई दोष नहीं पाया; इसलिये मैं उसे दण्ड देकर छोड़ देता हूं।
23 और वे ऊंचे शब्द से चिल्ला उठे, कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए: और उन का और महायाजकों का शब्द प्रबल हुआ।
24 तब पीलातुस ने आज्ञा दी, कि जैसा वे कहते हैं, वैसा ही हो।
25 और उस ने उस को, जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, और जिसे वे चाहते थे, छोड़ दिया, और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप दिया।
26 जब वे उसे ले जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी को जो गांव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस लाद दिया, कि उसे यीशु के पीछे पीछे ले चले।
27 और लोगों का एक बड़ा समाज और स्त्रियाँ उसके पीछे हो लीं, जो उसके लिए छाती पीटती और विलाप करती थीं।
28 यीशु ने उनकी ओर फिरकर कहा; हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत रोओ; परन्तु अपने और अपने बालकों के लिये रोओ।
29 क्योंकि देखो, ऐसे दिन आते हैं, जिनमें कहेंगे, धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो न जनें और वे स्तन जो दूध न पिलाएं।
30 तब वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, हम पर गिर पड़ो; और पहाड़ियों से, हमें ढक लो।
31 क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या किया जाएगा?
32 और दो अन्य कुकर्मी भी उसके साथ वध करने को ले जाए गए।
33 जब वे उस जगह जो कलवरी कहलाती है पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ उसे और उन कुकर्मियों को भी एक को दाहिनी ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूसों पर चढ़ाया।
34 तब यीशु ने कहा, " हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।" तब उन्होंने उसके कपड़े बाँटकर चिट्ठियाँ डालीं।
35 और लोग खड़े खड़े देख रहे थे, और सरदार भी उन के साथ यह कह कर उसका उपहास करने लगे, कि इस ने औरों को बचाया; यदि यह परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है, तो अपने आप को बचा ले।
36 तब सिपाही भी उसके पास आकर उसका ठट्ठा करने लगे, और उसे सिरका देने लगे।
37 और कहा, यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा।
38 और उसके ऊपर यूनानी और लतीनी और इब्रानी अक्षरों में यह लिखा हुआ था, कि यह यहूदियों का राजा है।
39 जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस की निन्दा करके कहा; यदि तू मसीह है, तो अपने आप को और हमें बचा।
40 इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा; क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू भी वही दण्ड पा सकता है।
41 हम तो न्यायानुसार दण्ड पाते हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इस मनुष्य ने कोई अनुचित काम नहीं किया।
42 फिर उस ने यीशु से कहा; हे प्रभु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

43 यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।
44 और यह लगभग छठे घंटे का समय था, और तीसरे घंटे तक सारी पृथ्वी पर अंधकार छा गया।
45 और सूर्य अन्धियारा हो गया, और मन्दिर का परदा बीच में से फट गया।
46 यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा; हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं; और यह कहकर प्राण त्याग दिए।
47 जब सूबेदार ने यह जो हुआ था देखा तो परमेश्वर की महिमा करके कहा, सचमुच यह मनुष्य धर्मी था।
48 और जो लोग यह दृश्य देखने के लिये इकट्ठे हुए थे, उन्होंने जो कुछ हुआ था, उसे देखा और छाती पीटते हुए लौट गए।
49 और उसके सब जान-पहचान और जो स्त्रियां गलील से उसके साथ आई थीं, दूर खड़ी होकर ये सब देख रही थीं।
50 और देखो, यूसुफ नाम एक मन्त्री था, और वह भला और धर्मी मनुष्य था।
51 वह तो यहूदियों के नगर अरिमतियाह का निवासी था, और परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था, परन्तु उस ने उन की युक्ति और काम से सहमति न की थी।
52 उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी।
53 तब उसने उसे उतारकर सनी के कपड़े में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो पत्थर में खोदी हुई थी; और जिसमें पहले कभी कोई नहीं रखा गया था।
54 और वह दिन तैयारी का था, और सब्त का दिन निकट था।
55 और जो स्त्रियां उसके साथ गलील से आई थीं, वे भी पीछे-पीछे जाकर कब्र को देखने लगीं, और यह भी कि उसका शव किस रीति से रखा गया है।
56 तब उन्होंने लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया, और आज्ञा के अनुसार सब्त के दिन विश्राम किया।

अध्याय 24

1 सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे जो सुगन्धित वस्तुएं उन्होंने तैयार की थीं, उन्हें और कुछ और वस्तुएं साथ लेकर कब्र पर आईं।
2 और उन्होंने पत्थर को कब्र से लुढ़का हुआ पाया।
3 और जब वे भीतर गए तो प्रभु यीशु का शरीर न पाया।
4 जब वे इस बात पर बहुत घबरा रहे थे, तो देखो, दो पुरुष चमकते हुए वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए।
5 और जब वे डर गए, और अपना मुंह भूमि की ओर झुका लिया, तब उन्होंने उन से कहा; तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ते हो?
6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु जी उठा है: स्मरण करो, कि जब वह गलील में था, तो उसने तुम से क्या कहा था।
7 कि अवश्य है, कि मनुष्य के पुत्र को पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और वह तीसरे दिन जी उठे।
8 और उनको उसके ये शब्द याद आये,
9 और कब्र से लौटकर उन ग्यारहों को, और शेष सब को ये सब बातें कह सुनाईं।
10 जिन्हों ने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना और याकूब की माता मरियम और उनके साथ की और स्त्रियां थीं।
11 परन्तु उनकी बातें उन्हें झूठी बातें लगीं, और उन्होंने उन पर विश्वास न किया।
12 तब पतरस उठकर कब्र की ओर दौड़ा, और झुककर कपड़े अलग रखे हुए देखे, और जो हुआ था उस से अचम्भा करता हुआ चला गया।
13 और देखो, उसी दिन उनमें से दो जन इम्माऊस नाम एक गांव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई साठ मील की दूरी पर था।
14 और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं, आपस में बातें करने लगे।
15 जब वे आपस में बातें और विचार-विमर्श कर रहे थे, तो यीशु आप निकट आकर उनके साथ हो लिया।
16 परन्तु उन्होंने अपनी आंखें बन्द कर लीं, ताकि वे उसे न पहचानें।
17 तब उस ने उन से पूछा; ये कैसी बातें हैं जो तुम चलते चलते एक दूसरे से करते हो, और उदास रहते हो?
18 उन में से क्लियुपास नाम एक ने उसको उत्तर दिया, कि क्या तू यरूशलेम में परदेशी है? और क्या तू नहीं जानता कि इन दिनों में वहां क्या क्या बातें हुई हैं?
19 उस ने उन से पूछा, कौन सी बातें? उन्होंने उस से कहा, यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता था।
20 और प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वाकर मृत्यु दण्ड की आज्ञा दी, और क्रूस पर चढ़वाया।
21 परन्तु हम ने यह आशा की थी कि यह वही है जो इस्राएल को छुड़ाएगा; और इन सब बातों के अतिरिक्त, इन बातों को हुए आज तीसरा दिन है।
22 हां, हमारे दल की कुछ स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्यचकित किया, जो भोर को कब्र पर थीं।
23 जब उसका शव न पाया तो यह कहती हुई आईं कि हमने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है, जिन्हों ने कहा है कि वह जीवित है।
24 तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा।
25 तब उस ने उन से कहा; हे मूर्खों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमति लोगों!
26 क्या उचित न था, कि मसीह ये दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?
27 और उस ने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय की बातें, उन्हें समझा दीं।
28 जब वे उस गांव के निकट पहुंचे, जहां वे जा रहे थे, तो उसने ऐसा सोचा, मानो वह और आगे जाना चाहता है।
29 परन्तु उन्होंने उसे यह कहकर रोका, कि हमारे साथ रह; क्योंकि सांझ हो गई है और दिन बहुत ढल गया है। तब वह उनके साथ रहने के लिये भीतर गया।
30 जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उनको देने लगा।
31 तब उनकी आंखें खुल गईं, और उन्होंने उसे पहचान लिया, और वह उनकी आंखों से ओझल हो गया।
32 और उन्होंने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता था और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?

33 वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम को लौटे और उन ग्यारहों और उनके साथियों को इकट्ठे पाया।
34 कि प्रभु सचमुच जी उठा है, और शमौन को दिखाई दिया है।
35 और उन्होंने मार्ग में क्या क्या हुआ, और रोटी तोड़ते समय उसका परिचय उन से कैसे हुआ, इसका वर्णन किया।
36 जब वे ये बातें कह रहे थे, तो यीशु आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ, और उन से कहा; तुम्हें शान्ति मिले।
37 परन्तु वे डर गए और घबरा गए, और समझे कि हम ने कोई भूत देखा है।
38 उस ने उन से कहा; तुम क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मनों में क्यों सन्देह उठते हैं?
39 मेरे हाथ और मेरे पांव को देखो, कि मैं वही हूं; मुझे छूकर देखो; क्योंकि आत्मा के हड्डी मांस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो।
40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव दिखाए।
41 जब आनन्द के मारे उनको प्रतीति न हुई, और वे अचम्भा करते थे, तो उस ने उन से पूछा; क्या यहां तुम्हारे पास कुछ भोजन है?
42 तब उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का टुकड़ा और मधु का छत्ता दिया।
43 तब उसने उसे लेकर उनके सामने खाया।
44 और उसने उनसे कहा, ये वे ही बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुमसे कही थीं, कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में, मेरे विषय में लिखी हैं, वे सब पूरी हों।
45 तब उस ने उनकी समझ के द्वार खोल दिये, कि वे पवित्र शास्त्र को बूझ सकें।
46 और उन से कहा; यों लिखा है, और यों हुआ कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा।
47 और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।
48 और तुम इन बातों के गवाह हो।
49 और देखो, मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को तुम पर उतारता हूं; परन्तु जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक यरूशलेम में ठहरे रहो।
50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक ले गया, और हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया।
51 और ऐसा हुआ कि जब वह उन्हें आशीर्वाद दे रहा था, तो वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया।
52 और वे उसको दण्डवत् करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।
53 और वे लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करते रहते थे। आमीन।

जॉन

अध्याय 1

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 वही आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।
4 उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।
5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है, परन्तु अन्धकार उसे ग्रहण नहीं कर सकता।
6 परमेश्वर की ओर से एक मनुष्य भेजा गया, जिसका नाम यूहन्ना था।
7 वह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, कि सब लोग उसके द्वारा विश्वास लाएं।
8 वह स्वयं वह ज्योति नहीं था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये भेजा गया था।
9 वह वही सच्ची ज्योति है जो संसार में आने वाले हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है।
10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे न जाना।
11 वह अपने लोगों के पास आया, और उसके अपने लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया।
12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के पुत्र होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।
13 वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से जन्मे हैं।
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, यह वही है, जिसका मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है; क्योंकि वह मुझ से पहले था।
16 और उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह।
17 क्योंकि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आई।
18 परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।
19 और यूहन्ना की यह वाणी है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उसके पास यह पूछने को भेजा, कि तू कौन है?
20 तब उस ने मान लिया, और इन्कार नहीं किया, परन्तु मान लिया, कि मैं मसीह नहीं हूं।
21 तब उन्होंने उस से पूछा, तो फिर क्या तू एलियाह है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं। क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है? उस ने उत्तर दिया, नहीं।
22 तब उन्होंने उस से पूछा, तू कौन है? हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें: तू अपने विषय में क्या कहता है?
23 उसने कहा, मैं जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हूँ, जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, कि प्रभु का मार्ग सीधा करो।
24 और जो भेजे गए थे वे फरीसी थे।
25 और उन्होंने उस से पूछा; यदि तू न मसीह है, और न एलियाह, और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?
26 यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूं; परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते।
27 जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है; मैं उसके जूते का बन्ध खोलने के योग्य भी नहीं।
28 ये बातें यरदन के पार बेतबारा में हुईं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।
29 दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।
30 यह वही है, जिसके विषय में मैं ने कहा था, कि मेरे बाद एक पुरूष आने वाला है, जो मुझ से श्रेष्ठ है; क्योंकि वह मुझ से पहले था।
31 मैं तो उसे पहिचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया हूं कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए।
32 और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं स्वर्ग से उतरते देखा, और वह उस पर ठहर गया।
33 मैं तो उसे पहिचानता न था; परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा; जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।
34 और मैं ने देखकर गवाही दी, कि यह परमेश्वर का पुत्र है।
35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो लोग खड़े हुए।
36 और यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है!
37 और वे दोनों चेले यीशु की बात सुनकर उसके पीछे हो लिये।
38 तब यीशु ने फिरकर उन्हें अपने पीछे आते देखा, और उन से पूछा; तुम क्या ढूंढ़ते हो? उन्होंने उस से कहा, हे रब्बी, (अर्थात् हे गुरू) तू कहां रहता है?
39 उस ने उन से कहा, आकर देखो: और उन्होंने आकर देखा कि वह कहां रहता है, और उस दिन उसके यहां रहे, क्योंकि यह दसवें घंटे के लगभग था।
40 जो दो लोग यूहन्ना की बात सुनकर उसके पीछे चले आए थे, उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था।
41 उस ने पहिले अपने भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्तस अर्थात मसीह मिल गया।
42 तब वह उसे यीशु के पास ले गया, और यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा; तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है; तू कैफा अर्थात् पत्थर कहलाएगा ।
43 दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, मेरे पीछे आओ।
44 फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का था।
45 फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया है; वह है यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी।

46 तब नतनएल ने उस से कहा, क्या नासरत से भी कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख ले।
47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा; देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इसमें कपट नहीं।
48 नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहां से जानता है यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि उस से पहिले कि फिलेप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के नीचे था, तब मैं ने तुझे देखा था।
49 नतनएल ने उसको उत्तर दिया, कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का राजा है।
50 यीशु ने उसको उत्तर दिया; क्या तू इसलिये विश्वास करता है कि मैं ने तुझ से कहा, कि मैं ने तुझे अंजीर के पेड़ के नीचे देखा? तू इन से भी बड़े बड़े काम देखेगा।
51 उस ने उस से कहा; मैं तुझ से सच सच कहता हूं; कि अब से तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।

अध्याय दो

1 तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह था, और यीशु की माता भी वहां थी।
2 और यीशु और उसके चेले भी उस विवाह में बुलाए गए।
3 जब उन को दाखरस न मिला, तो यीशु की माता ने उस से कहा; उन के पास दाखरस नहीं रहा।
4 यीशु ने उस से कहा; हे नारी, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।
5 उसकी माता ने सेवकों से कहा, जो कुछ वह तुम से कहे, वही करो।
6 वहां यहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके रखे हुए थे, जिन में दो दो, तीन तीन मन पानी समाता था।
7 यीशु ने उन से कहा, मटकों में जल भर दो: और उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया।
8 तब उस ने उन से कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ: तब उन्होंने उसे उठा लिया।
9 जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था कि वह कहां से आया है, (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे), तब भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर कहा।
10 और उस से कहा, हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाखरस परोसता है, और जब लोग पीकर चूर हो जाते हैं, तब और बुरा पेश करता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।
11 यीशु ने गलील के काना में यह पहला आश्चर्यकर्म करके अपनी महिमा प्रगट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।
12 इसके बाद वह और उसकी माता, उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम को गए और वहाँ बहुत दिन नहीं रहे।
13 और यहूदियों का फसह निकट था, और यीशु यरूशलेम को गया।
14 और मन्दिर में बैल, भेड़ और कबूतर बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया।
15 और उस ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से बाहर निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिखेर दिए, और मेज़ें उलट दीं।
16 और कबूतर बेचनेवालों से कहा; ये चीज़ें यहाँ से ले जाओ; मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।
17 तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, कि तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।
18 तब यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि तू जो ये काम करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?
19 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।
20 तब यहूदियों ने कहा, इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे और क्या तू इसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?
21 परन्तु वह अपने शरीर के मन्दिर के विषय में कह रहा था।
22 जब वह मरे हुओं में से जी उठा, तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह बात हम से कही थी; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।
23 जब वह फसह के दिन यरूशलेम में था, तो बहुतों ने उसके काम देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।
24 परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था।
25 और उसे इस बात की आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था, कि मनुष्य के मन में क्या है।

अध्याय 3

1 फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
2 उन्होंने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है; क्योंकि कोई मनुष्य ये चिन्ह जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, नहीं कर सकता।
3 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।
4 नीकुदेमुस ने उस से कहा; मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?
5 यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
6 जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
7 अचम्भा मत कर, कि मैं ने तुझ से कहा, कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती और किधर जाती है; जो कोई आत्मा से जन्मा है, वह ऐसा ही है।
9 नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया, कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं?
10 यीशु ने उसको उत्तर दिया; क्या तू इस्राएलियों का गुरू होकर भी ये बातें नहीं जानता?
11 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि हम जो जानते हैं, वही कहते हैं, और जो हम ने देखा है, उसकी गवाही देते हैं; परन्तु तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।

12 जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूं, तो फिर कैसे विश्वास करोगे?
13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।
14 और जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, वैसे ही अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।
15 ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती; परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।
19 और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे।
20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।
21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।
22 इन बातों के बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए और वहां उनके साथ रहकर बपतिस्मा दिया।
23 और यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहां बहुत जल था: और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।
24 क्योंकि यूहन्ना अब तक बन्दीगृह में नहीं डाला गया था।
25 तब यूहन्ना के कुछ चेलों और यहूदियों के बीच शुद्धिकरण के विषय में विवाद उठा।
26 और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा; हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन पार तेरे साथ था, और जिस की तू ने गवाही दी है, देख, वही बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।
27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, कि जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।
28 तुम आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूं।
29 जिस की दुल्हन है, वही दूल्हा है; परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उस की सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत आनन्दित होता है; अब मेरा यही आनन्द पूरा हुआ है।
30 अवश्य है कि वह बढ़े, परन्तु मैं घटूं।
31 जो ऊपर से आता है, वह सब के ऊपर है; जो पृथ्वी से है, वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है; जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है।
32 और जो कुछ उस ने देखा और सुना है, उसी की गवाही देता है, परन्तु कोई उस की गवाही ग्रहण नहीं करता।
33 जिस ने उस की गवाही ग्रहण कर ली, उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।
34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि परमेश्वर उसे आत्मा नाप नाप कर नहीं देता।
35 पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।
36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र पर विश्वास नहीं करता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।

अध्याय 4

1 जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु ने यूहन्ना से अधिक चेले बनाए और उन्हें बपतिस्मा दिया है।
2 (यद्यपि यीशु ने स्वयं नहीं, परन्तु उसके चेलों ने बपतिस्मा दिया)
3 फिर वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।
4 और उसे सामरिया से होकर जाना होगा।
5 तब वह सामरिया के सूखार नामक एक नगर के पास आया, जो उस भूमि के पास था जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।
6 और याकूब का कुआँ वहीं था। यीशु यात्रा का थका हुआ उस कुएँ पर बैठ गया; और यह लगभग छठे घण्टे का समय था।
7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।
8 (क्योंकि उसके चेले भोजन मोल लेने के लिये नगर में गए थे।)
9 तब उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? यहूदी लोग सामरियों से कोई व्यवहार नहीं रखते।
10 यीशु ने उसको उत्तर दिया; यदि तू परमेश्वर का वरदान जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है, कि मुझे पानी पिला, तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।
11 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ भी नहीं है, और कुआं गहरा है; फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया?
12 क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और आप ही अपने पुत्रों, और पशुओं समेत उस से पानी पिया?
13 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर प्यासा होगा।
14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।
15 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे, कि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को यहां आऊं।
16 यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को बुला और यहां ले आ।
17 स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूं: यीशु ने उस से कहा; तू ने ठीक कहा, कि मैं बिना पति की हूं।
18 क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं: यह तू ने सच कहा है।
19 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मैं समझती हूं कि तू भविष्यद्वक्ता है।

20 हमारे पूर्वज इसी पहाड़ पर भजन करते थे, और तुम कहते हो कि यरूशलेम में वह स्थान है जहां भजन करना चाहिए।
21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
22 तुम नहीं जानते कि किस की आराधना करते हो: हम जानते हैं कि किस की आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।
23 परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिस में सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।
24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।
25 स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।
26 यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूं, वही हूं।
27 इतने में उसके चेले उसके पास आए, और इस बात से अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न पूछा, कि तू क्या चाहता है? या, कि तू उस से क्यों बातें करता है?
28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और उन पुरुषों से कहने लगी,
29 आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया: क्या यह मसीह नहीं है?
30 तब वे नगर से निकलकर उसके पास आए।
31 इतने में उसके चेले उस से प्रार्थना करने लगे, कि हे गुरू, कुछ खा ले।
32 उस ने उन से कहा; मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।
33 तब चेलों ने आपस में कहा; क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?
34 यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।
35 क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी में अभी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूं, अपनी आंखें उठाओ और खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।
36 और जो काटता है, वह मजदूरी पाता है, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला, दोनों मिलकर आनन्द करें।
37 और इसमें यह कहावत सच है कि बोने वाला एक है और काटने वाला दूसरा।
38 मैं ने तुम्हें वह फसल काटने को भेजा है जिस में तुम ने कुछ परिश्रम नहीं किया; औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।
39 और उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की बात के कारण उस पर विश्वास किया; उस ने यह गवाही दी थी, कि उसने सब कुछ जो मैं ने किया, मुझे बता दिया।
40 जब सामरी उसके पास आए, तो उस से बिनती करने लगे, कि हमारे साथ रह: सो वह वहां दो दिन तक रहा।
41 और उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोग विश्वास लाए।
42 और स्त्री से कहा; अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में मसीह है, जो जगत का उद्धारकर्ता है।
43 दो दिन के बाद वह वहाँ से चला गया, और गलील में चला गया।
44 क्योंकि यीशु ने आप ही गवाही दी है, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।
45 जब वह गलील में आया, तो गलीली लोग उस से आनन्द से मिले, क्योंकि उन्होंने जो कुछ उस ने यरूशलेम में पर्व के समय किया था, उसे देखा था; इसलिये कि वे भी पर्व में गए थे।
46 तब यीशु फिर गलील के काना में आया, जहां उसने पानी को दाखरस बनाया था। और वहां एक धनी मनुष्य था, जिसका बेटा कफरनहूम में बीमार था।
47 जब उस ने सुना, कि यीशु यहूदिया से गलील में आया है, तो वह उसके पास गया, और उस से बिनती की, कि आकर मेरे बेटे को चंगा कर; क्योंकि वह मरने पर था।
48 तब यीशु ने उस से कहा; यदि तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखो, तो कदापि विश्वास न करोगे।
49 उस रईस ने उस से कहा, हे महाराज, मेरे बच्चे के मरने से पहले आप नीचे आ जाइये।
50 यीशु ने उस से कहा, चला जा; तेरा बेटा जीवित है: तब उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात पर विश्वास करके चला गया।
51 जब वह जा रहा था, तो उसके सेवकों ने आकर उसे समाचार दिया, कि तेरा बेटा जीवित है।
52 तब उस ने उन से पूछा, कि वह कब अच्छा होने लगा? उन्होंने उस से कहा, कि कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया।
53 तब पिता ने जान लिया कि यह वही घड़ी है जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा था, कि तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।
54 यह दूसरा आश्चर्यकर्म है जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर किया।

अध्याय 5

1 इसके बाद यहूदियों का पर्व हुआ, और यीशु यरूशलेम को गया।
2 यरूशलेम में भेड़-बाज़ार के पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पाँच ओसारे हैं।
3 इनमें बहुत से अशक्त, अंध, लंगड़े, सूखे हुए लोग पड़े रहते थे, जो जल के हिलने की प्रतीक्षा करते थे।
4 क्योंकि एक स्वर्गदूत एक निश्चित समय पर कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाता था; और जो कोई पानी को हिलाते ही सबसे पहले उसमें उतरता था, वह चाहे किसी भी बीमारी से चंगा हो जाता था।
5 वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से रोग से पीड़ित था।
6 जब यीशु ने उसे पड़ा देखा और जाना कि वह बहुत दिन से इस दशा में है तो उस से पूछा; क्या तू चंगा होना चाहता है?
7 उस निर्बल ने उसको उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, जो पानी हिलाने पर मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु जब मैं आ रहा होता हूं, तो दूसरा मुझ से पहिले उतर जाता है।
8 यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी खाट उठा, और चल फिर।
9 और वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा; और उसी दिन सब्त का दिन हुआ।

10 तब यहूदियों ने उस से जो चंगा हुआ था कहा, आज तो सब्त का दिन है; तुझे खाट उठाना उचित नहीं।
11 उस ने उनको उत्तर दिया; कि जिस ने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा; अपनी खाट उठा कर चल फिर।
12 तब उन्होंने उस से पूछा; वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, अपनी खाट उठा और चल फिर?
13 जो चंगा हुआ था, वह नहीं जानता था कि वह कौन है, क्योंकि उस जगह में बहुत भीड़ होने के कारण यीशु वहां से चला गया था।
14 इसके बाद यीशु ने उसे मन्दिर में पाकर कहा; देख, तू चंगा हो गया है; अब से पाप मत करना, ऐसा न हो कि कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।
15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कहा, कि यह यीशु है, जिस ने मुझे चंगा किया है।
16 इसलिये यहूदी लोग यीशु को सताते और मार डालना चाहते थे, क्योंकि उसने ये काम सब्त के दिन किए थे।
17 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।
18 इसलिये यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि उस ने न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ा, वरन् परमेश्वर को अपना पिता कहकर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराया।
19 तब यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं; पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, परन्तु जो कुछ पिता को करते देखता है, वही करता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम रखता है और जो कुछ वह करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।
21 क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।
22 क्योंकि पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।
23 कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं, वैसे ही पुत्र का भी आदर करें: जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का, जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।
24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश करता है।
25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, वरन अब भी है, जब मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवित रहेंगे।
26 क्योंकि जैसा पिता अपने में जीवन रखता है, वैसा ही उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने में जीवन रखे।
27 वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है।
28 इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर जाएंगे।
29 और जो भलाई करते हैं वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे; और जो बुराई करते हैं वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु पिता की इच्छा चाहता हूँ, जिस ने मुझे भेजा है।
31 यदि मैं आप अपनी गवाही दूं, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।
32 एक और भी है जो मेरी गवाही देता है; और मैं जानता हूं, कि जो गवाही वह मेरे विषय में देता है, वह सच्ची है।
33 तुम ने यूहन्ना के पास सन्देश भेजा, और उस ने सत्य की गवाही दी।
34 परन्तु मैं मनुष्य की गवाही नहीं चाहता, परन्तु ये बातें इसलिये कहता हूं, कि तुम उद्धार पाओ।
35 वह तो जलती हुई और चमकती हुई ज्योति थी, और तुम कुछ समय तक उसकी ज्योति में आनन्दित होने को तैयार थे।
36 परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है, क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।
37 और पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है।
38 और उसका वचन तुम्हारे मन में स्थिर नहीं रहता; क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते।
39 पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो; क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है।
40 फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।
41 मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।
42 परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं।
43 मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई दूसरा अपने नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे।
44 तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, कैसे विश्वास कर सकते हो?
45 यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगानेवाला तो एक है, अर्थात मूसा जिस पर तुम विश्वास करते हो।
46 यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है।
47 परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे?

अध्याय 6

1 इन बातों के बाद यीशु गलील की झील के पार गया, जो तिबिरियास की झील भी कहलाती है।
2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, क्योंकि उन्होंने उन आश्चर्यकर्मों को देखा था जो वह बीमारों पर करता था।
3 फिर यीशु पहाड़ पर चढ़ गया और वहाँ अपने चेलों के साथ बैठ गया।
4 और यहूदियों का फसह का पर्व निकट था।
5 जब यीशु ने आंखे उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपनी ओर आते देखा तो फिलिप्पुस से पूछा; हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं?
6 यह बात उस ने उसे परखने के लिये कही, क्योंकि वह आप जानता था, कि वह क्या करेगा।

7 फिलिप्पुस ने उसको उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी भी उन के लिये पूरी न होगी कि हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।
8 उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा।
9 यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं; परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?
10 तब यीशु ने कहा, " लोगों को बैठा दो।" उस जगह बहुत घास थी। तब लोग जिनमें गिनती लगभग पाँच हज़ार की थी, बैठ गए।
11 तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके अपने चेलों को बाँट दीं; और चेलों ने बैठनेवालों को बाँट दीं; और वैसे ही मछलियों में से भी जितनी वे चाहते थे बाँट दी।
12 जब वे खाकर तृप्त हो गए, तो उस ने अपने चेलों से कहा; बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न जाए।
13 तब उन्होंने बटोरा, और जौ की पांच रोटियों के टुकड़े जो खानेवालों से बच गए थे उनसे बारह टोकरियाँ भरीं।
14 जब उन लोगों ने यीशु का वह आश्चर्यकर्म देखा, तो कहने लगे, यह सचमुच वही भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था।
15 जब यीशु ने जान लिया कि वे मुझे पकड़कर राजा बनाना चाहते हैं, तो वह फिर अकेला पहाड़ पर चला गया।
16 जब संध्या हुई तो उसके चेले झील के किनारे गए।
17 और वे नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे: और अन्धेरा हो गया था, और यीशु उनके पास नहीं आया था।
18 और एक बड़ी आँधी चलने से समुद्र में लहरें उठने लगीं।
19 जब वे कोई पच्चीस या तीस मील दूर नाव खेते तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते और नाव के निकट आते देखा, और डर गए।
20 उस ने उन से कहा, मैं ही हूं; डरो मत।
21 तब उन्होंने उसे खुशी-खुशी जहाज पर चढ़ा लिया और जहाज तुरन्त उस जगह पर पहुंच गया जहां वे जा रहे थे।
22 दूसरे दिन जब झील के पार खड़े लोगों ने देखा कि यहाँ उस नाव को छोड़ और कोई नाव नहीं है, जिस पर उसके चेले सवार थे, और यीशु अपने चेलों के साथ नाव पर नहीं चढ़ा, परन्तु उसके चेले अकेले चले गए हैं।
23 (तौभी तिबिरियास से और भी नावें उस स्थान के निकट आईं, जहां उन्होंने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी।)
24 जब लोगों ने देखा कि यहाँ न तो यीशु है और न उसके चेले, तो वे भी नाव पर चढ़कर यीशु को ढूँढ़ते हुए कफरनहूम को आए।
25 जब उन्होंने उसे झील के उस पार पाया, तो उस से पूछा; हे रब्बी, तू यहां कब आया?
26 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं; तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने सामर्थ के काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि परमेश्वर पिता ने उसी पर छाप कर दी है।
28 तब उन्होंने उस से पूछा, परमेश्वर के काम करने के लिये हम क्या करें?
29 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।
30 तब उन्होंने उस से कहा; फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम देखकर तेरी प्रतीति करें? तू कौन सा काम करता है?
31 हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है, कि उसने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी।
32 तब यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।
33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।
34 तब उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।
35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे पास आता है, वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा न होगा।
36 परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देखा भी है, तौभी विश्वास नहीं करते।
37 जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा; और जो मेरे पास आता है, उसे मैं कभी न निकालूंगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।
39 और मेरे भेजनेवाले पिता की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं।
40 और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।
41 तब यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिये कि उसने कहा था, कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी है वह मैं हूं।
42 उन्होंने कहा; क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके पिता और माता को हम जानते हैं? फिर वह क्योंकर कहता है, कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं?
43 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि आपस में मत बड़बड़ाओ।
44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।
45 भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखा है, "वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।" इसलिये जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।
46 यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा है, केवल वही जो परमेश्वर से है, उसी ने पिता को देखा है।
47 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है।
48 वह जीवन की रोटी मैं हूँ।
49 तुम्हारे पूर्वज जंगल में मन्ना खाते थे, और मर गए।
50 यह वही रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे।
51 जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी है, मैं हूँ; यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं दूँगा, वह मेरा मांस है, जो मैं जगत के जीवन के लिये दूँगा।
52 तब यहूदी आपस में झगड़ने लगे, और कहने लगे, यह मनुष्य हमें अपना मांस खाने को कैसे दे सकता है?
53 तब यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं; यदि तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं।

54 जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।
55 क्योंकि मेरा मांस सचमुच भोजन है, और मेरा लोहू सचमुच पेय है।
56 जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें बना रहता हूँ।
57 जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के द्वारा जीवित हूं, वैसा ही जो मुझे खाएगा, वह भी मेरे द्वारा जीवित रहेगा।
58 यह वही रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, जैसे तुम्हारे पूर्वज मन्ना खाकर मर गए, वैसे ही तुम भी नहीं: जो कोई इस रोटी में से खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।
59 ये बातें उस ने कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश करते हुए कहीं।
60 तब उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, यह बात कठिन है; इसे कौन सुन सकता है?
61 जब यीशु ने अपने मन में यह जान लिया कि मेरे चेले इस बात पर बड़बड़ाते हैं, तो उसने उनसे पूछा; क्या इस बात से तुम ठोकर खाते हो?
62 यदि तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते देखोगे, जहां वह पहले था, तो क्या होगा?
63 आत्मा तो जीवन देने वाली है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं, वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।
64 परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं, जो विश्वास नहीं करते, क्योंकि यीशु तो आरम्भ से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते वे कौन हैं, और कौन उसे पकड़वाएगा।
65 उस ने कहा; इसलिये मैं ने तुम से कहा; कि जब तक किसी को मेरे पिता की ओर से यह वरदान न मिले, तब तक कोई मेरे पास नहीं आ सकता।
66 उस समय से उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए, और उसके बाद उसके साथ न चले।
67 तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?
68 शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।
69 और हम विश्वास करते हैं, और निश्चय जानते हैं, कि जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह तू ही है।
70 यीशु ने उनको उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना? फिर भी तुम में से एक शैतान है?
71 उस ने शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के विषय में कहा था, क्योंकि यही जो उन बारहों में से एक था, उसे पकड़वानेवाला था।

अध्याय 7

1 इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का प्रयत्न कर रहे थे, इसलिये वह यहूदिया में फिरना न चाहता था।
2 अब यहूदियों का मण्डपों का पर्व निकट था।
3 तब उसके भाइयों ने उस से कहा, यहां से चला जा और यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी देखें।
4 क्योंकि ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो गुप्त में काम करे और प्रगट होना चाहे: यदि तू ये काम करता है, तो अपने आप को जगत पर प्रगट कर।
5 क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।
6 तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारा समय सर्वदा तैयार है।
7 संसार तुम से बैर नहीं कर सकता, पर वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विषय में यह गवाही देता हूं, कि उसके काम बुरे हैं।
8 तुम इस पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी मेरा समय पूरा नहीं हुआ।
9 यह बातें उनसे कहकर वह गलील ही में रह गया।
10 परन्तु जब उसके भाई चले गए, तो वह आप भी पर्व्व में गया, परन्तु प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त होकर।
11 तब यहूदी लोग पर्व्व में उसे ढूंढ़ने लगे, और पूछने लगे, वह कहां है?
12 और लोगों में उसके विषय में बहुत बड़बड़ाहट हुई; कितने तो कहते थे, कि वह अच्छा मनुष्य है: और कितने कहते थे, कि नहीं; वह लोगों को धोखा देता है।
13 परन्तु यहूदियों के भय के मारे कोई भी उसके विषय में खुल कर बात नहीं करता था।
14 पर्व के लगभग आधे समय में यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।
15 यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, यह मनुष्य बिन पढ़े विद्या कैसे जान गया?
16 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले का है।
17 यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस सिद्धान्त के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।
18 जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपनी ही महिमा चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की महिमा चाहता है, वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं।
19 क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? फिर भी तुम में से कोई उस पर नहीं चलता? तुम मुझे क्यों मार डालना चाहते हो?
20 लोगों ने उत्तर दिया, कि तुझ में दुष्टात्मा है, कौन तुझे मार डालना चाहता है?
21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं ने एक काम किया है, और तुम सब अचम्भा करते हो।
22 इसलिये मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह इसलिये नहीं कि वह मूसा की ओर से है, परन्तु बापदादों से चली आई है) और तुम सब्त के दिन मनुष्य का खतना करते हो।
23 यदि सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है, ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा न टाली जाए, तो क्या तुम मुझ पर इसलिये क्रोध करते हो कि मैं ने सब्त के दिन मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया?
24 मुंह देखकर न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।
25 तब यरूशलेमियों में से कितनों ने कहा, क्या यह वही नहीं है, जिसे वे मार डालना चाहते हैं?
26 परन्तु देखो, वह तो निर्भय होकर बोलता है, परन्तु वे उस से कुछ नहीं कहते। क्या सरदार सचमुच जानते हैं, कि यह वही मसीह है?
27 परन्तु इस को तो हम जानते हैं, कि वह कहां से है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई नहीं जानता कि वह कहां से है।
28 तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए पुकारकर कहा, तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहां का हूं; और मैं

आप से नहीं आया, परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उसे तुम नहीं जानते।
29 परन्तु मैं उसे जानता हूं, क्योंकि मैं उसी से हूं, और उसी ने मुझे भेजा है।
30 तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अभी तक न आया था।
31 तब भीड़ में से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे; क्या मसीह जब आएगा, तो इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इस ने किए?
32 जब फरीसियों ने सुना कि लोग उसके विषय में ऐसी बातें बुड़बुड़ा रहे हैं, तो फरीसियों और महायाजकों ने उसे पकड़ने के लिये सिपाही भेजे।
33 तब यीशु ने उन से कहा; मैं थोड़ी देर तक तुम्हारे साथ हूं; फिर अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा।
34 तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु न पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।
35 तब यहूदियों ने आपस में कहा, वह कहां जाएगा, कि हम उसे न पाएंगे? क्या वह अन्यजातियों में बिखरे हुए लोगों के पास जाकर उन्हें उपदेश देगा?
36 यह कैसी बात है जो उसने कही, कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु न पाओगे; और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते?
37 पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो, तो मेरे पास आए और पीए।
38 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके गर्भ में से जीवन जल की नदियाँ बह निकलेंगी।
39 परन्तु यह उस आत्मा के विषय में था, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाते; क्योंकि पवित्र आत्मा अब तक न उतरा था; इसलिये कि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।
40 तब भीड़ में से बहुतेरों ने यह सुनकर कहा, सचमुच यह वही भविष्यद्वक्ता है।
41 औरों ने कहा, यह तो मसीह है: पर कितनों ने कहा, क्या मसीह गलील से आएगा?
42 क्या पवित्र शास्त्र में यह नहीं आया, कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम नगर से आएगा जहां दाऊद रहता था?
43 इसलिए उसके कारण लोगों में फूट पड़ गयी।
44 और उन में से कितनों ने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।
45 तब प्यादों ने महायाजकों और फरीसियों के पास आकर उन से पूछा; तुम उसे क्यों नहीं लाए?
46 सिपाहियों ने उत्तर दिया, कि किसी मनुष्य ने ऐसी बातें कभी नहीं कहीं।
47 तब फरीसियों ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम भी धोखा खा गए हो?
48 क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है?
49 परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, शापित हैं।
50 नीकुदेमुस जो उन में से एक था, वह रात को यीशु के पास आया था, उस ने उन से कहा।
51 क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को, जब तक उसकी बात न सुन ले और जान न ले कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है?
52 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि क्या तू भी गलील का है? ढूंढ़ और देख, क्योंकि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का।
53 तब सब लोग अपने अपने घर चले गए।

अध्याय 8

1 यीशु जैतून पहाड़ पर गया।
2 और भोर को वह फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, उसके पास लाए, और उसे बीच में खड़ी करके कहा।
4 उन्होंने उस से कहा; हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।
5 अब मूसा ने व्यवस्था में हमें आज्ञा दी है, कि ऐसे लोगों को पत्थरवाह किया जाए; परन्तु तू क्या कहता है?
6 उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिये यह बात कही, परन्तु यीशु झुककर उँगली से भूमि पर लिखने लगा, मानो वह उनकी बात सुनता ही न हो।
7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा; तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उसको पत्थर मारे।
8 फिर वह फिर झुककर भूमि पर लिखने लगा।
9 और लोग यह सुनकर अपने अपने विवेक से दोषी ठहरे, और बड़े से लेकर छोटे तक, एक एक करके बाहर चले गए; और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री बीच में खड़ी रह गई।
10 जब यीशु ने सीधे होकर उस स्त्री को छोड़ और किसी को न देखा, तो उस से कहा; हे नारी, तेरे मुद्दई कहां गए? क्या किसी ने तुझे दोषी नहीं ठहराया?
11 उस ने कहा, हे प्रभु, ऐसा नहीं: यीशु ने उस से कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।
12 तब यीशु ने फिर उन से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
13 तब फरीसियों ने उस से कहा, तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही सच्ची नहीं।
14 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि यदि मैं आप अपनी गवाही देता हूं, तौभी मेरी गवाही सच्ची है; क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाता हूं; परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं और कहां जाता हूं।
15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय नहीं करता।
16 और यदि मैं न्याय करूं, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, वरन मैं और पिता जिस ने मुझे भेजा है।
17 तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है, कि दो मनुष्यों की गवाही सच्ची होती है।
18 मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और पिता जिस ने मुझे भेजा है, वह मेरी गवाही देता है।
19 तब उन्होंने उस से पूछा, तेरा पिता कहां है? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को: यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।
20 ये बातें यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा, क्योंकि उसका समय अभी न आया था।

21 तब यीशु ने फिर उन से कहा, मैं जाता हूं, और तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और अपने पापों में मरोगे; जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।
22 तब यहूदियों ने कहा, क्या वह अपने आप को मार डालना चाहता है? क्योंकि वह कहता है, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।
23 उस ने उन से कहा; तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूं; तुम इस संसार के हो, मैं इस संसार का नहीं हूं।
24 इसलिये मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।
25 तब उन्होंने उस से पूछा, तू कौन है? यीशु ने उन से कहा, वही जो मैं ने आरम्भ से तुम से कहा था।
26 मुझे तुम्हारे विषय में बहुत सी बातें कहनी और निर्णय करना है; परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो कुछ मैं ने उस से सुना है, वही जगत से कहता हूं।
27 वे न समझे, कि वह हम से पिता के विषय में कहता है।
28 तब यीशु ने उन से कहा; जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूं, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूं।
29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है।
30 जब वह ये बातें कह रहा था तो बहुतों ने उस पर विश्वास किया।
31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उस पर विश्वास किया था कहा; यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32 और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
33 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दासत्व में नहीं रहे, फिर तू क्यों कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?
34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं; जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।
35 दास सदा घर में नहीं रहता, पुत्र सदा रहता है।
36 इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।
37 मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश से हो, परन्तु तुम मुझे मार डालना चाहते हो, क्योंकि मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता।
38 मैं वही कहता हूँ जो मैंने अपने पिता से देखा है; और तुम वही करते हो जो तुमने अपने पिता से देखा है।
39 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो इब्राहीम है: यीशु ने उन से कहा, यदि तुम इब्राहीम की सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते।
40 परन्तु अब तुम मुझ मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वही सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना; यह काम अब्राहम ने नहीं किया।
41 तुम अपने पिता के समान काम करते हो: तब उन्होंने उस से कहा, हम व्यभिचार से नहीं जन्मे, हमारा एक पिता है, अर्थात् परमेश्वर।
42 यीशु ने उन से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकला और आया हूं; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।
43 तुम मेरी बातें क्यों नहीं समझते? इसलिये कि तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते।
44 तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है, तो अपने ही नाम से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, और झूठ का पिता है।
45 और इसलिये कि मैं तुम को सच बताता हूँ, तुम मेरी प्रतीति नहीं करते।
46 तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच कहता हूं, तो तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते?
47 जो परमेश्वर से है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; सो तुम इसलिये उन्हें नहीं सुनते, कि तुम परमेश्वर की ओर से नहीं हो।
48 इस पर यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?
49 यीशु ने उत्तर दिया, कि मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूं, और तुम मेरा निरादर करते हो।
50 और मैं अपनी महिमा नहीं चाहता; एक है जो चाहता है और न्याय करता है।
51 मैं तुम से सच सच कहता हूं; यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।
52 तब यहूदियों ने उस से कहा, अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है: इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता मर गए हैं; और तू कहता है, कि यदि कोई मेरे वचन को मानेगा, तो अनन्तकाल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।
53 क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से जो मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए, बड़ा है; तू अपने आप को किसे ठहराता है?
54 यीशु ने उत्तर दिया, यदि मैं अपना आदर करूं, तो मेरा आदर कुछ नहीं; मेरा आदर करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।
55 तौभी तुम ने उसे नहीं जाना; परन्तु मैं उसे जानता हूं: और यदि कहूं कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं भी तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा; परन्तु मैं उसे जानता हूं, और उसकी बातें मानता हूं।
56 तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत आनन्दित था, और उसने उसे देखा, और आनन्दित हुआ।
57 तब यहूदियों ने उस से कहा, अभी तेरी आयु पचास वर्ष की नहीं, और क्या तू ने इब्राहीम को देखा है?
58 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ, मैं हूं।
59 तब उन्होंने उस पर फेंकने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया, और उनके बीच में से होकर आगे बढ़ गया।

अध्याय 9

1 जब यीशु उधर से जा रहा था, तो उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था।
2 तब उसके चेलों ने उस से पूछा, हे गुरू, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने?

3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया है, न इस के माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिये हुआ है कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।
4 जिसने मुझे भेजा है, उसके काम मुझे दिन ही दिन रहते करने चाहिए; वह रात आनेवाली है, जिस में कोई काम नहीं कर सकता।
5 जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं।
6 यह कहकर उसने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाई।
7 और उस से कहा, जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिसका अर्थ भेजा हुआ है)। तब वह गया, और नहाया, और देखने लगा।
8 तब पड़ोसी और जो लोग उसे अन्धा देख चुके थे, कहने लगे, क्या यह वही नहीं है, जो बैठा हुआ भीख मांगा करता था?
9 कुछ ने कहा, यह वही है, औरों ने कहा, यह उसके समान है; परन्तु उसने कहा, मैं वही हूँ।
10 तब उन्होंने उस से पूछा, तेरी आंखें कैसे खुल गईं?
11 उस ने उत्तर दिया; कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी सानी और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा; कि शीलोह के कुण्ड के पास जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोया, और देखने लगा।
12 तब उन्होंने उस से पूछा, वह कहां है? उस ने कहा, मैं नहीं जानता।
13 जो पहले अंधा था, उसे लोग फरीसियों के पास ले आये।
14 और यह सब्त का दिन था जब यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोलीं।
15 तब फरीसियों ने भी उस से पूछा, कि तू किस रीति से देखने लगा? उस ने उन से कहा, कि उस ने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई, और मैं ने धो लिया, और अब देखता हूं।
16 तब कितने फरीसी कहने लगे, "यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि यह सब्त के दिन को नहीं मानता।" औरों ने कहा, "पापी मनुष्य ऐसे चिन्ह क्योंकर दिखा सकता है?" इस पर उन में फूट पड़ गई।
17 उन्होंने उस अन्धे से फिर पूछा, तू उसके विषय में क्या कहता है, कि उस ने तेरी आंखें खोली हैं? उस ने कहा, वह भविष्यद्वक्ता है।
18 परन्तु यहूदियों को तब तक विश्वास न हुआ, कि वह अन्धा था और अब देखने लगा है, जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को जो देखने लगा था, न बुलाया।
19 उन्होंने उन से पूछा, क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह अन्धा जन्मा था? फिर अब क्योंकर देखता है?
20 उसके माता-पिता ने उनको उत्तर दिया, कि हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा था।
21 परन्तु अब वह किस रीति से देखता है, यह हम नहीं जानते; और न यह जानते हैं कि किस ने उस की आंखें खोली हैं; वह सयाना है; उसी से पूछो, वह आप कह देगा।
22 ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं, कि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी पहले ही एक मत हो चुके थे, कि यदि कोई यह मान ले कि मैं मसीह हूँ, तो वह आराधनालय से निकाल दिया जाए।
23 तब उसके माता-पिता ने कहा, वह सयाना है, उसी से पूछ लो।
24 तब उन्होंने उस अंधे को फिर बुलाकर कहा, परमेश्वर की स्तुति हो; हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है।
25 उस ने उत्तर दिया, कि वह पापी है या नहीं, यह मैं नहीं जानता: केवल एक बात जानता हूं, कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।
26 तब उन्होंने उस से फिर पूछा, उसने तेरे साथ क्या किया? उसने क्योंकर तेरी आंखें खोल दीं?
27 उस ने उनको उत्तर दिया, कि मैं ने तो तुम से कह दिया, पर तुम ने नहीं सुना; फिर क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होगे?
28 तब उन्होंने उसे बुरा-भला कहकर कहा, तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं।
29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि वह कहां का है।
30 उस मनुष्य ने उनको उत्तर दिया; यह तो आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहां का है, तौभी उसने मेरी आंखें खोल दी हैं।
31 अब हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है।
32 जब से जगत आरम्भ हुआ है, तब से कभी यह सुनने में नहीं आया कि किसी मनुष्य ने जन्म से अंधे को आंखें खोली हों।
33 यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता था।
34 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, फिर भी हमें सिखाता है? तब उन्होंने उसे निकाल दिया।
35 यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है, और जब उससे मिला तो उससे पूछा; क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?
36 उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?
37 यीशु ने उस से कहा, तू ने उसे देखा भी है, और जो तुझ से बातें कर रहा है वह वही है।
38 तब उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उस ने उसे दण्डवत् किया।
39 यीशु ने कहा; मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं, ताकि जो नहीं देखते वे देखें; और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएं।
40 जो फरीसी उसके साथ थे, उन में से कितनों ने ये बातें सुनकर उस से कहा; क्या हम भी अन्धे हैं?
41 यीशु ने उन से कहा; यदि तुम अन्धे होते तो पाप न ठहरते परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है।

अध्याय 10

1 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी और मार्ग से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।
2 परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है।
3 उसके लिये द्वारपाल द्वार खोलता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं; और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है, और बाहर ले जाता है।
4 और जब वह अपनी भेड़ों को बाहर निकालता है, तो वह उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।

5 वे परदेशी का पीछा नहीं करेंगी, परन्तु उससे भाग जाएंगी, क्योंकि वे परदेशी का शब्द नहीं पहचानतीं।
6 यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा; परन्तु वे न समझे, कि वह हमसे क्या बातें कह रहा है।
7 तब यीशु ने फिर उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूं; भेड़ों का द्वार मैं हूं।
8 जो लोग मुझसे पहले आये वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी।
9 द्वार मैं हूं; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।
10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।
11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।
12 परन्तु जो मजदूर है, और न चरवाहा है, और न भेड़ें उसकी अपनी हैं, वह भेड़िये को आते देखकर भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ लेता है, और भेड़ों को तितर-बितर कर देता है।
13 मजदूर इसलिये भाग जाता है, कि वह मजदूर है, और भेड़ों की चिन्ता नहीं करता।
14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वे मुझे जानती हैं।
15 जैसे पिता मुझे जानता है, वैसे ही मैं भी पिता को जानता हूँ, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।
16 और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उनका भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड होगा और एक ही चरवाहा होगा।
17 मेरा पिता मुझ से इसलिये प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं।
18 कोई उसे मुझ से छीन नहीं सकता, वरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसे देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मुझे अपने पिता से मिली है।
19 इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी।
20 परन्तु उन में से बहुतेरे कहने लगे; उस में दुष्टात्मा है, और वह पागल है; तुम उसकी क्यों सुनते हो?
21 औरों ने कहा, ये बातें उस मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा है: क्या दुष्टात्मा अन्धे की आंखें खोल सकती है?
22 और यरूशलेम में अभिषेक का पर्व था, और सर्दी का मौसम था।
23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के बरामदे में टहल रहा था।
24 तब यहूदियों ने उसे घेर लिया, और उस से कहा, तू हमें कब तक सन्देह में डालता रहेगा? यदि तू मसीह है, तो हमें साफ बता दे।
25 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, पर तुम ने प्रतीति नहीं की; जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं, वे ही मेरे गवाह हैं।
26 परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते, कि जैसा मैं ने तुम से कहा, तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझे दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30 मैं और मेरा पिता एक हैं।
31 तब यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने के लिये फिर पत्थर उठा लिये।
32 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से अच्छे काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?
33 यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, कि हम तुझे अच्छे काम के लिये नहीं, वरन परमेश्वर की निन्दा के कारण पत्थरवाह करते हैं, और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।
34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में यह नहीं लिखा है, कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो?
35 यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा और पवित्र शास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती,
36 जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, उसके विषय में तुम कहते हो कि तू इसलिये निन्दा करता है, कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं?
37 यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास मत करो।
38 परन्तु यदि मैं करता हूं, तो चाहे मुझ पर विश्वास न भी करो, तौभी कामों पर विश्वास करो; ताकि तुम जानो और विश्वास करो, कि पिता मुझ में है, और मैं उस में हूं।
39 तब उन्होंने उसे फिर पकड़ना चाहा, परन्तु वह उनके हाथ से बच निकला।
40 और फिर यरदन के पार उस स्थान पर चला गया जहां यूहन्ना पहले बपतिस्मा देता था; और वहीं रहने लगा।
41 तब बहुत से लोग उसके पास आकर कहने लगे, कि यूहन्ना ने कोई चिन्ह नहीं दिखाया; परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इस विषय में कहा था, वह सब सच था।
42 और वहाँ बहुत से लोग उस पर विश्वास किये।

अध्याय 11

1 और लाज़र नाम एक मनुष्य बीमार था, जो मरियम और उस की बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह में रहता था।
2 (यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पांवों को अपने बालों से पोंछा था; इसी का भाई लाजर बीमार था।)
3 तब उसकी बहनों ने उसके पास यह कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रेम रखता है वह बीमार है।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
5 यीशु मरथा, उसकी बहन और लाज़र से प्रेम रखता था।
6 सो जब उस ने सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर था, वहीं दो दिन और ठहर गया।
7 इसके बाद उस ने अपने चेलों से कहा; आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।
8 उसके चेलों ने उस से कहा; हे गुरू, अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे, फिर भी क्या तू वहीं जाता है?

9 यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन में बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले, तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है।
10 परन्तु यदि कोई रात में चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें ज्योति नहीं।
11 ये बातें उस ने कहीं, और इसके बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है; परन्तु मैं जाता हूं, कि उसे जगाऊं।
12 तब उसके चेलों ने कहा; हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।
13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था, पर वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा।
14 तब यीशु ने उन से साफ साफ कहा, " लाजर मर गया है।"
15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो; फिर भी आओ, हम उसके पास चलें।
16 तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथी चेलों से कहा, आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।
17 जब यीशु आया तो उसने पाया कि उसे कब्र में पड़े चार दिन हो चुके हैं।
18 बैतनिय्याह यरूशलेम के निकट था, और वहां से लगभग पन्द्रह मील की दूरी पर था।
19 तब बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने आए।
20 जब मरथा ने सुना कि यीशु आ रहा है तो वह उससे मिलने गयी, पर मरियम घर में बैठी रही।
21 तब मरथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई न मरता।
22 परन्तु मैं जानता हूं, कि अब भी जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।
23 यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।
24 मरथा ने उस से कहा, मैं जानती हूं, कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।
25 यीशु ने उस से कहा, पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूं; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
26 और जो कोई जीवता है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करता है?
27 उस ने उस से कहा; हां, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूं, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह, जो जगत में आनेवाला था, तू ही है।
28 यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, कि प्रभु आए हैं, और तुम्हें बुलाते हैं।
29 यह सुनते ही वह तुरन्त उठकर उसके पास आई।
30 यीशु अभी तक गाँव में नहीं आया था, परन्तु उसी जगह था जहाँ मरथा ने उससे मुलाकात की थी।
31 तब जो यहूदी उसके साथ घर में थे और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठकर बाहर गई है, उसके पीछे हो लिए और सोचने लगे, कि वह कब्र पर रोने को जाती है।
32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, और उसे देखा, तो उसके पांवों पर गिरकर कहने लगी, हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई न मरता।
33 जब यीशु ने उसे और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते देखा, तो वह आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और व्याकुल हुआ।
34 और पूछा, कि तुम ने उसे कहां रखा है? उन्होंने उस से कहा, कि हे प्रभु, चलकर देख ले।
35 यीशु रोया।
36 तब यहूदियों ने कहा, देखो, वह उस से कैसा प्रेम रखता था!
37 परन्तु उन में से कितनों ने कहा; क्या यह मनुष्य, जिस ने अन्धे की आंखें खोली, यह न कर सका कि यह मनुष्य भी न मरता?
38 तब यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया। वह एक गुफा थी, और उस पर एक पत्थर धरा था।
39 यीशु ने कहा, " पत्थर हटाओ।" मरे हुए की बहन मार्था ने उससे कहा, "हे प्रभु, अब तो उसमें से दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।"
40 यीशु ने उस से कहा; क्या मैं ने तुझ से न कहा था, कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?
41 तब उन्होंने उस पत्थर को उस स्थान से जहां मुर्दे रखे थे हटा दिया, और यीशु ने आंखें उठाकर कहा; हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने मेरी सुन ली है।
42 और मैं जानता था कि तू सदैव मेरी सुनता है; परन्तु जो भीड़ पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाज़र, निकल आ!
44 और जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो।
45 तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और जो काम यीशु ने किए थे, उन्हें देखकर बहुतों ने उस पर विश्वास किया।
46 परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर उन्हें बताया कि यीशु ने क्या क्या किया है।
47 तब महायाजकों और फरीसियों ने महासभा इकट्ठी करके कहा, हम क्या करें? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है।
48 यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे, और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।
49 उन में से कैफा नाम एक व्यक्ति ने जो उसी वर्ष का महायाजक था, उन से कहा, तुम कुछ भी नहीं जानते।
50 और यह भी न सोचो कि हमारे लिये यह अच्छा है कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नाश न हो।
51 यह बात उसने अपनी ओर से न कही थी, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी करता था, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा।
52 और न केवल उस जाति के लिये, परन्तु इसलिये भी कि परमेश्वर की तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे।
53 तब उसी दिन से वे उसके प्राणदण्ड की सम्मति करने लगे।
54 इसलिये यीशु फिर यहूदियों के बीच प्रगट होकर न फिरा; परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में एप्रैम नाम एक नगर में चला गया, और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा।
55 और यहूदियों का फसह निकट था, और बहुत से लोग फसह से पहिले अपने आप को शुद्ध करने के लिये देहात से यरूशलेम को गए।
56 तब वे यीशु को ढूंढ़ते और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो, कि वह पर्व में नहीं आएगा?
57 अब प्रधान याजकों और फरीसियों ने आज्ञा दी थी, कि यदि कोई यह जाने कि वह कहां है तो बताए, कि उसे पकड़ लें।

अध्याय 12

1 फिर यीशु फसह से छः दिन पहिले बैतनिय्याह में आया, जहां लाजर था, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था।
2 वहां उन्होंने उसके लिये भोजन तैयार किया, और मारथा सेवा कर रही थी; और लाजर उन में से एक था, जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे।
3 तब मरियम ने जटामासी का आध सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पावों पर डाला, और अपने बालों से उसके पांव पोंछे, और इत्र की सुगंध से सारा घर सुगन्धित हो गया।
4 तब उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा।
5 यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों नहीं दिया गया?
6 उसने यह बात इसलिये नहीं कही, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास उन की थैली रहती थी, और उस में जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था।
7 तब यीशु ने कहा, उसे छोड़ दे; उसने मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये यह बात रखी है।
8 क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा।
9 तब यहूदियों में से बहुत लोग जान गए, कि वह वहां है, और वे न केवल यीशु के कारण आए थे, परन्तु इसलिये भी कि लाज़र को देखें, जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया था।
10 तब महायाजकों ने लाज़र को भी मार डालने की सम्मति की।
11 क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास किया।
12 अगले दिन बहुत से लोग जो पर्व में आए थे, यह सुनकर कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है।
13 खजूर की डालियाँ लीं और उससे मिलने को निकले, और पुकारने लगे, कि होशाना! धन्य है इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।
14 जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला तो वह उस पर बैठ गया, जैसा लिखा है।
15 हे सिय्योन की बेटी, मत डर! देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।
16 उसके चेले ये बातें पहिले न समझे, परन्तु जब यीशु की महिमा हुई, तो उनको स्मरण आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं, और लोगों ने उससे ये सब किया था।
17 तब भीड़ के जो लोग उसके साथ थे, उन्होंने यह गवाही दी कि उस ने लाज़र को कब्र में से बुलाकर मरे हुओं में से जिलाया था।
18 इसी कारण लोग उसके पास आए थे, क्योंकि उन्होंने सुना था, कि उस ने यह आश्चर्यकर्म किया है।
19 तब फरीसियों ने आपस में कहा, क्या तुम समझते हो कि हम से कुछ बनता नहीं? देखो, संसार उसके पीछे हो गया है।
20 जो लोग पर्व में आराधना करने आए थे उनमें से कुछ यूनानी भी थे।
21 तब उन्होंने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलेप्पुस के पास आकर उस से बिनती की, कि हे प्रभु, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।
22 तब फिलेप्पुस ने आकर अन्द्रियास को बताया; और अन्द्रियास और फिलेप्पुस ने भी यीशु को बताया।
23 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।
24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।
25 जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देगा; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उसे सुरक्षित रखेगा।
26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।
27 अब मेरा मन व्याकुल हो रहा है; इसलिये मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा; परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं।
28 हे पिता, अपने नाम की महिमा कर: तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा।
29 तब जो लोग खड़े होकर सुन रहे थे, उन्होंने कहा कि बादल गरजा; औरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत उस से बोला।
30 यीशु ने उत्तर दिया, कि यह शब्द मेरे लिये नहीं, परन्तु तुम्हारे लिये आया है।
31 अब इस जगत का न्याय होता है: अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा।
32 और यदि मैं पृथ्वी से ऊपर उठाया जाऊंगा, तो सबको अपने पास खींच लूंगा।
33 यह बात उसने यह दर्शाने के लिए कही कि उसे कैसी मृत्यु मरनी पड़ेगी।
34 लोगों ने उसको उत्तर दिया, कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा; फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?
35 तब यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है: जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम पर आ पड़े; क्योंकि जो अन्धकार में चलता है, वह नहीं जानता कि किधर जाता है।
36 जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति की सन्तान हो। ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिप गया।
37 यद्यपि उस ने उनके साम्हने इतने आश्चर्यकर्म किए थे, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया।
38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा, कि हे प्रभु, हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?
39 इसलिये वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर कहा।
40 उसने उन की आंखें अन्धी और उन का मन कठोर कर दिया है; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं।
41 ये बातें यशायाह ने कहीं, जब उस ने उस की महिमा देखी और उसके विषय में बातें कीं।
42 तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि वे आराधनालय से निकाले जाएं।

43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय थी।
44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।
45 और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को भी देखता है।
46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे।
47 यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता; क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ।
48 जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।
49 क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूं और क्या क्या बोलूं।
50 और मैं जानता हूं, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो कुछ बोलता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है, वैसा ही बोलता हूं।

अध्याय 13

1 फसह के पर्व्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
2 जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में उसे पकड़वाने की बात डाल चुका था, तो भोजन के समय भोजन समाप्त हो गया।
3 यीशु यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है, और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ।
4 तब उस ने भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर कमर बान्धी।
5 फिर उस ने कटोरे में जल भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अँगोछे से वह कमर बान्धे था उसी से पोंछने लगा।
6 तब वह शमौन पतरस के पास आया, और पतरस ने उस से कहा; हे प्रभु, क्या तू मेरे पांव धोता है?
7 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूं, तू अभी नहीं जानता परन्तु इसके बाद समझेगा।
8 पतरस ने उस से कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।
9 शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, मेरे पांव ही नहीं, वरन हाथ और सिर भी धो डालो।
10 यीशु ने उस से कहा; जो नहा चुका है, उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; वह पूरी रीति से शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।
11 क्योंकि वह जानता था कि उसे कौन पकड़वाएगा, इसी लिये उसने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं।
12 जब वह उनके पांव धो चुका, और अपने वस्त्र पहिनकर फिर बैठ गया, तो उनसे कहने लगा; क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया?
13 तुम मुझे गुरू और प्रभु कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ।
14 यदि मैं ने, जो तुम्हारे प्रभु और गुरु हूं, तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए।
15 क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।
16 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से बड़ा है।
17 तुम तो ये बातें जानते हो, और इनका पालन करने से धन्य होगे।
18 मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता, मैं जानता हूं कि मैं ने किन लोगों को चुना है: परन्तु इसलिये कि पवित्र शास्त्र का वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मेरे विरोध में लात उठाई है।
19 अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जता देता हूं, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं।
20 मैं तुम से सच सच कहता हूं; जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है।
21 जब यीशु ने ये बातें कहीं, तो वह आत्मा में व्याकुल हुआ, और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।
22 तब चेले यह संदेह करते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगे कि वह किसके विषय में कहता है।
23 और उसका एक चेला जिस से यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था।
24 तब शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा, कि वह किस के विषय में कहता है?
25 तब उस ने यीशु की छाती पर लेटकर उस से पूछा, हे प्रभु, वह कौन है?
26 यीशु ने उत्तर दिया, कि जिसे मैं टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है: और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया।
27 और टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया: तब यीशु ने उस से कहा; जो तू करता है, तुरन्त कर।
28 और भोजन करने वालों में से किसी ने न जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये कही।
29 क्योंकि यहूदा के पास थैली थी, इसलिये कि उन में से कितनों ने समझा, कि यीशु ने उस से कहा है; कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए, वह मोल ले, या कि कंगालों को कुछ दे।
30 तब उस ने टुकड़ा लिया, और तुरन्त बाहर चला गया; और रात्रि हो गई थी।
31 जब वह बाहर गया, तो यीशु ने कहा; अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई।
32 यदि परमेश्वर उसमें महिमावान होगा, तो परमेश्वर अपने में भी उसकी महिमा करेगा, वरन तुरन्त उसकी महिमा करेगा।
33 हे बालकों, मैं अब थोड़ी देर और तुम्हारे साथ हूं: तुम मुझे ढूंढ़ोगे; और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा था, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते; वैसा ही मैं अब तुम से कहता हूं।
34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।

35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।
36 शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहां जाता है? यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि जहां मैं जाता हूं, वहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता, परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा।
37 पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तेरे लिये अपना प्राण दे दूंगा।
38 यीशु ने उसको उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूं, कि जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा, तब तक मुर्गा बांग न देगा।

अध्याय 14

1 तुम्हारा मन व्याकुल न हो; तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।
2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता; मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।
3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।
4 और जहां मैं जाता हूं, उसे तुम जानते हो, और वहां का मार्ग भी जानते हो।
5 थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहां जाता है तो मार्ग कैसे जानें?
6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।
7 यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।
8 फिलिप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिये बहुत है।
9 यीशु ने उस से कहा; हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है; फिर तू क्यों कहता है, कि पिता को हमें दिखा?
10 क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
11 मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
14 यदि तुम मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं उसे करूंगा।
15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
17 अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।
18 मैं तुम्हें अकेला नहीं छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आऊंगा।
19 अब थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे।
20 उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ।
21 जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है; और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा; और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।
22 यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु, क्या कारण है कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहता है, और संसार पर नहीं?
23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।
24 जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं, वरन पिता का है, जिस ने मुझे भेजा।
25 ये बातें मैं ने तुम्हारे बीच में रहते हुए तुम से कहीं हैं।
26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।
27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो, और न डरे।
28 तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आता हूं। यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं; क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।
29 और अब मैं ने तुम्हें उसके होने से पहिले बता दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो।
30 अब से मैं तुम्हारे साथ और अधिक बातें नहीं करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।
31 परन्तु इसलिये कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस प्रकार पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसा ही करता हूं: उठो, हम यहां से चलें।

अध्याय 15

1 सच्ची दाखलता मैं हूँ और मेरा पिता किसान है।
2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांट देता है ताकि और फले।
3 अब तुम उस वचन के कारण शुद्ध हो जो मैं ने तुम से कहा है।
4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो, तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उसे बटोरकर आग में डाल देते हैं, और वह जल जाती है।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।

8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
9 जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।
11 ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
12 मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
13 इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।
14 तुम मेरे मित्र हो, यदि जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं उसे करो।
15 अब से मैं तुम्हें दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है: परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।
16 तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह तुम्हें दे।
17 ये बातें मैं तुम्हें इसलिये आज्ञा देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।
18 यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहिले मुझ से बैर रखा।
19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता है।
20 जो बात मैं ने तुम से कही थी, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसे स्मरण रखो। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।
21 परन्तु ये सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।
22 यदि मैं न आता और उन से बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते; परन्तु अब उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं।
23 जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है।
24 यदि मैं उनके बीच वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए, तो वे पापी नहीं ठहरते; परन्तु अब उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया।
25 परन्तु यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्होंने मुझ से व्यर्थ बैर किया।
26 परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।
27 और तुम भी गवाही दोगे, क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

अध्याय 16

1 ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं हैं, कि तुम ठोकर न खाओ।
2 वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे; वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा, वह सोचेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूं।
3 और वे इसलिये तुम्हारे साथ ऐसा करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे।
4 परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए, तो तुम्हें स्मरण आ जाए कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था। और ये बातें मैं ने आरम्भ में तुम से इसलिये नहीं कहीं, कि मैं तुम्हारे साथ था।
5 परन्तु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं, और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहां जाता है?
6 परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कहीं, इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया।
7 तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है; क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।
8 और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।
9 पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते,
10 धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे।
11 न्याय के विषय में, क्योंकि इस संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।
12 मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।
13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
15 जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
16 थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।
17 तब उसके कितने चेले आपस में कहने लगे; यह क्या है जो वह हम से कहता है, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे? और यह कि मैं पिता के पास जाता हूं?
18 तब उन्होंने कहा, यह क्या बात है जो वह कहता है, कि थोड़ी देर और? हम नहीं जानते कि क्या कहता है?
19 यीशु ने यह जानकर कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उन से कहा; क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछ-ताछ करते हो, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे?
20 मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा।
21 जब स्त्री जनने लगती है, तो उस को शोक होता है, क्योंकि उसकी पीड़ा आ पहुंची है; पर जब वह बच्चा जन चुकी तो इस आनन्द से कि इस जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती।
22 इसलिये अब तो तुम शोक करते हो; परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन आनन्दित होंगे; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।

23 उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगोगे, वह तुम्हें देगा।
24 अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।
25 मैं ने ये बातें तुम से नीतिवचनों में कहीं हैं; परन्तु वह समय आता है, कि मैं तुम से नीतिवचनों में और फिर न कहूंगा, परन्तु खोल खोलकर पिता के विषय में बताऊंगा।
26 उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा।
27 क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम रखा और यह भी विश्वास किया है, कि मैं परमेश्वर में से निकल आया।
28 मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूँ; फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।
29 उसके चेलों ने उस से कहा; देख, अब तो तू साफ साफ बोलता है, और कोई दृष्टान्त नहीं कहता।
30 अब हम जान गए, कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे; इस से हम प्रतीति करते हैं, कि तू परमेश्वर से निकला है।
31 यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि क्या तुम अब विश्वास करते हो?
32 देखो, वह घड़ी आती है, वरन आ पहुंची है कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे; तौभी मैं अकेला नहीं हूं, क्योंकि पिता मेरे साथ है।
33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।

अध्याय 17

1 ये बातें कहकर यीशु ने स्वर्ग की ओर अपनी आंखें उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची है; अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
2 क्योंकि तू ने उसे सब प्राणियों पर अधिकार दिया है, कि जिन को तू ने उसे दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।
4 मैंने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है; जो काम तूने मुझे करने को दिया था, उसे मैंने पूरा किया है।
5 और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।
6 मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया है जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया; वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन को माना है।
7 अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है, वह सब तेरा ही है।
8 क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचाईं, वही मैं ने उन्हें पहुंचा दीं; और उन्होंने उन्हें ग्रहण किया, और सचमुच जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकला हूं, और उन्होंने प्रतीति की है कि तू ही ने मुझे भेजा है।
9 मैं उनके लिये प्रार्थना करता हूं: संसार के लिये नहीं, परन्तु उनके लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है; क्योंकि वे तेरे हैं।
10 और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है; और मैं उन से महिमा पाऊंगा।
11 और अब मैं जगत में न रहूंगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूं। हे पवित्र पिता, जिनको तू ने मुझे दिया है, उनको अपने नाम से सुरक्षित रख कि वे भी हमारी नाईं एक हों।
12 जब मैं जगत में उनके साथ था, तब मैंने तेरे नाम से उनकी रक्षा की: जो तू ने मुझे दिए हैं, उन की मैं ने रक्षा की है; और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ; इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।
13 और अब मैं तेरे पास आता हूं, और ये बातें जगत में कहता हूं, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं।
14 मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।
15 मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।
16 जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।
17 अपने सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।
18 जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा है, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा है।
19 और उनके लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जाएँ।
20 मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे।
21 जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिस से संसार प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।
22 और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि जैसे हम एक हैं, वैसे ही वे भी एक हों।
23 मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उनसे प्रेम रखा।
24 हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहां मैं हूं वहां वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझसे प्रेम रखा।
25 हे धर्मी पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना, और इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा।
26 और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उनमें रहे, और मैं उन में रहूं।

अध्याय 18

1 ये बातें कहकर यीशु अपने चेलों के साथ किद्रोन नाम नाले के पार गया, जहां एक बारी थी; जिस में वह और उसके चेले गए।
2 और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहां बार बार आया करता था।
3 तब यहूदा महायाजकों और फरीसियों की ओर से कुछ प्यादों और प्यादों को लेकर दीपकों, मशालों और हथियारों सहित वहाँ आया।
4 तब यीशु यह जानकर कि उस पर क्या आनेवाला है, बाहर आया और उनसे पूछा; तुम किस को ढूंढ़ते हो?

5 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि यीशु नासरी को: यीशु ने उन से कहा, मैं ही हूं: और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा था।
6 जब उस ने उन से कहा, कि मैं वही हूं, तो वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।
7 तब उस ने फिर उन से पूछा; तुम किस को ढूंढ़ते हो? उन्होंने कहा, यीशु नासरी को।
8 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से कह चुका हूं कि मैं ही हूं; यदि तुम मुझे ढूंढ़ते हो, तो इन्हें जाने दो।
9 ताकि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था, कि जो तू ने मुझे दिए हैं उन में से मैं ने एक भी नहीं खोया।
10 तब शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर उसका दाहिना कान उड़ा दिया। उस दास का नाम मलखुस था।
11 तब यीशु ने पतरस से कहा; अपनी तलवार म्यान में रख ले; जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊं?
12 तब पलटन और सेनापति और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया।
13 और वे उसे पहिले हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह कैफा का ससुर था जो उस वर्ष का महायाजक था।
14 कैफा वही था, जिसने यहूदियों को यह सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य का मरना अच्छा है।
15 और शमौन पतरस और एक और चेला यीशु के पीछे हो लिए; वह चेला महायाजक का जाना पहचाना था, और यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया।
16 परन्तु पतरस द्वार पर बाहर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले आया।
17 तब उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से नहीं है? उस ने कहा, मैं नहीं हूं।
18 और दास और प्यादे ठण्ड के कारण कोयलों की आग जलाकर खड़े हुए ताप रहे थे; और पतरस भी उनके साथ खड़ा होकर ताप रहा था।
19 तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों और उसके उपदेश के विषय में पूछा।
20 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि मैं ने जगत से खुल कर बातें कीं; मैं ने सदा आराधनालय और मन्दिर में जहां यहूदी लोग आया करते हैं उपदेश किया; और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा।
21 तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछ कि मैं ने उन से क्या कहा? देख, वे जानते हैं कि मैं ने क्या कहा।
22 जब उस ने ये बातें कहीं, तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड मारकर कहा; क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?
23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई पर गवाही दे; और यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?
24 और हन्ना ने उसे बन्धे हुए महायाजक कैफा के पास भेज दिया था।
25 तब शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब उन्होंने उस से कहा, क्या तू भी उसके चेलों में से नहीं है? उस ने इन्कार करके कहा, मैं नहीं हूं।
26 महायाजक के सेवकों में से एक, जो उसका कुटुम्बी था और जिसका कान पतरस ने काट डाला था, कहने लगा, क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में नहीं देखा था?
27 तब पतरस ने फिर इन्कार किया, और मुर्ग ने तुरन्त बांग दी।
28 तब वे यीशु को कैफा के पास से न्याय-भवन में ले गए, और भोर का समय था, और वे आप न्याय-भवन में न गए, कि अशुद्ध न हो जाएं, परन्तु फसह का मांस खा सकें।
29 तब पीलातुस ने उनके पास बाहर आकर कहा, तुम इस मनुष्य पर क्या अभियोग लगाते हो?
30 उन्होंने उसको उत्तर दिया, कि यदि वह कुकर्मी न होता, तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।
31 तब पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे ले जाओ, और अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो। तब यहूदियों ने उस से कहा, हमें किसी मनुष्य को प्राणदण्ड देना उचित नहीं।
32 ताकि यीशु का वह वचन पूरा हो जो उस ने यह बताकर कहा था कि उसे कैसी मृत्यु मरनी पड़ेगी।
33 तब पीलातुस फिर न्यायगृह में गया, और यीशु को बुलाकर उस से पूछा; क्या तू यहूदियों का राजा है?
34 यीशु ने उसको उत्तर दिया, क्या यह बात तू अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही?
35 पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूं? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंप दिया है; तू ने क्या किया है?
36 यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता; परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ का नहीं।
37 तब पिलातुस ने उससे पूछा, "तो क्या तू राजा है?" यीशु ने उत्तर दिया, " तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं इसलिये जन्मा और इसलिये जगत में आया हूँ कि सत्य पर गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरी बात सुनता है।"
38 पीलातुस ने उस से पूछा, सत्य क्या है? यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास गया और उन से कहा, मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता।
39 परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह पर तुम्हारे लिये एक को छोड़ दूं। तो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं?
40 तब सब लोग फिर चिल्ला उठे, कि इसे नहीं, बरअब्बा को; बरअब्बा तो डाकू था।

अध्याय 19

1 तब पीलातुस ने यीशु को पकड़कर कोड़े लगवाए।
2 तब सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया।
3 और कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम! और उन्होंने उसे थप्पड़ मारे।
4 तब पीलातुस ने फिर बाहर जाकर उनसे कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं, ताकि तुम जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता।
5 तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर आया, और पिलातुस ने उन से कहा, देखो, यह मनुष्य है!
6 जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर: पिलातुस ने उन से कहा, कि तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता।

7 यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह प्राणदण्ड के योग्य है, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।
8 जब पीलातुस ने ये बातें सुनीं तो और भी डर गया।
9 और फिर न्यायगृह में जाकर यीशु से पूछा, तू कहां का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ उत्तर न दिया।
10 तब पीलातुस ने उस से कहा, क्या तू मुझ से नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता, कि मुझे तुझे क्रूस पर चढ़ाने, और छोड़ देने का भी अधिकार है?
11 यीशु ने उत्तर दिया, यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।
12 तब से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदी चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, कि यदि तू इस को छोड़ देगा तो तू कैसर का मित्र नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है।
13 जब पीलातुस ने ये बातें सुनीं, तो यीशु को बाहर लाया, और उस जगह जो चबूतरा कहलाता है, और इब्रानी में गब्बता, न्याय आसन पर बैठ गया।
14 यह फसह की तैयारी का समय था, और छठे घण्टे के लगभग था, और उस ने यहूदियों से कहा, देखो, तुम्हारा राजा यह है!
15 परन्तु वे चिल्ला उठे, कि ले जा, ले जा, उसे क्रूस पर चढ़ा! पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं? महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।
16 तब उस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये उन के हाथ सौंप दिया: और वे यीशु को पकड़कर ले गए।
17 और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है, और इब्रानी में गुलगुता।
18 और उन्होंने उसे और उसके साथ और दो लोगों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर और बीच में यीशु को।
19 और पिलातुस ने एक पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया, और वह यह था, कि यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।
20 तब बहुत से यहूदियों ने यह शीर्षक पढ़ा, क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, नगर के निकट था और पत्र इब्रानी, यूनानी और लातीनी में लिखा हुआ था।
21 तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा, यहूदियों का राजा मत लिख, परन्तु यह लिख कि उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूं।
22 पीलातुस ने उत्तर दिया, कि जो मैं ने लिख दिया, सो लिख दिया।
23 जब सिपाहियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, तो उसके कपड़े लेकर चार टुकड़े किए, अर्थात हर सिपाही को एक टुकड़ा दिया; और उसका कुरता भी लिया; कुरता ऊपर से नीचे तक बिना सीवन के बुना हुआ था।
24 तब उन्होंने आपस में कहा, "हम इसे न फाड़ें, परन्तु चिट्ठियाँ डालकर जानें कि यह किसका होगा।" इसलिये कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो, कि "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये, और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियाँ डालीं।" इसलिये सिपाहियों ने ये ही काम किए।
25 यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मरियम, जो क्लियोफास की पत्नी थी, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं।
26 जब यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था, पास खड़े देखा, तो अपनी माता से कहा; हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है!
27 तब उस ने चेले से कहा, देख, यह तेरी माता है: और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया।
28 इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो, कहा, मैं प्यासा हूं।
29 वहां सिरके से भरा हुआ एक बर्तन रखा था, तब उन्होंने इस्पंज को सिरके में डुबोया, और जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया।
30 जब यीशु ने सिरका लिया, तो कहा पूरा हुआ, और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।
31 इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की, कि उन की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतार दिए जाएं, ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें (क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था)।
32 तब सिपाहियों ने आकर पहिले की टाँगें तोड़ीं, फिर दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे।
33 परन्तु जब उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं।
34 परन्तु एक सिपाही ने भाला उसकी पंजर में घुसा दिया, और तुरन्त लोहू और पानी निकलने लगा।
35 और जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि वह सच कहता है, इसलिये कि तुम विश्वास करो।
36 ये बातें इसलिये हुईं, कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो, कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।
37 फिर एक और शास्त्र कहता है, कि जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर वे दृष्टि करेंगे।
38 इसके बाद अरिमतियाह के यूसुफ ने जो यीशु का चेला था, परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था, पिलातुस से बिनती की, कि मुझे यीशु की लोथ ले जाने दे: और पिलातुस ने उसे आज्ञा दी, तब वह आकर यीशु की लोथ ले गया।
39 नीकुदेमुस भी, जो पहिले यीशु के पास रात को गया था, लगभग सौ सेर का मिला हुआ गन्धरस और अगरा ले आया।
40 तब उन्होंने यीशु की लोथ को लिया, और यहूदियों की गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्धित द्रव्य के साथ सनी के कपड़े में लपेटा।
41 और जिस स्थान पर वह क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहां एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिसमें कभी कोई मनुष्य न रखा गया था।
42 इसलिये यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्होंने यीशु को वहीं रखा, क्योंकि कब्र निकट थी।

अध्याय 20

1 सप्ताह के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अन्धेरा रहते ही कब्र पर आई, और देखा कि पत्थर कब्र से हटा हुआ है।
2 तब वह दौड़कर शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहने लगी, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं, और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रख दिया है।
3 तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र पर आए।

4 सो वे दोनों साथ साथ दौड़े, पर दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुंचा।
5 तब उस ने झुककर भीतर देखा, और कपड़े पड़े हुए देखे; तौभी वह भीतर न गया।
6 तब शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे आया और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे।
7 और वह अँगोछा जो उसके सिर से बंधा था, कपड़ों के साथ पड़ा न रहा परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ रहा।
8 तब वह दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहिले पहुंचा था, भीतर गया, और देखकर विश्वास किया।
9 क्योंकि वे अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।
10 तब चेले अपने घर चले गए।
11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास बाहर खड़ी रही, और रोते-रोते उसने झुककर कब्र की ओर देखा।
12 और उसने दो स्वर्गदूतों को श्वेत वस्त्र पहिने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहां यीशु की लोथ पड़ी थी।
13 उन्होंने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उसने उन से कहा, इसलिये कि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं, और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है।
14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा, पर न पहचाना कि यह यीशु है।
15 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? किस को ढूंढ़ती है? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे प्रभु, यदि तू उसे यहां से उठा ले गया है, तो मुझे बता कि उसे कहां रखा है, और मैं उसे ले जाऊंगी।
16 यीशु ने उस से कहा, हे मरियम! उस ने मुंह फेरकर उस से कहा, हे रब्बी, अर्थात हे गुरू।
17 यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया; परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर, और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।
18 मरियम मगदलीनी ने आकर चेलों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा है, और उस ने मुझ से ये बातें कहीं।
19 उसी दिन जो सप्ताह का पहिला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले इकट्ठे हुए थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उनसे कहा; तुम्हें शान्ति मिले।
20 यह कहकर उस ने अपने हाथ और अपना पंजर उन्हें दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।
21 तब यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।
22 यह कहकर उस ने उन पर फूंक मारी और उन से कहा; पवित्र आत्मा ग्रहण करो।
23 जिनके पाप तुम क्षमा करोगे, वे उनके लिये क्षमा किये जायेंगे; और जिनके पाप तुम रखोगे, वे रख लिये जायेंगे।
24 परन्तु थोमा जो उन बारहों में से एक था, जो दिदुमुस कहलाता था, जब यीशु आया तो उनके साथ नहीं था।
25 तब अन्य चेलों ने उससे कहा, "हमने प्रभु को देखा है।" उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ, और कीलों के निशानों में अपनी उँगली न डाल लूँ, और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।"
26 आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के अन्दर थे, और थोमा उनके साथ था; और द्वार बन्द थे, तब यीशु आया, और बीच में खड़ा होकर कहा; तुम्हें शान्ति मिले।
27 तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उँगली यहां लाकर मेरे हाथ देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।
28 इस पर थोमा ने उसको उत्तर दिया, कि हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!
29 यीशु ने उस से कहा, हे थोमा, तू ने मुझे देखा है, इसलिये विश्वास किया है; धन्य वे हैं जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया।
30 और यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह अपने चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए।
31 परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

अध्याय 21

1 इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों को फिर दिखाया, और इस रीति से अपने आप को प्रगट किया।
2 वहां शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना से नतनएल और जब्दी के पुत्र और उसके चेलों में से दो और लोग इकट्ठे थे।
3 शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं भी मछली पकड़ने जाता हूं। उन्होंने उस से कहा, हम भी तेरे साथ चलते हैं। वे निकलकर तुरन्त नाव पर चढ़ गए, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।
4 जब भोर हुई तो यीशु किनारे पर खड़ा था; परन्तु चेले न पहचाने कि यह यीशु है।
5 तब यीशु ने उन से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ भोजन है? उन्होंने उत्तर दिया, कि नहीं।
6 तब उसने उनसे कहा, " जहाज़ की दाहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे।" तब उन्होंने जाल डाला, परन्तु अब मछलियाँ बहुत थीं, इसलिए वे उसे खींच न सके।
7 तब उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, "यह प्रभु है।" जब शमौन पतरस ने सुना कि यह प्रभु है, तो उसने (क्योंकि वह नंगा था) अपनी अंगरखी बाँधी, और झील में कूद पड़ा।
8 और बाकी चेले एक छोटी नाव पर मछलियाँ से भरा जाल खींचते हुए आए (क्योंकि वे किनारे से ज्यादा दूर नहीं थे, कोई दो सौ हाथ की दूरी पर थे)।
9 जब वे किनारे पर पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ कोयलों की आग और उस पर रखी मछलियाँ और रोटी देखी।
10 यीशु ने उन से कहा; जो मछलियां तुम ने पकड़ी हैं, उन में से कुछ ले आओ।
11 शमौन पतरस ने ऊपर जाकर एक सौ तिरपन बड़ी मछिलयों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और मछिलयों की संख्या इतनी अधिक होने पर भी जाल नहीं टूटा।
12 यीशु ने उन से कहा, आओ, भोजन करो: और चेलों में से किसी को यह पूछने का साहस न हुआ, कि तू कौन है? क्योंकि वह जानता था, कि यह प्रभु है।
13 तब यीशु ने आकर रोटी ली, और उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी दी।

14 यह तीसरी बार है जब यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद अपने आप को अपने चेलों को दिखाया।
15 जब वे भोजन कर चुके, तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, " हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? " उस ने उस से कहा, "हाँ, हे प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ।" उस ने उस से कहा, " मेरी भेड़ों को चरा।"
16 उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उस से कहा, हां, हे प्रभु; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम रखता हूं। उस ने उस से कहा, मेरी भेड़ों को चरा।
17 उसने तीसरी बार उससे कहा, " हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" पतरस उदास हुआ क्योंकि उसने उससे तीसरी बार पूछा, "क्या तू मुझ से प्रेम रखता है?" उसने उससे कहा, "हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम रखता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, " मेरी भेड़ों को चरा।"
18 मैं तुझ से सच-सच कहता हूं, जब तू जवान था, तो तू कमर बान्धकर जहां चाहता था वहां चलता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ फैलाएगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहां तू नहीं चाहता था वहां तुझे ले जाएगा।
19 यह उस ने यह प्रगट करके कहा, कि कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा होगी: और यह कहकर उस ने उस से कहा, मेरे पीछे हो ले।
20 तब पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा जिस से यीशु प्रेम रखता था, और भोजन के समय उस की छाती की ओर झुककर पूछा; हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है?
21 पतरस ने उसे देखकर यीशु से कहा, हे प्रभु, यह मनुष्य क्या करेगा?
22 यीशु ने उस से कहा; यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे आ जा।
23 तब भाइयों में यह बात फैल गई, कि वह चेला न मरेगा; तौभी यीशु ने उस से यह न कहा, कि वह न मरेगा; परन्तु यह कि यदि मैं चाहूं कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?
24 यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने ये बातें लिखी हैं: और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।
25 और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाएं, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं। आमीन।

प्रेरितों के कार्य

अध्याय 1

1 हे थियुफिलुस, मैं ने पहिले ग्रन्थ में उन सब बातों का वर्णन किया है, जो यीशु ने आरम्भ में कीं और सिखाईं।
2 उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठा लिया न गया।
3 और उस ने दुख उठाने के बाद अपने आप को बहुत से पक्के प्रमाणों से उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।
4 और उन से इकट्ठे होकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।
5 क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, पर तुम्हें थोड़े दिनों के बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जाएगा।
6 सो जब वे इकट्ठे हुए, तो उस से पूछा, कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?
7 उस ने उन से कहा; समयों या कालों को जानना तुम्हारा काम नहीं, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है।
8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तो तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।
9 जब वह ये बातें कह चुका, तो वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।
10 जब वह ऊपर जा रहा था, तब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए।
11 और वे यह भी कहते थे; हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।
12 तब वे जैतून नाम पहाड़ से, जो यरूशलेम से एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।
13 जब वे भीतर पहुंचे, तो उस अटारी पर गए, जहां पतरस और याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और थोमा और बरतुल्मै और मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब और शमौन जेलोतेस और याकूब का भाई यहूदा रहते थे।
14 ये सब अन्य स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना और बिनती में लगे रहे।
15 उन दिनों में पतरस ने चेलों के बीच में खड़ा होकर (जिनकी गिनती एक सौ बीस के लगभग थी) कहा।
16 हे भाईयों, अवश्य है कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुआ था, पहिले से कहा था।
17 क्योंकि वह हम में गिना गया, और इस सेवकाई का भागी हुआ।
18 उस मनुष्य ने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया था; और वह सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अन्तड़ियाँ निकल पड़ीं।
19 और यह बात यरूशलेम के सब रहनेवालों को मालूम हो गई, यहां तक कि उस खेत का नाम उनकी अपनी भाषा में हकलदामा अर्थात लोहू का खेत पड़ने लगा।
20 क्योंकि भजन संहिता में लिखा है, कि उसका घर उजड़ जाए, और उस में कोई न बसे; और उसका पद कोई दूसरा ले ले।
21 इसलिये ये लोग जो उस समय हर समय हमारे साथ रहे जब प्रभु यीशु हमारे बीच में आता जाता था।
22 अवश्य है कि एक मनुष्य हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उस दिन तक जब वह हमारे बीच से उठा लिया गया।
23 और उन्होंने दो लोगों को नियुक्त किया, एक यूसुफ़ को जो बरसबास कहलाता था, जो युस्तुस भी कहलाता था, दूसरा मत्तियाह को।
24 और उन्होंने यह प्रार्थना की, कि हे प्रभु, हे सब के मन जानने वाले, यह बता कि इन दोनों में से तू ने किस को चुना है?
25 कि वह उस सेवा और प्रेरिताई का पद ले ले, जिस से यहूदा अपराध करके गिर पड़ा, और अपने स्थान को जाए।
26 तब उन्होंने अपने अपने नाम पर चिट्ठी डाली, और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली, और वह ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

अध्याय दो

1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 और एकाएक आकाश से बड़ी आँधी जैसी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया।
3 और उन्हें आग की सी फटी हुई जीभें दिखाई दीं, और वे उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।
4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।
5 और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी लोग यरूशलेम में रहते थे।
6 जब यह बात फैली, तो लोग इकट्ठे हुए और घबरा गए, क्योंकि हर एक मनुष्य को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।
7 और वे सब चकित और अचम्भित होकर एक दूसरे से कहने लगे; देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं हैं?
8 फिर हम में से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा क्योंकर सुनता है?
9 पारथी, मेदी, एलामी, मेसोपोटामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुन्तुस, आसिया,
10 और फ्रूगिया और पंफूलिया और मिस्र और लीबिया के कुरेने के आस पास के देशों में रहनेवाले और रोम से आए हुए परदेशी, क्या यहूदी और क्या यहूदी मत धारण करनेवाले,
11 हम अपनी-अपनी भाषा में क्रेती और अरब के लोगों से परमेश्वर के अद्‌भुत कामों की चर्चा सुनते हैं।
12 और सब लोग चकित हुए, और दुविधा में पड़कर एक दूसरे से कहने लगे, यह क्या हुआ है?
13 औरों ने ठट्ठा करके कहा, ये लोग तो नये मदिरा के नशे में हैं।
14 परन्तु पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ, और ऊंचे शब्द से उन से कहा; हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह बात तुम जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।
15 क्योंकि ये लोग नशे में नहीं हैं, जैसा तुम समझ रहे हो, क्योंकि अभी तो दिन का तीसरा पहर ही चढ़ा है।

16 परन्तु यह वही बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी;
17 और परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब प्राणियों पर उंडेलूंगा; और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।
18 और मैं अपने दासों और दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।
19 और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह दिखाऊंगा, अर्थात लोहू, आग और धूएं का बादल।
20 प्रभु के उस महान और उल्लेखनीय दिन के आने से पहले सूर्य अंधकार में बदल जाएगा और चंद्रमा रक्त में बदल जाएगा:
21 और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।
22 हे इस्त्राएलियों, ये बातें सुनो, कि यीशु नासरी एक मनुष्य है, जिसका परमेश्वर की ओर से प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्यकर्मों और चिह्नों से है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच में उसके द्वारा कर दिखलाए, जिसे तुम आप ही जानते हो।
23 उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने उसे ले लिया, और दुष्टों के हाथों से क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला।
24 उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया, क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।
25 क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं प्रभु को सदैव अपने साम्हने देखता रहा, इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, कि मैं डगमगा न जाऊं।
26 इसलिये मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; बरन मेरा शरीर भी आशा में विश्राम करेगा।
27 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।
28 तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू अपने दर्शन से मुझे आनन्द से भरपूर कर देगा।
29 हे भाइयो, मैं तुम से कुलपति दाऊद के विषय में निडर होकर कह सकता हूं, कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया, और उसकी कब्र आज तक हमारे यहां वर्तमान है।
30 इसलिये मैं भविष्यद्वक्ता होकर यह जानता हूं, कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है, कि मैं तेरे वंश में से, अर्थात् शरीर के अनुसार, एक को उठाकर तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा।
31 उसने यह पहिले से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यवाणी की थी, कि न उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा जाएगा, और न उसका शरीर सड़ने पाएगा।
32 इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं।
33 इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा को प्राप्त करके, उस ने यह उंडेल दिया है, जिसे तुम देखते और सुनते हो।
34 क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, कि यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा; तू मेरे दाहिने बैठ।
35 जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न कर दूं।
36 इसलिये इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।
37 यह सुनकर उनके मन में चुभन हुई, और वे पतरस और बाकी प्रेरितों से पूछने लगे; हे भाइयो, हम क्या करें?
38 तब पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।
39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिन को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।
40 और बहुत सी और बातों में भी उस ने गवाही देकर समझाया, कि अपने आप को इस दुष्ट जाति से बचाओ।
41 और जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।
42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा दिखाए गए।
44 और सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और उन्होंने अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर, हर एक की आवश्यकता के अनुसार बांट दिया।
46 और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।
47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उन से प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।

अध्याय 3

1 जब तीसरा पहर प्रार्थना के समय था, तब पतरस और यूहन्ना दोनों साथ-साथ मन्दिर में गए।
2 और लोग एक ऐसे मनुष्य को ला रहे थे, जो जन्म से लंगड़ा था, और उसे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख मांगे।
3 जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से दान मांगा।
4 तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर देखकर कहा, हम पर दृष्टि कर।
5 और वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन पर ध्यान देता था।
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं। यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 तब उस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पांवों और टखनों की हड्डियों में बल आ गया।
8 तब वह उछलकर खड़ा हुआ, और चलने लगा, और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।
9 और सब लोगों ने उसे चलते और परमेश्वर की स्तुति करते देखा।
10 और उन्होंने जान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के सुन्दर द्वार पर बैठकर भीख मांगा करता था; और जो कुछ उसके साथ हुआ था, उससे वे अचम्भा और चकित हुए।

11 जब वह लंगड़ा, जो अच्छा हो गया था, पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्भा करते हुए, उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उन के पास दौड़े आए।
12 यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा; हे इस्राएलियो, तुम इस बात पर क्यों अचम्भा करते हो? और हमारी ओर क्यों ऐसे ताक रहे हो, मानो कि हमने ही अपनी सामर्थ्य या पवित्रता से इस मनुष्य को चलने फिरने योग्य बनाया है?
13 इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, अर्थात् हमारे बापदादों के परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को महिमा दी है, जिसे तुम ने पकड़वा दिया और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का निश्चय किया, तो तुम ने उसके साम्हने उसका इन्कार किया।
14 परन्तु तुम ने पवित्र और धर्मी को इन्कार किया, और मांगा कि एक हत्यारा तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाये।
15 और जीवन के राजकुमार को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, जिसके हम गवाह हैं।
16 और उसके नाम पर विश्वास करने से उस मनुष्य को बल मिला है जिसे तुम देखते और जानते हो: हां, उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, तुम सब के साम्हने उसे पूर्ण भला चंगा कर दिया है।
17 और अब, हे भाईयों, मैं जानता हूं कि तुम ने यह काम अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी किया।
18 परन्तु जो बातें परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहिले ही बताई थीं, कि मसीह दुख उठाएगा, वे ही उसने पूरी की हैं।
19 इसलिये तुम मन फिराओ और लौट आओ कि जब प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं, तब तुम्हारे पाप मिटाए जाएं।
20 और वह यीशु मसीह को भेजेगा, जिस का प्रचार पहले से तुम में किया गया था।
21 अवश्य है कि वह स्वर्ग में तब तक रहे जब तक कि सब कुछ ठीक न हो जाए, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने जगत के आरम्भ से अपने सब पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है।
22 क्योंकि मूसा ने पूर्वजों से सच कहा था, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक नबी उठाएगा; जो कुछ वह तुम से कहे, तुम उसकी सुनना।
23 और ऐसा होगा कि जो कोई उस भविष्यद्वक्ता की बात न सुनेगा, वह लोगों के बीच में से नाश कर दिया जाएगा।
24 हां, शमूएल से लेकर उसके बाद के जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बातें की हैं, उन सब ने भी इन दिनों के विषय में भविष्यद्वाणी की है।
25 तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान हो, और उस वाचा का भागी हो, जो परमेश्वर ने हमारे बापदादों से बान्धी थी; जब उसने अब्राहम से कहा था, कि तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे।
26 परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जिलाकर पहिले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसके अधर्म से फेरकर आशीष दे।

अध्याय 4

1 जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।
2 वे इस बात से दुखी हुए कि वे लोगों को सिखाते और यीशु के द्वारा मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे।
3 तब उन्होंने उन पर हाथ डालकर उन्हें दूसरे दिन तक बन्दीगृह में डाल दिया, क्योंकि अब सन्ध्या हो चुकी थी।
4 तौभी वचन सुननेवालों में से बहुतेरों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती लगभग पांच हजार पुरूषों की हो गई।
5 दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार, पुरनिये और शास्त्री,
6 और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के कुटुम्ब के थे, वे सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए।
7 और उन्हें बीच में खड़ा करके पूछा, तुम ने यह काम किस सामर्थ से या किस नाम से किया है?
8 तब पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहने लगा; हे प्रजा के सरदारो और इस्राएल के पुरनियो!
9 यदि आज उस भले काम के विषय में जो उस बलहीन मनुष्य के साथ किया गया था, हम से पूछा जाए, कि वह किस रीति से अच्छा हुआ;
10 तुम सब को और सारे इस्राएलियों को मालूम हो कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे साम्हने भला चंगा खड़ा है।
11 यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना था, और जो कोने का पत्थर हो गया है।
12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।
13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और मूर्ख मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; और उन्हें पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।
14 और उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उन के साथ खड़ा देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके।
15 परन्तु जब उन्होंने उन्हें सभा से बाहर जाने की आज्ञा दी, तो वे आपस में विचार करने लगे।
16 कि हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है कि इन ने एक उल्लेखनीय चिन्ह दिखाया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते।
17 परन्तु इसलिये कि यह बात लोगों में और अधिक न फैल जाए, हम उन्हें कड़ी चेतावनी दें, कि वे आगे को इस नाम से किसी मनुष्य से बात न करें।
18 और उन्होंने उन्हें बुलाकर आज्ञा दी, कि यीशु के नाम से कुछ भी न बोलें और न सिखाएँ।
19 परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, कि तुम ही न्याय करो, क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से अधिक तुम्हारी बात मानें?
20 क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें।
21 तब उन्होंने उन्हें और धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई उपाय न मिला; इसलिये कि जो कुछ हुआ था उसके कारण सब लोग परमेश्वर की महिमा करते थे।
22 क्योंकि जिस मनुष्य पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था, उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी।
23 तब वे छूटकर अपने साथियों के पास गए, और जो कुछ प्रधान याजकों और पुरनियों ने उन से कहा था, उन्हें कह सुनाया।

24 जब उन्होंने यह सुना, तो एक मन होकर ऊंचे शब्द से परमेश्वर से कहा, हे प्रभु, तू ही परमेश्वर है, जिस ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है बनाया।
25 तू ने अपने दास दाऊद के मुख से कहा है, कि अन्यजातियां क्यों बलवा करती हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोचते हैं?
26 प्रभु और उसके मसीह के विरुद्ध पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम इकट्ठे हुए।
27 क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र पुत्र यीशु के विरोध में, जिसे तू ने अभिषेक किया है, हेरोदेस और पुन्तियुस पीलातुस अन्यजातियों और इस्राएलियों के साथ इकट्ठे हुए।
28 क्योंकि जो कुछ तेरे हाथ और युक्ति ने पहिले से ठाना था वही हम करेंगे।
29 अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे कि वे तेरा वचन पूरे हियाव से सुनाएं।
30 और चंगा करने के लिये अपना हाथ बढ़ा; और चिन्ह और अद्‌भुत काम तेरे पवित्र पुत्र यीशु के नाम से किए जाएं।
31 जब उन्होंने प्रार्थना की, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे हुए थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाने लगे।
32 और विश्वास करने वालों की भीड़ एक मन और एक मन के थे, और उनमें से कोई भी अपनी संपत्ति में से कुछ भी अपना नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।
33 और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे, और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।
34 और उन में कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उसे बेचकर, बेची हुई वस्तुओं का दाम लाते थे।
35 और उन्हें प्रेरितों के पांवों के पास रख दिया, और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार बांट दिया गया।
36 और योसेस नाम, जो प्रेरितों ने बरनबास अर्थात् सांत्वना का पुत्र रखा था, कुप्रुस देश का एक लेवी था।
37 जो कुछ उसके पास था, उसे बेच दिया, और दाम लाकर प्रेरितों के पांवों पर रख दिए।

अध्याय 5

1 परन्तु हनन्याह नाम एक मनुष्य ने, अपनी पत्नी सप्पिरा समेत, कुछ भूमि बेची।
2 और उस ने दाम में से कुछ रख लिया, और यह बात उस की पत्नी भी जानती थी; और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पावों के आगे रख दिया।
3 परन्तु पतरस ने कहा; हे हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?
4 जब तक वह तुम्हारे पास रहा, क्या वह तुम्हारा न था? और जब बेच दिया गया, क्या वह तुम्हारे हाथ में न था? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू ने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।
5 जब हनन्याह ने ये बातें सुनीं, तो वह गिर पड़ा, और उसके प्राण निकल गए; और ये बातें सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।
6 तब जवानों ने उठकर उसे लपेटा, और बाहर ले जाकर दफ़ना दिया।
7 लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था, न जानते हुए, अन्दर आई।
8 पतरस ने उस से कहा, मुझे बता, क्या तुम ने भूमि इतने ही दाम में बेची थी? उसने कहा, हां, इतने ही दाम में।
9 तब पतरस ने उस से कहा; तुम ने प्रभु की आत्मा को परखने के लिये आपस में क्यों एकता की है? देख, तेरे पति के गाड़ने वाले द्वार पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएंगे।
10 तब वह तुरन्त उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण त्याग दिए; और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा हुआ पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया।
11 और सारी कलीसिया पर और ये बातें सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।
12 और प्रेरितों के हाथों से बहुत से चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे; और वे सब एक मन होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे होते थे।
13 और बाकी लोगों में से किसी को यह साहस न हुआ कि वह उन में जा मिले, परन्तु लोग उन्हें बड़ा मानते थे।
14 और विश्वासी पुरूष और स्त्रियां बहुत बढ़ कर प्रभु की सेवा में आते गए।)
15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर खाटों और खाटों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
16 और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर, यहां आते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।
17 तब महायाजक और उसके साथ के सब लोग (जो सदूकियों के पंथ के थे) क्रोध से भरकर उठे।
18 और प्रेरितों पर हाथ रखे, और उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया।
19 परन्तु रात को प्रभु के दूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा,
20 जाओ, मन्दिर में खड़े होकर लोगों को इस जीवन की सारी बातें सुनाओ।
21 जब उन्होंने यह सुना, तो वे भोर को तड़के मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगे। परन्तु महायाजक और उसके साथी आए, और महासभा और इस्राएलियों की सारी मण्डली को बुलाकर बन्दीगृह में भेज दिया, कि उन्हें पकड़वा दें।
22 परन्तु जब प्यादों ने आकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, तो लौटकर समाचार दिया।
23 कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी चौकसी से बन्द पाया, और पहरेदारों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला।
24 जब महायाजक और मन्दिर के सरदार और महायाजकों ने ये बातें सुनीं, तो उनके मन में संदेह हुआ कि यह बात क्यों बढ़ गई?
25 तब किसी ने आकर उन्हें समाचार दिया, कि देखो, जिन मनुष्यों को तुम ने बन्दीगृह में डाला था, वे मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं।
26 तब सरदार प्यादों के साथ गया, और उन्हें बिना बल प्रयोग किए ले आया; क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि कहीं हम पर पथराव न हो जाए।
27 और उन्हें लाकर महासभा के साम्हने खड़ा कर दिया, और महायाजक ने उन से पूछा।
28 क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को अपने

उपदेश से भर दिया है और उस मनुष्य का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।
29 तब पतरस और अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।
30 हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटका कर मार डाला था।
31 उसी को परमेश्वर ने अपने दाहिने हाथ से प्रधान और उद्धारकर्ता ठहराकर सर्वोच्च किया, कि इस्राएल को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे।
32 और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।
33 जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए और उन्हें मार डालने की योजना बनाने लगे।
34 तब गमलिएल नाम एक फरीसी जो सब लोगों में प्रतिष्ठित और व्यवस्थापक था, महासभा में खड़ा हुआ, और प्रेरितों को थोड़ी जगह बाहर रखने की आज्ञा दी।
35 और उन से कहा, हे इस्राएलियो, इन मनुष्यों के विषय में जो कुछ करना चाहते हो, सोच समझकर करो।
36 क्योंकि इन दिनों से पहले थ्यूदास नाम का एक व्यक्ति उठा, जो अपने आप को महान् कहता था; और लगभग चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिये; परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसकी आज्ञा मानते थे, वे सब तितर-बितर हो गए और नाश हो गए।
37 उसके बाद कर-निर्धारण के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और बहुत से लोगों को अपनी ओर कर लिया: वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसकी आज्ञा मानते थे, सब तितर-बितर हो गए।
38 इसलिये अब मैं तुम से कहता हूं, कि इन मनुष्यों से दूर रहो और इन से कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह युक्ति या काम मनुष्यों की ओर से हो, तो व्यर्य हो जाएगा।
39 परन्तु यदि वह परमेश्वर की ओर से हो, तो तुम उसे कदापि न मिटा सकोगे; कहीं ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।
40 तब उन्होंने उसकी बात मान ली, और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया, और आज्ञा दी, कि यीशु के नाम से बातें न करना; और उन्हें जाने दिया।
41 और वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये अपमान सहने के योग्य तो ठहरे।
42 और वे प्रति दिन मन्दिर में और घर घर में उपदेश करने, और यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने से न रुके।

अध्याय 6

1 उन दिनों में जब चेलों की गिनती बढ़ती गई, तो यूनानी लोग इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रति दिन की सेवा में उनकी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।
2 तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह उचित नहीं, कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें।
3 इसलिये हे भाईयों, अपने में से सात सुनाम पुरूषों को चुन लो, जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।
4 परन्तु हम प्रार्थना में और वचन की सेवा में निरन्तर लगे रहेंगे।
5 यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नाम एक मनुष्य को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलेप्पुस और प्रखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी हो गया था, चुन लिया।
6 और उन्होंने उन्हें प्रेरितों के साम्हने खड़ा किया, और जब वे प्रार्थना कर चुके, तो उन्होंने उन पर हाथ रखे।
7 और परमेश्वर का वचन फैलता गया, और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई, और याजकों का एक बड़ा समाज विश्वास के अधीन हो गया।
8 और स्तिफनुस विश्वास और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों के बीच बड़े बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाने लगा।
9 तब उस आराधनालय में से जो लिबर्तिनों की कहलाती है, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और आसिया के कई एक लोग उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे।
10 और वे उस बुद्धि और आत्मा का साम्हना न कर सके, जिस से वह बातें करता था।
11 तब उन्होंने कई लोगों को उकसाया, जो कहने लगे, कि हम ने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है।
12 तब उन्होंने लोगों और पुरनियों और शास्त्रियों को भड़काया, और उस पर चढ़ आए, और उसे पकड़कर महासभा में ले आए।
13 और झूठे गवाह खड़े करके कहने लगे, कि यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बातें करना नहीं छोड़ता।
14 क्योंकि हम ने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।
15 और सभा में बैठे सब लोगों ने उसकी ओर ताककर उसका मुखड़ा ऐसा देखा, मानो स्वर्गदूत का सा।

अध्याय 7

1 तब महायाजक ने कहा, क्या ये बातें सच हैं?
2 फिर उसने कहा; हे भाइयो, और पितरो, सुनो; महिमा का परमेश्वर हमारे पिता इब्राहीम को दर्शन दिया, जब वह हारान में बसने से पहिले मेसोपोटामिया में था।
3 और उस से कहा, अपने देश और अपनी जन्मभूमि से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा।
4 तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में रहने लगा; और जब उसका पिता मर गया, तब वह उसे वहां से इस देश में ले आया, जिस में अब तुम रहते हो।
5 और उसने उसे उस देश में कुछ मीरास नहीं दी, यहां तक कि वह उस पर पैर रखने भर की भी जगह नहीं दी; तौभी उसने यह वचन दिया था कि मैं उसे तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के अधिकार में कर दूंगा, यद्यपि उस समय तक उसके कोई सन्तान नहीं थी।
6 और परमेश्वर ने यों कहा था, कि मेरी सन्तान अन्य देश में परदेशी होकर रहेगी, और वे उन्हें दास बना लेंगे, और चार सौ वर्ष तक उन से बुरा बर्ताव करेंगे।
7 और परमेश्वर ने कहा, जिस जाति के वे दास होंगे, उसको मैं दण्ड दूंगा; और उसके बाद वे निकलकर इसी स्थान में मेरी सेवा करेंगे।
8 और उस ने उस से खतने की वाचा बान्धी; और इस रीति से अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ, और आठवें दिन उसका खतना

किया गया; और इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए।
9 और कुलपतियों ने ईर्ष्या से भरकर यूसुफ को मिस्र जानेवालों के हाथ बेच दिया; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था।
10 और उसको उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिस्र के राजा फिरौन के साम्हने अनुग्रह और बुद्धि दी; और उसने उसे मिस्र और अपने सारे घराने पर हाकिम ठहराया।
11 और मिस्र और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा, और बड़ा क्लेश हुआ, और हमारे बापदादों को कुछ भोजन नहीं मिलता था।
12 परन्तु जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है, तो उसने हमारे पूर्वजों को पहिले भेजा।
13 फिर दूसरी बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रगट हुआ; और यूसुफ का कुटुम्ब फिरौन को प्रगट हुआ।
14 तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पच्चीस व्यक्ति थे, बुला भेजा।
15 तब याकूब मिस्र में गया, और वह और हमारे पूर्वज मर गए।
16 और वे शेकेम में पहुंचाए गए, और उस कब्र में रखे गए, जिसे इब्राहीम ने शेकेम के पिता हम्मोर की सन्तान से चान्दी देकर खरीदा था।
17 परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम से शपथ खाकर कहा था, तो मिस्र में लोग बढ़कर बहुत हो गए।
18 तब तक दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था।
19 उसने हमारे भाइयों से छल किया, और हमारे पिताओं से यहां तक बुरी बात की, कि उन्होंने अपने बालकों को निकाल दिया कि वे जीवित न रहें।
20 उस समय मूसा उत्पन्न हुआ, और अत्यन्त सुन्दर हुआ, और अपने पिता के घर में तीन महीने तक पाला गया।
21 जब वह फेंक दिया गया, तब फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके उसका पालन-पोषण किया।
22 मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या आती थी, और वह वचनों और कामों में सामर्थी था।
23 जब वह पूरे चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करने की इच्छा हुई।
24 और उसने उन में से एक पर अन्याय होते देखकर उसे बचाया, और सताए हुए का पलटा लिया, और मिस्री को मार डाला।
25 क्योंकि उसने सोचा था कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उन्हें बचाएगा, परन्तु उन्होंने नहीं समझा।
26 दूसरे दिन वह उन से झगड़ते हुए उनके सामने आया, और उन्हें फिर एक करने को कहा; हे सज्जनो, तुम तो भाई भाई हो; तुम एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?
27 परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उस ने उसे यह कहकर हटा दिया, कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है?
28 क्या तू मुझे भी मार डालना चाहता है, जैसा तू ने कल मिस्री को किया था?
29 यह बात सुनकर मूसा भाग गया, और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा; और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए।
30 जब चालीस वर्ष पूरे हो गए, तो प्रभु का एक दूत सीनै पहाड़ के जंगल में झाड़ी की ज्वाला में उसे दिखाई दिया।
31 जब मूसा ने यह देखा, तो वह उस दृश्य से अचम्भा करने लगा; और जब वह उसे देखने के लिये निकट गया, तो यहोवा की वाणी उसके पास आई,
32 और कहने लगा, कि मैं तेरे पूर्वजों का परमेश्वर, अर्थात् इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा कांप उठा, यहां तक कि उसे देखने का साहस न हुआ।
33 तब प्रभु ने उससे कहा, अपने पांवों से जूते उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।
34 मैं ने अपनी प्रजा के मिस्र में पड़े हुए दु:ख को देखा है, और उनका कराहना भी सुना है, और उन्हें छुड़ाने के लिये उतरा हूं। इसलिये अब आ, मैं तुझे मिस्र में भेजता हूं।
35 उसी मूसा को, जिसे उन्होंने यह कह कर अस्वीकार किया था कि तुझे किस ने हाकिम और न्यायी ठहराया है? उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहरा कर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिस ने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा।
36 जब वह मिस्र देश और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखा चुका, तब उसने उन्हें बाहर निकाला।
37 यह वही मूसा है, जिसने इस्राएलियों से कहा था, कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा; तुम उसकी सुनना।
38 यह वही है, जो जंगल में कलीसिया में उस स्वर्गदूत के साथ था, जिस ने सीनै पहाड़ पर उससे बातें की थीं, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए।
39 हमारे पूर्वजों ने उसकी बात न मानी, वरन् उसे अपने से दूर कर दिया, और अपने मन में मिस्र की ओर फिर गए।
40 और हारून से कहा, हमारे लिये देवता बना जो हमारे आगे आगे चलें; क्योंकि उस मूसा को जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया है, हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ।
41 उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाया, और उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाई, और अपने हाथों के कामों से आनन्दित हुए।
42 तब परमेश्वर ने मुंह फेरकर उन्हें छोड़ दिया, कि वे आकाश की सेना को दण्डवत् करें; जैसा भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है, कि हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और बलि मुझ ही को चढ़ाते रहे?
43 हां, तुमने मोलोक के तम्बू और अपने देवता रेम्फान के तारे को लिया, जिन्हें तुमने उनकी पूजा करने के लिए बनाया था: और मैं तुम्हें बाबुल से परे ले जाऊंगा।
44 हमारे बापदादों के पास जंगल में साक्षी का तम्बू था, जैसा उसने मूसा से कहा था, कि जो कुछ तू ने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।
45 और हमारे बापदादे भी यीशु के साथ उन अन्यजातियों के अधिकार में ले आए जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बापदादों के साम्हने से निकाल दिया था, और यह बात दाऊद के दिनों तक रही।
46 परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया, और उस ने याकूब के परमेश्वर के लिये एक तम्बू बनाने की बिनती की।
47 लेकिन सुलैमान ने उसके लिए एक घर बनाया।
48 परन्तु परमप्रधान हाथ के बनाए मन्दिरों में नहीं रहता, जैसा भविष्यद्वक्ता ने कहा है।

49 स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है; यहोवा कहता है, तुम मेरे लिये कौन सा भवन बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा?
50 क्या ये सब वस्तुएं मेरे ही हाथ की बनाई हुई नहीं हैं?
51 हे हठीले और मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो; जैसे तुम्हारे पूर्वज करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।
52 भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया? वरन उन को भी घात किया, जो उस धर्मी के आने का पहिले से समाचार देते थे, और अब तुम उसी के पकड़वाने वाले और मारने वाले हुए।
53 तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा व्यवस्था तो प्राप्त की, पर उसका पालन नहीं किया।
54 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो वे जल उठे, और उस पर दांत पीसने लगे।
55 परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ खड़ा हुआ देखा।
56 और कहा, देख, मैं स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।
57 तब उन्होंने ऊंचे शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिये, और एक चित्त होकर उस पर दौड़े।
58 और उसे नगर के बाहर निकालकर पत्थरवाह किया; और गवाहों ने शाऊल नाम एक जवान के पांवों के पास अपने कपड़े उतारकर रख दिए।
59 और उन्होंने स्तिफनुस को पत्थरवाह किया; और वे परमेश्वर को पुकारकर कहते रहे, कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।
60 तब वह घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, कि हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा: और यह कहकर सो गया।

अध्याय 8

1 और शाऊल ने उसके प्राण लेने में सहमति जताई। और उस समय यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा, और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया में तितर-बितर हो गए।
2 तब भक्त लोग स्तिफनुस को दफनाने के लिये ले गए, और उसके लिये बड़ा विलाप किया।
3 और शाऊल ने कलीसिया में उत्पात मचाया, और घर घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को खींच खींचकर बन्दीगृह में डाल दिया।
4 इसलिये जो लोग तित्तर बित्तर हुए थे, वे सब जगह वचन का प्रचार करते फिरे।
5 तब फिलिप्पुस सामरिया नगर में गया, और लोगों को मसीह का सुसमाचार सुनाया।
6 और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन पर लोगों ने एक चित्त होकर मन लगाया, क्योंकि वे उसके किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखते और सुनते थे।
7 क्योंकि अशुद्ध आत्माएं बहुतों में से जो उन से ग्रसित थीं, बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से झोले के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।
8 और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ।
9 परन्तु उस नगर में शमौन नाम एक मनुष्य था, जो पहले तो टोना करके सामरिया के लोगों को अपने वश में करता था और अपने को कोई बड़ा पुरुष बताता था।
10 छोटे से लेकर बड़े तक सब लोग उसे मानकर कहते थे, कि यह मनुष्य परमेश्वर की महान शक्ति है।
11 और वे उस पर आदर करते थे, क्योंकि उस ने बहुत समय से उन्हें जादू टोने से मोहग्रस्त किया था।
12 परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का प्रचार करता था, तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे।
13 तब शमौन ने भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और जो चिन्ह और सामर्थ के काम होते थे, उन्हें देखकर अचम्भा करता था।
14 जब यरूशलेम के प्रेरितों ने सुना कि सामरिया ने परमेश्वर का वचन स्वीकार कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 और उन्होंने वहां आकर उन के लिये प्रार्थना की, कि पवित्र आत्मा पाएं।
16 (क्योंकि वह अब तक उन में से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था।)
17 तब उन्होंने उन पर हाथ रखे, और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया।
18 जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उसने उनके पास रुपये लाकर कहा।
19 कि यह अधिकार मुझे भी दे, कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।
20 परन्तु पतरस ने उस से कहा; तेरा धन तेरे साथ नाश हो; क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से खरीदने की बात समझी।
21 इस बात में न तो तेरा कोई हिस्सा है, न हिस्सा; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के साम्हने सीधा नहीं है।
22 इसलिये अपनी इस बुराई से मन फिरा और परमेश्वर से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए।
23 क्योंकि मैं ने देखा कि तू पित्त और कड़वाहट में और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।
24 तब शमौन ने उत्तर दिया, कि मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो, कि ये बातें जो तुम ने कही हैं, मुझ पर कोई न आ पड़े।
25 और वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर यरूशलेम को लौट आए, और सामरियों के बहुत से गांवों में सुसमाचार प्रचार किया।
26 फिर प्रभु के स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जा को जाता है, जो जंगल है।
27 तब वह उठकर चला गया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आया था, जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का बड़ा अधिकारी था, और उसके सारे खजांची का अधिकारी था, और भजन करने के लिये यरूशलेम में आया था।
28 वह अपने रथ पर बैठा हुआ, यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौट रहा था।
29 तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।
30 तब फिलिप्पुस उसके पास दौड़ा, और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना; और कहा; क्या तू जो पढ़ रहा है उसे समझता भी है?

31 उस ने कहा, जब तक कोई मुझे न समझाए, मैं कैसे समझ सकता हूं? तब उस ने फिलेप्पुस से बिनती की, कि मेरे पास चढ़कर बैठ।
32 जो पवित्र शास्त्र उसने पढ़ा, उसका स्थान यह था, कि वह भेड़ की नाईं वध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवाले के साम्हने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने अपना मुंह न खोला।
33 उसकी दीनता में उसका न्याय छीन लिया गया; और उसके वंश का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि उसका प्राण पृथ्वी पर से उठा लिया गया है।
34 इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, मैं तुझ से पूछता हूं, भविष्यद्वक्ता यह किस विषय में कहता है? अपने या किसी दूसरे के विषय में?
35 तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और उसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।
36 और मार्ग में चलते चलते वे एक जल के पास पहुंचे, तब खोजे ने कहा; देख, यहां जल है; अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?
37 फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सम्पूर्ण मन से विश्वास करता है, तो कर सकता है: उस ने उत्तर दिया, कि मैं विश्वास करता हूं, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।
38 तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलेप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया।
39 जब वे जल से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।
40 परन्तु फिलिप्पुस अशदोद में मिला, और जब तक कैसरिया में न पहुंचा, तब तक नगर नगर प्रचार करता गया।

अध्याय 9

1 शाऊल अब भी प्रभु के चेलों को धमकाने और मार डालने की धुन में था, और महायाजक के पास गया।
2 और उस से दमिश्क की आराधनालयों के नाम पर पत्र मांगे, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, यदि उसे इस पंथ में से कोई मिले, तो वह उन्हें बान्धकर यरूशलेम में ले आए।
3 जब वह यात्रा करते हुए दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।
4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
5 उस ने पूछा, हे प्रभु, तू कौन है? प्रभु ने कहा, मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है; तेरे लिये कांटों पर लात मारना कठिन है।
6 तब वह कांपता हुआ और अचम्भित होकर बोला, हे प्रभु, तू क्या चाहता है कि मैं करूं? प्रभु ने उससे कहा, उठकर नगर में जा, और जो कुछ तुझे करना है, वह तुझे बताया जाएगा।
7 और जो मनुष्य उसके साथ यात्रा कर रहे थे, वे अवाक रह गए; क्योंकि वे शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को न देखते थे।
8 तब शाऊल भूमि पर से उठा; परन्तु जब उसकी आंखें खुलीं तो उसने कुछ न देखा; तब वे उसका हाथ पकड़ कर दमिश्क में ले गए।
9 और वह तीन दिन तक न देख सका, और न कुछ खाया, और न कुछ पीया।
10 और दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हे प्रभु, देख, मैं यहां हूं।
11 तब प्रभु ने उससे कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम तरसुस निवासी एक मनुष्य के विषय में पूछ, क्योंकि वह यह प्रार्थना कर रहा है।
12 और उस ने दर्शन में देखा, कि हनन्याह नाम एक मनुष्य ने भीतर आकर, अपने ऊपर हाथ रखा; कि वह देखने लगे।
13 तब हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इस ने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों से बड़ी बड़ी बुराईयां की हैं।
14 और यहां भी उसे महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बान्ध ले।
15 परन्तु प्रभु ने उससे कहा, चला जा; क्योंकि वह तो अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के साम्हने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।
16 क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।
17 तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर हाथ रखकर कहा; हे भाई शाऊल, प्रभु अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया, तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।
18 और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरने लगे, और वह तुरन्त देखने लगा, और उठकर बपतिस्मा लिया।
19 और भोजन करके बल पाया: तब शाऊल कुछ दिन अपने चेलों के साथ जो दमिश्क में थे रहा।
20 और वह तुरन्त आराधनालयों में प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है।
21 परन्तु सब सुननेवालों ने चकित होकर कहा; क्या यह वही नहीं है जो यरूशलेम में इस नाम को लेनेवालों को नाश करता था, और यहां भी इसी लिये आया था, कि उन्हें बान्धकर महायाजकों के पास ले जाए?
22 परन्तु शाऊल और भी अधिक सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहने वाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा।
23 जब कई दिन बीत गए तो यहूदियों ने उसे मार डालने की सम्मति की।
24 परन्तु उनकी घात की बात शाऊल को मालूम हो गई, और वे उसे मार डालने के लिये दिन रात फाटकों पर घात लगाए रहे।
25 तब चेलों ने उसे रात में टोकरी में लेकर शहरपनाह के पास नीचे उतार दिया।
26 जब शाऊल यरूशलेम में आया, तो उसने चेलों के साथ मिल जाने की कोशिश की: परन्तु सब उससे डरते थे, और विश्वास न करते थे, कि वह भी चेला है।
27 परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर बताया, कि इस ने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और इस ने इस से बातें कीं, और इस ने दमिश्क में यीशु के नाम से हियाव से प्रचार किया।
28 और वह यरूशलेम में उनके साथ आता-जाता रहता था।
29 और वह प्रभु यीशु के नाम से निर्भय होकर प्रचार करता रहा, और यूनानी भाषा बोलने वालों से वाद-विवाद करता रहा; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे।
30 जब भाइयों को इसका पता चला, तो वे उसे कैसरिया में ले आए, और तरसुस को भेज दिया।

31 तब सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसियाओं को विश्राम मिला, और वे उन्नति करती गईं, और प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती हुई बढ़ती गईं।
32 और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ लुद्दा में रहने वाले पवित्र लोगों के पास भी पहुंचा।
33 वहां उसे ऐनियास नाम एक मनुष्य मिला, जो लकवे का रोगी था और आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था।
34 तब पतरस ने उस से कहा, हे ऐनियास, यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना बिछौना बिछा; तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ।
35 और लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे।
36 याफा में तबीता नाम एक चेली रहती थी, जो दोरकास भी कहलाती है; वह बहुत अच्छे अच्छे काम और दान किया करती थी।
37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई, और उन्होंने उसे नहलाकर अटारी पर लिटा दिया।
38 और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था, और चेलों ने सुना कि पतरस वहां है, उन्होंने दो मनुष्य उसके पास भेजकर बिनती की, कि हमारे पास आने में देर न कर।
39 तब पतरस उठकर उनके साथ गया, और जब वह आया, तो वे उसे अटारी में ले गए, और सब विधवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं, और वे कुरते और कपड़े दिखाने लगीं, जो दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे।
40 तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की, और लोथ की ओर फिरकर कहा; हे तबीता, उठ: तब उसने अपनी आंखें खोल दीं, और पतरस को देखकर उठ बैठी।
41 तब उस ने हाथ देकर उसे उठाया, और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित उसके सामने पेश किया।
42 और यह बात सारे याफा में फैल गई, और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया।
43 और ऐसा हुआ कि वह याफा में शमौन नाम एक चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहां बहुत दिन तक रहा।

अध्याय 10

1 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम एक मनुष्य था, जो इतालियानी नाम पलटन का सूबेदार था।
2 वह भक्त मनुष्य था और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और लोगों को बहुत दान देता था, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।
3 उस ने तीसरे पहर के निकट दर्शन में देखा, कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, कि हे कुरनेलियुस!
4 और उस ने उस की ओर देखकर डरकर कहा, हे प्रभु, क्या है? उस ने उस से कहा, तेरी प्रार्थनाएं और दान स्मरण के लिये परमेश्वर के साम्हने पहुंचे हैं।
5 अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला ले।
6 वह शमौन नामक चमड़े के धन्धा करनेवाले के यहां पाहुन है, जिस का घर समुद्र के किनारे है: वही तुझे बताएगा कि क्या करना चाहिए।
7 जब वह स्वर्गदूत चला गया जिसने कुरनेलियुस से बातें की थीं, तो उस ने अपने दो सेवकों को, और जो उसके लिये नित्य सेवा करते थे उन में से एक भक्त सिपाही को बुलाया।
8 और ये सब बातें उन्हें बताकर, उन्हें याफा भेजा।
9 दूसरे दिन जब वे मार्ग पर चलते चलते नगर के निकट पहुंचे, तो पतरस छठे घण्टे के लगभग प्रार्थना करने को छत पर गया।
10 और उसे बहुत भूख लगी और वह खाना चाहता था: पर जब वे तैयारी कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया।
11 और उसने देखा कि आकाश खुल गया है, और एक बर्तन बड़ी चादर के समान चारों कोनों से बुँधा हुआ, और पृथ्वी पर उतारा हुआ, उसकी ओर उतर रहा है।
12 जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाये, और वनपशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और आकाश के पक्षी थे।
13 और एक शब्द उसके पास आया, कि हे पतरस उठ, मार और खा।
14 परन्तु पतरस ने कहा, हे प्रभु, ऐसा नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र वा अशुद्ध वस्तु नहीं खाई।
15 फिर दूसरी बार उस को शब्द सुनाई दिया, कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध न कह।
16 तीन बार ऐसा ही हुआ, और वह पात्र फिर स्वर्ग में उठा लिया गया।
17 जब पतरस अपने मन में यह सोच रहा था कि यह दर्शन जो मैं ने देखा है, क्या होगा, तो देखो, वे मनुष्य जो कुरनेलियुस के भेजे हुए थे, शमौन के घर का पता लगाकर फाटक पर खड़े थे।
18 और पुकारकर पूछा, क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं ठहरा है?
19 जब पतरस उस दर्शन पर सोच ही रहा था, तो आत्मा ने उससे कहा; देख, तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ रहे हैं।
20 इसलिये उठकर नीचे जा, और उनके साथ चला जा, और कुछ सन्देह न कर; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है।
21 तब पतरस उन मनुष्यों के पास गया, जो कुरनेलियुस की ओर से उसके पास भेजे गए थे, और कहा; देखो, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है?
22 उन्होंने कहा, कि कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उस ने एक पवित्र स्वर्गदूत से चितावनी पाई है, कि तुझे अपने घर बुलाए, और तुझ से वचन सुने।
23 तब उस ने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी सेवा की: और दूसरे दिन पतरस उन के साथ गया, और याफा से कई भाई भी उसके साथ हो लिए।
24 दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को बुलाकर उन की बाट जोह रहा था।
25 जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस उस से मिला, और उसके पांवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया।
26 परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा; खड़ा हो जा; मैं भी मनुष्य हूं।
27 और उस से बातें करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे हुए पाया।
28 उसने उनसे कहा, तुम जानते हो कि यहूदी मनुष्य का पराई जाति की संगति करना या उसके यहां जाना अधर्म है; परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं।

29 इसी कारण जब मुझे बुलाया गया तो मैं बिना कुछ कहे तुम्हारे पास चला आया। अब मैं पूछता हूं कि तुम ने मुझे किस लिये बुलाया है?
30 कुरनेलियुस ने कहा; चार दिन पहले मैं इसी घड़ी तक उपवास करता रहा था; और तीसरे पहर जब मैं अपने घर में प्रार्थना कर रहा था, तो देखो, एक मनुष्य चमकीला वस्त्र पहिने हुए मेरे साम्हने आ खड़ा हुआ।
31 और कहा; हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है, और तेरे दान परमेश्वर के साम्हने स्मरण किए गए हैं।
32 इसलिये याफा में दूत भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला ले; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में पाहुन है: वह आकर तुझ से बातें करेगा।
33 इसलिये मैं ने तुरन्त तेरे पास लोगों को भेजा, और तू ने अच्छा किया कि आ गया। इसलिये अब हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने उपस्थित हैं, कि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है, उसे सुनें।
34 तब पतरस ने अपना मुंह खोलकर कहा; अब मैं ने सचमुच देखा कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता।
35 परन्तु हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे स्वीकार है।
36 जो वचन परमेश्वर ने इस्राएलियों के पास भेजा, और उस ने यीशु मसीह के द्वारा शान्ति का सुसमाचार सुनाया, जो सब का प्रभु है।
37 मैं कहता हूं, कि वही बात तुम जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में फैल गई।
38 परमेश्वर ने यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।
39 और हम उन सब कामों के गवाह हैं जो उस ने यहूदा के देश और यरूशलेम में किए; और उन्होंने उसे मार डाला, और क्रूस पर लटका दिया।
40 उसे परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया और प्रगट किया;
41 सब लोगों को नहीं, वरन उन गवाहों को जो पहिले से परमेश्वर के चुने हुए थे, अर्थात हम को, जिन्हों ने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पीया।
42 और उसने हमें लोगों में प्रचार करने और गवाही देने की आज्ञा दी कि यह वही है, जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।
43 उसके विषय में सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसे उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।
44 पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।
45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी थे, वे सब पतरस के साथ आए थे, यह जानकर चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है।
46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भिन्न-भिन्न भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। तब पतरस ने उत्तर दिया।
47 क्या कोई जल पर रोक लगा सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्हों ने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?
48 तब उस ने उन्हें आज्ञा दी, कि प्रभु के नाम से बपतिस्मा लो। तब उन्होंने उस से बिनती की, कि कुछ दिन ठहरे रहो।

अध्याय 11

1 और यहूदिया में रहने वाले प्रेरितों और भाइयों ने सुना कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन स्वीकार कर लिया है।
2 जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उस से झगड़ने लगे।
3 कि तू ने खतनारहित मनुष्यों के पास जाकर उनके साथ खाना खाया।
4 परन्तु पतरस ने यह बात आरम्भ से ही दोहराकर उन्हें क्रमानुसार समझाकर कहा।
5 मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटका हुआ आकाश से उतरकर मेरे पास आया।
6 जब मैंने उस पर ध्यान किया तो पृथ्वी के चौपाये, वनपशु, रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे।
7 फिर मैं ने यह शब्द सुना, कि हे पतरस, उठ; मार और खा।
8 परन्तु मैं ने कहा, हे प्रभु, ऐसा नहीं; क्योंकि कोई अपवित्र वा अशुद्ध वस्तु कभी मेरे मुंह में नहीं गई।
9 परन्तु उत्तर में स्वर्ग से फिर एक शब्द आया, कि जो परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कहो।
10 और ऐसा ही तीन बार हुआ, और सब वस्तुएं फिर स्वर्ग पर खींच ली गईं।
11 और देखो, तुरन्त तीन मनुष्य कैसरिया से मेरे पास भेजे हुए उस घर पर आ खड़े हुए जहां मैं था।
12 तब आत्मा ने मुझे आज्ञा दी, कि बिना किसी संदेह के उनके साथ हो ले: और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिये, और हम उस मनुष्य के घर में गए।
13 फिर उस ने हमें बताया कि एक स्वर्गदूत को मैंने अपने घर में खड़े होकर देखा, जिस ने मुझ से कहा; याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला ले।
14 वह तुझे ऐसी बातें बताएगा जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।
15 जब मैं बोलने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, जैसे कि शुरू में हम पर उतरा था।
16 तब मुझे प्रभु का वचन स्मरण आया कि उसने कहा था, कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया है, परन्तु तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जाएगा।
17 सो जब कि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें दिया है, जिन्हों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया है, तो मैं क्या था जो परमेश्वर का साम्हना कर सकता?
18 यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे; तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।
19 जो लोग स्तिफनुस के कारण पड़े हुए क्लेश के कारण तितर-बितर हो गए थे, वे फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में जाकर, केवल यहूदियों को छोड़ किसी को वचन का प्रचार करते थे।
20 उन में से कितने कुप्रुस और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानी लोगों को प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे।
21 और प्रभु का हाथ उनके साथ था: और बहुत से लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।
22 तब ये बातें यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक पहुंचीं, और उन्होंने बरनबास को भेजा, कि अन्ताकिया को जाए।

23 वह वहां पहुंचकर परमेश्वर का अनुग्रह देखकर आनन्दित हुआ, और सब को उपदेश दिया, कि दृढ़ मन से प्रभु से लिपटे रहो।
24 क्योंकि वह एक अच्छा मनुष्य था और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था: और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।
25 तब बरनबास शाऊल को ढूंढ़ने तरसुस को चला गया।
26 और जब वह मिला, तो उसे अन्ताकिया में ले आया। और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते रहे और बहुत से लोगों को उपदेश देते रहे। और चेले सबसे पहले अन्ताकिया में ही मसीही कहलाए।
27 और उन दिनों में यरूशलेम से कई भविष्यद्वक्ता अन्ताकिया में आए।
28 और उन में से अगबुस नाम एक ने खड़ा होकर आत्मा की प्रेरणा से बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा; और यह अकाल क्लौदियुस कैसर के दिनों में पड़ा।
29 तब चेलों ने अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहने वाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेजने की ठानी।
30 उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और शाऊल के हाथ यह पत्र पुरनियों के पास भेज दिया।

अध्याय 12

1 उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कितनों को कष्ट देने के लिये हाथ बढ़ाया।
2 और उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मार डाला।
3 और जब उस ने देखा कि यहूदी इस बात से प्रसन्न होते हैं, तो उस ने पतरस को भी पकड़ लिया। (उन दिनों अखमीरी रोटी के दिन थे।)
4 और उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया, और उसकी रखवाली के लिये सिपाहियों की चार चौकियाँ सौंपी; और यह सोचा कि ईस्टर के बाद उसे लोगों के सामने लाएँगे।
5 सो बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी, परन्तु कलीसिया उसके लिये लगातार परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।
6 और जब हेरोदेस उसे बाहर लाना चाहता था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था, और पहरेदार द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।
7 और देखो, प्रभु का दूत उसके ऊपर आया, और बन्दीगृह में ज्योति चमकी, और उस ने पतरस की पसली पर थपथपाकर उसे उठाया, और कहा, उठ, फुर्ती कर: और उसके हाथों से जंजीरें खुल गईं।
8 तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, कमर बान्ध और जूते पहन ले। उसने वैसा ही किया। फिर स्वर्गदूत ने उससे कहा, अपना वस्त्र पहिने और मेरे पीछे हो ले।
9 तब वह बाहर जाकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु न जानता था, कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा था, वह सचमुच है; वरन यह समझा कि मैं कोई दर्शन देख रहा हूं।
10 जब वे पहिले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुंचे जो नगर की ओर है, वह फाटक उनके लिये आप ही खुल गया; और वे निकलकर एक ही गली से होकर गए; और तुरन्त स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।
11 जब पतरस को होश आया, तब उसने कहा; अब मैं सच जान गया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से, और यहूदियों की सारी आशा तोड़कर छुड़ाया है।
12 और जब वह यह बात सोचता था, तो यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है; और वहां बहुत से लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे।
13 जब पतरस ने फाटक पर खटखटाया, तो रूदे नाम एक दासी सुनने को आई।
14 और पतरस का शब्द पहचानकर, आनन्द के मारे फाटक न खोला, परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि पतरस फाटक पर खड़ा है।
15 तब उन्होंने उससे कहा, तू पागल है। परन्तु वह दृढ़ता से कहती रही कि यह सच है। तब उन्होंने कहा, यह उसका स्वर्गदूत है।
16 परन्तु पतरस खटखटाता रहा: सो उन्होंने द्वार खोलकर उसे देखा, और चकित हुए।
17 परन्तु उस ने हाथ से संकेत करके उन्हें चुप रहने को कहा, और बताया कि प्रभु ने मुझे किस रीति से बन्दीगृह से निकाला है। और कहा, जाकर याकूब और भाइयों को ये बातें बताओ। तब वह चला गया, और दूसरी जगह चला गया।
18 जब दिन हुआ तो सिपाहियों में हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ?
19 जब हेरोदेस ने उसे ढूँढ़ा, और न पाया, तो पहरेदारों की जाँच करके आज्ञा दी कि उन्हें मार डाला जाए। तब वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में चला गया, और वहीं रहने लगा।
20 और हेरोदेस सूर और सैदा के लोगों से बहुत क्रोधित हुआ, परन्तु वे एक मन होकर उसके पास आए, और राजा के खोजी बलास्तुस को मित्र बनाकर मेल मिलाप की इच्छा की; क्योंकि राजा के देश से उनका देश पोषित होता था।
21 फिर एक दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहने हुए सिंहासन पर बैठा, और लोगों को भाषण देने लगा।
22 तब लोग चिल्लाकर कहने लगे, यह तो मनुष्य का नहीं, परमेश्वर का शब्द है।
23 और तुरन्त प्रभु के दूत ने उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की, और कीड़े उसके शरीर में पड़ गए, और वह मर गया।
24 परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।
25 जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके, तो वे यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेकर यरूशलेम से लौटे।

अध्याय 13

1 अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात बरनबास, और शमौन जो नीगर कहलाता है, और लूकियुस कुरेनी, और मनाहेम जो चौथाई देश का राजा हेरोदेस का पाल-पोसा था, और शाऊल।
2 जब वे उपवास सहित प्रभु की सेवा कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा; बरनबास और शाऊल को मेरे लिये अलग करो, उस काम के लिये जिस के लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।
3 और जब उन्होंने उपवास और प्रार्थना की, और उन पर हाथ रखे, तो उन्हें विदा किया।
4 सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए, और वहां से जहाज खोलकर साइप्रस को चले।
5 और वे सलमीस में पहुंचकर यहूदियों की आराधनालयों में परमेश्वर का वचन प्रचार करने लगे, और यूहन्ना उनका सेवक था।

6 और जब वे उस टापू से होकर पाफुस तक पहुंचे, तो उन्हें बारयीशु नाम एक यहूदी टोन्हा, और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला।
7 वह सूबेदार सिरगियुस पौलुस के साथ रहता था, जो बुद्धिमान मनुष्य था; उस ने बरनबास और शाऊल को बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा।
8 परन्तु इलीमास टोन्हे ने (क्योंकि उसका यही अर्थ है) उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास से रोकना चाहा।
9 तब शाऊल ने जो पौलुस भी कहलाता है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उस की ओर देखा।
10 और कहा; हे सारी चतुराई और सारी दुष्टता से भरे हुए, शैतान की सन्तान, हे सारी धार्मिकता के शत्रु, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?
11 अब देख, प्रभु का हाथ तेरे ऊपर है, और तू अंधा हो जाएगा और कुछ समय तक सूर्य को न देख सकेगा। और तुरन्त उस पर कोहरा और अन्धकार छा गया; और वह इधर उधर खोजने लगा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।
12 तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था, देखकर प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।
13 जब पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए, तो यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया।
14 परन्तु वे पिरगा से कूच करके पिसिदिया के अन्ताकिया में आए, और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए।
15 जब व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें पढ़ी जा चुकीं तो आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, कि हे भाइयो, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे पास कोई बात हो तो कहो।
16 तब पौलुस ने खड़े होकर हाथ से सैन करके कहा, हे इस्राएलियो, और हे परमेश्वर से डरनेवालो, सुनो।
17 इन इस्राएलियों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया, और जब वे मिस्र देश में परदेशी होकर रहते थे, तब उनकी उन्नति की, और बलवन्त भुजबल से उन्हें वहां से निकाल लाया।
18 और वह लगभग चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी यातनाएँ सहता रहा।
19 और जब उसने कनान देश में सात जातियों को नाश किया, तब उसने चिट्ठी डालकर उनका देश उनके हाथ में बाँट दिया।
20 इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वक्ता तक लगभग चार सौ पचास वर्ष तक उनके लिये न्यायी नियुक्त किये।
21 इसके बाद उन्होंने एक राजा चाहा: और परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिन्यामीन के गोत्र के एक पुरुष, कीस के पुत्र शाऊल को उनके लिये राजा बना दिया।
22 और उसको अलग करके उन का राजा होने के लिये दाऊद को नियुक्त किया; और उस की यह गवाही भी दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद मिल गया है, जो मेरे मन के अनुसार है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।
23 इसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा।
24 जब यूहन्ना ने अपने आने से पहले सारे इस्राएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया था।
25 जब यूहन्ना अपना काम पूरा कर रहा था, तो उसने कहा, तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं हूं: परन्तु देखो, मेरे बाद एक आने वाला है, जिस के पांवों की जूती खोलने के योग्य मैं नहीं।
26 हे भाइयो, हे इब्राहीम की सन्तान, और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है।
27 क्योंकि यरूशलेम के रहनेवाले और उनके सरदार, न तो उसे जानते थे, और न उन भविष्यद्वक्ताओं की बातें मानते थे, जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिये उन्होंने उसे दोषी ठहराकर उनकी सारी बातें पूरी कीं।
28 और उन्होंने उसमें मृत्यु दण्ड के योग्य कोई दोष न पाया, तौभी उन्होंने पीलातुस से बिनती की, कि वह मार डाला जाए।
29 जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी कीं, तो उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रख दिया।
30 परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया।
31 और वह उन लोगों को जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; और लोगों के साम्हने उसके गवाह भी वही हैं।
32 और हम तुम्हें यह सुसमाचार सुनाते हैं, कि जो प्रतिज्ञा बापदादों से की गई थी, वह पूरी हुई है।
33 परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर वही बात हमारी सन्तानों के लिये पूरी की, जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, कि तू मेरा पुत्र है, आज मैं ने तुझे उत्पन्न किया है।
34 और इस बात के विषय में कि उस ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, कि वह फिर न सड़ने पाए, उस ने यों कहा, कि मैं दाऊद पर की अटल कृपाएं तुम को दूंगा।
35 इसलिये उसने एक और भजन में भी कहा है, कि तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।
36 क्योंकि दाऊद परमेश्वर की इच्छा से अपने समय के लोगों की सेवा करके सो गया, और अपने पुरखाओं में जा मिला, और सड़ गया।
37 परन्तु जिसे परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने न पाया।
38 इसलिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।
39 और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन सब से हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।
40 इसलिये चौकस रहो, ऐसा न हो कि जो बात भविष्यद्वक्ताओं ने कही है, वह तुम पर आ पड़े।
41 हे तुच्छ जाननेवालो, देखो, और आश्चर्य करो, और नाश हो जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी विश्वास न करोगे।
42 जब यहूदी आराधनालय से चले गए, तो अन्यजातियों ने बिनती की, कि ये बातें हमें अगले सब्त के दिन फिर सुनाईं जाएं।
43 जब सभा समाप्त हो गई, तो बहुत से यहूदी और यहूदी मत धारण करनेवाले पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, और उन्होंने उन से बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।
44 अगले सब्त के दिन नगर के लगभग सभी लोग परमेश्वर का वचन सुनने के लिये इकट्ठे हुए।
45 परन्तु यहूदी लोग भीड़ को देखकर डाह से भर गए, और पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे, और निन्दा करने लगे।
46 तब पौलुस और बरनबास ने निर्भय होकर कहा; अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहिले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो, और अपने आप को अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।

47 क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, कि मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है; कि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।
48 यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और प्रभु के वचन की बड़ाई करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन सब ने विश्वास किया।
49 और प्रभु का वचन सारे देश में फैल गया।
50 परन्तु यहूदियों ने भक्त और प्रतिष्ठित स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को भड़काया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपने देश से निकाल दिया।
51 तब वे उनके साम्हने अपने पांवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए।
52 और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए।

अध्याय 14

1 और ऐसा हुआ कि वे दोनों इकुनियुम में यहूदियों के आराधनालय में साथ साथ गए, और ऐसी बातें कीं, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया।
2 परन्तु अविश्वासी यहूदियों ने अन्यजातियों को भड़काया, और उनके मन भाइयों के विरोध में बुरे भाव उत्पन्न कर दिये।
3 सो वे बहुत दिन तक वहीं रहे, और प्रभु पर हियाव से बातें करते रहे; और वह अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था, और उनके हाथों से चिन्ह और अद्‌भुत काम करवाने देता था।
4 परन्तु नगर की भीड़ बंट गई थी; और कुछ यहूदियों की ओर, और कुछ प्रेरितों की ओर।
5 और जब अन्यजातियों और यहूदियों ने भी अपने सरदारों समेत उन पर आक्रमण किया, और उनका अपमान करने और उन्हें पत्थरवाह करने लगे।
6 यह बात जानकर वे लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में और आस पास के देश में भाग गए।
7 और वहाँ उन्होंने सुसमाचार प्रचार किया।
8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था, और अपनी मां के गर्भ ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था।
9 और पौलुस को यह कहते हुए सुना, और उस ने उस की ओर दृष्टि करके जान लिया, कि इस को चंगा हो जाने का विश्वास है।
10 उसने ऊंचे शब्द से कहा, अपने पांवों पर सीधा खड़ा हो: तब वह उछलकर चलने लगा।
11 जब लोगों ने पौलुस का यह काम देखा, तो लुकाउनिया की भाषा में ऊंचे शब्द से कहने लगे, कि देवता मनुष्य के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।
12 और उन्होंने बरनबास को बृहस्पति और पौलुस को मरक्यूरियस कहा, क्योंकि वह मुख्य वक्ता था।
13 तब उनके नगर के साम्हने बृहस्पति नगर का याजक बैल और हार फाटक पर लाकर लोगों के साथ बलि चढ़ाना चाहता था।
14 जब प्रेरित बरनबास और पौलुस ने यह सुना तो अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाते हुए लोगों के बीच दौड़े।
15 और कहा, हे सज्जनो, तुम ये काम क्यों करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान क्रोधी मनुष्य हैं, और तुम्हें प्रचार करते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और उन में की सब वस्तुएं बनाईं।
16 उस ने तो पूर्वकाल में सब जातियों को अपने अपने मार्गों पर चलने दिया।
17 तौभी उसने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर हमारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।
18 ये बातें कहकर उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान न चढ़ाओ।
19 तब अन्ताकिया और इकुनियुम से कई यहूदी वहां आए, और लोगों को बहकाकर पौलुस को पत्थरवाह किया, और यह समझकर कि वह मरा है, उसे नगर के बाहर खींच ले गए।
20 परन्तु जब चेले उसके चारों ओर खड़े थे, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।
21 और जब वे उस नगर में सुसमाचार सुना चुके, और बहुतों को उपदेश दे चुके, तो वे फिर लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया को लौटे।
22 और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते रहे कि विश्वास में बने रहो; और यह कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।
23 और उन्होंने हर एक कलीसिया में उन्हें प्राचीन नियुक्त किया, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ में सौंप दिया, जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।
24 फिर वे पिसिदिया से होते हुए पंफूलिया में आये।
25 और वे पिरगा में वचन सुनाकर अत्तलिया में गए।
26 और वहां से जहाज चलाकर अन्ताकिया को गए, जहां से उन्हें उस काम के लिये जो वे पूरा कर रहे थे, परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा गया था।
27 और जब वे वहां पहुंचे, और कलीसिया को इकट्ठा किया, तो उन्होंने सब बातें बताईं, जो परमेश्वर ने हमारे साथ होकर की थीं, और किस रीति से उसने अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया था।
28 और वे वहाँ चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।

अध्याय 15

1 और कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे, कि यदि तुम मूसा की रीति पर खतना न कराओ तो उद्धार नहीं पा सकते।
2 जब पौलुस और बरनबास का उन से बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ, तो उन्होंने यह ठहराया कि इस विषय के विषय में पौलुस और बरनबास, और उन में से कितने और लोग यरूशलेम को प्रेरितों और पुरनियों के पास जाएं।
3 और वे कलीसिया से भेजे गए, और फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फिराने का समाचार देते हुए सब भाइयों को बड़ा आनन्दित किया।
4 जब वे यरूशलेम में पहुंचे, तो कलीसिया और प्रेरितों और प्राचीनों ने उनसे आनन्दपूर्वक भेंट की, और उन्होंने सब बातें बताईं जो परमेश्वर ने उनके साथ मिलकर की थीं।
5 परन्तु फरीसियों के पंथ में से जो विश्वास करते थे, उनमें से कई एक उठकर कहने लगे, कि उन्हें खतना कराना और मूसा की व्यवस्था मानने की आज्ञा देना आवश्यक है।
6 तब प्रेरित और प्राचीन इस बात पर विचार करने के लिये इकट्ठे हुए।

7 जब बहुत विवाद हो गया, तो पतरस ने खड़े होकर उन से कहा; हे भाइयो, तुम जानते हो कि बहुत समय पहिले परमेश्वर ने हममें से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुंह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें।
8 और परमेश्वर ने जो मनों को जानता है, उन्हें भी हमारी नाईं पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी।
9 और विश्वास के द्वारा उनके मनों को शुद्ध करके हम में और उन में कुछ भेद न रखा।
10 तो अब तुम परमेश्वर की परीक्षा क्यों करते हो, कि चेलों की गर्दन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे पूर्वज उठा सके और न हम उठा सके?
11 परन्तु हमारा विश्वास है, कि हम भी प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से उद्धार पाएंगे, जैसे वे पाए हैं।
12 तब सारी भीड़ चुप हो गई, और बरनबास और पौलुस की बातें सुनने लगी, और बताने लगी कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे कैसे चिन्ह और अद्‌भुत काम किए थे।
13 जब वे चुप रहे, तो याकूब ने उत्तर दिया; कि हे भाइयो, मेरी बात सुनो।
14 शमौन ने बताया कि परमेश्वर ने पहले पहल अन्यजातियों पर कैसे कृपादृष्टि की, ताकि उनमें से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले।
15 और भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी इसी से मेल खाती हैं, जैसा लिखा है,
16 इसके बाद मैं लौटकर दाऊद का गिरा हुआ तम्बू फिर बनाऊंगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा।
17 इसलिये कि शेष मनुष्य अर्थात् वे सब अन्यजाति जो मेरे नाम से कहलाते हैं, प्रभु को खोजें, प्रभु जो ये सब काम करता है, उसकी यही वाणी है।
18 परमेश्वर को उसके सारे काम जगत के आरम्भ से ज्ञात हैं।
19 इसलिये मेरा विचार यह है, कि जो लोग अन्यजातियों में से परमेश्वर की ओर फिरे हैं, हम उन्हें कष्ट न दें।
20 परन्तु हम उन्हें लिख भेजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं, और व्यभिचार, और गला घोंटे हुओं के माँस से, और लोहू से, परे रहें।
21 क्योंकि पुराने समय से नगर नगर मूसा के प्रचार करने वाले होते आए हैं, और उसकी पुस्तक हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी जाती है।
22 तब प्रेरितों और प्राचीनों को सारी कलीसिया समेत यह अच्छा लगा कि अपने में से चुने हुए मनुष्यों को पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया भेजें, अर्थात यहूदा जो बरसबा कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुख्य थे।
23 और उन्होंने अपने हाथ यह पत्र लिखा, कि अन्ताकिया, सूरिया और किलिकिया के रहनेवाले अन्यजातियों में से जो भाई हैं, उन्हें प्रेरितों और प्राचीनों और भाइयों का नमस्कार।
24 क्योंकि हम ने सुना है, कि हमारे बीच से निकले हुए कितनों ने यह कह कर तुम्हें घबरा दिया, और तुम्हारे मन को उलट दिया, कि खतना कराओ, और व्यवस्था का पालन करो; परन्तु हम ने उन्हें ऐसी कोई आज्ञा नहीं दी।
25 इसलिये हम ने एक मन होकर यह उचित समझा कि अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ कुछ चुने हुए मनुष्यों को तुम्हारे पास भेजें।
26 जिन लोगों ने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए अपनी जान जोखिम में डाली है।
27 इसलिये हम ने यहूदा और सीलास को भेजा है, जो तुम्हारे मुंह से भी ये बातें कहेंगे।
28 क्योंकि पवित्र आत्मा को, और हमें यह उचित जान पड़ा, कि इन आवश्यक बातों को छोड़, तुम पर और अधिक बोझ न डाला जाए।
29 कि तुम मूरतों के बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के माँस से, और व्यभिचार से, परे रहो। यदि तुम इन से दूर रहोगे, तो तुम्हारा भला होगा। तुम्हारा भला हो।
30 सो जब वे विदा हुए तो अन्ताकिया में आए और भीड़ को इकट्ठा करके पत्री दे दी।
31 जब उन्होंने इसे पढ़ा, तो वे शान्ति से आनन्दित हुए।
32 यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत सी बातें कहकर भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया।
33 जब वे कुछ देर वहां रहे तो भाइयों ने उन्हें शान्ति से विदा कर प्रेरितों के पास भेज दिया।
34 तौभी सीलास को वहीं रहना अच्छा लगा।
35 और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रहकर और बहुत से अन्य लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश और प्रचार करते रहे।
36 कुछ दिन के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन प्रचार किया है, आओ, हम फिर चलकर अपने भाइयों को देखें, कि वे कैसे हैं।
37 तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, अपने साथ लेने की ठानी।
38 परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया था, अपने साथ ले जाना अच्छा न समझा।
39 और उन में इतना झगड़ा हुआ कि वे एक दूसरे से अलग हो गए। सो बरनबास मरकुस को लेकर जहाज पर कुप्रुस को चला गया।
40 तब पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह पर सौंपा जाकर चला गया।
41 और वह सीरिया और किलिकिया से होते हुए कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ फिरा।

अध्याय 16

1 फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और देखो, वहां तीमुथियुस नाम एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था; पर उसका पिता यूनानी था।
2 लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में इसकी अच्छी चर्चा हुई।
3 पौलुस ने उसे अपने साथ ले जाना चाहा, सो उन यहूदियों के कारण जो उन जगहों में थे, उसे ले जाकर उसका खतना किया; क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।
4 और नगर नगर जाते हुए वे यरूशलेम के प्रेरितों और पुरनियों की ओर से ठहराई गई विधियों को मानने के लिये उन्हें पहुंचाते जाते थे।
5 इस प्रकार कलीसिया विश्वास में स्थिर होती गई और उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती गई।
6 जब वे फ्रूगिया और गलतिया देश में फिरे, और पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने से मना किया।
7 जब वे मूसिया में पहुंचे, तो उन्होंने बितूनिया में जाना चाहा, परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।

8 और वे मूसिया से होते हुए त्रोआस में आए।
9 और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा; कि एक मकिदुनी मनुष्य खड़ा हुआ उस से यह बिनती कर रहा है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर।
10 जब उसने यह दर्शन देखा, तो हमने तुरन्त मकिदुनिया जाने का प्रयत्न किया, यह समझकर कि प्रभु ने हमें वहां सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।
11 इसलिये हम त्रोआस से जहाज खोलकर सीधे सुमात्रकिया में आए, और दूसरे दिन नियापुलिस में।
12 वहां से हम फिलिप्पी में पहुंचे, जो मकिदुनिया का मुख्य नगर और एक बस्ती है; और हम उसी नगर में कई दिन रहे।
13 और सब्त के दिन हम नगर के बाहर नदी के किनारे गए, जहां प्रार्थना करने की रीति थी; और बैठकर उन स्त्रियों से बातें कीं जो वहां इकट्ठी हुई थीं।
14 और थुआतीरा नगर की लुदिया नाम बैंजनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, कि वह पौलुस की बातें ध्यान से सुने।
15 जब उसने और उसके घराने ने बपतिस्मा लिया, तो उसने हमसे बिनती करके कहा, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो। और उसने हमें विवश किया।
16 जब हम प्रार्थना करने जा रहे थे, तो हमें एक कन्या मिली, जिस में भावी कहनेवाली आत्मा थी, और जो भावी कहने से अपने स्वामियों को बहुत लाभ पहुंचाती थी।
17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगा, कि ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार का मार्ग बताते हैं।
18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही। परन्तु पौलुस उदास हुआ, और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उसमें से निकल जा: और वह उसी घड़ी निकल गई।
19 जब उसके स्वामियों ने देखा कि उनकी कमाई की आशा जाती रही, तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ लिया, और चौक में हाकिमों के पास खींचकर ले गए।
20 और उन्हें हाकिमों के पास ले जाकर कहा, कि ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बहुत उत्पात मचाते हैं।
21 और ऐसी रीतियां सिखाते हो, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हमें रोमी होने के कारण उचित नहीं।
22 तब भीड़ उनके विरुद्ध उठ खड़ी हुई, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर फाड़ डाले, और उन्हें पीटने की आज्ञा दी।
23 और जब उन्होंने उन पर बहुत मार खाई, तो उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया, और दारोगा को आज्ञा दी, कि उन्हें सावधानी से रखे।
24 जब उस ने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतरी कोठरी में डाल दिया, और उनके पांव काठ में ठोंक दिए।
25 आधी रात को पौलुस और सीलास प्रार्थना करते और परमेश्वर के भजन गाते थे, और बन्धुए उन की सुनते थे।
26 और एकाएक बड़ा भूकम्प हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गईं, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल गए।
27 और बन्दीगृह का दरोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर यह समझकर कि बन्दी भाग गए हैं, अपनी तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहता था।
28 परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां हैं।
29 तब वह दीया मंगवाकर भीतर लपका, और कांपता हुआ आया, और पौलुस और सीलास के आगे गिरकर कहने लगा,
30 और उन्हें बाहर लाकर कहा; हे सजनो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं?
31 उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।
32 तब उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को यहोवा का वचन सुनाया।
33 और रात को उसी घड़ी उस ने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।
34 तब उस ने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन परोसा, और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।
35 जब दिन हुआ तो हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ यह कहला भेजा, कि उन मनुष्यों को छोड़ दो।
36 और बन्दीगृह के दरोगा ने पौलुस से यह समाचार सुना, कि हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है; इसलिये अब तुम यहां से चले जाओ, और कुशल से जाओ।
37 परन्तु पौलुस ने उन से कहा; उन्होंने हमें जो रोमी हैं, बिना दोषी ठहराए सरेआम मारा, और बन्दीगृह में डाला; और अब क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं? नहीं, ऐसा नहीं है; परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएं।
38 जब प्यादों ने हाकिमों से ये बातें कहीं, तो वे यह सुनकर कि वे रोमी हैं, डर गए।
39 तब वे आकर उन से बिनती करने लगे, और बाहर ले जाकर बिनती करने लगे, कि नगर से चले जाएं।
40 और वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के घर में गए, और भाइयों से मिलकर उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

अध्याय 17

1 फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया से होते हुए थिस्सलुनीके में पहुंचे, जहां यहूदियों का एक आराधनालय था।
2 तब पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया।
3 और उन ने स्पष्ट रीति से कहा, कि मसीह को दुख उठाना और मरे हुओं में से जी उठना अवश्य था, और यही यीशु जिसका प्रचार मैं तुम्हें करता हूं, मसीह है।
4 और उन में से कितनों ने विश्वास करके पौलुस और सीलास के साथ संगति कर ली; और भक्त यूनानियों में से भी बहुत से लोग और बहुत सी कुलीन स्त्रियां भी उसके साथ हो लीं।
5 परन्तु जो यहूदी विश्वास नहीं करते थे, उन्होंने ईर्ष्या से भरकर कुछ नीच जाति के लुच्चे लोगों को अपने साथ मिला लिया, और एक भीड़ इकट्ठी करके सारे नगर में हुल्लड़ मचा दिया, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के साम्हने लाने का प्रयत्न किया।
6 जब उन्हें न पाया, तो यासोन और कितने भाइयों को नगर के हाकिमों के पास खींचकर यह चिल्लाने लगे, कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलटा कर दिया है, यहां भी आ गए हैं।

7 उन्हें यासोन ने अपने यहां उतारा, और ये सब लोग कैसर की आज्ञा का विरोध करते हुए कहते हैं, कि यीशु नाम का एक और राजा है।
8 जब लोगों ने ये बातें सुनीं तो वे और नगर के हाकिम घबरा गए।
9 तब उन्होंने यासोन और दूसरे लोगों से ज़मानत लेकर उन्हें छोड़ दिया।
10 तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस और सीलास को रात ही रात बिरीया को भेज दिया, और वे वहां पहुंचकर यहूदियों की आराधनालय में गए।
11 ये लोग थिस्सलुनीके के लोगों से अधिक भले थे, क्योंकि उन्होंने बड़ी तत्परता से वचन ग्रहण किया और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में खोजते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं।
12 सो उन में से बहुत लोग विश्वास लाए, और यूनानी प्रतिष्ठित स्त्रियों में से भी बहुतेरों ने, और पुरुषों में से भी बहुतेरों ने विश्वास रखा।
13 परन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को मालूम हुआ कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वे वहां भी आकर लोगों को भड़काने लगे।
14 तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया, कि समुद्र के किनारे चला जाए; पर सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए।
15 और पौलुस के पहुंचानेवाले उसे एथेन्स में ले गए, और सीलास और तीमुथियुस को यह आज्ञा देकर विदा किया, कि मेरे पास शीघ्र आओ।
16 जब पौलुस एथेन्स में उन की बाट जोह रहा था, तो नगर को मूर्तिपूजा से भरा हुआ देखकर उसका मन घबरा गया।
17 इसलिये वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से, और चौक में जो लोग उससे मिलते थे उनसे प्रति दिन वाद-विवाद करता रहता था।
18 तब इपिकूरी और स्तोईकी पण्डितों में से कितने उस से मिले, और कितनों ने कहा, यह बकवादी क्या कहता है? औरों ने कहा, यह तो दूसरे देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है, क्योंकि वह उन्हें यीशु का, और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था।
19 तब उन्होंने उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले जाकर पूछा; क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है?
20 क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिये हम जानना चाहते हैं कि इन बातों का अर्थ क्या है।
21 (क्योंकि जितने एथेंसवासी और परदेशी वहां थे, वे अपना समय किसी और काम में नहीं बिताते थे, केवल नई बातें कहने या सुनने में बिताते थे।)
22 तब पौलुस ने मार्स पहाड़ी के बीच में खड़ा होकर कहा; हे एथेन्स के लोगो, मैं देखता हूं कि तुम हर बात में बहुत अंधविश्वासी हो।
23 क्योंकि जब मैं फिरता हुआ तुम्हारी भक्ति की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक वेदी पाई, जिस पर लिखा था, कि अज्ञात परमेश्वर के लिये। इसलिये मैं तुम्हें उसी का समाचार देता हूं, जिसे तुम बिना जाने पूजते हो।
24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह आकाश और पृथ्वी का स्वामी होकर भी हाथ के बनाए मन्दिरों में नहीं रहता;
25 और न मनुष्यों के हाथों से उपासना की जाती है, मानो उसे किसी वस्तु की आवश्यकता हो, क्योंकि वह तो सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।
26 और उसी ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और उनके ठहराए हुए समयों और निवास के सिवानों को भी बान्धा है;
27 कि वे प्रभु को ढूंढ़ें, कदाचित् उसे टटोलकर पा भी लें, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं है।
28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम उसी की सन्तान भी हैं।
29 सो जब कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, तो हमें यह न समझना चाहिए, कि परमेश्वरत्व सोने, या चाँदी, या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और युक्तियों से गढ़े गए हों।
30 परमेश्वर ने इस अज्ञानता के समयों को अनदेखा कर दिया, परन्तु अब वह हर जगह सब मनुष्यों को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है।
31 क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।
32 जब उन्होंने मरे हुओं के जी उठने की बात सुनी तो कितने तो ठट्ठा करने लगे और औरों ने कहा, यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।
33 तब पौलुस उनके बीच से चला गया।
34 तौभी कई एक मनुष्य उसके साथ मिलकर विश्वास लाए, जिन में दियुनुसियुस नाम अरियुपगी था, और दमरिस नाम एक स्त्री थी, और उन के साथ और भी कई मनुष्य थे।

अध्याय 18

1 इन बातों के बाद पौलुस एथेन्स को छोड़कर कुरिन्थुस में आया।
2 और उसे अक्विला नाम एक यहूदी मिला, जो पुन्तुस में उत्पन्न हुआ था, और अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इतालिया से हाल ही में आया था, (क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी), और वह उनके पास गया।
3 और क्योंकि वह भी उन्हीं का काम था, इसलिये वह उनके साथ रहकर काम करने लगा; क्योंकि उनका काम तम्बू बनाने का था।
4 और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।
5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस बहुत उत्साहित हुआ और यहूदियों को गवाही दी कि यीशु ही मसीह है।
6 जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उस ने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा; तुम्हारा लोहू तुम्हारे ही सिर पर रहे; मैं निर्दोष हूं; अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊंगा।
7 फिर वह वहां से चलकर युस्तुस नाम एक भक्त के घर में गया, जिसका घर आराधनालय से सटा हुआ था।
8 और आराधनालय का सरदार क्रिस्पुस अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया, और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।
9 तब प्रभु ने रात में दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, मत डर, वरन कहे जा, और चुप मत रह।
10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूं, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।

11 और वह वहां डेढ़ वर्ष तक रहकर उनके बीच परमेश्वर का वचन सिखाता रहा।
12 जब गल्लियो अखाया का हाकिम था, तो यहूदियों ने एकमत होकर पौलुस पर चढ़ाई की और उसे न्यायपीठ के सामने लाकर खड़ा कर दिया।
13 कि यह मनुष्य लोगों को समझाता है, कि परमेश्वर की आराधना ऐसी रीति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है।
14 जब पौलुस बोलने पर था, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा; हे यहूदियो, यदि यह कोई अन्याय या दुष्टता की बात होती, तो उचित था कि मैं तुम्हारी सह लेता।
15 परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारी व्यवस्था के विषय में हो, तो तुम ही सोचो; क्योंकि मैं ऐसे मामलों का न्यायी नहीं हूँ।
16 और उसने उन्हें न्याय-पीठ के सामने से खदेड़ दिया।
17 तब सब यूनानियों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़कर न्याय आसन के साम्हने पीटा, और गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की।
18 इसके बाद पौलुस वहां बहुत दिन तक रहा, फिर भाइयों से विदा होकर जहाज पर सूरिया को चला गया, और उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला भी थे; और किंख्रिया में उस ने इसलिये सिर मुण्डाया था, क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी।
19 तब वह इफिसुस में आया, और उन्हें वहीं छोड़कर आप आराधनालय में जाकर यहूदियों से वाद-विवाद करने लगा।
20 जब उन्होंने उस से बिनती की, कि हमारे साथ कुछ और दिन रह, तो उस ने मना कर दिया।
21 परन्तु यह कहकर उन्हें विदा किया, कि मुझे यह पर्व जो यरूशलेम में होनेवाला है, अवश्य मानना है; परन्तु यदि परमेश्वर चाहेगा तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा। तब वह इफिसुस से जहाज पर चला गया।
22 और जब वह कैसरिया में उतरा, और ऊपर जाकर कलीसिया को नमस्कार किया, तब अन्ताकिया में गया।
23 फिर कुछ दिन वहां रहकर वह वहां से चला गया, और क्रम से गलतिया और फ्रूगिया के सारे देश में घूमता रहा, और सब चेलों को स्थिर करता रहा।
24 और अपुल्लोस नाम एक यहूदी जो सिकन्दरिया में जन्मा था, और विद्वान पुरुष और शास्त्रों का जानकार था, इफिसुस में आया।
25 यह मनुष्य प्रभु के मार्ग में शिक्षा पाया हुआ था, और आत्मा में उत्साही होकर प्रभु की बातें सुनाता और सिखाता था; परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।
26 और वह आराधनालय में निर्भय होकर बोलने लगा, और अक्विला और प्रिस्किल्ला ने उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहां ले जाकर परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया।
27 जब वह अखाया को जाने को तैयार हुआ, तो भाइयों ने चेलों को लिखकर समझाया कि वे उस से अच्छी तरह मिलें, और उस ने वहां पहुंचकर उन लोगों की बहुत सहायता की जिन्हों ने अनुग्रह से विश्वास किया था।
28 क्योंकि वह पवित्र शास्त्र से प्रमाण दे देकर, कि यीशु ही मसीह है, बड़ी दृढ़ता से यहूदियों को निश्चय दिलाता था।

अध्याय 19

1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के देशों से होता हुआ इफिसुस में आया और कुछ चेलों को पाकर।
2 उस ने उन से कहा, क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया है? उन्होंने उस से कहा, हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।
3 उस ने उन से पूछा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया? उन्होंने कहा; यूहन्ना का बपतिस्मा।
4 तब पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने तो मन फिराव का बपतिस्मा देकर लोगों से कहा, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर, अर्थात मसीह यीशु पर विश्वास करो।
5 जब उन्होंने यह सुना तो उन्होंने प्रभु यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया।
6 जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।
7 और सब पुरूष लगभग बारह थे।
8 और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निर्भयता से बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।
9 परन्तु जब कुछ लोग कठोर हो गए, और विश्वास न करते थे, वरन भीड़ के साम्हने उस मार्ग को बुरा भला कहने लगे, तो वह उन को छोड़कर चेलों को अलग कर लेता था, और प्रति दिन तुरन्नुस नाम एक मनुष्य की पाठशाला में वाद-विवाद करता था।
10 और ऐसा ही दो वर्ष तक होता रहा, यहां तक कि आसिया के रहने वाले क्या यहूदी, क्या यूनानी, सब ने प्रभु यीशु का वचन सुन लिया।
11 और परमेश्वर ने पौलुस के हाथों से विशेष चिन्ह दिखाए।
12 सो जब उसके शरीर से रुमाल या अंगोछे बीमारों के पास लाए जाते थे, तो उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थीं और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाती थीं।
13 तब कुछ यहूदी जो झाड़-फूंक करनेवाले थे, यह काम करने लगे कि उन में जो दुष्टात्माएँ थीं उन पर प्रभु यीशु का नाम लेकर यह कहें, कि हम तुम्हें उसी यीशु की शपथ देते हैं, जिसका प्रचार पौलुस करता है।
14 स्किवा नाम के एक यहूदी और याजकों के प्रधान नामक व्यक्ति के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे।
15 तब दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, कि यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी मैं जानती हूं; परन्तु तुम कौन हो?
16 और वह मनुष्य जिसमें दुष्टात्मा था, उन पर लपककर, उन पर हावी हो गया, और उन पर ऐसा हावी हुआ कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से बाहर भाग गए।
17 और यह बात इफिसुस के रहनेवाले सब यहूदियों और यूनानियों को मालूम हुई, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की महिमा हुई।
18 और बहुत से विश्वासी आए, और मान लिया, और अपने काम प्रगट किए।
19 और जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी अपनी पोथियां इकट्ठी करके सब लोगों के साम्हने जला दीं; और जब उन का दाम गिना गया, तो पचास हजार चान्दी के सिक्के निकले।
20 इस प्रकार परमेश्वर का वचन बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

21 जब ये बातें हो चुकीं, तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम जाऊं। और कहा, वहां जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।
22 तब उस ने अपने सेवकों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजा, और आप कुछ दिन आसिया में रह गया।
23 और उसी समय उस मार्ग के विषय में बड़ी हलचल मच गई।
24 क्योंकि देमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के लिये चांदी के मन्दिर बनाता था, और कारीगरों को बहुत लाभ पहुंचाता था।
25 और उस ने उन को, और समान काम करने वाले कारीगरों के साथ बुलाकर कहा, हे सज्जनो, तुम जानते हो कि इस काम से हम धन कमाते हैं।
26 और तुम देखते और सुनते हो, कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन प्रायः सारे आसिया में यह पौलुस यह कह कह कर बहुत लोगों को समझाता और भरमाता रहा है, कि जो हाथ की कारीगरी है, वह ईश्वर नहीं।
27 इसलिये न केवल हमारी यह कला व्यर्थ होने का खतरा है, परन्तु महान देवी अरितमिस का मन्दिर भी तुच्छ जाना जाएगा, और उसकी महिमा भी नष्ट की जाएगी, जिसे सारा एशिया और सारा संसार पूजता है।
28 जब उन्होंने ये बातें सुनीं, तो वे क्रोध से भर गए, और चिल्लाकर कहने लगे, कि इफिसियों की अरतिमिस महान है।
29 और सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग गयुस और अरिस्तर्खुस मकिदुनियावासियों को जो पौलुस के यात्री साथी थे, पकड़कर एक चित्त होकर रंगशाला की ओर दौड़े।
30 जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा, तो चेलों ने उसे जाने न दिया।
31 तब आसिया के कई प्रमुख लोगों ने जो उसके मित्र थे, उसके पास यह कहला भेजा कि रंगशाला में जाने का साहस न करना।
32 इसलिये कोई कुछ चिल्ला रहे थे, और कोई कुछ, क्योंकि सभा में घबराहट हो रही थी, और बहुतेरे यह नहीं जानते थे कि हम किसलिए इकट्ठे हुए हैं।
33 तब यहूदियों ने सिकन्दर को भीड़ में से खींचकर आगे कर दिया, और सिकन्दर ने हाथ से संकेत करके लोगों के सामने अपना उत्तर देना चाहा।
34 जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक स्वर से लगभग दो घंटे तक चिल्लाते रहे, कि इफिसियों की अरतिमिस महान है।
35 जब नगर के मन्त्री ने लोगों को शान्त किया, तब कहने लगा; हे इफिसुस के लोगो, कौन नहीं जानता कि इफिसुस के लोग महान देवी अरतिमिस और बृहस्पति से गिरी हुई मूरत की पूजा करते हैं?
36 इसलिये जब कि इन बातों का विरोध किया ही नहीं जा सकता, तो उचित है कि तुम चुपचाप रहो, और बिना सोचे समझे कोई काम न करो।
37 क्योंकि तुम इन मनुष्यों को यहां लाए हो, जो न तो कलीसियाओं को लूटते हैं, और न तुम्हारी देवी की निन्दा करते हैं।
38 इसलिये यदि देमेत्रियुस और उसके संगी कारीगरों को किसी से कुछ झगड़ा हो, तो व्यवस्था खुली है, और हाकिम भी हैं; सो वे एक दूसरे पर दोष लगाएं।
39 परन्तु यदि तुम अन्य बातों के विषय में कुछ पूछना चाहो, तो उसका निर्णय विधिवत् सभा में किया जाएगा।
40 क्योंकि आज के हुल्लड़ के कारण हम पर प्रश्न उठाए जाने का खतरा है, और ऐसा कोई कारण नहीं है जिसके द्वारा हम इस भीड़ का उत्तर दे सकें।
41 यह कहकर उसने सभा को विदा किया।

अध्याय 20

1 जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलाकर उनसे भेंट की, और मकिदुनिया को जाने को विदा हुआ।
2 और जब वह उन देशों से होकर और उन्हें बहुत उपदेश देकर यूनान में आया।
3 और वह वहां तीन महीने तक रहा। और जब वह जहाज पर सीरिया जाने पर था, तो यहूदियों ने उसकी घात में खड़े होकर सोचा, कि मकिदुनिया होकर लौट जाए।
4 और वहां से बिरीया का आसिया सोपतेर उसके साय हो गया; और थिस्सलुनिकियों में से, अरिस्टार्खुस और सिकुंडस; और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस; और आसिया के तुखिकुस और त्रुफिमुस।
5 ये लोग हमारे आगे आगे जाकर त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे।
6 और हम अख़मीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज़ पर चढ़कर पाँच दिन में त्रोआस में उनके पास पहुँचे, और वहाँ सात दिन तक रहे।
7 सप्ताह के पहिले दिन जब चेले रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस जो दूसरे दिन जाने को तैयार था, उन्हें उपदेश देने लगा, और आधी रात तक बातें करता रहा।
8 और ऊपरी कमरे में बहुत सी दीये थीं, जहाँ वे इकट्ठे हुए थे।
9 और यूतुखुस नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद में था: और जब पौलुस बहुत देर तक प्रचार करता रहा, तो वह नींद के मारे तीसरी मंज़िल से नीचे गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
10 तब पौलुस उतरकर उसके ऊपर गिरा, और उसे गले लगाकर कहा; दुख मत उठाओ; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
11 तब वह फिर ऊपर आया, और रोटी तोड़कर खा चुका, और बहुत देर तक अर्थात पौ फटने तक बातें करता रहा, फिर चला गया।
12 और वे उस जवान को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई।
13 इसलिये हम पहिले जहाज पर चढ़कर अस्सुस को चले, और वहां से पौलुस को चढ़ाने की आशा की, क्योंकि उसने ऐसा ठहराया था, और वह पैदल जाने का विचार कर रहा था।
14 जब वह अस्सुस में हमसे मिला तो हम उसे अपने साथ ले कर मितुलेने में आ गए।
15 और हम वहां से जहाज चलाकर दूसरे दिन खियुस के साम्हने पहुंचे; और अगले दिन सामुस में पहुंचे, और ट्रोजिलियुम में रुके; और अगले दिन मिलेतुस में आए।
16 क्योंकि पौलुस ने इफिसुस से होकर जाने का निश्चय किया था, क्योंकि वह एशिया में समय नहीं बिताना चाहता था, क्योंकि वह जल्दी करता था, कि यदि हो सके, तो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में पहुंचे।
17 फिर उस ने मीलेतुस से इफिसुस में संदेश भेजकर कलीसिया के प्राचीनों को बुलाया।

18 जब वे उसके पास आए, तो उस ने उन से कहा; तुम जानते हो, कि पहिले दिन से जब मैं आसिया में आया, मैं हर समय किस प्रकार तुम्हारे साथ रहा।
19 और बड़ी दीनता से, और बहुत से आंसू बहा बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के घात में मुझ पर आईं, प्रभु की सेवा करता रहा।
20 और जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उन को मैं ने तुम को बताया और लोगों के साम्हने और घर घर जाकर सिखाया है।
21 और यहूदियों और यूनानियों के साम्हने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।
22 और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और यह नहीं जानता कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा।
23 केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर कहता है, कि बन्धन और क्लेश मेरे लिये बने रहेंगे।
24 परन्तु इन बातों से मैं विचलित नहीं होता, और न मैं अपने प्राण को प्रिय समझता हूं, कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को जो मुझे परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से मिली है, आनन्द के साथ पूरी करूं।
25 और अब देखो, मैं जानता हूं, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता आया हूं, मेरा मुंह फिर कभी न देखोगे।
26 इसलिये मैं आज तुम्हारे साम्हने गवाही देता हूं, कि मैं सब के खून से निर्दोष हूं।
27 क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा तुम्हें बताने से न झिझका।
28 इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस पर पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।
29 क्योंकि मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम्हारे बीच में आएंगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।
30 तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठ खड़े होंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।
31 इसलिये जागते रहो और स्मरण रखो कि तीन वर्ष तक मैं ने रात दिन आंसू बहा बहाकर हर एक को चेतावनी देना न छोड़ा।
32 और अब, हे भाईयों, मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंपता हूं, जो तुम्हें बनाने में सक्षम है, और सब पवित्र लोगों के साथ तुम्हें मीरास दे सकता है।
33 मैं ने किसी की चान्दी, सोने, या वस्त्र का लालच नहीं किया।
34 हां, तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की हैं।
35 मैं ने तुम्हें सब बातें बताईं, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को संभालना चाहिए, और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखने चाहिए, कि उस ने आप ही कहा है, कि लेने से देना धन्य है।
36 यह कहकर वह घुटने टेककर उन सब के साथ प्रार्थना करने लगा।
37 और वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले में लिपटकर उसे चूमने लगे।
38 वे विशेष करके उन बातों का शोक करते थे जो उस ने कही थीं, कि तुम उसका मुंह फिर न देखोगे। और वे उसके साथ जहाज तक गए।

अध्याय 21

1 और ऐसा हुआ कि जब हम उनसे अलग हो गए और जहाज खोल दिया, तो हम सीधे मार्ग से कूस पहुंचे, और दूसरे दिन रोड्स और वहां से पटारा पहुंचे।
2 और एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और हम उस पर चढ़कर चल दिए।
3 जब हम ने कुप्रुस को देखा, तो उसे बाएँ हाथ से छोड़ दिया, और सूरिया में चलकर सोर में उतरे, क्योंकि वहाँ जहाज़ का बोझ उतारना था।
4 और चेलों को पाकर हम वहां सात दिन तक रहे: उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा, कि यरूशलेम को न जाना।
5 जब वे दिन पूरे हुए, तो हम वहां से चले; और सब लोगों ने हमें और उनकी स्त्रियों और बच्चों को नगर के बाहर तक पहुंचाया; और हम ने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की।
6 तब हम एक दूसरे से विदा होकर जहाज पर चढ़ गए, और वे अपने अपने घर लौट गए।
7 जब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमयिस में आए, और भाइयों को नमस्कार करके उनके यहां एक दिन रहे।
8 दूसरे दिन हम जो पौलुस के साथी थे, वहां से चल कर कैसरिया में आए और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो उन सातों में से एक था, जाकर उसके यहां रहे।
9 और उस मनुष्य की चार कुवांरी बेटियां थीं, जो भविष्यद्वाणी करती थीं।
10 जब हम वहाँ बहुत दिन रहे, तो अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया।
11 उस ने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबंद लिया, और अपने हाथ पांव बान्धकर कहा; पवित्र आत्मा यों कहता है, कि जिस मनुष्य का यह कमरबंद है, उस को यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंप देंगे।
12 जब हमने ये बातें सुनीं, तो हम और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की, कि यरूशलेम को न जाए।
13 तब पौलुस ने उत्तर दिया, कि तुम क्यों रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिये वरन मरने के लिये भी तैयार हूं।
14 जब वह न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए, कि प्रभु की इच्छा पूरी हो।
15 उन दिनों के बाद हम अपनी गाड़ियाँ उठाकर यरूशलेम को चले।
16 कैसरिया के भी कई एक चेले हमारे साथ गए और कुप्रुस के एक पुराने चेले मनासोन को अपने साथ ले आए, कि हम उसके यहां रात बिताएं।
17 जब हम यरूशलेम में पहुंचे तो भाईयों ने आनन्द से हमारा स्वागत किया।
18 दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, और सब प्राचीन वहां उपस्थित थे।
19 और उन्हें नमस्कार करके, उसने एक एक करके बताया कि परमेश्वर ने उसकी सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में कैसे कैसे काम किए थे।
20 यह सुनकर उन्होंने प्रभु की बड़ाई की, और उस से कहने लगे; हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में से कितने हजार लोग विश्वास करते हैं, और सब के सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हुए हैं।

21 और वे तेरे विषय में जानते हैं, कि तू अन्यजातियों में रहने वाले सब यहूदियों को मूसा से फिर जाने की शिक्षा देता है; और कहता है, कि न तो अपने बच्चों का खतना कराना चाहिए, और न रीतियों पर चलना चाहिए।
22 तो फिर क्या हुआ? भीड़ का इकट्ठी होना अवश्य है, क्योंकि वे सुनेंगे कि तू आया है।
23 इसलिये जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर। हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्हों ने मन्नत मानी है।
24 उन्हें लेकर उनके साथ पवित्र हो जा और उनके साथ खर्च उठा, कि वे अपने सिर मुंडाएं; तब सब जान लेंगे कि जो बातें उन्होंने तेरे विषय में सुनीं, वे कुछ भी नहीं हैं; परन्तु तू आप भी नियम के अनुसार चलता और व्यवस्था को मानता है।
25 और जो अन्यजाति विश्वासी हैं, उनके विषय में हम लिख कर यह निष्कर्ष निकाल चुके हैं कि वे ऐसी कोई बात नहीं मानते, केवल इतना कि वे मूरतों के साम्हने बलि किए हुए मांस से, और लोहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से अपने आप को बचाए रखते हैं।
26 तब पौलुस ने उन मनुष्यों को साथ लिया, और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, जिस से यह प्रगट हो कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उन में से हर एक के लिये भेंट चढ़ाए जाने तक के दिन पूरे हुए हैं।
27 जब सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया के यहूदियों ने उसे मन्दिर में देखकर सब लोगों को भड़काया, और उसे पकड़ लिया।
28 और चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, कि हे इस्त्राएलियों, सहायता करो! यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, और यूनानियों को भी मन्दिर में ले आया है, और इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया है।
29 (क्योंकि उन्होंने इस से पहिले त्रुफिमुस नामक इफिसी को उसके साथ नगर में देखा था, और समझते थे, कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है।)
30 तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर खींच लिया, और तुरन्त द्वार बन्द कर दिए गए।
31 जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो पलटन के सरदार को यह समाचार मिला कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है।
32 तब वे तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उनके पास दौड़े, और पलटन के सरदार और सिपाहियों को देखकर पौलुस को पीटना छोड़ दिया।
33 तब पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया, और दो जंजीरों से बान्धने की आज्ञा देकर पूछने लगा, कि तू कौन है, और इस ने क्या किया है?
34 और भीड़ में से कोई कुछ चिल्ला रहे थे, कोई कुछ; और जब वह हुल्लड़ के कारण सच्चाई न जान सका, तो आज्ञा दी कि उसे गढ़ में ले जाया जाए।
35 और जब वह सीढ़ियों पर पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि लोगों के उपद्रव के कारण सिपाहियों ने उसे उठा लिया।
36 क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी थी, कि उसका नाश कर दो।
37 जब पौलुस को गढ़ में ले जाया जा रहा था, तो उस ने पलटन के सरदार से कहा, क्या मैं तुझ से कुछ कह सकता हूं? उस ने कहा, क्या तू यूनानी बोल सकता है?
38 क्या तू वही मिस्री नहीं है, जो इन दिनों से पहले बलवा मचाकर चार हजार हत्यारे पुरूषों को जंगल में ले गया था?
39 परन्तु पौलुस ने कहा; मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के एक नगर का निवासी हूं; और मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे लोगों से बातें करने दे।
40 जब उस ने उसे आज्ञा दी, तो पौलुस सीढ़ियों पर खड़ा हुआ, और हाथ से लोगों को संकेत करके कहा। जब बड़ा सन्नाटा छा गया, तो उस ने इब्रानी भाषा में उन से कहा।

अध्याय 22

1 हे भाइयो, और पितरो, मेरा उत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे साम्हने कहता हूं।
2 जब उन्होंने सुना कि वह हमसे इब्रानी भाषा में बात कर रहा है तो वे और भी चुप हो गए। फिर उसने कहा,
3 मैं सचमुच यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा, पर इसी नगर में गमलिएल के पांवों के पास बैठकर मेरा पालन-पोषण हुआ, और बापदादों की व्यवस्था की खरी रीति पर मुझे सिखाया गया, और मैं परमेश्वर के प्रति ऐसी धुन में रहता था, जैसी तुम सब आज रहते हो।
4 और मैं इस पंथ के लोगों को यहां तक सताता रहा, कि उन्हें मृत्यु से भी बचाया; और पुरुष और स्त्री दोनों को बान्ध बान्धकर, और बन्दीगृह में डालता रहा।
5 इसकी गवाही महायाजक और पुरनियों के सारे घराने के लोग भी देते हैं, और मैं उन से भाइयों के नाम चिट्ठियां लेकर दमिश्क को गया था, कि जो वहां हों उन्हें दण्ड देने के लिये बान्धकर यरूशलेम ले आऊं।
6 जब मैं यात्रा करता हुआ दमिश्क के निकट पहुंचा, तो दोपहर के लगभग एकाएक आकाश से मेरे चारों ओर बड़ी ज्योति चमकी।
7 और मैं भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
8 मैं ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है? उस ने मुझ से कहा, कि मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है।
9 और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु डर गए; परन्तु जो मुझ से बोलता था उसका शब्द उन्होंने न सुना।
10 तब मैं ने कहा, हे प्रभु, मैं क्या करूं? प्रभु ने मुझ से कहा, उठकर दमिश्क में जा; और वहां जो जो काम तेरे करने के लिये ठहराए गए हैं, वे सब तुझ से कह दिए जाएंगे।
11 जब उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ से पकड़ा हुआ दमिश्क में आया।
12 और हनन्याह नाम का एक भक्त मनुष्य था जो व्यवस्था के अनुसार था और वहां के रहने वाले सब यहूदियों में उसका सुनाम था।
13 वह मेरे पास आया, और खड़ा होकर मुझ से कहने लगा, कि हे भाई शाऊल, देखने लग जा: और उसी घड़ी मैं ने उस पर दृष्टि की।
14 उसने कहा, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये चुना है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे, और उसके मुंह से निकलनेवाली बातें सुने।
15 क्योंकि तू ने जो कुछ देखा और सुना है, उसका सब लोगों के साम्हने गवाह होगा।

16 अब क्यों देर कर रहा है? उठ, बपतिस्मा ले, और प्रभु का नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।
17 जब मैं फिर यरूशलेम में आया और मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था तो बेसुध हो गया।
18 और उस ने मुझ से यह कहते हुए देखा, कि जल्दी कर, यरूशलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही ग्रहण न करेंगे।
19 तब मैं ने कहा; हे प्रभु, वे तो जानते हैं, कि जो लोग तुझ पर विश्वास करते हैं, उन्हें मैं ने बन्दीगृह में डाला, और हर एक आराधनालय में पिटवाया।
20 और जब तेरे शहीद स्तिफनुस का खून बहाया गया, तो मैं भी वहीं खड़ा था, और उसकी मृत्यु पर सहमति जताते हुए उसके हत्यारों के वस्त्र सुरक्षित रखे थे।
21 फिर उस ने मुझ से कहा, चला जा; क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर भेजूंगा।
22 तब उन्होंने उसकी यह बात सुनी, और ऊंचे शब्द से कहा, ऐसे मनुष्य का अन्त कर दे, क्योंकि उसका जीवित रहना उचित नहीं है।
23 और जब वे चिल्लाने लगे, और अपने कपड़े उतारकर हवा में धूल उड़ाने लगे,
24 सरदार ने उसे गढ़ में लाने की आज्ञा दी, और कोड़े मार कर उसकी जांच करने को कहा; ताकि वह जान सके कि वे उसके विरुद्ध ऐसा क्यों चिल्ला रहे हैं।
25 जब उन्होंने उसे बेड़ियों से बाँधा, तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था कहा; क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए, कोड़े मारो?
26 जब सूबेदार ने यह सुना, तो पलटन के सरदार के पास जाकर कहा, सावधान रह, क्या करता है; वह मनुष्य रोमी है।
27 तब पलटन के सरदार ने उसके पास आकर पूछा, मुझे बता, क्या तू रोमी है? उस ने कहा, हां।
28 पलटन के सरदार ने उत्तर दिया, कि मैं ने यह स्वतंत्रता बड़ी रकम देकर पाई है: पौलुस ने कहा, मैं तो स्वतन्त्र जन्मा था।
29 तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से चले गए, और पलटन का सरदार भी यह जानकर कि वह रोमी है, और मैंने उसे बान्धा है, डर गया।
30 दूसरे दिन उस ने सच जानना चाहा कि यहूदी उस पर किस लिये दोष लगाते हैं, सो उस ने उसे बन्धनों से खोला, और महायाजकों और सारी महासभा को आकर आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे लाकर उनके साम्हने खड़ा कर दिया।

अध्याय 23

1 पौलुस ने महासभा की ओर ध्यान से देखकर कहा; हे भाईयों, मैं ने आज के दिन तक परमेश्वर के साम्हने पूरी रीति से जीवन बिताया है।
2 तब महायाजक हनन्याह ने उसके आस-पास खड़े लोगों को आज्ञा दी कि उसके मुंह पर थप्पड़ मारो।
3 तब पौलुस ने उस से कहा; हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे मारेगा; तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मार डालने की आज्ञा देता है?
4 जो पास खड़े थे, वे कहने लगे; क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा भला कहता है?
5 तब पौलुस ने कहा; हे भाईयों, मैं न जानता था, कि वह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, कि अपने लोगों के सरदार को बुरा न कहना।
6 जब पौलुस ने यह देखा कि एक तो सदूकी हैं और दूसरे फरीसी, तो उस ने महासभा में पुकारकर कहा; हे भाईयों, मैं फरीसी और फरीसी का बेटा हूं; मरे हुओं की आशा और पुनरूत्थान के विषय में मेरा प्रश्न है।
7 जब उस ने ये बातें कहीं, तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा, और भीड़ में फूट पड़ गई।
8 क्योंकि सदूकी तो कहते हैं, कि न पुनरूत्थान है, न स्वर्गदूत, न आत्मा; परन्तु फरीसी दोनों को मानते हैं।
9 तब बड़ा हाहाकार मचा, और शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर झगड़ने लगे, कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; परन्तु यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उस से बोला है, तो हम परमेश्वर से न लड़ें।
10 जब बड़ा झगड़ा हुआ, तो पलटन के सरदार ने यह डरकर कि कहीं पौलुस उनके हाथ से टुकड़े न हो जाए, सिपाहियों को आज्ञा दी, कि नीचे उतरकर उसे उनके बीच में से बलपूर्वक निकाल लें, और गढ़ में ले आएं।
11 अगली रात प्रभु ने उसके पास आकर कहा; हे पौलुस, ढाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।
12 जब दिन हुआ, तो कई यहूदियों ने इकट्ठे होकर यह ठान लिया, कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक न खाएंगे, न पीएंगे।
13 जिन्हों ने यह षड्यन्त्र रचा था, वे चालीस से अधिक मनुष्य थे।
14 और उन्होंने महायाजकों और पुरनियों के पास आकर कहा, हम ने बड़ी शाप की शपथ खाई है कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें तब तक कुछ भी न खाएंगे।
15 इसलिये अब तुम लोग महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ कि उसे कल तुम्हारे पास ले आए, मानो तुम उसके विषय में और भी ठीक से पूछताछ करना चाहते हो; और जब वह निकट आएगा, तब हम उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे।
16 जब पौलुस के भांजे को पता चला कि वे घात में बैठे हैं, तो वह किले में गया और पौलुस को खबर दी।
17 तब पौलुस ने सूबेदारों में से एक को बुलाकर कहा, इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले आओ, क्योंकि वह उस से कुछ कहना चाहता है।
18 तब उस ने उसे पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा; बन्दी पौलुस ने मुझे बुलाकर बिनती की, कि इस जवान को तेरे पास ले आ; जो तुझ से कुछ कहना चाहता है।
19 तब पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़ा, और उसके साथ एकान्त में जाकर पूछा, तू मुझ से क्या कहना चाहता है?
20 उस ने कहा; यहूदियों ने एका किया है, कि तुझ से बिनती करें, कि कल पौलुस को महासभा में ले आएं, मानो वे उस से और भी ठीक रीति से पूछताछ करना चाहते हों।
21 परन्तु तू उनकी बात न मानना, क्योंकि उन में से चालीस के ऊपर मनुष्य उसकी घात में हैं, जिन्हों ने शपथ खाई है, कि जब तक हम उसे मार न डालें, तब तक न खाएंगे, न पीएंगे; और अब वे तैयार हैं, और तुझ से प्रतिज्ञा की बाट जोह रहे हैं।
22 तब पलटन के सरदार ने उस जवान को विदा करके यह आज्ञा दी, कि किसी से न कहना कि तू ने ये बातें मुझे बताई हैं।

23 तब उस ने दो सूबेदारों को बुलाकर कहा, दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालाधारी, रात के तीसरे पहर तक कैसरिया जाने के लिये तैयार कर लो।
24 और अपने लिये पशु तैयार करो, कि पौलुस पर चढ़ाकर उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुंचा दो।
25 फिर उसने इस प्रकार एक पत्र लिखा:
26 परमप्रधान हाकिम फेलिक्स को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार।
27 यह मनुष्य यहूदियों में से पकड़ा गया था, और वे इसे मार डालना चाहते थे; परन्तु मैं ने सेना लेकर आकर यह जान लिया, कि यह रोमी है, और इसे बचा लिया।
28 जब मैं जानना चाहता था कि वे उस पर क्यों दोष लगाते हैं, तो मैं उसे उनकी महासभा में ले आया।
29 मैं ने देखा कि उस पर उनकी व्यवस्था के विषयों में दोष लगाया गया है, परन्तु उस पर मृत्युदण्ड या बन्दीगृह में डालने के योग्य कोई आरोप नहीं लगाया गया।
30 जब मुझे बताया गया कि यहूदी उस मनुष्य की घात में हैं, तो मैंने तुरन्त तेरे पास लोगों को भेजा, और उसके दोष लगानेवालों को भी आज्ञा दी कि वे तेरे सामने उसके विरुद्ध जो कुछ कहें, कहें। अलविदा।
31 तब सिपाहियों ने जैसा उन्हें आदेश दिया था, पौलुस को पकड़ लिया, और रातों-रात उसे अन्तिपत्रिस में ले गए।
32 दूसरे दिन वे घुड़सवारों को उसके साथ छोड़कर गढ़ में लौट आए।
33 उन्होंने कैसरिया में पहुंचकर हाकिम को पत्र दिया और पौलुस को भी उसके साम्हने खड़ा किया।
34 जब हाकिम ने पत्र पढ़ा, तो पूछा, कि वह किस प्रान्त का है? और जब उसको मालूम हुआ कि वह किलिकिया का है।
35 तब उस ने कहा, जब तेरे मुद्दई भी आएंगे, तब मैं तेरी सुनूंगा: और आज्ञा दी, कि उसे हेरोदेस के न्यायगृह में रखा जाए।

अध्याय 24

1 पांच दिन के बाद हनन्याह महायाजक पुरनियों और तिरतुल्लुस नामक एक वक्ता को साथ लेकर आया, और उस ने हाकिम के पास पौलुस के विरुद्ध समाचार भेजा।
2 जब वह बुलाया गया, तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाते हुए कहने लगा, कि हम लोग तेरे द्वारा बड़ी शान्ति पाते हैं, और तेरी कृपा से इस जाति के लिये बहुत अच्छे काम होते हैं।
3 हे परम आदरणीय फेलिक्स! हम इसे सदैव और सभी स्थानों पर पूरे आभार के साथ स्वीकार करते हैं।
4 फिर भी, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप हमें अपनी दया के बारे में कुछ शब्द बताएं।
5 क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सब यहूदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपन्थ का सरगना पाया है।
6 उस ने मन्दिर को अपवित्र करने की भी कोशिश की, और हम ने उसे पकड़कर अपनी व्यवस्था के अनुसार दण्ड देना चाहा।
7 परन्तु सेनापति लूसियास ने हम पर चढ़ाई करके उसको बड़ी मार से हमारे हाथ से छीन लिया।
8 और अपने दोष लगानेवालों को तेरे पास आने की आज्ञा दी है; इन सब बातों को, जिनके विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू ही जांच करके जान ले।
9 यहूदी भी यह कह कर सहमत हो गए कि ये बातें ऐसी ही हैं।
10 जब हाकिम ने पौलुस को बोलने के लिये संकेत किया तो उस ने उत्तर दिया, कि मैं यह जानता हूं, कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय करता आया है, इसलिये मैं अपने विषय में और भी आनन्द से उत्तर देता हूं।
11 इसलिये कि तू जान ले, कि जब से मैं आराधना करने के लिये यरूशलेम में आया, तब से अब तक बारह दिन से भी कम समय हुआ है।
12 और उन्होंने मुझे न मन्दिर में, न सभाओं में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ को उठाते पाया।
13 और न वे उन बातों को प्रमाणित कर सकते हैं, जिनका वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं।
14 परन्तु यह मैं तेरे साम्हने मान लेता हूं, कि जिस पंथ को वे कुटिलता कहते हैं, उसी के अनुसार मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की उपासना करता हूं, और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूं।
15 और परमेश्वर से आशा रखते हैं, और आप भी रखते हैं, कि मरे हुओं का, अर्थात् धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।
16 और मैं आप भी इसी से यत्न करता हूं, कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर, विवेक सदा निर्दोष रहे।
17 अब बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों को दान और भेंट चढ़ाने आया हूँ।
18 तब एशिया से आए कितने यहूदी लोगों ने मुझे मन्दिर में शुद्ध अवस्था में पाया, और वहां न भीड़ थी, न हुल्लड़।
19 यदि उन को मेरे विरुद्ध कुछ कहना होता, तो उन्हें यहां तेरे साम्हने आकर विरोध करना चाहिए था।
20 या फिर ये आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के साम्हने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ में कोई बुरा काम पाया, कि नहीं।
21 केवल इसी एक बात के कारण, जो मैं ने उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कही थी, कि मरे हुओं के पुनरूत्थान के विषय में आज तुम्हारा मुझ पर अभियोग लगाया गया है।
22 जब फेलिक्स ने जो उस पंथ के विषय में ठीक ठीक ज्ञान रखता था, ये बातें सुनीं, तो उस ने उन से कहा, जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा, तो मैं तुम्हारी पूरी बात जान लूंगा।
23 और उस ने सूबेदार को आज्ञा दी, कि पौलुस को पकड़ कर रखो, और उसे स्वतंत्र रहने दो, और उसके जान-पहचानवालों में से किसी को उसकी सेवा करने या उसके पास आने से न रोको।
24 कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह पर है, उस से सुना।
25 जब वह धर्म, संयम, और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने डरकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा; जब अवसर मिलेगा, तो मैं तुझे बुलाऊंगा।
26 और उसे यह भी आशा थी, कि पौलुस से कुछ रूपये मिलेंगे, कि वह उसे छुड़ा सके; इसलिये वह बार बार उसके पास बुलाता और उस से बातें करता था।
27 परन्तु दो वर्ष के बाद पुर्कियुस फेस्तुस फेलिक्स के यहां आया, और फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न करने की इच्छा से पौलुस को बन्धुआ छोड़ गया।

अध्याय 25

1 जब फेस्तुस उस प्रान्त में पहुंचा, तो तीन दिन के बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया।
2 तब महायाजक और यहूदियों के सरदारों ने पौलुस के विरुद्ध उस से बिनती की।
3 और उसके विरुद्ध बिनती की, कि उसे यरूशलेम बुलाए, और मार्ग में उसे मार डालने की घात लगाए रहे।
4 परन्तु फेस्तुस ने उत्तर दिया, कि पौलुस कैसरिया में बन्दी रखा जाए, और मैं आप शीघ्र ही वहां चला जाऊंगा।
5 इसलिये उसने कहा, तुम में से जो योग्य हों, वे मेरे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य में कोई बुराई हो, तो उस पर दोष लगाएं।
6 जब वह उन के बीच दस दिन से अधिक रहा, तो कैसरिया गया, और दूसरे दिन न्यायपीठ पर बैठकर पौलुस को लाने की आज्ञा दी।
7 जब वह आया, तो यरूशलेम से आए हुए यहूदी लोगों ने चारों ओर खड़े होकर पौलुस पर बहुत सी बड़ी-बड़ी बातें कहीं, जिनका वे प्रमाण नहीं दे सकते थे।
8 उस ने अपने विषय में उत्तर दिया, कि मैं ने न तो यहूदियों की व्यवस्था का, न मन्दिर का, न कैसर का कुछ अपराध किया है।
9 परन्तु फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया; क्या तू चाहता है कि यरूशलेम को जाए, और वहां मेरे साम्हने इन बातों का न्याय किया जाए?
10 तब पौलुस ने कहा; मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूं; मेरा न्याय वहीं होना चाहिए; जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैं ने कोई अपराध नहीं किया।
11 क्योंकि यदि मैं अपराधी हूं, या प्राण दण्ड के योग्य कोई काम किया है, तो मैं मरने से न इन्कार करता; परन्तु यदि इन बातों में से, जिनका ये लोग मुझ पर दोष लगाते हैं, कोई बात सच न हो, तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दोहाई देता हूं।
12 तब फेस्तुस ने महासभा के साथ विचार विमर्श करके उत्तर दिया, क्या तू ने कैसर की दोहाई दी है? तू कैसर के पास जाएगा।
13 कुछ दिनों के बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनीके फेस्तुस का स्वागत करने कैसरिया में आए।
14 जब वे वहां बहुत दिन रहे, तो फेस्तुस ने राजा को पौलुस का मामला सुनाया, कि फेलिक्स एक मनुष्य को बन्धुआ छोड़ गया है।
15 जब मैं यरूशलेम में था, तो महायाजकों और यहूदियों के पुरनियों ने उस की चर्चा मुझे सुनाई, और वे उस पर दण्ड की मांग करने लगे।
16 मैं ने उनको उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं कि किसी मनुष्य को तब तक प्राणदण्ड दिया जाए, जब तक कि मुद्दई को मुद्दइयों के साम्हने खड़ा करके अपने अपराध का उत्तर देने का अवसर न मिल जाए।
17 सो जब वे यहां आए, तो तुरन्त दूसरे दिन मैं न्याय-पीठ पर बैठा, और उस मनुष्य को सामने लाने की आज्ञा दी।
18 जब मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं लगाई जैसी मैं समझ रहा था।
19 परन्तु अपनी ही धारणाओं और यीशु नामक किसी व्यक्ति के विषय में जो मर गया था, और पौलुस ने उसे जीवित बताया था, कुछ वाद-विवाद किए।
20 और जब मुझे ऐसे प्रश्नों के विषय में संदेह हुआ, तो मैं ने उस से पूछा, कि क्या तू यरूशलेम जाएगा, कि वहां इन बातों का न्याय किया जाए?
21 परन्तु जब पौलुस ने दुहाई दी, कि मुझे औगुस्तुस के मुकद्दमे तक के लिये बन्द रखा जाए, तो मैं ने आज्ञा दी, कि जब तक मैं उसे कैसर के पास न भेजूं, तब तक उसे बन्द रखा जाए।
22 तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूं: उस ने कहा, तू कल उसकी सुन लेगा।
23 दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर सरदारों और नगर के बड़े लोगों के साथ अदालत की जगह में गए, तो फेस्तुस की आज्ञा से पौलुस को बाहर लाया गया।
24 तब फेस्तुस ने कहा; हे राजा अग्रिप्पा, और हे हमारे साथ उपस्थित सब लोगों, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिसके विषय में सारे यहूदियों ने यरूशलेम में और यहां भी मेरे साम्हने चिढ़ाते हुए कहा है, कि उसका जीवित रहना उचित नहीं।
25 परन्तु जब मैंने देखा कि उसने मृत्युदण्ड के योग्य कोई काम नहीं किया है, और उसने स्वयं औगुस्तुस की दोहाई दी है, तो मैं ने उसे भेजने का निश्चय किया।
26 उसके विषय में मेरे पास कोई ठीक बात नहीं है, जिसे मैं अपने स्वामी को लिखूं। इसलिये मैं उसे तेरे साम्हने, और विशेषकर हे राजा अग्रिप्पा, तेरे साम्हने लाया हूं, कि जांच करने के बाद मुझे लिखने को कुछ मिले।
27 क्योंकि यह बात मुझे अनुचित लगती है कि बन्दी को भेजा जाए, और उस पर जो अपराध लगाए गए हैं उन पर ध्यान न दिया जाए।

अध्याय 26

1 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे अपनी बात कहने की अनुमति है।" तब पौलुस ने हाथ बढ़ाकर अपनी बात कही।
2 हे राजा अग्रिप्पा, मैं अपने को धन्य समझता हूं, क्योंकि यहूदियों ने मुझ पर जो दोष लगाया है, उन सब का उत्तर मैं आज तेरे साम्हने दूंगा।
3 विशेष करके इसलिये कि मैं जानता हूं कि तू यहूदियों के सब व्यवहारों और प्रश्नों का जानकार है; इसलिये मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि धीरज से मेरी सुन ले।
4 मेरे बचपन से लेकर यरूशलेम में अपने ही देश के लोगों के बीच मेरा चाल-चलन कैसा था, यह सब यहूदी जानते हैं।
5 वे मुझे आरम्भ से जानते थे, कि मैं अपने धर्म के सबसे कठोर पंथ के अनुसार फरीसी होकर जीवन बिताता हूं।
6 और अब मैं खड़ा हूं और उस प्रतिज्ञा की आशा के विषय में मेरा न्याय हो रहा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की थी।
7 उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा हमारे बारह गोत्र रखते हैं, जो दिन रात परमेश्वर की सेवा करते रहते हैं। उसी आशा के कारण, हे राजा अग्रिप्पा, यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं।
8 यह बात तुम को क्यों अविश्वसनीय लगती है कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है?
9 मैं अपने मन में यह सोचता था, कि मुझे यीशु नासरी के नाम के विरोध में बहुत कुछ करना चाहिए।
10 और यही काम मैं ने यरूशलेम में भी किया, और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाल दिया; और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उन के विरोध में बोलता था।

11 और मैं हर एक आराधनालय में उन्हें दण्ड देता, और निन्दा करने को विवश करता, यहां तक कि उन पर अत्यन्त क्रोधित होकर, यहां तक कि पराए नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था।
12 इसलिये जब मैं महायाजकों से अधिकार और आज्ञा लेकर दमिश्क को जा रहा था।
13 हे राजा, दोपहर के समय मैंने मार्ग में स्वर्ग से एक ज्योति आती देखी, जो सूर्य के तेज से भी अधिक थी, और मेरे और मेरे साथ चलने वालों के चारों ओर चमकती हुई दिखाई दी।
14 जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैं ने इब्रानी भाषा में यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? कांटों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है।
15 तब मैं ने पूछा, हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा, मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है।
16 परन्तु उठ, और अपने पांवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैं ने तुझे इसलिये दर्शन दिया है, कि तुझे इन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तू ने देखी हैं, और उन बातों का भी, जिनके विषय में मैं तुझे दर्शन दूंगा।
17 और मैं तुझे उन लोगों से और अन्यजातियों से बचाऊंगा जिनके पास मैं अब तुझे भेजता हूं।
18 कि उन की आंखे खोलूं, और उन्हें अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फेरूं; कि वे पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।
19 फिर भी, हे राजा अग्रिप्पा! मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न मानी।
20 परन्तु पहिले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के, और फिर यहूदिया के सारे देश के लोगों को, तब अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरो, और मन फिराव के योग्य काम करो।
21 इन्हीं कारणों से यहूदियों ने मुझे मन्दिर में पकड़ लिया, और मुझे मार डालना चाहा।
22 इसलिये मैं परमेश्वर से सहायता पाकर आज तक छोटे बड़े सब के सामने गवाही देता हूं, और उन बातों को छोड़ जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने होने की कही थीं, और जो कुछ कहा, वही कहता हूं।
23 कि मसीह दुख उठाएगा, और वही मरे हुओं में से जी उठकर सब से पहिले होगा, और लोगों को, और अन्यजातियों को ज्योति दिखाएगा।
24 जब वह ये बातें कह रहा था, तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा; हे पौलुस, तू पागल हो गया है; बहुत विद्या ने तुझे पागल बना दिया है।
25 उस ने कहा; हे महाप्रभु फेस्तुस, मैं पागल नहीं हूं; परन्तु सच्चाई और संयम की बातें कहता हूं।
26 क्योंकि राजा को ये बातें मालूम हैं, जिनके सम्मुख मैं निडर होकर बोल रहा हूं; और मुझे विश्वास है कि ये बातें उस से छिपी नहीं हैं, क्योंकि यह बात कोने में नहीं हुई।
27 हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं की प्रतीति करता है? मैं जानता हूं कि तू विश्वास करता है।
28 तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू तो मुझे मसीही बनाना चाहता है।
29 पौलुस ने कहा; मैं परमेश्वर से यही चाहता हूं, कि केवल तू ही नहीं, वरन जितने लोग आज मेरी सुन रहे हैं, वे सब इन बन्धनों को छोड़ लगभग और पूरी रीति से मेरे समान हो जाएं।
30 जब उसने ये बातें कहीं, तो राजा और हाकिम और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले खड़े हुए।
31 तब वे अलग जाकर आपस में कहने लगे, कि इस मनुष्य ने ऐसा कुछ नहीं किया जो प्राणदण्ड या बन्दीगृह में डाले जाने के योग्य हो।
32 तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था।

अध्याय 27

1 जब यह तय हो गया कि हमें जहाज़ पर इटली जाना चाहिए, तो उन्होंने पौलुस और कितने और बन्दियों को यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन के एक सरदार के हाथ सौंप दिया।
2 और हम अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर चढ़कर, जो आसिया के किनारे से जाने का इरादा रखता था, रवाना हुए; और थिस्सलुनीके का एक मकिदुनी अरिस्तर्खुस हमारे साथ था।
3 दूसरे दिन हम सैदा में पहुंचे, और यूलियुस ने पौलुस से बिनती करके उसे अपने मित्रों के यहां जाकर विश्राम करने की अनुमति दी।
4 वहां से जहाज खोलकर हम साइप्रस की जलधारा के नीचे से होकर चले, क्योंकि हवा विपरीत थी।
5 और हम किलिकिया और पंफूलिया के समुद्र को पार करके लूसिया के मूरा नगर में पहुंचे।
6 वहां सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।
7 और जब हम कई दिनों तक धीरे-धीरे चलते रहे, और मुश्किल से कनिदुस के सामने पहुंचे, तो हवा हमें आगे बढ़ने नहीं दे रही थी, इसलिए हम सलमोने के सामने क्रेते के नीचे से आगे बढ़े;
8 और, उस स्थान को पार करते हुए, हम उस स्थान पर पहुंचे जो सुन्दर बन्दरगाह कहलाता है; और जिसके निकट लसाया नगर था।
9 जब बहुत समय बीत गया था, और जलयात्रा जोखिम भरी हो गयी थी, क्योंकि उपवास का समय बीत चुका था, तो पौलुस ने उन्हें समझाया।
10 और उन से कहा, हे भाईयों, मैं देखता हूं कि इस यात्रा में बहुत हानि होगी, और न केवल माल और जहाज को, पर हमारे प्राणों को भी हानि होगी।
11 तौभी सूबेदार ने पौलुस की बातों से अधिक जहाज के स्वामी और मालिक की बातों पर विश्वास किया।
12 और क्योंकि वह बन्दरगाह शीतकाल बिताने के लिये उपयुक्त नहीं था, इसलिये अधिकतर लोगों ने वहां से प्रस्थान करने की सलाह दी, कि यदि किसी प्रकार से वे फीनीके पहुंच सकें, और वहां शीतकाल बिता सकें; जो क्रेते का बन्दरगाह है, और दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है।
13 जब दक्षिणी हवा धीरे-धीरे बहने लगी तो उन्होंने यह समझा कि उनका उद्देश्य पूरा हो गया है, और वहाँ से जहाज खोलकर वे क्रेते के निकट से होकर आगे बढ़े।
14 परन्तु कुछ ही समय बाद उस पर एक प्रचण्ड हवा चली, जिसे यूरोक्लाइडन कहा गया।
15 जब जहाज़ हवा में फँस गया और हवा का सामना न कर सका तो हमने उसे बहने दिया।
16 और क्लौदा नाम एक टापू के नीचे बहते हुए, हमें नाव पर चढ़ने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ा।

17 जब उन्होंने नावों को उठाया, तो उन्होंने जहाज को सहारा देकर नीचे से बाँध दिया; और इस डर से कि कहीं वे दलदल में न गिर जाएँ, पाल खोल दिए, और इस प्रकार बहते चले गए।
18 जब हम आँधी से बहुत हिल रहे थे, तो दूसरे दिन उन्होंने जहाज़ हल्का कर दिया।
19 और तीसरे दिन हमने अपने हाथों से जहाज़ का सामान निकाला।
20 और जब बहुत दिनों तक न सूर्य दिखाई दिया, न तारे, और न बड़ा तूफान हम पर आया, तो हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।
21 परन्तु जब बहुत दिन तक संयम करते रहे, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा; हे सजनो, तुम्हें मेरी बात माननी चाहिए थी, और क्रेते से रवाना न होते, और न यह विपत्ति और हानि उठाते।
22 अब मैं तुम्हें समझाता हूं, कि ढाढ़स बान्धो, क्योंकि तुम में किसी के प्राण की हानि नहीं होगी, केवल जहाज की हानि होगी।
23 क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसका दूत आज रात मेरे पास खड़ा था।
24 कि हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के साम्हने खड़ा किया जाना अवश्य है; और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दे दिया है।
25 इसलिये, हे सजनो, ढाढ़स बांधो; क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।
26 परन्तु हमें एक टापू पर छोड़ दिया जाएगा।
27 परन्तु जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया में इधर उधर भटक रहे थे, तो आधी रात के लगभग जहाजियों ने समझा कि वे किसी देश के निकट पहुंच गये हैं;
28 और थाह लेकर बीस पुरसा गहराई पाई; फिर थोड़ा आगे जाकर फिर थाह लेकर पन्द्रह पुरसा गहराई पाई।
29 तब इस डर से कि कहीं हम चट्टानों से टकरा न जाएं, उन्होंने जहाज़ की पिछली तरफ़ से चार लंगर डाले और सुबह होने की कामना करने लगे।
30 और जब मल्लाह जहाज़ से निकलकर भागने ही वाले थे, तो उन्होंने नाव को समुद्र में इस बहाने से उतारा, मानो वे आगे के जहाज़ से लंगर डाल रहे हों।
31 पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा, यदि ये जहाज पर न रहें तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।
32 तब सिपाहियों ने नाव की रस्सियाँ काट दीं और उसे नीचे गिरा दिया।
33 जब दिन चढ़ने लगा, तो पौलुस ने सब से भोजन करने की बिनती की, और कहा; आज चौदह दिन हुए, कि तुम ने कुछ भी भोजन नहीं किया, और उपवास करते करते बचे।
34 इसलिये मैं तुम से बिनती करता हूं, कि कुछ भोजन करो, क्योंकि यह तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये है; क्योंकि तुम में से किसी के सिर पर एक बाल भी नहीं गिरेगा।
35 यह कहकर उसने रोटी ली, और सब के देखते परमेश्वर का धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर खाने लगा।
36 तब वे सब प्रसन्न हुए, और उन्होंने भी भोजन लिया।
37 और हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छियासठ मनुष्य थे।
38 जब वे खाकर तृप्त हुए तो उन्होंने जहाज हल्का किया, और गेहूँ को समुद्र में फेंक दिया।
39 जब दिन हुआ तो वे उस देश को नहीं पहचान पाए, परन्तु एक खाड़ी देखी, जिसका किनारा था; और उन्होंने सोचा कि यदि सम्भव हो तो उसी में जहाज को लगा दें।
40 और जब उन्होंने लंगर उठा लिये, तो समुद्र में चले गए, और पतवारों की पट्टियाँ खोल दीं, और मुख्य पाल हवा में चढ़ाकर किनारे की ओर चल पड़े।
41 और जब वह दो समुद्रों के संगम पर पड़ा, तो उन्होंने जहाज को टिका दिया; और उसका अगला भाग तो स्थिर रहा, परन्तु पिछला भाग लहरों के बल से टूट गया।
42 तब सिपाहियों ने यह योजना बनाई कि बन्दियों को मार डाला जाए, कहीं ऐसा न हो कि कोई तैरकर भाग जाए।
43 परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें ऐसा करने से रोका, और आज्ञा दी, कि जो तैर सकते हैं, वे पहिले छलांग लगाकर किनारे पर पहुंच जाएं।
44 और बाकी लोग, कुछ तो तख्तों पर और कुछ जहाज़ के टुकड़ों पर थे। और ऐसा हुआ कि वे सब के सब सुरक्षित किनारे पर पहुँच गए।

अध्याय 28

1 जब वे बच निकले तो उन्होंने जाना कि उस टापू का नाम मिलिटा है।
2 और उन जंगली लोगों ने हम पर बहुत कृपा की, और वर्षा के कारण और ठण्ड के कारण उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को अपने यहां ठहराया।
3 जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक साँप आँच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया।
4 जब जंगली लोगों ने उस विषैले पशु को उसके हाथ पर लटकते देखा, तो आपस में कहने लगे, निसन्देह यह मनुष्य हत्यारा है; यद्यपि यह समुद्र से बच गया है, तौभी प्रतिशोध इसे जीवित नहीं रहने देता।
5 तब उसने पशु को आग में झटक दिया, और उसे कोई हानि नहीं पहुंची।
6 परन्तु वे आशा लगाए बैठे थे कि वह सूज जाएगा, या अचानक गिरकर मर जाएगा; परन्तु जब बहुत देर तक देखते रहे, और देखा कि उसे कुछ हानि नहीं हुई, तो और ही विचार करके कहने लगे, कि वह तो कोई देवता है।
7 उसी जगह उस टापू के प्रधान पुबलियुस की बस्तियाँ थीं; उस ने हमें अपने घर में उतारा, और तीन दिन तक बड़ी कृपा से हमारी पहुनाई की।
8 और ऐसा हुआ कि पुबलियुस का पिता ज्वर और रक्तस्राव से बीमार पड़ा था: पौलुस ने उसके पास जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।
9 जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के और भी बीमार लोग आए और चंगे हो गए।
10 और उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम विदा हुए, तो जो वस्तुएं आवश्यक थीं, वे हमें लादकर दे दीं।
11 फिर तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल पड़े, जो उस द्वीप पर जाड़ा काट रहा था, और जिसका चिन्ह कैस्टर और पोलक्स था।
12 और हम सिरैक्यूज़ में उतरकर तीन दिन तक वहीं रहे।
13 वहां से हम मार्ग बदलकर रेगियुम में आए, और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, और हम दूसरे दिन पुतियुली में आए।

14 वहां हमें भाई मिले, और उन्होंने हमसे विनती की कि हम उनके यहां सात दिन रहें, और इस रीति से हम रोम की ओर चले।
15 वहां से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन सरायों तक हमारी भेंट करने को आए, जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बान्धा।
16 जब हम रोम में पहुंचे, तो सूबेदार ने बन्दियों को पहरुओं के सरदार के हाथ सौंप दिया; और पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की अनुमति दी गई।
17 और ऐसा हुआ कि तीन दिन के बाद पौलुस ने यहूदियों के प्रधानों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए, तो उनसे कहा; हे भाईयों, यद्यपि मैंने अपने लोगों या बापदादों की रीतियों के विरोध में कुछ नहीं किया, तौभी बन्दी होकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंप दिया गया।
18 उन्होंने मेरी जांच करके मुझे छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था।
19 परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी; न कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था।
20 इसलिये मैं ने तुझे बुलाया है, कि तुझ से मिलूं, और तुझ से बातें करूं, क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से बंधा हुआ हूं।
21 उन्होंने उस से कहा, न तो हम ने तेरे विषय में यहूदियों से कोई चिट्ठी पाई, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया या बुरा कहा।
22 परन्तु हम तुझ से सुनना चाहते हैं, कि तू क्या सोचता है; क्योंकि हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के विरोध में बातें कही जाती हैं।
23 जब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया, तो बहुत से लोग उसके यहां आए, और वह भोर से सांझ तक मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से उन्हें यीशु के विषय में समझा समझाकर परमेश्वर के राज्य की गवाही देता रहा।
24 तब कुछ लोगों ने उन बातों पर विश्वास किया, और कुछ ने विश्वास नहीं किया।
25 जब आपस में एक मत न हुए तो पौलुस के इस एक शब्द के कहने पर चले गए। कि पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा हमारे बापदादों से अच्छा कहा।
26 कि इन लोगों के पास जाकर कह, कि तुम कान तो लगाओगे, परन्तु न समझोगे; आंख तो लगाओगे, परन्तु न बुझोगे।
27 क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और उनके कान भारी हो गए हैं और उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं।
28 सो तुम जान लो, कि परमेश्वर के उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे उसकी बात सुनेंगे।
29 जब उसने ये बातें कहीं तो यहूदी लोग आपस में बहुत बहस करते हुए वहाँ से चले गए।
30 पौलुस पूरे दो वर्ष तक अपने किराये के घर में रहा और जो कोई उसके पास आता, वह सब को अपने यहां ले आता।
31 और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो और प्रभु यीशु मसीह की बातें, और बिना रोक-टोक के, बड़े हियाव से सिखाओ।